THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186203

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP -902—26-3-70—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H398·9 P29H Accession No. A008

Author पाठक, लीलाधर

Title हाडौती : सहायतै

This book should be returned on or before the date last marked below

हा ड़ौ ती क हा व तें

प्रथम भाग

हाड़ौती ग्रन्थमाला का प्रथम सुमन

हाड़ौती कहावतें

[हाड़ौती लोक साहित्य का एक सन्दर्भ ग्रन्थ]

★

लेखक :

डॉ नाथूलाल पाठक

एम० ए० हिंदी, एम० ए० संस्कृत, पी-एच० डी०,

प्रवक्ता

हिन्दी–संस्कृत विभाग

राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

★

प्रकाशक :

हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन

कोटा (राजस्थान)

प्रकाशक
हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन,
३१८, लाड़पुरा, कोटा (राज०)

राजसंस्करण
प्रथम बार १०००

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

मुद्रक :
ज्योति प्रिंटिंग प्रेस,
कोटा. फोन : ४०४

निवेदन

हाड़ाओं की भूमि हाड़ौती कहलाती है। मूल रूप मे यह शब्द उन सब जिलो के लिए प्रयुक्त होता था, जिन पर हाड़ाओं का शासन था। यह प्रदेश चम्बल नदी के दोनो ओर स्थित है। हाड़ा लोग सर्व प्रथम पूर्वी मेवाड के पठारी प्लेटो पर जो 'पठार' के नाम से प्रसिद्ध है, बसे थे। कालान्तर मे उन्होंने अपनी सीमा को बढाकर विलय से पूर्व की स्थिति प्राप्त की थी। उस समय यह नाम कोटा, बूँदी तथा झालावाड के लिए अधिकृत (official) रूप मे स्वीकृत था।

हाड़ौती का लोक-साहित्य अत्यन्त समृद्ध होते हुये भी अभी तक विद्वानों के सक्रिय-अध्ययन का विषय नही हो सका है। ग्रियर्सन जैसे मेधावी भाषाविद् ने हाड़ौती बोली का भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करके यद्यपि लोक-साहित्य के प्रति उन्मुख होने की प्रेरणा दी थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि लिखित साहित्य के अभाव मे हाड़ौती जन-जीवन मे सपृक्त इस लोक-साहित्य के ध्वनि वैशिष्ट्य तथा लिपि-निबन्धन की कठिनाइयो के कारण सभवत: विद्वत्समाज जाने अथवा अनजाने रूप मे इसके प्रति उदासीन ही बना रहा।

कहावतों के माध्यम से, जिनको श्री चाटुर्ज्या के शब्दो मे "जनता की समवेत अभिज्ञता और विचार" कहा जा सकता है, मै हाड़ौती लोक-साहित्य के एक सबल पक्ष को विद्वानो के समक्ष रख रहा हूँ।

लोक-मानस जिसको सोचता, स्वीकार करता और व्यवहार मे लाता है, उसी को चतुर व्यक्ति विशेषता के साथ प्रस्तुत कर देता है। कहावत एक व्यक्ति की विदग्धता और अनेक व्यक्तियो का ज्ञान है। अपने कथन की पुष्टि मे, किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी की आड मे कहने अथवा किसी को उपालम्भ देने या किसी पर व्यग्य कसने के लिए अपने मे स्वतन्त्र अर्थ रखने वाली जिस लोक प्रचलित सामान्यत: सारगर्भित सक्षिप्त एव चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते है, उसे लोकोक्ति या कहावत नाम दिया जाता है।

मनुष्य कितना ही बुद्धिशाली क्यो न हो—अपना नगण्य सा अनुभव उसके लिए मार्ग-दर्शक नही हो सकता। अच्छे सा अच्छा शिक्षक भी परस्पर विरुद्ध बातो एव उलझनो मे फंस जाता है तथा प्रतिक्षण गणनातीत हेत्वाभासों का शिकार होता रहता है। ऐसे समय मे लोकोक्तियाँ ही मार्ग–दर्शन का काम करती है।

इतिहास और व्यवहार मे ऐसे अनेको प्रसंगों के उदाहरण पाये जाते है, जबकि कहावत–प्रदीप के प्रभाव से मनुष्य मार्गच्युत होने से बचता देख पड़ता है। यह भी सत्य है कि कहावतो से मनुष्य की दुर्बलताये दूर होती है, बुद्धि कौशल बढ़ता है तथा नैतिकशक्ति गतिशील होती है। कहावतों द्वारा धन तथा साहित्यिक प्रतिभा की वृद्धि, जीवन-दर्शन तथा प्रामाणिकता का विकास और पर्याप्त मनोरजन प्राप्त होता है। कहावतों का न्याय भी त्रिकालाबाधित होता है।

बाल्यकाल से ही हाड़ौती जन-जीवन की आशा-अभिलाषाओं तथा लोक-साहित्य (कथा, कहानी, गीत आदि) मे उनकी अभिव्यक्ति के प्रति आकृष्ट रहा हूँ। कालान्तर में साहित्य का विद्यार्थी बनकर मैंने जब इस लोक-साहित्य पर दृष्टि डाली तो मुझे अनुभव हुआ कि साहित्य के मसृणतम भाव हाड़ौती लोक-साहित्य में प्रचुर मात्रा मे विद्यमान हैं। अतः सर्व प्रथम मैने हाड़ौती कहावतों का सग्रह प्रारम्भ किया। अनेक हाड़ौती विद्वानों ने मुझे प्रोत्साहन देकर अध्ययन के स्रोतों को भी निर्दिष्ट किया। मैने हाड़ौती क्षेत्र के अनेक स्थानों पर स्वय जाकर तथा अनेकों क्षेत्रों से अपने मित्रों के स्नेहमय सहयोग से इन कहावतों को एकत्र किया है। साथ ही उनके अर्थों तथा एतद्विषयक परिचय-कथाओं को देने में अनेक बहुज्ञ सज्जनो तथा हाड़ौती-परम्पराओं से सहायता ली है।

इन कहावतों में हाड़ौती समाज का चिन्तन व धारणा, समाज के अनुकूल व प्रतिकूल तत्त्वो की प्रशसा और निन्दा, समाज की आर्थिक स्थिति, उदासीनता एवं उत्फुल्लता अपने समग्र रूप मे प्रतिबिम्बित हुई है। कुछ ऐसी भी कहावते है जो हाड़ौती के परिवेश एव चिन्तन धारा मे ही पनपी और समझी जा सकती हैं। सभ्यता के विकास के विभिन्न पक्ष हमे इनमे उपलब्ध होते है।

काल एवं उद्गम को लेकर भी इन कहावतों का अध्ययन होना चाहिये था। मैं इस कार्य को भविष्य पर छोड़कर जो कुछ बन पड़ा है, उसे समाज के समक्ष रखने की त्वरा इसलिये कर रहा हूँ कि मेरा बोझा कुछ हल्का हो जायेगा तथा इस भूमि के सपूतो को अविलम्ब प्रेरणा एव उत्साह मिलता जायेगा।

राजस्थान के प्रांतिक रूप-भेदों में बाह्य-पार्थक्य भले ही दिखाई पड़े, किन्तु उनके समान भावों से यह प्रमाणित होता है कि इनका अन्तस्तत्त्व एक ही गुण-गरिमा को लिए हुये है। जाति की आत्मा और सार्थक विचार-विश्लेषण के लिये आवश्यक सामग्री को एकत्र कर देना भाषा विकास के कार्यों में अपरिहार्य कर्म समझा जाना चाहिये। इस विचार से प्रेरित होकर मै हाड़ौती साहित्य के विभिन्न पक्षों पर 'प्रोजेक्ट' (परियोजना) के रूप में कार्य कर रहा हूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ की कार्यपद्धति का परिचय देना भी अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है। मूल कहावत को उसी प्रकार लिखने का प्रयत्न किया गया है, जैसा कि

उसका उच्चारण है । शब्दावली मे भी कोई परिवर्तन नही किया गया । केवल दो एक स्थल ऐसे मिल सकते हैं, जहाँ कहावतों के किसी अशिष्ट अंश को शिष्ट बनाकर लिख दिया गया है । कहावत का हिन्दी रूपान्तर मूल कहावत का छायानुकारी है । कहीं क्लिष्ट कल्पना या अशिष्ट शब्दावली दृष्टिपथ में आई, वहाँ उन शब्दों के स्थान पर दूसरे शब्दों की योजना कर दी गई है । कहावतों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए मैने उक्ति की व्याख्या के साथ ही उसके प्रयोग के अवसर का सकेत कर दिया है । एक ही कहावत कई प्रसङ्गों पर प्रयुक्त हो सकती है । पूरे प्रसङ्ग न लिखकर मैंने सामान्य प्रसङ्ग अथवा शिक्षाप्रद अवसर का उल्लेख करके ही सन्तोष लाभ कर लिया है ।

ग्रन्थ के मुद्रण में प्रयुक्त विशेष चिह्नों के लिए निवेदन है कि हाड़ौती शब्दों में प्रयुक्त विशेष ध्वनि के लिए मैंने वर्णों के ऊपर खड़ी पाई लगाई है । अनेक मुद्रणाक्षरों एवं चिह्नों का विश्लेषण करने के पश्चात् मैने इस चिह्न को स्वीकार किया है । इसके मुद्रण में भी बड़ी कठिनाइयाँ सामने आई है । यहाँ तक कि दो पक्तियों वाली कहावत की उत्तरपंक्ति में तो यह चिह्न हाथ से लगाना पड़ा है । ग्रन्थ के सौन्दर्य को ध्यान में रखकर ही इस प्रकार का श्रम किया गया है । सम्पूर्ण ग्रन्थ का ईक्षशोधन (प्रूफ) सावधानी के साथ किया गया है । छपाई के समय कभी कहीं मात्रा आदि का निकल जाना या टूट जाना सम्भव है । कहीं ऐसी कोई भूल मिले, तो विज्ञजन क्षमा करेगे ।

व्यावहारिक दृष्टि से यह सर्वथा सत्य है कि केवल परिश्रम और लगन से कोई कार्य तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक कि इसके लिए पर्याप्त अर्थ उपलब्ध न हो । इस ग्रन्थ के प्रकाशन में आर्थिक समस्या भी एक मुख्य बाधा थी । मैंने स्वयं व्यय-भार को वहन करने का निश्चय किया, किन्तु मेरी कल्पना साकार न हो पाई । ऐसे ही समय में हाड़ौती के नररत्न महाराजकुमार श्री बृजराजसिंहजी से जो भेंट हुई, वह वरदान सिद्ध हुई । यह उन्हीं की कृपा का फल है कि यह ग्रन्थ आज इस रूप में प्रकाशित हो सका है । लोक साहित्य के प्रकाशन में ऐसा सच्चा त्याग और सद्भावना निश्चय ही आपकी महान उदारता एवं सौजन्य का परिचायक है । आपका मै हृदय से कृतज्ञ हूँ ।

हाड़ौती प्रदेश के वरेण्य दानवीर और विद्या प्रेमी श्रीमन्त कोटा नरेश के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, क्योंकि आपकी कृपापूर्ण अर्थिक सहायता के कारण यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है । इस सत्कार्य में हाड़ौती लोकसाहित्य के अनुरागी श्रीमान् आप धूलसिंहजी साहब ने अत्यन्त सहायता की है, अतः उनको हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ ।

राजकीय महाविद्यालय कोटा के प्रोफेसर डॉ० श्री रामचरण जी 'महेन्द्र'

की उदारता का आभार किन शब्दो मे व्यक्त किया जाय कि जिन्होने अनेक कार्यो मे व्यस्त रहते हुए भी इस ग्रन्थ की भूमिका अविलम्ब लिख देने की कृपा की है। उसके साथ ही जिन विद्वानो ने अपनी बहुमूल्य सम्मति प्रदान कर मुझे उपकृत किया है, उनका हृदय से आभार प्रदर्शन करता हूँ।

ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए हाडौती लोक साहित्य प्रकाशन के संचालक विशेष प्रशसा के पात्र है।

श्री कुञ्जबिहारीलाल जी विजय के प्रति आभार प्रदर्शन को मै कदापि नही भुला सकता कि जिन्होने कहावतो के संकलन मे अत्यधिक सहायता पहुँचाई है। सर्व श्री प्रेमनिधि शास्त्री, डॉ० सुधीरकुमार गुप्त, डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा, रामनाथ जी शर्मा, घासीलालजी पचौली, मदनलाल जी नागर, राजमल जी शर्मा, अजीतसिह जी, मुकुटबिहारीलाल जी शर्मा एडवोकेट आदि सब सज्जनो का जिन्होने मुझे प्रोत्साहन दिया है, मै अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

ग्रन्थ के मुद्रण का कार्य ज्योति प्रिटिग प्रेस मे हुआ है। प्रेस के स्वामी श्री प्रेमचन्द जी सरवाडिया वस्तुत: धन्यवाद के पात्र है, जिन्होने मुद्रण सम्बन्धी यथासाध्य सभी सामग्रियाँ जुटाकर इसके मुद्रण की व्यवस्था की है। साथ ही प्रेस के व्यवस्थापक श्री प्रेमचन्द्र जी 'भावुक' ने भी समय-समय पर ईक्षशोधन (प्रूफ को पढ़ने) की जो कृपा की है उसके लिए उन्हे धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इस ग्रन्थ के मुद्रयोजक (कम्पोजीटर) श्री रिक्खीसिह को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता, जिन्होने मुद्रण के कठिन स्थलो को अपने चातुर्य से यथावत् बनाकर रख दिया है।

यथेष्ट सावधानी से काम करने पर भी कुछ भूले या त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। विद्वानो से विनम्र प्रार्थना है कि ऐसी भूलों के विषय में निर्देश करे ताकि भविष्य मे तदनुसार परिष्कार किया जा सके। जो विद्वान् मुझे अपने अमूल्य सुझाव देगे; उनका मै कृतज्ञता सहित स्वागत करूँगा।

यदि मेरे इस परिश्रम से लोक साहित्य के अध्ययन में थोडा भी सहयोग मिला, तो मै अपने इस दीर्घकालीन श्रम को सफल समझूँगा।

—डॉ० नाथूलाल पाठक

समर्पण

हाड़ौती के परम यशस्वी, त्यागशील,
दानवीर, गुणग्राही, विद्याप्रेमी तथा
उदारचरित हाडावंशभास्कर महा-
राजाधिराज श्रीमन्त महाराव
श्री सर भीमसिंहजी साहब
बहादुर प्रथम राज प्रमुख
(राजस्थान) के पवित्र
कर—कमलों में
सादर समर्पित

— लेखक

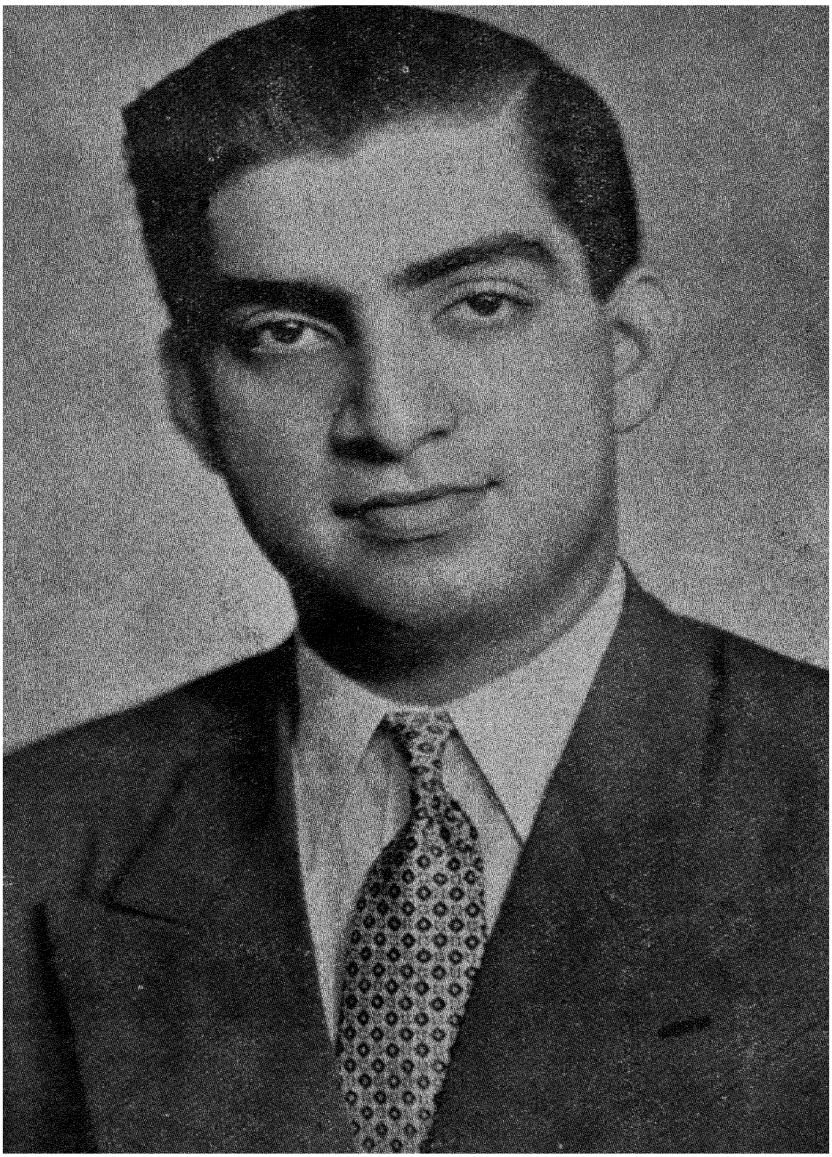


श्रीमन्त महाराव श्री भोमसिंह जी साहब बहादुर

समभिनन्दन

जिनकी सबल प्रेरणा एव सहायता से यह
ग्रन्थ प्रकाश में आ सका है, ऐसे हाड़ौती के
लोकप्रिय, जनपदसाहित्यानुरागी, परम
उत्साही, कर्त्तव्यनिष्ठ, राष्ट्रसचेतक,
निर्मलव्यक्तित्व, जनसेवी, संसद-
सदस्य महाराजकुमार साहब
श्री बृजराजसिंह जी बहादुर
का सादर
अभिनन्दन

— लेखक



महाराज कुमार श्री बृजराजसिंह जी साहब बहादुर

भूमिका

लोक-साहित्य—

सृष्टि के आदि काल में जब आदि मानव ने शब्दों द्वारा अपनी मार्मिक कलात्मक अभिव्यक्ति प्रारम्भ की, उसी समय लोक साहित्य ने जन्म लिया। सभ्यता के विकास के साथ उसमें से कुछ साहित्य विद्वानों द्वारा लिखा जाने लगा, शेष मौखिक रूप से अनुभवी व्यक्तियों की जिह्वा पर ही रहा और समय-समय पर दैनिक जीवन और व्यवहार में प्रयुक्त होता रहा। आज हम साधारणतः उसी साहित्य को 'साहित्य' कोटि में रखते है, जो कलात्मक दृष्टि से लिखित है। मौखिक रूप से जन-मानस में गतिशील लोकसाहित्य को प्रायः हम विशुद्ध साहित्य के रूप में ग्रहण नहीं करते।

मनुष्य की प्राथमिक अभिव्यक्तियाँ तो न जाने कहाँ विलीन हो गई, किन्तु उनकी प्रचलित परम्पराएँ लोकसाहित्य के रूप में आज भी किसी न किसी स्वरूप में विद्यमान है। लोकसाहित्य में जन-मानस में प्रचलित मान्यताएँ, पुरानी परम्पराएँ, जीवन के असंख्य अनुभवों के निचोड़, सामाजिक और धार्मिक आचार-व्यवहार, रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास भरे पड़े है। सरल, सीधी और आडम्बरविहीन भाषा में जीवन की कटु-मृदु अनुभूतियाँ अभिव्यक्त हो गई है। प्राकृत होने से लोक-साहित्य जनमत को सहारा देने वाला है। लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा और कहावते लोकमानस में दिन प्रतिदिन पनपता और विकसित होता हुआ सजीव साहित्य है। यह लोकसाहित्य आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में जीवित है, लोक-मानस में दूर दूर तक फैला हुआ है, ग्रामीण जन उसमें रस लेते है और जीवन की गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता प्राप्त करते हैं। यह उसके जीवन्त रूप का प्रत्यक्ष प्रमाण है। लोकसाहित्य का विकास तब तक होता रहेगा, जब तक मानव सृष्टि है, सृष्टि में ग्राम है और ग्रामो में कलात्मक अभिरुचि के अनुभवी ग्रामीण विद्यमान हैं।

लोक-साहित्य में रंजन शक्ति—

देश की संस्कृति वहाँ के लोकसाहित्य में अक्षुण्ण रूप मे सुरक्षित रहती है। संस्कार उतने शीघ्र नहीं बदलते, जितना समय। यद्यपि लोकसाहित्य का कोई लिखित रूप नहीं है और यह अनुभवी ग्रामीणों की जिह्वा पर ही रहा है, फिर भी शताब्दियों से यह जन-साधारण के मनोभावों को आकर्षित करता रहा है।

यह जनता का साहित्य है, जिसमे ग्राम्य-जीवन की सजीव अनुभूतियाँ भरी पड़ी है। वहाँ के जीवन के सजीव चित्र है। यह लोक-वाणी पर जीवित रहने वाला प्राणवान साहित्य है। इसमें जो अधकचरा या निर्बल होता है, वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है। केवल प्राणवान साहित्य ही जीवित रहता है। इस पर परम्पराओं का अत्यधिक प्रभाव है। इसे हमने अपने पूर्वजो से उत्तराधिकार के रूप में ग्रहण किया है। इस साहित्य में आज भी शत-शत भावुक हृदयों को स्पन्दित और आह्लादित करने की क्षमता है। जीवन की गूढ-गुत्थियो को सुलझाने की सामर्थ्य है। इसका श्रवण कर भावुक जनों का मन-मयूर नृत्य कर उठता है।

लोक-साहित्य के अध्ययन की ओर शिक्षित समाज का दायित्व—

आज का प्रबुद्ध मानव लोकसाहित्य मे भरे युगो के अनुभवो से बहुत कुछ सीख सकता है। प्रजातन्त्र को उन्नतिशील बनाने और समाज को प्रगतिपथ पर अग्रसर करने के लिए यह आवश्यक है कि हम जनता के सम्मुख उस लोक-साहित्य की विविध झाँकियाँ प्रस्तुत करे, जो उसकी साहित्यिक सम्पदा है और जिसमें निरन्तर जनपदो का जीवन प्रतिबिम्बित होता रहता है। लोकसाहित्य का अध्ययन हमारे विशाल देश की सास्कृतिक एव भावात्मक एकता का दिग्दर्शन कराता है। यह हमारी जनता की अक्षय और विकासोन्मुख साहित्यिक सम्पत्ति है। खेद है कि बहुत दिनों तक यह साहित्य उपेक्षित रहा। अब जनता का ध्यान इस उपेक्षित साहित्य की ओर गया है और विभिन्न जनपदो द्वारा लोकसाहित्य का सग्रह, सम्पादन और प्रकाशन हो रहा है। आवश्यकता यह है कि बड़ी सख्या मे विद्वान् विभिन्न जनपदो मे बची हुई शेष साहित्यिक लोक सम्पदा को प्रकाशित करे, जिससे समूची जनता को भारत की राष्ट्रीय एकता का अनुभव हो सके।

हिन्दी जनपदों में लोक-साहित्य की परम्परा—

उन्नीसवी शताब्दी के मध्य मे पाश्चात्य देशो में लोक-साहित्य के प्रति तीव्र आकर्षण हुआ। यद्यपि जॉन आब्रे की टिप्पणियों द्वारा तो इस ओर विद्वानों की जिज्ञासा के भाव सत्रहवी शताब्दी में ही उत्पन्न हो गये थे। विशिप पैरी, ग्रिम, कॉक्स, मैक्समूलर, टेलर और फ्रेजर आदि पाश्चात्य विद्वानो ने इस ओर उल्लेखनीय कार्य किये है।

भारतवर्ष मे भी यह लहर उन्नीसवी शताब्दी में ही आई और हिन्दी तथा अहिन्दी भाषाभाषी जनपदों में इस दिशा मे कार्य भी हुआ था। विवरण को देखने से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी जनपदो की अपेक्षा अहिन्दी जनपदों में भारतीय और अभारतीयों द्वारा अधिक कार्य हुआ है। गुजराती, बङ्गाली, पंजाबी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलायलम आदि प्रान्तीय भाषाओं मे इस दिशा में कार्य

किया गया है। लोक-साहित्य सकलन के इन प्रयत्नो मे लोकगीत, लोककथा, लोकोक्ति एवं कहावतें, लोकवार्त्ता सम्बन्धी प्रबन्ध, पत्र-पत्रिकायें और फुटकर प्रयत्न मुख्य हैं। हिन्दी प्रदेशों की वर्तमान बोलियों में प्रमुख रूप से मारवाड़ी, राजस्थानी, भोजपुरी, छत्तोसगढ़ी, निमाड़ी, मैथिली, बुन्देलखण्डी, मालवी आदि बोलियों का लोक-साहित्य प्रकाश में आया है।

हाड़ौती का लोक-साहित्य—

हाड़ौती राजस्थान का दक्षिणी पूर्वी भाग है। राजस्थान की अधिकांश जनता इसी भूभाग में निवास करती है। अन्य जनपदो की भाँति हाड़ौती का लोक-साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध है। खेद है कि अभी तक इस साहित्य भण्डार को सम्हालने संवारने की ओर विद्वानों की दृष्टि नहीं गई है। सम्भवतः यहाँ का जन समाज अशिक्षित होने के कारण साहित्य के बढ़ते हुए चरणों के साथ अपने चरण नही मिला सका। हाड़ौती लोकभाषा से अपरिचित शिक्षित व्यक्तियों का ध्यान इस ओर कम गया है।

हर्ष है कि अब कुछ विद्वान् इस प्रदेश की भाषा और लोक-साहित्य के एकीकरण और अध्ययन की ओर उन्मुख हो रहे है। हाड़ौती के लोकगीतों और बोलियों पर अनुसंधान कार्य भी हुआ है। कहावतों का क्षेत्र उपेक्षित ही पड़ा रहा। हर्ष है कि इस कमी को दूर करने का प्रयत्न भी अब हो रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ एक बड़ी कमी की पूर्ति करता है।

लोक-साहित्य में कहावतों का स्थान—

कहावत मानव अनुभवों का निचोड़ है। जीवन के विस्तृत प्रांगण में भिन्न-भिन्न अनुभव सर्वसाधारण के मानस को प्रभावित करते है। कम से कम शब्दो में जीवन का अनुभव उडेल कर रख देना, जन-जीवन को आलोकित करना, उसके मार्मिक तथ्य प्रकट करना तथा संचित ज्ञान को सक्षिप्त सूत्ररूप में प्रस्तुत करना कहावत का ही कार्य है। लोक-मनीषियों का दीर्घकालीन अनुभव लोकोक्तियों में संग्रहीत है। अन्ततः सभी अनुभवी व्यक्तियो के अनुभव एक स्थान पर मिल जाते हैं। इसलिए ससार की प्रायः अनेक जातियों में एकसी कहावतें (अनुभव) मिल जाती है। इस प्रकार मानव अनुभवों की मूलभूत एकता का स्पष्टीकरण लोकोक्ति साहित्य में उपलब्ध है। वे जीवन के नाना पक्षों पर व्यावहारिक प्रकाश डालनेवाली हैं। उनमें वैविध्य है। कुछ गम्भीर है, तो कुछ व्यंग्यपूर्ण, कही सुकुमार भावनाओं का प्राधान्य है, तो कहीं शौर्य है। कही वे हमारे कंटकाकीर्ण जीवन को सुलझा देती हैं, तो कहीं हमें गुदगुदाकर हल्का सा हँसा देती है। लोक-जीवन में सब स्त्री-पुरुष इनका थोड़ा बहुत उपयोग करते हैं। इसलिए लोक-साहित्य में लोकोक्तियों

का महत्त्वपूर्ण स्थान है। लिखित साहित्य से पूर्व ही ये लोकप्रिय हो गई थी। तब से अब तक निरन्तर इनका प्रयोग चलता रहा। कहावतें हमारा विशुद्ध साहित्य है, क्योकि उसमें साहित्य के कलापक्ष की कृत्रिम बोझिलता नहीं है। अभिव्यक्ति मे सहज स्वाभाविकता और मार्मिकता है। भाषा और बोलियों में जो प्रभावोत्पादकता का गुण प्राप्त होता है, वह कहावतों द्वारा प्रदत्त है। कहावतों के बिना वे रसहीन प्रतीत होती है। इसलिए कहावतें लोकसाहित्य की तो प्राण हैं।

हिन्दी साहित्य में प्रकाशित लोकोक्ति साहित्य—

खेद का विषय है कि कहावतों के संग्रह, सम्पादन और अध्ययन के प्रयास अभी बहुत कम हुए है। विद्वान् फेलन ने हिन्दी कहावतों पर 'फेलन्स डिक्सनरी ऑफ हिन्दुस्तान प्रोवर्बस्' (१८८६) नामक ग्रन्थ में मारवाड़ी, पंजाबी, मगही, भोजपुरी और तिरहुती कहावतों पर प्रकाश डाला है। काश्मीर की लोकोक्तियों पर जे० एच० नीवलस् का कार्य उल्लेखनीय है। पंजाबी, मराठी, बङ्गला, उडिया आदि भाषाओं मे महत्त्वपूर्ण संग्रह तैयार किए गये है। मेरठ क्षेत्र के मुहावरों पर राजा राजेन्द्रसिह वर्मा ने संकलित सामग्री सहित एक निबन्ध प्रकाशित किया था। डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल की भूमिका सहित गढ़वाली भाषा की कहावतें श्री सालिग्राम वैष्णव के प्रयत्नों से प्रकाशित हुई है। गुजराती में दलीचन्द्र शाह द्वारा 'गुजरातो कहावत सग्रह', मालवी मे रतनलाल मेहता द्वारा 'मालवी कहावतें'; मेवाडी मे लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा 'मेवाडी कहावतें', मेनारिया जी द्वारा 'भीलो की कहावतें', कन्हैयालाल सहल द्वारा 'राजस्थानी कहावतें' तथा प्रो० नरोत्तमदास स्वामी एव प० मुरलीधर व्यास द्वारा 'राजस्थानी कहावतां' आदि उपयोगी सग्रह उपलब्ध है। अभी तक राजस्थान के हाड़ौती (कोटा, बूँदी और झालावाड़) जनपद से सम्बन्धित कहावतो का कोई अध्ययन नहीं हुआ था। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा हाडौती कहावतो के सग्रह, सम्पादन और अध्ययन द्वारा लोक-साहित्य के रिक्त अंश की पूर्ति हो रही है।

हाड़ौती कहावतों की मौलिकता और विशेषताएं—

हाड़ौती राजस्थान का एक अङ्ग है। हाड़ौती प्रदेश का महत्त्व किसी भी दृष्टि से कम नही है। हाडौती को विश्वदुर्लभ वीर काव्य के प्राण वश भास्कर के रचयिता सूर्यमल्ल चारण को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। हाड़ौती ने ही सन्त पीपा, श्री छत्रसाल और कविवर सुधाकर जैसे महात्माओं तथा नरेशों को प्रादुर्भूत किया है। हाड़ौती की बूँदी कभी दूसरी काशी समझी जाती थी।

शोध की दृष्टि से हाडौती के वीर, कलाप्रिय कुशल हाड़ाओं का इतिहास इस क्षण भी गवेषणा का विषय है। यही कारण है कि हाड़ौती कहावतें अपने गुणवैभव और विविध जातीय विशेषताओं के कारण अन्य प्रान्तों की लोकोक्तियों

से किसी प्रकार कम नहीं है। यहाँ की कहावतें देवतत्त्व और आध्यात्म की दृष्टि से लोकस्तुत्य है। हाड़ौती कहावत एकान्त निर्णय की साधक है। इनमें सांसारिक ज्ञान, दाम्पत्य जीवन, व्यावहारिक सम्बन्ध आदि सब चित्रित है। ये लोकोक्तियाँ लोकन्याय सदृश महिमावाली है। इनका वैदिक साहित्य और संस्कृत भाषा से अविभाज्य सम्बन्ध प्रतीत होता है। हाडौती कहावतों के लेखक द्वारा प्रस्तुत संस्कृत और अंग्रेजी की कहावतों के तुलनात्मक अध्ययन से यह पूर्णतया निश्चित हो जाता है। ये कहावतें उदाहरण निरपेक्ष होने से लोकोपयोगी, सरस और आकर्षक है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की विशेषताएं—

प्रस्तुत ग्रन्थ में हाड़ौती की १३३८ कहावतों का संग्रह, सम्पादन और अध्ययन हुआ है। हाडौती की मूल कहावत को लेकर उसका अक्षरात्मक हिन्दी रूपान्तर किया गया है, जिससे भाषागत ध्वनि-परिवर्तन को समझने में सहायता मिलती है। हिन्दी रूपान्तर के पश्चात् प्रकृत कहावत का भावार्थ प्रदर्शित किया गया है। भावार्थ देकर कहावत का सविस्तर विश्लेषण कर दिया गया है, जिससे कहावत का प्रयोग और उपादेयता स्पष्ट हो जाती है। ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित तथा काल्पनिक कथाओं के साथ उनकी परिचय कथाओं का निर्देश भी यथास्थान कर दिया गया है। इसके साथ हिन्दी कहावतों तथा उक्तियों से तुलना करके ग्रन्थ की उपयोगिता बढा दी गई है। ग्रन्थारम्भ में ही सम्पूर्ण कहावतों का विषयनिष्ठ वर्गीकरण करके, जो अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, वह एक नये शोध का संकेत है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक डॉ० नाथूलाल पाठक संस्कृत और हिन्दी के एम. ए., तथा संस्कृत के पी-एच. डी. है। अनेक वर्षों का हिन्दी-संस्कृत के अध्यापन का अनुभव आपके पास है। काव्यसृजन तथा आलोचनात्मक साहित्य के निर्माण तथा अनुसंधान की ओर प्रारम्भ से ही आपकी प्रवृत्ति रही है। फलस्वरूप आपके कई ग्रन्थ तैयार हुए है जैसे—(१) 'हाड़ौती कहावतें" [द्वितीय भाग] हाडौती का संस्कृत एवं अंग्रेजी कहावतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन (२) हाडौती शब्दकोष (३) हाड़ौती व्याकरण (४) हाड़ौती वार्त्ता (५) हाडौती लोकदर्शन।

"ऐतरेय ब्राह्मण का एक अध्ययन" (वैदिक साहित्य) पर आपको राजस्थान विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. प्राप्त हुई है। इतनी योग्यता और अनुभव का व्यक्ति जब लोक-साहित्य के संग्रह और अध्ययन के लिए जुटता है, तो वह निस्सन्देह मौलिक और नवीन वस्तु देता है।

डॉ० पाठक हाड़ौती के निवासी है। इस प्रदेश की जल और वायु में पले-पनपे है; स्वयं अच्छी हाड़ौती बोलते है। हाड़ौती की संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास से सान्निध्य है। हाड़ौती भाषा का अच्छा अध्ययन आपके पास है। इस

प्रदेश के सास्कृतिक पहलुओ पर भी आप एक पृथक पुस्तक लिख चुके है। हाडौती के ग्राम-ग्राम मे घूमकर बड़े परिश्रम और लगन से आपने ये कहावतें एकत्र की है और अपनी मौलिक प्रतिभा से उनका अध्ययन प्रस्तुत किया है। १०-१२ वर्षों के दीर्घकालीन परिश्रम से यह बृहद् ग्रन्थ तैयार हुआ है। इन कहावतों में दिये गये विश्लेषण द्वारा हम अज्ञेय, अज्ञात, वैज्ञानिक और साहित्यिक सत्य तथ्य को समझ सकते हैं। विशेषत: इनके भाषा विशेषज्ञ होने मे ऐतिहासिक तथ्य और पुरातत्त्व के गुप्त रहस्यो को समझने मे भी इनका उपयोग हो सकता है।

राजस्थानी साहित्य को लेखक की देन–

डॉ० कन्हैयालाल सहल ने अपने शोध ग्रन्थ "राजस्थानी कहावते एक अध्ययन" में कहावतो का सैद्धान्तिक अध्ययन किया है लेकिन प्रस्तुत ग्रन्थ में हिन्दी रूपान्तर द्वारा कहावतो की जो ध्वन्यात्मक विशेषताएँ है, वे अन्यत्र दुर्लभ है। डॉ० पाठक ने विश्लेषण के समय कहावतो के प्रयोग का अवसर और उनसे प्राप्त शिक्षा आदि का निर्देश करके इस अध्ययन को सर्वसुलभ और अधिक व्यावहारिक बना दिया है। सामान्य जनता भी इससे पूर्ण लाभ उठा सकती है। डॉ० साहब का शोध प्रबन्ध केवल विद्वानों के लिए है, किन्तु डॉ० पाठक का यह ग्रन्थ विद्वानो के साथ ही सामान्य जनोपयोगी भी है। ग्रामीण जन स्वय कहावतो का प्रयोग करके भी उनके रहस्यो को नही समझ पाते, किन्तु मेरा ऐसा विश्वास है कि वे भी इस ग्रन्थ को पढकर या सुनकर अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त कर सकेगे। यह ग्रन्थ इस दृष्टि से भी उपादेय है कि लोक भाषा मे निरन्तर परिवर्तन होता जा रहा है। इसे ग्रामीणवर्ग भुलाता जा रहा है। केवल वृद्ध जन ही परम्परा से प्राप्त इस थातो का सरक्षण प्रयोग द्वारा कर रहे है। भविष्य में जब लोग इन्हें भूलने लगेगे, तब यही ग्रन्थ उन्हें आलोक प्रदान करेगा। एक कहावत के विषय में इतनी सर्वाङ्गपूर्ण जानकारी अन्यत्र उपलब्ध नही है।

ग्रन्थ के अन्तिम भाग मे कुछ सस्कृत और अंग्रेजी की कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन भी दिया गया है, जिससे इस क्षेत्र मे आगे होनेवाले अनुसधान का दिशाबोध होता है। इस अध्ययनपूर्ण ग्रन्थ पर किए गये परिश्रम से यह स्पष्ट है कि यह राजस्थानी अनुसन्धान क्षेत्रों मे अपना विशिष्ट स्थान बना लेगा। इस ग्रन्थ से प्रेरणा प्राप्त करके हिन्दी के युवक विद्वान् हाडौती के उपेक्षित लोक-साहित्य के अध्ययन की ओर उन्मुख हो सकेगे। अन्य प्रातो की कहावतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करके सांस्कृतिक एकता स्थापित करने में सहायता मिल सकेगी। इन कहावतों से ज्ञान-विज्ञान के अन्वेषण की एक नवीन प्रक्रिया सामने आती है। हाड़ौती जनता और हिन्दी भाषा की श्रीवृद्धि करनेवाले इस उपयोगी ग्रन्थ की रचना करने पर मै लेखक को हार्दिक बधाई देता हूँ।

गवर्नमेन्ट कालेज,
कोटा (राजस्थान)

—डॉ० रामचरण 'महेन्द्र'
एम. ए, पी-एच डी.

हाड़ौती कहावतों का विषयनिष्ठ वर्गीकरण

हाडौती कहावतों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनमें विविध विषय प्रस्तुत हुए हैं। इनमें कहीं ईश्वरीय ज्ञान की झाँकी मिलती है, तो कहीं हाड़ौती जन-समाज में प्रचलित धर्म और दर्शन का आभास उपलब्ध होता है। कतिपय कहावतों में हाड़ौती का लोकविश्वास प्रकट हुआ है, तो कुछ में ऐतिहासिक परम्परा के दर्शन होते है। कुछ कहावतों मे व्यावहारिक जीवन में सफलता प्राप्त कराने वाले नीति विषयक सिद्धान्त सूत्रों का उपदेश दिया गया है, तो कहीं वर्ग विशेष के मनोविज्ञान को चित्रित किया गया है। कुछ कहावतें भाग्यवाद और कर्मसिद्धान्त की ओर इङ्गित करती है। कुछ ऐसी भी कहावते हैं जो सार्वकालिक और सार्वदेशिक सत्य को बतलाती है। कुछ कहावतें व्यक्ति विशेष, समाज, समय, या स्थान से सम्बन्ध रखने वाली हैं। हाड़ौती समाज के स्वाभाविक या प्राकृतिक जीवन को व्यक्त करने वाली इन कहावतों का विषयनिष्ठ वर्गीकरण करते हुए संक्षिप्त अध्ययन अपेक्षित है।

१. ईश्वर तथा देवतत्व विषयक कहावतें—

धर्मप्राण देश होने के कारण भारत की विविध प्रान्तीय भाषाओं में कोई ऐसी भाषा नही है, जिसमें ईश्वर से सम्बन्धित कहावतों का अस्तित्व न पाया जाता हो। हाडौती कहावतों में ईश्वर विषयक कहावते पर्याप्त मात्रा मे मिलती हैं। इन कहावतों में राम, भगवान और परमेसुर शब्द ईश्वर के पर्याय के रूप मे प्रयुक्त हुए है। इनमें से अधिकांश कहावतों मे ईश्वर के लिए 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है। यहाँ के जन समुदाय का परमात्म सत्ता पर अटल विश्वास इन कहावतों द्वारा ध्वनित होता है।

इन कहावतों में ईश्वर को निर्धन का रक्षक, निर्बलों का सहायक तथा निराश्रितों का आश्रय कहा गया है ९१७। भगवान न्याय करता है। वह अच्छे का फल अच्छा और बुरे का बुरा फल देता है ३४। ईश्वर सबका पोषण करता है। जिसको पैदा किया है, उसके भोजन का प्रबन्ध भी उसने कर दिया है ४८१। पचों में भी ईश्वर का निवास है ७०४। ईश्वर के अनुग्रह से अनायास ही द्रव्य की प्राप्ति हो जाती है ११२३। उस पर भरोसा रखने से सभी कार्य सुलभ हो जाते है। ईश्वर ही सबसे बड़ी शक्ति है ९१६। वह सर्व शक्तिमान है ११२५। मनुष्य का जीवन और मरण उसी के अधीन है। उसके सामने किसी का वश नहीं चलता।

उसके द्वारा बनाई हुई इस सृष्टि में सभी प्राणियों को उपभोग का अधिकार है। ईश्वर की महिमा का गान करते हुए एक कहावत में यह भी बतलाया गया है कि भगवान का नाम लेने वाला कदापि दुःखी नहीं रह सकता ११२२। उसकी असीमित शक्ति का प्रकाशन कराने के लिए यह भी कहा गया है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त कष्टों को भोगना ही पड़ता है ११२४। स्वार्थी लोग मनुष्यों को धोखा देने के लिए ईश्वर का भजन करते है ११२७।

इन कहावतों मे ऐसी भी कहावतें मिलती है, जिनसे ईश्वर विषयक समन्वय की भावना प्रकट होती है। सब धर्म वालों का ईश्वर एक ही है। राम और रहीम में कोई अन्तर नहीं है ११२०। केवल नाम का ही भेद है। ईश्वर सम्बन्धी कहावतों के विशेष अध्ययन के लिए निम्न कहावतें द्रष्टव्य है।

३४ १४१ ४६८ ४८१ ६३८ ६६४ ७०४ ९१५ १६* १७ २५ ४८ ११२० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ तथा १३२४।

हाड़ौती जन समुदाय की देवता सम्बन्धी मान्यताये देवतत्त्व सम्बन्धी कहावतों के अन्तर्गत प्रदर्शित हुई हैं। इन कहावतों मे देवता विषयक ऐसी कहावतें मिलती हैं, जिनमें यहाँ के मनुष्यों के उच्चस्तरीय विचार विद्यमान हैं। हाडौती की अधिकांश जनता मूर्ति पूजक है। मूर्ति में देवत्व के आरोप के विषय मे भावना को ही श्रेष्ठ बतलाया गया है। यदि श्रद्धा या भावना हो, तो देवता है अन्यथा पत्थर या मिट्टी है। हाड़ौती के लोक-देवता अनेक है। रामकृष्ण आदि की मूर्तियों को ठाकुरजी कहा जाता है। देवताओं मे देवियाँ भी सम्मिलित हैं। सामान्य देवी-देवताओं में क्षेत्रपाल को विशेष महत्त्व दिया गया है। अकेले क्षेत्रपाल को अर्धांशभागी बतलाया गया है ५१। अन्य देवताओं के लिए भेंट का आधा भाग ही पर्याप्त होता है। देवताओं के सन्तुष्ट होने पर मनुष्यों को उनसे लाभ प्राप्त हो सकता है। भूतों के अस्तित्व के बारे में भी इन कहावतों में पर्याप्त निर्देशन मिलता है। भूत भी देवयोनि में गिने जाते है। भूतो का पीपलवृक्ष मे निवास प्रसिद्ध है। एक कहावत में मनसा डाकण और शङ्का भूत ९८९ कहकर इनके अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया है। कहावतों मे परियो के सौन्दर्य का वर्णन भी उपलब्ध होता है।

---

*कहावत लिखते समय परीक्षाफल के समान सैंकड़े और हजार के अंक छोड़ दिये गये हैं। अतः संख्या पढ़ते समय उनके आगे प्रयुक्त सैंकड़े और हजार के अंकों को मिला लेना चाहिये। इस प्रकार का क्रम वर्गीकरण वाले सभी पृष्ठों में रखा गया है।

देवता विषयक मान्यताओं में अन्न को भी देवता माना गया है। माता पिता द्वारा प्रतिदिन अन्नदेव को पैर से स्पर्श करने का निषेध किया जाता है। अन्नादि खाद्य-पदार्थों को देवता रूप में मानने की परम्परा वैदिक संस्कृति का स्मरण कराती है। कहावतों में यह भी कहा गया है कि जो देवता मनुष्यों के साथ दुष्टता करता हो; उसकी पूजा के लिए भ्रष्ट पद्धति अपनानी चाहिये। निम्न कहावतों मे देवतत्त्व के दर्शन होते है—

१६ ५६ ५४ ३४६ ४६३ ६२१ २२ ६८ ६५७ ६६ १०२८ ४४ ११७४ तथा १२४७।

२. इतिहास एवं पुराण सम्बन्धी कहावतें—

इन कहावतो में घटना विशेष अथवा किसी महापुरुष के भव्य व्यक्तित्व का सकेत मिलता है। कुछ कहावते ऐसी हैं, जिनका सम्बन्ध रामायण या पुराण की कथा से है। रामचन्द्र, भरत और रावण से सम्बन्धित घटनाओं का सम्बन्ध रामायण से है। राजा भगीरथ द्वारा गगा का लाना आदि कहावतें पुराणों से सम्बन्ध रखने वाली है। लोक-मनोविज्ञान के अनुसार इन कहावतों में परम्परागत कथाओं को मोड़ दिया गया है। प्रजाने भी भरतजी का साथ नहीं दिया ७१६। गंगाजी का आना और भगीरथ को यश मिलना २६५ आदि इसी प्रकार की कहावतें हैं।

घटना विशेष से सम्बन्ध रखनेवाली कहावतो का अर्थ घटना को बिना जाने स्पष्ट नही होता। बूँदी के हाड़ा महाराव जोधसिह जी का गणगौर को लेकर डूबना १३०३ आदि इसी प्रकार की कहावतें है। हाड़ौती की ऐतिहासिक कहावतें व्यक्ति प्रधान है। बूँदी के महाराव भीमसिह जी का शौर्य, कोटे की राजभक्त प्रजा का फौजी सरदार मेहराबखाँ की दुहाई न मानना आदि कहावतें व्यक्ति प्रधान हैं। इन कहावतों मे पुरुषों का ही नहीं, उच्चाशया नारियों का व्यक्तित्व भी देखने को मिलता है। पोपाबाई जैसी विशालहृदया नारी से सम्बन्धित कहावत ७५७ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जा सकती है। व्यक्ति प्रधान कहावतों के विषय में यह ध्यान देने योग्य बात है कि कुछ व्यक्तियों के नाम भारत के अनेक प्रदेशो की कहावतों में प्रचलित है। पोपाबाई से सम्बन्धित कहावत इसी प्रकार की है। यह कहावत राजस्थान के सभी भागों–मध्यप्रदेश, गुजरात, मालवा आदि अनेक प्रान्तों में पाई जाती है। डा० कन्हैयालाल सहल ने इसका उल्लेख अपनी "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन" नामक शोधग्रन्थ में पृष्ठ १०६ पर किया है। कुछ विद्वान् पोपाबाई को गुजरात के राजवंश से सम्बन्धित बताते है। कविराजा बाँकीदास

ग्रन्थावली की टिप्पणियों में इन्हें कुम्हारिन बताया है, जो जयपुर के खंडेले राज्य में उत्पन्न हुई थीं तथा अपनी मूर्खता के कारण शूली पर चढ़ाई गई थी। मध्यप्रदेशीय लोकोक्ति में भी इन्हें कुम्हारिन बतलाया गया है। इन विभिन्न विवरणों के साथ यदि हम हाड़ौती के पोपाबाई विषयक विवरण को मिलाकर देखें, तो यह विवरण ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक तथ्यपूर्ण जान पड़ेगा। पोपाबाई भक्त थी। कोटा जिले के आँवा नामक स्थान पर उनके अन्तःपुर के भग्नावशेष अब तक विद्यमान है। ऐतिहासिक खोज द्वारा उनसे सम्बन्धित बहुत सी सामग्री सामने लाई जा सकती है।

सामान्यतया ये कहावतें कोटा और बूँदी के हाड़ौती प्रदेश से ही सम्बन्धित हैं, किन्तु कुछ ऐसी कहावतें हैं, जो हाड़ौती की सीमा से बहुत दूर उत्तरी और दक्षिणी भारत के राजपुरुषों को लक्ष्य करके बनाई गई हैं। गढ़वाल (उत्तर प्रदेश) के चरित्रबली अजयपाल ६७१ और धारानगरी के भोजराज २५४ के विषय में ये कहावतें प्रचलित हैं। अजयपाल के विषय में प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ १५६ पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। भोज और गाँगली तेलण वाली कहावत २५४ के विषय में जो बात हाड़ौती लोक में प्रचलित है, उसका संकेत कहावत के विश्लेषण के साथ दे दिया गया है। इस कहावत का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि "गाँगली तेलण" शब्द किसी तेली की स्त्री के लिए नहीं, किन्तु दक्षिण के गंगराज तैलप के लिए प्रयुक्त हुआ है। भोजराज के शौर्य, दया, दाक्षिण्यादि गुणों की समानता में गगराज तैलप कदापि नहीं ठहर सकते थे।

यह भी उल्लेखनीय बात है कि इन कहावतों में कतिपय नाम ऐसे मिलते हैं, जिनके इतिहास का पता नहीं चलता। ऐसा सन्देह होता है कि ये नाम न्याय-दर्शनादि ग्रन्थों में प्रयुक्त देवदत्त नाम के समान काल्पनिक तो नहीं है? ऐसे नामों में परसराम, मनसाराम, पांच्या, गगादास, जमनादास, लखपत आदि द्रष्टव्य हैं। कतिपय कहावतों में कबीर और राजिया नामों का उल्लेख हुआ है। राजस्थान में राजिये के दोहे प्रसिद्ध हैं। उक्त कहावतों के अध्ययन के लिए निम्न संख्यावाली कहावतें अवलोकनीय हैं—

६ २६ ८० १०८ २६ १४२ ४४ ७३ २५४ ६४ ६५ ३८८ ५३४ ५४ ६५६ ६६ ७१ ८३ ७१६ १७ ५७ ८७२ ६६२ १०३१ ३७ ४० ७४ ११५७ ७२ १२३१ १३०२ तथा १३०३।

३. स्थान सम्बन्धी कहावतें—

हाड़ौती की स्थान विषयक कहावतों के अन्तर्गत किसी प्रदेश विशेष,

नगर विशेष अथवा ग्राम विशेष के नाम का उल्लेख हुआ है। प्रदेशो में विशेषतः मारवाड़, मेवाड़, ढूँढ़ाड़, हाडौती, चँगेरी, नागरचाल आदि नाम मिलते है। इन कहावतों में प्रदेश विशेष में बसने वाले व्यक्तियों की किसी श्लाघनीय या निन्दनीय प्रवृत्ति का आभास मिलता है। कतिपय कहावतें ऐसी है जिनमें दिल्ली, बनारस, मथुरा, जगन्नाथपुरी, बद्रीनाथ, श्रीनगर, रामनगर, गङ्गाजी (हरिद्वार), गिरिनार. उदयपुर, साँभर, कोटा, बूँदी आदि शहरों का उल्लेख हुआ है। नगरों के नामों में तीर्थ-स्थलों के नाम विशेष रूप से द्रष्टव्य है। हाड़ौती के लोक जीवन में प्राचीन समय से ही तीर्थयात्रा को अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है। पुत्रों के माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यों में उनको तीर्थयात्रा कराना सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तीर्थ स्थानों के मार्ग में पड़ने के कारण दिल्ली, मथुरा आदि शहर भी इन लोक कहावतों में स्थान पा गये है। हाड़ौती की इन कहावतों में नगरों की अपेक्षा गाँवों के नाम अधिक मिलते हैं। इसका कारण स्पष्ट है। हाड़ौती जनपद की अधिकांश जन-संख्या गाँवों में ही निवास करती है। कहावतों में प्रयुक्त ग्राम विशेषरूप से हाड़ौती प्रदेश के अन्तर्गत ही विद्यमान है। अन्ता, पलायथा, कोयला, चेचट, नान्ता, नाहरगढ़, शेरगढ़, भँवरगढ़, साँगोद, दीगोद आदि गाँव इस प्रकार के है, जिन पर कहावतो का निर्माण हुआ है। इन कहावतों के लिए निम्न कहावतें द्रष्टव्य हैं—

६ ५५ १२१ ४४ ७३ २६४ ६६ ३०४ ३६ ७८ ४०७ ५३७ ५० ६२० २४ ५२ ८१ ७१४ ४८ ५८ ८८० ९२७ ११०२ १० १२०६ २६ ८१ १३०५ तथा १३०६।

४. हाड़ौती की सामाजिक कहावतें —

इन कहावतों के अन्तर्गत हाड़ौती जन-समाज का चित्र प्रस्तुत हुआ है। हाड़ौती के सामाजिक जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिए इन कहावतों का अध्ययन करना उपयुक्त जान पड़ता है। इस प्रदेश की सामाजिक स्थिति इन कहावतों से स्पष्ट हो जाती है। हाड़ौती के पारिवारिक सम्बन्ध, जाति और वर्ग में बँटी हुई सामाजिक सस्थाओं की विशेषताएँ, स्त्री सम्बन्धी लोक-धारणाये, विभिन्न व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों की प्रवृत्तियों आदि का आभास इन कहावतों में स्पष्टतः मिल जाता है।

(क) सम्बन्ध सूचक कहावतें—

जिन सामाजिक कहावतों में पारिवारिक सम्बन्ध के दर्शन होते है, वे इस उपविभाग के अन्तर्गत आती हैं। इनमें माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भाई, बहिन,

बाबा, काका, काकी, नाना, नानी, भाभी, भतीजा, भतीजी, मामा, भानजा, बुआ, फूफा, मौसी, साला, साढू, ससुर, दामाद, सास, बहू, देवरानी, जेठानी, ननद, मित्र, अतिथि, गुरू, चेला आदि कौटुम्बीय सम्बन्ध का उल्लेख पाया जाता है। इन कहावतों में कुछ सम्बन्ध-सूचक शब्द तो केवल प्रसग रूप में ही प्रयुक्त हुए है और कुछ उन सम्बन्धियो की विशेषता का दिग्दर्शन कराते है। बच्चों के स्वभावादि से सम्बन्धित कहावतें भी इसी वर्ग मे ले ली गई है।

पुत्र द्वारा सेवा का लाभ माता पिता को ही मिलता है १९९। काम पड़ने पर किसी भी स्त्री को काकी कहकर सम्बोधित किया जाता है २०५। कपूत बेटा भी समय पर काम आ जाता है २६२ गरीब की औरत सबकी भाभी होती है २७९। घर आने पर ही अतिथि माना जाता है ३४५। घर मे जेठानी की तथा बाहर पड़ोसिन की शिक्षा काम देती है ३६१। भाइयों का पारस्परिक प्रेम हितकारी होता है ३९८। चोर चोर मौसेरे भाई होते हैं ४१५। जिसके पुत्र होगा, उसके बहू आयेगी ४७०। जेठ के पुत्र भी अपने ही पुत्र समझने चाहिए ४८९। दस भाईयों की बहिन कुँआरी फिरे ५८५। न मामा से काना मामा ही अच्छा। अतिथियों से घर नहीं बसता ७८५। बिना रोये माता भी दूध नहीं पिलाती ८२८। बिना बुलाये जाने पर अतिथि का अपमान होता है ८२७। बाप ने तो चुहिया भी नही मारी और बेटे शेर मारने चले ८६८। बच्चे तो बादशाह होते है ८८५। बेटी देकर बेटा लेते है ९०८। पकानों में जैसे लड्डू श्रेष्ठ है, वैसे ही सगों में साढू श्रेष्ठ होता है ११७७। साले के बिना ससुराल नीरस है १२३२ आदि वर्णन इन कहावतों के विषय है।

निम्न सख्या वाली कहावतें सम्बन्ध सूचक कहावतो के अन्तर्गत आती है—

२९ ३० ५८ १०५ २५ ४७ ६० ६४ ७८ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ९९ २०५ ६ १६ १९ २३ ४३ ५२ ५३ ६२ ७९ ३४५ ५१ ५२ ५३ ५४ ६० ६१ ८२ ८६ ९८ ४१२ १३ १४ १५ १७ २७ ४१ ४७ ५५ ७० ८५ ८९ ९४ ५२० ६२ ८० ८५ ९१ ६०१ १२ १८ २५ ४६ ६२ ७९ ७१८ ४६ ५१ ५२ ५५ ८१ ८४ ८५ ८६ ८९ ८०१ १२ १४ १६ २७ २८ ५० ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७३ ८५ ८६ ८७ ९७ ९०२ ६ ७ ८ ९ १० २४ ३० ३१ ४० ४२ ४३ ९० १०११ १३ १४ १९ २० २३ २४ २९ ३० ३३ ३४ ३५ ३८ ५४ ५८ ५९ ७७ ७८ ८१ ८६ ९० ९५ १११८ ३६ ३८ ५४ ६५ ७३ ७७ ७८ ७९ १२१६ ३२ ३३ ४१ ४२ ४३ ४४ ५७ ८५ १३१२ २३ २६ ३० तथा ३४।

(ख) जाति सम्बन्धी कहावतें—

भारत में वर्ण व्यवस्था अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आ रही है। समस्त राजस्थान प्रान्त में वर्णाश्रम संस्कृति के दर्शन होते है। हाड़ौती प्रदेश में चार वर्णों के अतिरिक्त व्यवसाय के आधार पर बनी हुई जातियाँ भी पर्याप्त संख्या मे विद्यमान हैं। कहावतों के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अन्य वर्गों की अपेक्षा जाति सम्बन्धी कहावतों के वर्ग मे अधिक कहावतें हैं। मनुष्यों के जातिगत विशेष आचार-विचार, उनकी विभिन्न मनोवृत्तियाँ, संस्कारजन्य गुणावगुण आदि बातों का विशेषरूप से उल्लेख इन कहावतों में पाया जाता है। जाति सम्बन्धी कहावतों का अध्ययन निम्न प्रकार किया जा सकता है—

ब्राह्मण—हाड़ौती प्रदेश में ब्राह्मण को सर्व श्रेष्ठ गिना जाता है। पचाङ्ग उसकी वाणी का अनुमोदन करता है ८७४। ब्राह्मण को तिलक धारण करना चाहिए अन्यथा उसमे और शूद्र मे कोई अन्तर नही रहता ८२४। काले रग का ब्राह्मण बड़ा चालाक होता है २१५। भूखा ब्राह्मण सोता है ६५५। ब्राह्मणों में गौड, गुर्जरगौड़, पूर्विये और दाधीच ब्राह्मणो का विवरण विशेष रूप से मिलता है। दायमा ब्राह्मण की उद्दण्ड प्रकृति, तोड़ फोड की नीति, मित्रों को धोखा देना आदि प्रवृत्तियो पर विशेष प्रकाश डाला गया है। पूर्विये विप्र के सीमातीत अस्पर्श का दिग्दर्शन कराया गया है। कुछ कहावतो मे अन्य जातियों के स्वभाव साम्य का आभास कराते हुए भी विप्र जाति का उल्लेख हुआ है। विप्र जाति के लिए ७२ १२० ३८ २१५ ३४ ५८२ ६० ७०१ ३१ ८७४ ६८ ६२० ५४ ५५ १०१६ तथा १२०६ सख्यावाली कहावते द्रष्टव्य है।

राजपूत जाति के सम्बन्ध मे भी इन कहावतों में अनेक विचार प्रस्तुत हुए है। ठाकुर की ईमानदारी का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि ठाकुर ऋण चुकाने के बारे में इतना ईमानदार होता है कि कागज पर नही, दीवार पर भी उसके ऊपर कर्जा लिखा हो, तो उसे भी चुका देता है ५१६। ठिकाने से ही ठाकुर कहलाते है ५११। आलसी ठाकुरों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनका काम दारू पीकर मारू गाना रह गया है ५६७। राजपूत निठल्ला नही बैठा रहता। वह निठल्ला होने पर घर खोदकर उसे ही चुनने लगता है ८०६। क्षत्रियों के लिए ४२२, ५११ १५ १६ ५४ ६७ ६५६ ८०६ १०६० ६१ ११०४ ५ ६ ७ १३ १४ १५ २६ तथा १२०३ संख्यावाली कहावते अवलोकनीय हैं।

वैश्य वर्ग की जातिगत विशेष प्रवृत्तियों का विवरण अनेक कहावतों में मिलता है। बिना प्रभाव दिखाये वैश्य से कोई वस्तु प्राप्त करना सरल नहीं

है ६८ । वैश्य ऋण लेने वाले का विनाश कर देता है ४७६ । बनिया किसी का मित्र नही होता ८१६ । बनिया पग पग पर झूठ बोलता है ८४६ । बनिया अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखता है । बनिया परिचित व्यक्ति से अधिक दाम लेता है ८५२ । वैश्यों में विजय वर्गीय बनिया अधिक भयकारक बतलाया गया है ८६८ । बनियों में महेश्वरी और जैनियों के स्वभाव का भी उल्लेख मिलता है । वैश्यवर्ग के लिए पठनीय कहावते ६८ १३६ ४२६ ७६ ६५६ ८१० १६ ४८ ४६ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ६८ ६६ ६५५ ६१ १०१७ ५० १२०५ तथा १२५६ हैं।

उपर्युक्त प्रमुख जातियों के अतिरिक्त अन्य पेशेवर जातियों में जाट, मीना, गूजर, खत्री, धाकड, कायस्थ, रेवारी, कुम्हार, नाई, सुनार, दरजी, लुहार, खाती, धोबी, तेली, तमोली, कोली, कण्डारा, कलाल, लखारा, बनज्यारा, गोला, चमार, बारेठ, भाट, भाँड, डूम, कीर (मल्लाह) कट्ट्या, भील और दरोगा जातियों से सम्बन्धित कहावते उपलब्ध होती हैं । इन कहावतों में कुम्हार और नाई के विषय में अधिक कहावते संकलित हुई हैं । कुम्हार अपनी उतावली के कारण कच्चे बरतन ही बेच देता है १०४ । वह स्वय निर्माता होते हुए भी उसके घर में फूटा करवा मिलता है २३६ । कुम्हार के लिए २३७ ३८ तथा ७६१ संख्यावाली कहावते भी द्रष्टव्य है । नाई का चातुर्य प्रसिद्ध है ६६५ । बिगड़े किसी का सुधरे नाई का ७६६ । नाई की बरात में सब ठाकुर ही ठाकुर होते है ६६६ । इनके अतिरिक्त कहावत सख्या १०६ ६७० ७६७ आदि में भी नाई का उल्लेख हुआ है ।

तमोलियो की सावधानी १५० चमार और कडारे की भाग्यहीनता ३८१ व १७२ गूजर का ऊजड़ चाहना ३३१ जाट, रेवारी और सुनार का किसी के सगे न होना ४५४ आदि विषयों की चर्चा इन कहावतो में मिलती है । जिन कहावतों में विभिन्न जातियों का प्रसङ्ग प्राप्त होता है, वे निम्न प्रकार है—

जाट ४५४ मीना ७२ ३३५ व ३६४ गूजर ३३० ३१ ३२ ७१७ व १०७४ खत्री २५१ धाकड २४६ व ६३३ कायस्थ २५१ रेबारी ४५५ सुनार १२६३ व १२८३ दरजी ५८१ लुहार १२८३ खाती २५१ धोबी ६३६ तेली ५५६ ६० ६१ व ६२ तमोली १५० कोली २२३ ३२ व ४८२ कण्डारा १७२ व १८६ कलाल ६४० लखारी ८७८ व ११४१ बनज्यारा २६६ गोला ३३० चमार ३८१ ८२ ८३ व ८४ बारेठ ८७७ भाट ६३० भाँड ६३६ व ३७ डूम ५२४ २५ व ११६१ मल्लाह १२०५ कट्ट्या १६१ भील ६५६ दरोगा ५७१ ।

इनके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसाय करने वालों के लिए भी निम्न संख्या वाली कहावतें कही जाती हैं—

दलाल ५८४ नर्तकी ६७५ गायिका ७७७ वैद्य ६९२ कमनीगर १७० कारीगर १७० सिलावट (संगतराश) १२७७ पनिहारी ७६५ भटियारी ९१९ दाई ५८७ याचक ९६९ शहना ११८१ पटेल ११८३ योगो और योगिन ७३६ ८०५ व ६९३ चोर ४११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ व १९ ।

हिन्दू और मुसलमानों को लेकर भी कहावतें कही गई हैं । हिन्दू के लिए केवल एक कहावत कही गई है १३२७ । मुसलमानों से सम्बन्धित १६७ ७९ ९० ५५२ १०३७ ३८ ६४ व १३३८ संख्यावाली कहावतें अवलोकनीय है ।

क्षतांगों अथवा शारीरिक विकृति वाले मनुष्यों के लिए भी कहावतें कही गई है । काने, लगड़े, बौने और गंजे के लिए १९७ और २६३ गूगे के लिए २१२ व ३२९ अन्धे के लिए ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९२ ९३ ९५ व ९६ तथा पागल के लिए ८९२ व ८९३ सख्या वाली कहावते द्रष्टव्य है ।

(ग) नारी सम्बन्धी कहावतें—

नारी समाज का मुख्य अङ्ग है । हाड़ौती की नारी सम्बन्धो कहावतों के अन्तर्गत नारी की सामाजिक स्थिति का विवरण मिलता है । कुमारी लड़की के छत्तीस वर कहकर उसे योग्य वर को देने की ओर सकेत किया गया है २१६ । स्त्री की स्वतन्त्रता गर्हणीय समझी गई है । पिता को अपनी पुत्री के विवाह का पूर्ण अधिकार है ९०९ । पुत्रियाँ परतन्त्र होती है ९०७ । स्त्रियों के चरित्र को कोई नहीं जानता ५३३ । स्त्री का दूसरा विवाह नही हो सकता ५३४ । कन्यादान के समय गौदान भी अनिवार्य है ११३७ । प्रीति के बिना स्त्री नहीं रह सकती ७२३ वह अपनी इच्छा से ही किसी के साथ रह सकती है, अन्य की इच्छा से नहीं १०९५ । स्त्रियाँ प्राय: कमबुद्धिवाली मानी गई है ११६० । गृहिणी का आलस्य निन्दनीय है ६०१ । सतियों का चरित्र अनुकरणीय होता है ११८४ । गृहिणी को लक्ष्मी कहा जाता है ३२ ।

नारी से सम्बन्धित इस सामान्य विवरण के अतिरिक्त गुणावगुणों के आधार पर नारी को कई रूपों में चित्रित किया गया है । किसी कहावत में नारी को अधिकार गर्विता १२ बतलाया गया है तो कहीं रूपगर्विता १०१८ कहा गया है । कर्कशा २१८ नखरेवाली, मतवाली २६१ निर्लज्ज ६४८ विधवा ११०९ वेश्या ४३३ आदि कई नारी-रूप प्रदर्शित किये गये है । नारी सम्बन्धी धारणाओं के पूर्ण परिचय के लिए निम्नाङ्कित कहावतों का अध्ययन अपेक्षित है—

१२ १७ २४ ३० ३२ १०५ ३८ २१६ १८ ४९ ५३ ६१ ९४ ३१५ ५९ ८२ ९४ ४३३ ३४ ४१ ८६ ९२ ५१५ ३३ ३४ ९१ ६०१ २५ ४८ ४९ ५०

९४ ७०८ २३ ४० ४६ ५२ ५५ ५६ ६८ ७९ ८१ ८६ ८०४ १२ १४ १६ ४३ ६५ ७६ ९०६ ७ ८ ९ ८२ ९२ १०४८ ६० ९१ ९५ ११०८ ९ ३६ ३७ ५८ ५९ ६० ७३ ८४ ८५ ८६ १२१४ ३९ ४१ ४३ ४४ ५३ ७४ ७५ तथा १३१०।

नारी सम्बन्धी कतिपय कहावते सम्बन्ध-सूचक कहावतों के अन्तर्गत गिना दी गई है। उनमे माता, बहिन, सास, बहू, मौसी, बुआ आदि का मनोविज्ञान स्पष्ट हुआ है।

(घ) अन्य सामाजिक कहावतें—

इन कहावतो के अन्तर्गत विवाह, आतिथ्य, त्यौहार आदि से सम्बन्धित कहावते आती है। विवाह के लिए वर के सम्बन्ध में कहा गया है कि योग्य निर्धन वर को कन्या दे देनी चाहिए, किन्तु क्षतांग धनी को कन्या नही देनी चाहिए ३६२। विवाहादि मांगलिक कार्यों में गीतवाद्य होना अत्यावश्यक है २८८। विवाह की तनी टूटते ही अतिथियों का प्रस्थान कर देना चाहिए ८७५। विवाह सम्बन्ध अपने योग्य व्यक्तियो से ही करना चाहिए ११५३।

घर आया हुआ व्यक्ति ही अतिथि माना जाता है ३४५। अतिथियों से घर नहीं बसता ७८४। होली, दिवाली, गणगौर, ईद आदि त्यौहारों का उल्लेख भी प्रासंगिक रूप से इन कहावतों में पाया जाता है। इस वर्ग के लिए निम्न कहावते द्रष्टव्य है—

२९ ५४ ८९ ९५ १७८ ९६ २१६ २३ ४० ८८ ९४ ९८ ३४६ ५२ ५७ ६२ ९८ ४२२ ५८ ७० ७२ ८५ ५३४ ३५ ६२५ ९४ ९५ ७१७ १९ ८१ ८४ ८५ ९२ ९७ ८१४ २७ ७५ ७६ ९०८ ११३७ ४७ ४८ ४९ ५३ १२०६ १८ ३२ १३०३ ३६ तथा ३८।

५. दर्शन, भाग्यवाद और कर्मसिद्धान्त सम्बन्धी कहावतें—

हाड़ौती कहावतों मे दर्शन और भाग्यवाद सम्बन्धी कहावतें प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। भारतवर्ष अध्यात्य प्रधान देश है। यहाँ जन्म लेने वाला सामान्य व्यक्ति भी आत्मा और परमात्मा के विषय की बातों से परिचित है। हाडौती प्रदेश के लोग भारतीय दर्शन के तात्त्विक सिद्धान्तों का ज्ञान रखते हैं। यहाँ का लोक दर्शन अद्वैत वेदान्त दर्शन ही है, जिसमें आत्मा और परमात्मा में अभेद समझा गया है ४७। आत्मा के कारण ही शरीर गतिमान है ४५२। स्वर्ग और नर्क कौन देखकर आया है १२००। यह देह नश्वर है इसका कोई भरोसा नही है ४४। अन्तरात्मा की बात सत्य निकलती है ५९। परलोक सुधारने के लिए अच्छे कार्य करना चाहिए ४२। मनुष्य को सासारिक कष्ट तो भोगने ही पड़ते हैं ३०२। संसार मनुष्य को अपनी ओर खींचता है ६१४।

मृत्यु का समय निश्चित होता है ५०६। मृत्यु कहकर नहीं आती १०८०। मृत्यु के बाद सब यही रह जायेगा १०८८।

भाग्यवाद सम्बन्धी कहावतों में मनुष्य के भाग्य और होनहार से सम्बन्धित कहावतें आती है। होनहार होकर रहती है ८। होनहार के सामने प्रयत्न निष्फल है ६। सबके दिन समान नहीं होते ५२६। भाग्यहीन को आराम कही नही मिलता ३८१। सुख की घड़ियाँ थोड़ी होती हैं ३६२।

कर्म के अनुसार फल मिलता है ४४६। अपनी करनी से ही पार उतरा जा सकता है १६। मनुष्य जैसा करेगा वैसा भरेगा ४४४। नीच कर्म करते हुए उच्च पद की प्राप्ति दुर्लभ है १७२।

झूठ-सच और पाप-पुण्य सम्बन्धी कहावतें भी पाई जाती हैं। इनमें झूठ और पाप की घोर निन्दा तथा सत्य और पुण्य की अत्यधिक प्रशंसा की गई है। इस वर्ग के लिए निम्न संख्यावाली कहावते अवलोकनीय है—

८ ६ १६ ३६ ४२ ४४ ५६ ६१ ६२ ६३ १७२ ७३ ७४ ७५ २४५ ३०२ ८१ ८४ ६२ ४४४ ४६ ५१ ५२ ६० ८० ६५ ६६ ६७ ६८ ५०६ २६ ३० ६१४ ७१५ ३३ ३४ ३६ ३७ ८८ ६५ ६६ ८६६ ६३४ १००६ १० २३ २६ ७६ ८० ८८ ११३१ ४३ ८६ ६६ १२०० ११ १२ २७ ५२ तथा १३३२।

६. कृषि तथा ऋतु सम्बन्धी कहावतें—

राजस्थान के अन्य प्रदेशों की भाँति हाड़ौती की अधिकांश जनता खेती पर अपना जीवन निर्वाह करती है। खेती ही यहाँ के लोगो की आजीविका का मुख्य आधार है। इन कहावतों में मनुष्यों के खेती से सम्बन्धित अनुभवों का दिग्दर्शन हुआ है।

खेती में सफलता प्राप्त करने के लिए निर्देश किया गया है कि उसे दूसरे के भरोसे पर न छोड़कर स्वयं सँभालना चाहिए २५६। आषाढ़ का चूका हुआ कृषक फिर नही सँभलता ५२२। गाँव की उपज का अनुमान उसके प्रान्त भाग से ही लगा लिया जाता है ३१०। चने को बुवाई के लिए बाह की आवश्यकता नहीं होती ३७७। यदि किसी वर्ष अकाल पड़े तो उस वर्ष काचरे बहुत पैदा होते है तथा सुकाल के समय जंगली बेर बहुत होते है २१०। कृषि में उपयोगी बैलों के विषय में कहा गया है कि चलते हुए बैल के आर न लगाना चाहिए ३६६। निकम्मा बैल खेत की सात मेड़ तोड़ता है २७८। बकरियाँ आषाढ़ में दुर्बल हो जाती हैं ६११।

भूमि बलशाली के पास ही रह सकती है ४४१। स्वामी के बिना पशुओं की देखरेख नहीं हो पाती ६३१। कृषि को हानि पहुँचाने वाले पशुओं में शूकर का मुख्य रूप से वर्णन किया जाता है ६३४। हाली को पैदावार का अष्टांश दिया जाता है १२।

कृषि सम्बन्धी कहावतो की सख्या निम्न प्रकार है—

१२ ४३ १११ २१० ४८ ५६ ५९ ६८ ७८ ८६ ९३ ३१० १३ १४ १९ ५५ ५९ ७७ ९६ ४४१ ४९ ६९ ६६ ९१ ९६ ९९ ५२२ ३६ ७७ ८८ ६०७ ९ ११-३० ३१ ३४ ८४६ ८८ ९०० २२ १०४७ तथा १२९२।

ऋतु या मास सम्बन्धी कहावतों में कुछ महीनों का वर्णन हुआ है। कही तो उनके शीघ्र समाप्त होने का सकेत है तो कही मानव शरीर पर उनके द्वारा होने वाले प्रभाव निदर्शन हैं। आषाढ़, सावन, भादौं, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष मौर माघ मासों का वर्णन इन कहावतों में हुआ है।

अगहन के महीने को हाँडी के आधन के समान बतलाया गया है ३७। आश्विन मास में कड़ी धूप होती है, वह चमड़ी को जला देती है ७४। पौष में शीताधिक्य होने से शरीर का चमड़ा उतर जाता है ७५९। मासों के लिए निम्न कहावते द्रष्टव्य है—

३६ ३७ ५० ७४ २०० १ ६११ ७५९ तथा १२३६।

७. ज्योतिष एवं शकुन सम्बन्धी कहावतें—

ज्योतिष सम्बन्धी कहावतों मे ग्रह, नक्षत्र, राशि वर्षायोग, दुर्भिक्ष-सुकालादि योग आदि के सामान्य अनुभव व्यक्त हुए है।

ग्रहों की कुटिलता को प्रदर्शित करने के लिए कहा गया है कि ग्रह इतना बुरा करते है, जितना बुरा शत्रु भी नहीं करते २७४। आर्द्रा नक्षत्र में अच्छी वर्षा हो जाती है ४९। दुर्भिक्षयोग के लिए कहा गया है कि यदि मृगशिर नक्षत्र में वायु न चले और ज्येष्ठमास में रोहिणी न तपे, तो निश्चित रूप से अकाल पड़ता है ९९१। बादलों के रङ्ग को देखकर वर्षा का ज्ञान करने के लिए कहा गया है कि तीतर के पख जैसे बादल मीन-मेष का योग नहीं देखते, वे बरसते ही हैं ५४४।

शकुन सम्बन्धी कहावतों मे हाड़ौती का परम्परागत लोक विश्वास निहित है। सभ्य-समाज इन्हें अन्ध-विश्वास समझता है। ये विश्वास भी कई वर्षों के अनुभवों के आधार पर ही बने होगे, ऐसा प्रतीत होता है। हाड़ौती में बुधवार को यात्रा करना अशुभ समझा गया है १००४। किसी शुभ कार्य के लिए तीन व्यक्ति जाये, तो उस कार्य में सिद्धि नहीं मिल सकती ५४६।

ज्योतिष एव शकुन सम्बन्धी परिचय के लिए निम्न कहावते अवलोकनीय है—

४६ २७४ ७५ ३७० ५४४ ४६ ८६ ८०४ ६१ ६६१ १००४ तथा १२०३ ।

८. विद्या एवं ज्ञान सम्बन्धी कहावतें—

हाड़ौती कहावतों में विद्या एव ज्ञान विषयक धारणा भी प्रस्तुत हुई है । विद्या और बुद्धि का सर्वत्र आदर होता है । विद्या पढ़ने की प्रेरणा इन कहावतों द्वारा प्राप्त होती है । एक कहावत में विद्याध्ययन के विषय मे कहा गया है कि पढ़ने से चार आँखे हो जाती है ७६३ । संस्कारो से विद्या प्राप्त होती है ७६१ । मूर्खो को विद्या नही आती १८६ । मूर्खों की बुद्धि पिटने से ठीक होती है ३१६ । आधा पढ़ा हुआ परिवार के लिए घातक सिद्ध होता है ५३ । अनुभव के साथ गम्भीरता बढती जाती है ४८८ । विद्वानों को बाहर ही आदर मिलता है ३४७ । ज्ञानी अथवा गुणवानो के अनेक मित्र हो जाते है १२५३ ।

इस वर्ग के लिए निम्न कहावते अवलोकनीय है—

१ २ ५३ ७० १८६ २१४ ८१ ८२ ३०२ ३ १६ ४७ ४८८ ५१० २८ ५२ ५५ ७४६ ६१ ६३ ६४ ६५ १०१६ ६८ ११६५ तथा १२५३ ।

६. धन सम्बन्धी कहावतें—

समाज का सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार सम्पत्ति से चलता है । हाडौती की रुपये-पैसे सम्बन्धी कहावतो मे स्पष्ट रूप से उल्लेख हुआ है कि संसार का प्रत्येक कार्य पैसे से चलता है ७४१ । पैसे की महिमा के लिए यहाँ तक कह दिया गया है कि पैसा तो पानी में भी रास्ता कर सकता है ७४५ । रुपये पैसे के सब दास है ४७७ । पैसे से संसार में सब कुछ सम्भव है ५४२ । पैसा हृदय खोलकर खर्च करना चाहिए ७४७ । लक्ष्मी स्थिर नही है ३८६ । पैसे से पैसा बढता है ७४२ । खोटा पैसा भी समय पर काम आ जाता है २६२ । इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न कहावते गिनाई जा सकती है—

२६२ ३८६ ४७७ ६० ५०२ ४२ ७३० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ५० १०६४ ११७० ६१ १२७२ तथा १३३३ ।

१०. सामान्य नीति सम्बन्धी कहावतें—

इस वर्ग के अन्तर्गत उन कहावतों को लिया गया है, जिनमे जीवन को

सुखमय बनाने के लिए निर्देश व उपदेश दिये गये है। शत्रु और मित्र से किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। मानव धर्म के अनुकूल आचरण से कौन-कौन लाभ हैं। समाज में पारस्परिक व्यवहार कैसा होना चाहिए। ऐसी कौनसी बाते हैं, जो जीवन को कष्टमय बनाती है। विषम परिस्थितियो में मनुष्यों को क्या करना चाहिए। समाज का हित करने वाली प्रवृत्तियों के प्रति मनुष्यों का विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया गया है।

मनुष्यों को सन्तोषी बनने का उपदेश देते हुए कहा गया है कि बिना माँगे मोती मिल जाते हैं और माँगने पर भीख भी नही मिलती ७। सदैव सावधान रहना चाहिए। असावधानी से भारी हानि सम्भव है १०। कार्य व्यवहार से ही मनुष्य के शील एवं कुल की प्रतीति होती है २३। बहूमूल्य होने पर भी हानिकर वस्तु त्याज्य है २५। अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए ३१। अपनी परिस्थिति से सदैव सन्तुष्ट रहना चाहिए ४३। दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप करना अच्छा नहीं है ५६। श्रेष्ठ व्यवहार की सर्वत्र प्रशंसा होती है ६१। आलस्य कार्य का बाधक है २६। स्वयं उद्योग करना चाहिए, पराई आशा करना व्यर्थ है ७१। शक्तिशाली के सामने निर्बल की उचित बात भी नही चलती ९४। आश्रयदाता के सामने कोई अनैतिक कार्य नही करना चाहिए ११४। अपने दुःख को प्रकट कर देना श्रेयस्कर है १२९। नकारात्मक उत्तर अनेक आपत्तियों से पीछा छुड़ा देता है १३३। सहयोग के बिना समाज नही चलता १३५। सेवा का फल अवश्य मिलता है, अतः सेवा कार्य में सदैव आगे रहना चाहिए १७६। काँटा काँटे से निकलता है १९२। धर्म के लिए शरीर की तथा व्यापार के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए २०८। दुर्वचन बोलना अच्छा नहीं है २२६। अत्याचारी को डरा अवश्य देना चाहिए २४४। मनुष्य को सहनशील होना चाहिए ३०८। मूर्ख के दुर्वचनों पर ध्यान नही देना चाहिए ३१७। सामर्थ्य के अनुसार व्यय करने से मनुष्य कष्ट नही पाता ३३७। दुष्ट के प्रति दुष्टता का बर्ताव करना चाहिए ४४२। समयानुसार काम करने से लाभ होता है ४४६। शत्रु को अपनी सहायता के लिए बुलाना अच्छा नही है ८३१। विगत की चिन्ता न करके भावी को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए ९०१। आपत्तिजनक कार्य को विचारपूर्वक करना चाहिए १०९३। दूसरों का आदर करने पर ही अपना आदर हो सकता है ११०३। कार्य सुधारना हो तो अधिक व्यवस्थापक नहीं रखने चाहिये ११८३।

सामान्य नीति सम्बन्धी कहावतों की सख्या अन्य कहावतों की अपेक्षा अधिक है। इनके अध्ययन के लिए अगले पृष्ठ पर अङ्कित कहावते द्रष्टव्य है—

७ १० १३ १८ २३ २५ ३१ ३२ ४३ ४६ ५२ ५६ ५७ ५८ ६१ ६३ ६५ ६७ ६८ ६९ ७१ ७३ ७९ ८० ८३ ८७ ८९ ९२ ९४ ९५ ९६ ९८ १०८ ११ १४ १८ १९ २३ २८ २९ ३३ ३५ ३८ ४० ४३ ४५ ४६ ४८ ५१ ५५ ५६ ६३ ६५ ६६ ७१ ७६ ७७ ८० ८५ ८७ ८८ ८९ ९१ ९२ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ २०२ ३ ४ ६ ७ ८ ९ ११ १७ २० २१ २४ २५ २६ २७ २८ ३० ३३ ४० ४२ ५५ ७२ ७६ ८१ ८७ ९० ९१ ९६ ३०५ ८ ९ १४ १६ १७ १८ १९ ३४ ३७ ४२ ४४ ५२ ५६ ५७ ५८ ५९ ६१ ६६ ६५ ९६ ९८ ४१० १३ १७ २३ २४ ३३ ४२ ४३ ४६ ५० ५४ ५८ ६१ ६७ ६९ ७३ ७४ ७५ ७८ ९० ५०४ ११ १२ १३ १९ २० २१ ३१ ३२ ३५ ३८ ५१ ५७ ५८ ६० ६१ ६२ ६४ ६९ ७३ ७६ ७९ ९१ ९३ ९४ ९५ ९६ ६०७ १६ २६ २८ ६० ६१ ६२ ६७ ७९ ८५ ८८ ८९ ९० ९६ ७०२ ११ १२ ४८ ६६ ७३ ७७ ७८ ८० ८१ ८२ ८७ ८०० ६ ७ १७ २० २१ २६ २८ ३१ ३३ ३४ ३८ ४८ ७६ ९१ ९०१ १३ १८ २२ २८ ३३ ३८ ६० ६२ ६३ ६४ ६७ ६८ ६९ ७३ ७७ ९२ ९३ ९६ ९७ ९८ १००९ ३२ ९६ ९९ ११०३ ५ १० ११ १२ १९ २८ ३० ५९ ७९ ८३ ८७ ९३ १२०१ ४ ७ ८ १२ २२ २५ ३० ४४ ४५ ५० ५४ ६० ६१ ६९ ७३ ८० ८४ ९१ ९६ ९८ १३०४ १६ १७ तथा २४ ।

११. मनोविज्ञान सम्बन्धी कहावतें—

इस वर्ग के अन्तगत भिन्न-भिन्न प्रकृति के मनुष्यो का मनोविज्ञान चित्रित हुआ है । परिस्थिति विशेष मे किस प्रकृति का मनुष्य क्या करता है, विशेष अनुभवशील मनुष्य अपने अनुभव का कैसे लाभ उठाता है, आपत्ति के समय मनुष्य क्या करता है, इत्यादि विचार इन कहावतों में पाये जाते हैं ।

एक कहावत मे कहा गया है आपत्ति के समय मनुष्य अपनों की याद अवश्य करता है १२१ । मूक व्यक्ति का रहस्य समझ में नही आता २१२ । दुर्बल व्यक्ति सबल से न जीतने पर अपने से कमजोर पर क्रोध करता है २३७ । मानवता से गिरे हुए मनुष्यो का मनोविज्ञान बतलाते हुए उन्हें कुत्ते आदि के समकक्ष बतलाया गया है कि कुत्ते की पूँछ बारह वर्ष तक बाँस की नली में रखो, फिर भी सीधी नहीं होती २२० । मूर्ख व्यक्ति सब कामो में आगे रहता है २८४ । मनुष्यों का ध्यान आवश्यकता की वस्तु पर अवश्य जाता है, जैसे किसी का गाड़ा टूट जाने पर उसका चित्त बबूल के पेड पर जाता है २९७ । गूँगे की गति को गूँगा ही जानता है ३२९ । चोर की मा चुपके चुपके रोती है ४१४ । किसी काम से हानि उठाया हुआ व्यक्ति उस कार्य को बड़ी सावधानी के साथ करता है ६०५ । प्रत्येक

व्यक्ति अपने अवगुणों को छिपाकर रखता है ६३७ । कुपात्र को शिक्षा देने से स्वय की हानि होती है ६६२ । आपद्ग्रस्त निर्धन को सभी सताते है ६६७ । मार के मारे भूत भागते है १०४४ । सम्पत्ति मे पले व्यक्ति को सब ओर धन ही धन दिखाई देता है १२३४ ।

कही कही बाल मनोविज्ञान भी मिलता है । बालकों की स्वच्छन्द प्रकृति को प्रदर्शित करते हुए कहा गया है कि बालक तो बादशाह होते है ८८५ । निम्न कहावतों मे मानव मनोविज्ञान के दर्शन होते है—

११ १७ २३ ५८ ६० ७६ ८० १०४ १० २० २१ २४ ५३ ८१ २०५ ६ १२ १८ २० २१ २४ २५ २६ २७ ३७ ३८ ४७ ७५ ७८ ८४ ८५ ६७ ३१५ १८ २६ ८३ ८५ ६७ ४१४ १५ १८ १६ ३८ ४३ ४५ ५७ ६० ७१ ७४ ७५ ८२ ८४ ८५ ५१४ ३१ ६६ ७५ ८० ८८ ६०५ ७ १३ १५ ३७ ३८ ४४ ४५ ४७ ५३ ५६ ७३ ७७ ६३ ७२० २५ ४० ६६ ८०१ १३ २८ ३६ ३६ ४१ ४२ ४३ ४५ ६२ ७१ ८२ ८५ ६४ ६२५ २६ २७ २६ ३७ ८३ ८६ ८८ ६७ ६८ १०४४ ४७ ५५ ६६ ७० ७४ ६० १११२ १३ ३८ ३६ ४० ४१ ४३ ५१ ५६ ६१ ७३ ७८ ८४ ८५ तथा १२३४ ।

१२. प्रकीर्ण कहावतें—

प्रकीर्ण कहावतो मे स्वास्थ्य, वृक्ष-वनस्पति, पशु-पक्षी, सरीसृप तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित कहावते सम्मिलित की गई है । उनका सक्षिप्त अध्ययन निम्न प्रकार है—

(अ) स्वास्थ्य सम्बन्धी—

स्वास्थ्य से सम्बन्धित कहावतो मे अन्न, भोजन, स्वच्छता के अतिरिक्त स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य बातों का अध्ययन किया गया है । जैसे खाने की वस्तुओं को पैर से नही कुचलना चाहिए १६ । पसीने मे पानी नही पीना चाहिए ७२७ । शरीर को कष्ट देकर धर्म पालन मे कोई लाभ नही है २०८ । जैसा अन्न खाया जायेगा वैसा मन बनेगा ४५१ । यह आयुर्वेदिक तथ्य है कि अन्न के सूक्ष्म अश से मन बनता है । अतः शुद्ध अन्न के ग्रहण का उपदेश इस कहावत में दिया गया है ।

स्वास्थ्य सम्बन्धी कहावतों में भोज्य और पेय पदार्थ से सम्बन्धित कहावतों का अवलोकन भी करना उचित प्रतीत होता है । विभिन्न खाद्य पदार्थों के नाम इन कहावतों मे आये है । जो पदार्थ हाडौती लोक के उपयोग में आते है,

उन सबका नाम किसी न किसी प्रकार इन कहावतों में मिल जाता है। सामान्य पदार्थों से गेहूँ, चने, ज्वार, जौ, झोझरू, चावल, मूँग, शक्कर, घी, गुड़, राई, तिल, तेल, नमक, हल्दी, फिटकरी के नाम आये हैं। पकानों में मोतीचूर, लड्डू, पेड़े, पुये, गुलगुले, सीरणी, सेव और पापड़ी का नाम आया है। पेय पदार्थों में दूध, छाछ, खीर व राबड़ी का उल्लेख हुआ है। रोटी और साग का वर्णन तो यत्र तत्र मिल ही जाता है। ऐसी भी कहावते है, जिनमें मांस और शराब का नाम आता है १०५१। कुछ कहावतें ऐसी भी हैं जिनमें पान, सुपारी और तमाखू का नाम मिलता है। उपर्युक्त कहावतों के लिए निम्न कहावतें द्रष्टव्य हैं—

१४ १५ १६ ३३ ६५ १६८ २०८ २८ ८२ ३२० २१ २२ २३ २५ २६ ५३ ५४ ६० ६३ ६४ ७५ ७६ ७७ ७६ ६६ ४०० १ २० ३६ ६० ६६ ६३ ५०० ६ ५७ ५८ ५६ ६६ ६७ ६०८ ६ २५ ७२३ २५ २७ ३१ ७० ७२ ७३ ७४ ७७ ८८ ८२२ ६७ ६२० ५१ ७२ ७४ १०२७ ३२ ५१ ६५ ६६ ११०१ ३४ ३५ ३६ ७७ ६१ १२७२ ७४ ८८ ६४ तथा १३२७।

(आ) वृक्ष-वनस्पति सम्बन्धी—

इन कहावतों में उन वृक्षों और क्षुपों के नाम मिलते हैं, जो इस भूमि में पैदा होते हैं। इन क्षुपों और वृक्षों का उपयोग घर में काम आनेवाली वस्तुओं के निर्माण कार्य में, औषध रूप मे अथवा वैसे ही खाने के काम मे किया जाता है। वृक्षों में आम, नीम, नीबू, पलाश, आँवला, खैर, बबूल, खेजड़ा, पीपल, लिसोड़ा, इमली व खजूर का नाम आया है। क्षुपों में अर्क, गुलाब व कटुतुम्बी का नाम है। नारंगी और खरबूजे का वर्णन भी इन कहावतों में पाया गया है। जिन कहावतों में ये नाम आये हैं, वे निम्न प्रकार हैं—

२८ ६५ ७५ ७६ ६७ ६८ ६६ १०१ ११ २३४ ३६ ४० ६७ ३२२ २८ ८८ ४२४ ६० ५५६ ७६१ ८४१ तथा ११६६।

(इ) पशु-पक्षी व सरीसृप सम्बन्धी—

हाड़ौती कहावतों में पशु-पक्षियों के नाम अनेकशः मिलते हैं। मनुष्यों की विशेष प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन किसी पशु विशेष की प्रवृत्ति से कराया जाता है। जैसे दुष्टों की समानता बतलाने के लिए कौआ और कुत्ता प्रयोग में लाया गया है। कहा गया है कि कौवे के शाप से ढोर नहीं मरते १८७ अर्थात् दुष्ट के अपलाप सत्य नहीं होते। कौवे की नीयत सदा विष्ठा की ओर रहती है १८८ आदि। पालतू पशुओं में गाय, बैल, भैंस, घोड़ा, ऊँट, भेड़, बकरी, हाथी, गधे और कुत्ते के नाम आये हैं। जंगली प्राणियों में शेर, चीता, बन्दर, सूअर, सियार और बिलाव का, छोटे प्राणियों में खरमोश, गोह, गिलहरी, गिरमिट, मुर्गा, छछूँदर और चूहे का, पक्षियों में चिड़िया, चील, हंस तीतर, मोर, बटेर, उल्लू, चातक और चकवे का तथा

सरीसृपादि व कीटादि जन्तुओं में सर्प, दुमुही (चकलौड), कछुआ, केंचुआ, मेढक, मच्छर, मक्खी, जूँ और चीटी का उल्लेख हुआ है। इनकी जानकारी के लिए निम्न कहावतें अवलोकनीय है—

२७ ११७ १८ १९ २० २१ २४ ५२ ६१ ६३ ६८ ८६ ८७ ८८ ९३ २०१ २१ २२ २५ ५० ५१ ६० ६६ ६७ ६८ ७८ ८० ८३ ८६ ८७ ९१ ९२ ३०१ १४ ३० ३५ ३८ ४३ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ८८ ९० ९६ ९७ ४०३ ४ ६ ७ ८ २६ २८ ४३ ५४ ६७ ८३ ९१ ५०१ १४ २२ ४५ ७५ ६०७ २४ २९ ३४ ६५ ८६ ८७ ७१७ ९४ ८०१ ६ २१ २३ ३७ ३८ ३९ ४० ४२ ६२ ६३ ८७ ९२५ २६ २७ २८ २९ ३८ ५३ ६८ ८८ १०२० २१ ३४ ६२ ६३ ८३ ८७ ११४० ४२ १२०९ १० २० २१ २२ २३ २४ २५ २९ ३८ ४८ ५६ ५८ ६९ ९५ १३१४ १५ १६ १७ १९ २१ तथा २२ ।

(ई) साहित्यिक अभिव्यक्ति—

इस वर्ग के अन्तर्गत उन सब कहावतों को समेटा गया है, जिनमे किसी बात को साधारण रूप से न कहकर विशेष ढग से कहा गया है। रूपक या अन्योक्ति अलङ्कारों द्वारा भी भावों की अभिव्यक्ति की गई है। जैसे एक प्रश्नोत्तर के रूप मे वक्रोक्ति द्वारा कहा गया कि कानी चाची छाछ रखोगी ? इस पर चाची कहती है कि तेरे लक्षणों से तो दूध रखूँगी १८१। एक अन्य कहावत में कहा गया है कि पैरो की धूल भी सिर पर आती है ७०३। निस्तेज व्यक्ति में भी अत्यधिक अत्याचार से तेज प्रकट हो जाता है—इस बात की ध्वनि उक्त कहावत द्वारा निकलती है।

इस वर्ग में कुछ न्यायसूत्र भी आते है। संस्कृत के अधगजादि न्यायों की भाँति हाडौती मे भी कुछ न्यायसूत्र मिलते है। जैसे एक न्याय में कहा गया है कि मेरे टोड़े की चक्की है और तुम्हारा टोड़े में ससुराल है, इसलिए हम और तुम साढू साढू हुए १०५३। यह न्यायसूत्र संस्कृत के बादरायण न्याय के समान है।

बात या कहानी पर भी कुछ कहावतें आई हैं। ये कहावतें बात कहने से पूर्व भूमिका के रूप में कहानी कहने वाला कहा करता है। इनमें बात की सरसता, लक्षण और विशेषताओ का वर्णन मिलता है। बात शक्कर जैसी मीठी होती है ८५८। बात का उद्देश्य जनमनरंजन है ८५९।

साहित्यिक अभिव्यक्ति के अन्तर्गत ये कहावतें अवलोकनीय हैं—

३ ४ ११ १३ १७ २० २६ ३८ ३९ ४० ४२ ४५ ४८ ५५ ६४ ६७ ६८ ७२ ७७ ७८ ८१ ८२ ८४ ८५ ८६ ८८ ९० ९१ ९३ १०१ २ ३ ७ १२ १३ १५ १७ १८ २७ ३२ ३४ ६० ६७ ७९ ८१ ८२ ८३ ८४ २१४ ४६ ५५ ६९ ७० ८४ ९५ ३४९ ५१ ५५ ५७ ६३ ६५ ७४ ८२ ८७ ८९ ४०९ १० ३१ ३२ ३६ ३७ ३८ ५३ ५६ ६३ ६४ ६६ ७२ ७३ ५०२ ७ २० २६ ३६ ४८ ६८ ७३ ७७ ८३ ८९ ६०३ १७ १८ ३५ ४१ ४७ ५८ ७८ ८५ ९३ ९८ ७०३ १३ ३८ ३९ ५६ ६० ८३ ८७ ८०२ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ९० ९३ ९९ ९०४ ५ १४ ४१ ७० १००२ ५३ ८१ १११४ ७२ ८१ ९९ १२२४ ७८ ७९ तथा ८६ ।

शुभाशंसा

भाषा जाति का जीवन है और साहित्य जीवन का जीवन; किन्तु कहावतें तो भाषा और साहित्य का हार्द हैं।

सच तो यह है कि कहावतें किसी भी जाति और देश की आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक बुद्धि की मंजूषा हैं। इनमें प्रायः सभी बातों के सूत्र रूप में अमूल्य आदेश-निर्देश, निर्णय और पुरातन अनुभव रहते हैं। एमर्सन तो कहावतों के विषय में यह भी कहते हैं कि प्रत्येक जाति की कहावतें उसके अपने पवित्र ग्रन्थ और सहजबोध के आश्रयस्थल हैं।

यही कारण है कि विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में कहावतों पर कुछ न कुछ साहित्य विद्यमान है, किन्तु हाड़ौती जैसे सर्वगुण सम्पन्न और ऐतिहासिक प्रदेश की कहावतों पर कोई नाम लेने योग्य पुस्तक नहीं है। यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि डॉ० श्री नाथूलाल जी पाठक ने "हाड़ौती कहावतें" द्वारा इस दुःखद अभाव की पूर्तिकर हिन्दी वाङ्मय को एक अपूर्व और बहुमूल्य ग्रन्थ प्रदान किया है।

इनके प्रारम्भिक, किन्तु भव्य उद्योग से यह विश्वास होता है कि भविष्य में भी इनके द्वारा वीणापाणि सरस्वती के श्री चरणों में इससे भी अधिक सुन्दर और मौलिक वस्तुएँ समर्पित होती रहेंगी।

सद्यस्वर्गता

विद्यावारिधि पं० रामनिवास शर्मा

सौरभ, झालावाड़

मुद्रणाक्षर संकेत

▼

प्रस्तुत ग्रन्थ मे जिन कहावतों का अध्ययन किया गया है, उनको सर्व प्रथम मोटे अक्षरो मे छापा गया है। मूल कहावत के नीचे प्रायः उसी से मिलता जुलता हिन्दी रूपान्तर दिया गया है। तदनन्तर काले अक्षरों मे कहावत का भावार्थ समझाया है। भावार्थ के पश्चात् सामान्य अक्षरो में कहावत का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण के अन्तर्गत कहावत के प्रयोग के प्रसंगादि का निर्देशन भी यत्र तत्र कर दिया है। कहानी के आधार पर बनी हुई कहावत के नीचे उसकी संक्षिप्त कहानी लिख दी गई है। विशेष टिप्पणी और ऐतिहासिक घटनाओ का भी यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है।

मूल कहावतों के ऊपर कुछ खड़ी रेखायें, शब्दों के मध्य मे अल्प विराम तथा ल के नीचे बिन्दु का चिन्ह लगाया है। कहावतों में प्रयुक्त वर्णों का यथावत् उच्चारण करने के दृष्टिकोण से ये चिन्ह लगाये गये है।

हाड़ौती मे कुछ ध्वनियाँ ऐसी है, जिनके लिपि-निबन्धन में कठिनाई दृष्टिगोचर होती है। वर्णो के ऊपर लगी हुई सीधी खड़ी रेखा से उस वर्ण के उच्चारण में प्रयुक्त दीर्घअकार की ध्वनि का बोध कराया गया है। इसी प्रकार अल्पविराम से पूर्ववर्ण में प्रयुक्त मात्रा की दीर्घता को प्रदर्शित किया गया है। जैसे 'अणी चूकी'र धार मारी'–यहाँ की में लगे हुए ई के स्वर की दीर्घता प्रकट करने के लिए यह अल्प विराम का चिन्ह लगाया गया है। ल की विशेष ध्वनि के लिए उसके नीचे बिन्दु का प्रयोग किया गया है।



वर्णानुक्रम

कहावतों का अध्ययन कोष क्रम से प्रस्तुत किया गया है।



वर्ण	पृष्ठ
अ	१
आ	८
इ	२३
ई	२४
उ	२४
ऊ	२५
ए	३०
ओ	३४
अ	३६
क	३६
ख	५४
ग	६२
घ	७६
च	८६
छ	९८
ज	१०१
झ	११६
ट	११७
ठ	११६
ड	१२१
ढ़	१२४
त	१२४
थ	१३२
द	१३४
ध	१४७
न	१४६

वर्ण	पृष्ठ
प	१६३
फ	१७७
ब	१८५
भ	२१२
म	२२३
य	२४६
र	२५०
ल	२६१
व	२६७
स	२६८
ह	२६३




हाड़ौती कहावतें
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

हाड़ौती कहावतें

अ

१. **अक्कल को मारीई बोझ्यां मरचो जाव छ।**

अक्ल के मारे ही बोझो मरा जाता है।

अपनी बुद्धि को सर्वश्रेष्ठ समझना।

जब कोई अपनी बुद्धि को ही सर्वश्रेष्ठ समझकर किसी को अनुचित पथ पर चलने का परामर्श दे तथा दूसरो की उचित बात की अवहेलना कर अपनी बात का समर्थन अपुष्ट प्रमाणों द्वारा करता रहे ; तब इसका प्रयोग किया जाता है।

इस कहावत में व्यंग्य के साथ अमर्ष भी दिखाई देता है।

२. **अक्कल बडी'क भैंस।**

अक्ल बड़ी या भैंस।

शारीरिक शक्ति से बुद्धि श्रेष्ठ है।

कोई व्यक्ति अपनी बुद्धि से किसी बलवान पर विजय प्राप्त कर ले; तब इसका प्रयोग किया जाता है।

इसी प्रकार "**अक्कल बडी'क भैंस**" का भी प्रयोग देखा गया है। यहाँ आयु की अपेक्षा बुद्धि को प्रधानता दी गई है।

३. **अठो को दन अठी उग्यायो ।**

इधर का दिन इधर उदय हो गया ।

कोई अप्रत्याशित कार्य हो जाना ।

प्रकृति के विरुद्ध जब कोई व्यक्ति अप्रत्याशित कार्य कर बैठे, तब विस्मय के साथ इस कहावत का प्रयोग होता है ।

यहाँ पर "अठी को दन उठी उग्यायो" होना चाहिये था, किन्तु हस्त-सकेतो की अपेक्षा होने से दोनो स्थलों पर "अठी" का ही प्रयोग हुआ है ।

४. **अठी को लोठचो उँठी बी उठा'र न मल ।**

इधर का लोठा उधर भी उठाकर नही रखता ।

कोई भी कार्य नहीं करता ।

इस कहावत का प्रयोग किसी कामचोर व्यक्ति के लिए अथवा किसी के ऐश्वर्य-प्रदर्शन के लिए किया जाता है ।

५. **अठी जावं तो क्वो अर उँठी जावं तो खाई ।**

इधर जावे तो कुँआ और उधर जावे तो खाई ।

द्विविधा में फँस जाना ।

जब कोई व्यक्ति द्विविधा मे पड जावे और किकर्त्तव्यविमूढ होकर कोई काम न करने पावे, तब इसका प्रयोग किया जाता है । "भई गति साँप छछूँदर केरी" मे भी यही भाव दिखाई देता है ।

६. **अणता को गूँण फलायथ पटकणी ।**

अन्ता की गोणी पलायथा डालनी ।

अपने कार्यको येन केन प्रकारेण पूरा करना ।

जब किसी कार्य को जैसे बने वैसे करना ही पडे, तब इसका प्रयोग किया जाता है ।

टिप्पणी – हाड़ौती के कोटा जिले के अन्तर्गत अन्ता और पलायथा दो कस्बे हैं। उनके बीच चार मील का अन्तर है। मोटर आदि यानों के आविष्कार से पूर्व

बोझा ढोने का काम बैलों से लिया जाता था। "गूंण" बैलों पर लादे जाने वाले बोरे को कहते हैं।

कहावत की उत्पत्ति—एक बार अन्ते का सारा खज़ाना कोटा लाया गया। खज़ाने के स्थानान्तरण का कार्य पलायथावाले आप साहब की देखरेख में हो रहा था। दिन में द्रव्य के बोरे पुलिस की निगरानी में सीधे कोटा पहुँचते थे, किन्तु रात में उस रास्ते से निकलने वाली सवारियों पर द्रव्य की बोरियाँ बलात् लाद दी जाती थीं और कह दिया जाता था कि यह तो अन्ते की गौण है, पलायथा डालनी ही पड़ेगी।

७ **अणमाँग्या मोती मलै माँगी मलै न भीख।**

बिन माँगे मोती मिले, माँगी मिले न भीख।

सन्तोषी सदैव लाभ में रहता है।

सन्तोषी को सब कुछ मिल जाता है, किन्तु असन्तोषी को प्रयत्न करने पर भी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती।

८. **अण होणी होव नहीं, होणी हो सो होई।**

अनहोनी होवे नहीं, होनी हो सो होय।

होनहार होकर रहती

भवितव्यता को कोई नहीं मिटा सकता। भाग्यवाद का सिद्धान्त हाडौती समाज में भी एक स्वर से स्वीकार किया जाता है। जिन कार्यों में मनुष्य का बस नहीं चलता, वहाँ इस कहावत का प्रयोग सान्त्वनादायक सिद्ध होता है।

९. **अणहोत भाटा सूं गाढ़ी।**

अनहोनी पत्थर से कठोर।

होनहार के सामने प्रयत्न निष्फल हैं।

होनहार हो चुकने पर आत्मसन्तोष करते हुए इसका प्रयोग किया जाता है।

१०. **अणी चूकी'र धार मारी।**

अनी चूकी और धार मारी।

तनिक सी असावधानी से भारी हानि हो सकती है।

बड़ी सावधानी के साथ कार्य करने पर भी यदि थोड़ी सी भूल से काम बिगड़ जाये तो इसका प्रयोग किया जाता है।

११. **अतरा ज्यूँई सतरा अर सत्यानास ज्यां सवा सत्यानास।**

इतने जैसे ही सतरह और सत्यानास जहाँ सवा सत्यानांस।

किसी आवश्यक कार्य में व्यय-वृद्धि के प्रति उपेक्षा।

अब कोई व्यक्ति किसी कार्य में व्यय करता है तब उस व्यय मे अकस्मात् कुछ वृद्धि हो जाने पर वह इस कहावत का आश्रय लेकर सान्त्वना प्राप्त कर लेता है।

१२. **अधेली मँ पावली, हालण फर उतावली।**

अधेली मे पावली, हालिन फिरे उतावली।

आंशिक अधिकार प्राप्त व्यक्ति द्वारा स्वामित्व-प्रदर्शन।

किसानो के यहाँ जो व्यक्ति काम करते है, उन्हे हाडौती प्रान्त मे हाली कहते है। उन्हें पैदावार का अष्टांश मिलता है। काम करते समय हालिन साथ मे काम करने वाले मनुष्यो से इस प्रकार व्यवहार करने लगती है कि मानो स्वामिनी वही हो।

१३. **अणभूल नँगरी, बेभूल राजा, टक सेर भाजी, टक सेर खाजा।**

अधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

भली और बुरी वस्तु में कोई भेद न समझा जाना।

अबोध शासक के राज्य में गुणों के प्रति आदर तथा अवगुणो के प्रति अनादर नही किया जाता, उसके राज्य मे अच्छे बुरे समान ही समझे जाते है।

"अन्यायी पुर में बिकें, खल गुड़ एक ही भाव" में भी इसी भाव की व्यंजना मिलती है।

१४. **अन्न स्वाँणा प्राण, प्राण स्वाँणा प्राक्रम।**

अन्न से प्राण, प्राण से पराक्रम (है)।

अन्न के बिना शरीर में शक्ति का संचार नहीं होता।

कई दिनों से भोजन न किये हुए दुर्बल मनुष्य की स्थिति को देखकर इस कहावत का प्रयोग होता है।

१५. अन्न सूं मर, काम सूं न मर।

अन्न से मरे, काम से नही मरे।

शरीर के लिये परिश्रम अति आवश्यक है।

परिमाण से अधिक भोजन करलेने पर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो सकता है, किन्तु परिमाण से अधिक श्रम से नही मर सकता। किसी कामचोर व्यक्ति के लिए सदुपदेश के रूप में इसका प्रयोग होता है।

१६. अन्न देव क लात न लगाणो।

अन्न देव के लात नही लगाना।

भोज्य-पदार्थों का देवता के समान आदर करना चाहिये।

जब कभी बच्चे भोजन करते समय थाली को लात मार दे अथवा रोटी को पाँव तले खूँदे, उस समय उनको यह उपदेश दिया जाता है।

१७. अँदोखो का पूत, म्हारा कान मँई मूँत।

अनोखी के पुत्र मेरे कान में ही मूत।

अत्यधिक प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं।

जब किसी का प्रिय पुत्र अथवा सम्बन्धी अधिक उच्छृङ्खल हो तथा अपनी हठवादिता एव उदण्डता के कारण दिन भर तोड-फोड़ करता रहे, तब रोष भरे स्वर में यह कहावत कही जाती है।

१८. अन्धायो अर सूरमा जद चाल जद सद्द।

अन्यायी और सूरमा जब चलें तभी सिद्ध (अच्छा मूहर्त्त) है।

अन्याय की निन्दा तथा शौर्य की प्रशंसा।

अन्यायी तथा योद्धा आगे पैर बढाते समय मुहूर्त अथवा शकुन का विचार नही करते।

१९. अपणो करणो पार उतरणो।

अपनी करनी पार उतरनी।

अपनी करनी से ही पार उतरा जा सकता है ।

यदि अच्छे कार्य किये जायेंगे तो भव सागर से पार हो सकते हैं; अन्यथा फिर जन्म लेना पडेगा । किसी मनुष्य के बुरे कार्यो की आलोचना होने पर यह कहावत कहकर बात की समाप्ति कर दी जाती है ।

२०. **अब काँईं माखो न छींक द्यो ?**

अब क्या मक्खी ने छींक दिया ?

कहने से काम नहीं चलता, अब भी करने का अवसर है ।

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य के अवसर को निकला हुआ जानकर कार्य-कर्त्ताओं की विडम्बना तथा अपनी कार्य-शक्ति की डींग हाकता हो तब उसमे व्यग्य मे यह कहा जाता है कि अब कांई मक्खी ने छींक द्यो ?

२१. **अब तो साबण मँईं ईमान कोई न ।**

अब तो साबुन में ही ईमान नही ।

आधुनिक समाज में ईमानदारी का महत्त्व नहीं रहा ।

अपने कर्त्तव्य से च्युत मनुष्यो मे अर्थ-शुचितादि गुणो का अभाव देखकर इसका प्रयोग होता है ।

२२. **अबारई क्वो खोद'र अबारई फाणी खाडो ।**

अभी ही कुँआ खोदकर अभी ही पानी निकालो ।

अधिक समय की अपेक्षा रखने वाले कार्य में शीघ्रता करवाना ।

किसी बडे एव आवश्यक कार्य को पूरा अवसर न देकर अत्यधिक शीघ्रता की जावे, तब इसका प्रयोग होता है ।

२३. **असल लाज, छन्याल गाज ।**

असल (कुलशील) लजाती है, छिनाल (चरित्रहीन) गरजती है ।

कार्य व्यवहार से ही मनुष्य के शील एवं कुल की प्रतीति होती है ।

कुलीन व्यक्ति से अपराध हो जाने पर वह लज्जा का अनुभव करता है, किन्तु निर्लज्ज व्यक्ति लज्जास्पद कार्य करके भी उसपर विवाद करने लगता है ।

२४. **असी रॉंड को कॉंईं खणो, खन्दो खाड घड़ाव गणो ।**

ऐसी रॉंड का क्या कहना जो कन्दी निकलवाकर गहना घडाती है ।

कर्जा लेकर शौक पूरा करना अच्छा नहीं ।

अनावश्यक कार्यो के लिए रुपया उधार लेने वालों के प्रति यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

२५. **अस्यो कॉंईं सूॅंनों जोसूॅं कान टूट ।**

ऐसा क्या सोना जिससे कान टूटे ।

बहुमूल्य होने पर भी हानिकर वस्तु त्याज्य है ।

जब किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के द्वारा कोई शारीरिक या आर्थिक क्षति हो, तब यह कहावत कही जाती है ।

२६. **अस्यो काल तो छप्पन मॅं बी न पड़्यो ।**

ऐसा काल तो सवत् १९५६ मे भी नही पडा ।

वर्तमान परिस्थितियॉं भयंकर अकाल से भी बुरी हैं ।

विक्रम स० १९५६ मे हाड़ौती प्रान्त मे ही नही वरन् समस्त भारत मे एक भयंकर दुर्भिक्ष पडा था । उस समय में तथा आज के समय में यह अन्तर है कि उसमें धन के अभाव में लोग मरते थे, किन्तु आज खाद्यान्नो की कमी से लोग मरते है ।

२७. **अस्यो डरप छै जस्याँ तीरसूॅं कागलो ।**

ऐसा डरता है जैसे तीर से कौआ ।

अत्यधिक भयभीत होना ।

भय का साम्य प्रदर्शित करने के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

टिप्पणी—इस कहावत का उद्गम रामायण की एक कथा से है—"जयन्त ने कौवे का रूप धारण कर सीताजी के चरणों में चोंच से प्रहार किया । श्रीराम ने उसे मारने के लिए बाण छोड़ा ' उस बाण द्वारा पीछा करते रहने के कारण वह अपनी रक्षा नहीं कर पाया । अन्त में श्रीराम ने ही उसे बचाया । तभी से कौवे की जाति तीर से अत्यधिक भयभीत होती है ।

२८. **अस्यो नसळ्यो जस्यां लसोड़ा को गुठली ।**

ऐसे फिसला जैसे लिसोड़े की गुठली ।

कार्य से जी चुराकर भागना ।

जब कोई व्यक्ति अधिक व्यक्तियों के बीच से चुपचाप निकल जावे अथवा किसी प्रकार बहाना बनाकर कार्य करने से मना कर दे, उस समय इसका प्रयोग होता है ।

आ

२९. **आई छी मलबा, लगादो दलबा ।**

आई थी मिलने और लगादी दलने ।

आये हुये अतिथि का सत्कार न करना ।

मिलने के लिए आये हुये व्यक्ति से कोई व्यक्तिगत कार्य लेने पर लोक निन्दा के रूप मे इस व्यगोक्ति का प्रयोग होता है ।

३०. **आई बू आयो काम, गी बू ग्यो काम ।**

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम ।

परिवार वृद्धि पर ही कार्य वृद्धि निर्भर है ।

एक गृहस्थ के घर मे नव-वधू का आगमन भी उत्सव, पर्व आदि के समान ही समझा जाता है । उसके आगमन पर गृहस्थ के कार्यो मे वृद्धि हो जाती है और उसके मायके चले जाने पर कार्य में न्यूनता आ जाती है ।

३१. **आई प चूक ऊँ प जगत थूँक ।**

आई पर चूके, उस पर जगत थूके ।

अवसर को हाथ से कभी नहीं जाने देना चाहिये ।

किसी अवसर पर हताश होकर या जानबूझकर मौका छोड़ देने वाले व्यक्ति के प्रति यह उक्ति कही जाती है ।

३२. **आई लक्ष्मी न पाछो न फेरणो ।**

आई लक्ष्मी को पीछा न फिराना चाहिए ।

अनायास प्राप्त हुई तुच्छ वस्तु भी श्रेष्ठ है।

स्वतः आये हुए धन को नही लौटाना चाहिए; क्योंकि सम्भव है भविष्य में वह भी प्राप्त न हो सके। इस कहावत से लोगों का भाग्यवाद पर अटल विश्वास ध्वनित होता है।

३३. **आऊँजी भाऊँजी, भट्टा का झोल्।**

आऊँजी भाऊँजी भट्टे के झोल।

असम्बन्धित व्यक्तियों का सम्मेलन।

इधर उधर के निकम्मे व्यक्तियो का समाज इकट्ठा होने पर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

३४. **आखर रामजी घर न्याव छ।**

आखिर रामजी के घर न्याय है।

अन्त में भगवान् के यहाँ न्याय अवश्य है।

कोई मनुष्य कितना ही अत्याचार अथवा बेईमानी करे, अन्त मे उसे हानि अवश्य उठानी पडती है; क्योंकि परमात्मा न्याय करता है। अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा देता है।

३५. **आखी रात रोया पण मरचो एक भी न।**

सारी रात रोये, पर मरा एक भी नही।

परिश्रम करने पर भी असफलता प्राप्त होना।

जहाँ परिश्रम बहुत किया जाय, किन्तु लाभ कुछ भी न हो—वहाँ यह उक्ति कही जाती है।

३६. **आगण, आगण अर आग्यो फागण।**

अगहन, अगहन और आगया फाल्गुन।

सन्तोषी बनो, समय शीघ्र निकल जाता है।

शीत से व्याकुल अर्थहीन कुटुम्ब को सान्त्वना देने के लिए यह उक्ति कही जाती है।

३७. **आगण, हाँडी को आधण।**

अगहन हँडिया का आधन ।

अगहन का महीना शीघ्र ही निकल जाता है ।

हँडिया के पानी को उबलने में जितनी देर लगती है उतने ही समय में अगहन बीत जाता है । इसका यह भी भाव है कि अगहन का शीत अधिक कष्टदायी नही होता ।

३८. **आगै नाँथ न पाछै म्होरी ।**

आगे नाथ न पीछे मोहरी (पगहा) ।

अंकुश-विहीन प्राणी बिगड़ जाते हैं ।

जिस प्रकार बिना नाथ एवं मोहरे के पशु वश मे नही रहते, उसी प्रकार पुत्र अथवा छात्र भी अकुश विहीन होकर कुमार्ग का अनुसरण करने लगते है ।

३९. **आगला जनम को बैर बोड़ छै ।**

अगले जन्म का बैर बोडता है (निकालता है) ।

किसी पर अकारण क्रोध करना ।

किसी व्यक्ति से शत्रुता न होने पर भी उसके अनिष्ट की कामना की जाय अथवा अनिष्ट कर डाला जाय, उस समय इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

४०. **आगलान फाणी न, पाछलान कीच ।**

अगलों को पानी नही, पिछलों को कीच (नही) ।

अपार जन-ससूह का उमड़ना ।

किसी जुलूस, उत्सव, विवाहादि में इकट्ठे होने वाले जन-समूह के आधिक्य को प्रदर्शित करने के लिये यह कहावत कही जाती है ।

४१. **आगलो गाँव ग्याँ, पाछलो याद आव छ ।**

अगला गाँव गये (पश्चात्) पिछला याद आता है ।

बिना तुलना किये किसी वस्तु का त्याग व नवीन वस्तु का ग्रहण नहीं करना चाहिये ।

नवीन वस्तु ग्रहण कर लेने पर उसमें गुणों के अभाव के कारण परित्यक्त वस्तु के गुणों का स्मरण होने पर इसका प्रयोग किया जाता है।

४२. **आगलो गेलो ब्वार छ।**

अगला रास्ता बुहारता है।

परलोक सुधारने के लिये इष्टापूर्ति के साधनों को अपनाना।

यज्ञ करना, बावडी, कुआँ, तालाब, मन्दिर आदि बनवाना, अन्न दान करना, बाग लगवाना आदि सुकार्य करके परलोक सुधारने की इच्छा करने वाले धर्मात्मा व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है।

४३. **आछी म्हारी टाटी, जींमँ खाऊँ घी'र बाटी।**

अच्छी मेरी टाटी, जिसमे खाऊँ घी और बाटी।

अपनी परिस्थिति से सन्तुष्ट रहना।

किसी भी प्रपंच मे न पडकर अपने काम से काम रखने वाले व्यक्ति स्वय के लिए इस उक्ति का प्रयोग करते है।

४४. **आज मर्‌या'र काल दूसरो दन।**

आज मरे और कल दूसरा दिन।

नश्वर देह का क्या भरोसा ?

सासारिक प्रपचों से दूर रहने के लिए किसी वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा उपदेश देते हुए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता।

४५. **आठ घाल्या स्याठ।**

आठ के स्थान पर साठ।

कार्य के जानने वाले मनुष्यों की कमी नहीं होती।

किसी कार्य को सुचारु रूप से संपादन करने की योग्यता रखने वाले व्यक्ति द्वारा कार्य करने से इन्कार करने पर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

४६. **आड तो थुणकल्या की ई भलो छ।**

आड़ तो तिनके की ही भली है।

समय पर छोटे व्यक्ति की सहायता भी बड़ा काम देती है।

निराश्रित को थोडा भी सहारा मिल जाय तो उसके अनेक दुःख दूर हो जाते है।

४७. **आतमा जे परमातमा।**

आत्मा सो परमात्मा।

आत्मा ईश्वर का ही रूप है।

किसी भी जीवात्मा पर निर्दयता दिखाने वाले व्यक्ति को शिक्षा देने के लिए यह दार्शनिक उक्ति काम मे लाई जाती है।

४८. **आती को नाँव नुरकाँ (सहजाँ), जाती को नाँव मुकना।**

आती का नाम नुरकाँ अथवा सहजाँ, जाती हुई का नाम मुकना।

यौवनागम के साथ सौन्दर्य वृद्धि होती है तथा उसकी समाप्ति पर कुरूपता बढ़ती है।

आती हुई यौवनावस्था सबको प्रिय होती है। यौवन की साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

टिप्पणी—आती हुई और जाती हुई यौवनावस्था को क्रमशः "*नुरकां*" और "*मुकना*" शब्द से अभिहित किया गया है। हाड़ौती मे नुरकां शब्द उस हथिनी के लिए आता है जिसके सभी अङ्ग पूर्ण रूप से विकसित हों तथा मुकना शब्द दाँत-विहीन वृद्धा हथिनी के लिए प्रयुक्त होता है। इस कहावत मे आती हुई यौवनावस्था को नुरकाँ अर्थात् शोभा और चमक से भरी अवस्था कहा गया है तथा जाती हुई यौवनावस्था को मुकना अर्थात् कुरूपता बढ़ाने वाली अवस्था कहा है। पद्मिनी और हस्तिनी का उल्लेख समझकर इस कहावत को काम-शास्त्र से सम्बन्धित भी बताया जा सकता है।

४९. **आदरा भरंगी खाल खादरा।**

आदरा भरेगी खाल और खात।

आर्द्रा नक्षत्र मे अच्छी वर्षा होती है

इस कहावत से सर्व साधारण का ज्योतिष विषयक सामान्य ज्ञान

प्रकट होता है। आर्द्रा नक्षत्र में जो वर्षा होती है, उससे खाल तथा खात (छोटे-छोटे गड्ढे) भर जाते है।

५०. **आधं म्हा खाँद कामळी ।**

आधे माह कन्धे पर कमली।

आधे माह के पश्चात् शीताधिक्य नहीं रहता।

माघ का आधा महीना बीतने पर इतना जाडा पडता है कि केवल कम्बल से ही काम चलाया जा सके।

५१. **आधा मँ देई देवता, आधा मँ खेतरपाळ।**

आधे मे देवी देवता, आधे में क्षेत्रपाल।

वस्तु का अधिकांश भाग एक व्यक्ति द्वारा ग्रहण करना।

जब अर्ध-भाग एक व्यक्ति को तथा शेष आधा अनेक व्यक्तियों में वितरित किया जाय, तब इस कहावत का प्रयोग होता है। क्षेत्रपाल की पूजा का प्रचार हाडौती प्रान्त में अधिक है।

५२. **आधो छोड़ सारी न धावं, सारो मळं न आधो पावं।**

आधी छोड सारी को धावे, सारी मिले न आधी पावे।

मिल जाय उसी पर सन्तोष करना चाहिये।

लालची व्यक्ति प्राप्त वस्तु पर सन्तोष न करके जब अधिक पाने की इच्छा करता है, ऐसी स्थिति में कभी-कभी हाथ में आई वस्तु को भी गमा बैठता है। लोभी व्यक्तियों को इस कहावत के द्वारा उपदेश दिया जाता है।

५३. **आधो फढ्यो घरकाँ न खावं, सारो फढ्यो पळाँ न खावं।**

आधा पढा घरवालों को खावे, सारा पढ़ा दूसरों को खावे।

लड़कों को पूर्ण शिक्षित बनाना आवश्यक है।

जब कोई अर्ध-शिक्षित शिक्षाभाव के कारण धनोपार्जन में असमर्थ रहे, तब यह कहावत कही जाती है।

५४. **आपण बतायाँ ईं घर का भूत होवं छं।**

अपने बताये ही घर के भूत होते है ।

परिवार की निन्दा श्रेयस्कर नहीं होती ।

अपने परिजन की निन्दा अथवा गुप्त बातों को दूसरे व्यक्ति से कहने पर यह उक्ति कही जाती है । शास्त्रकारो ने गोपनीय वस्तुओं में **"गृहछिद्र"** भी गोपनीय बतलाया है ।

५५. आपणा हात जगन्नाथ का भात ।

अपने हाथ जगन्नाथ के भात ।

अपने हाथ से बनाई हुई वस्तु में कमी नहीं की जाती ।

अपने हाथ से बनाये हुये भोजन में घी इत्यादि पर्याप्त मात्रा में डाला जाता है, अतः वह भोजन जगदीश के भात के समान सुस्वादु बन जाता है।

५६. आपणीं आडोसूँ चकरी उतरो'क भवँरा ।

अपनी ओर से चकरी उतरो या भवरे ।

दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप करना अच्छा नहीं है ।

दूसरे व्यक्ति का कार्य बिगड रहा हो, किन्तु समझाने पर भी वह ध्यान न दे, उस समय यह कहावत आत्म-सतोष के लिए प्रयोग में लाई जाती है ।

५७. आपणीं नींद सोव'र आपणीं नींद जाग ।

अपनी नीद सोवे और अपनी नीद जागे ।

दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप करना अच्छा नहीं है ।

देखिये कहावत नम्बर ५६ ।

५८. आपणीं माई न डाकण कुण बताव छ ?

अपनी माँ को डाइन कौन बताता है ?

अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता ।

अपनी बुरी वस्तु को दूसरों की अच्छी वस्तुओं की तुलना में श्रेष्ठ बताना मनुष्यों की साधारण प्रवृत्ति है ।

५९. **आपणों बरम ख ऊँ मँ फरक कोई न ।**

अपना ब्रह्म कहे इसमें फर्क (अन्तर) नही है ।

अन्तरात्मा की बात सत्य निकलती है ।

किसी बात में जब सन्देह पड़ जाय, तब अन्तरात्मा से निकली हुई बात को प्रधानता दी जाती है । दूसरे के कथन से मन में द्वैधीभाव होने पर यह कहावत कही जाती है ।

६०. **आपणों सारो होव तो ढेडाँ की हाँडी मँईं जा।'र पड़ ।**

अपना वश चले तो ढेडों (चमारों) की हँडिया में जाकर पड़े ।

स्पर्शास्पर्श का तनिक भी ध्यान न रखना ।

अच्छी बुरी अथवा झूठी वस्तुओं के ग्रहण करने और भक्ष्याभक्ष्य का ध्यान न रखनेवाले व्यक्ति के लिए यह उक्ति प्रयुक्त होती है ।

६१. **आप भला तो जुग भला, नातर भला न कोय ।**

आप भला तो जग भला, नही तो भला न कोई ।

श्रेष्ठ व्यवहार की सर्वत्र प्रशंसा होती है ।

स्वय के मन में कोई पाप न हो तो संसार भी अपना भला चाहेगा ।

६२. **आप मरचा जग परल ।**

आप मरे, जग प्रलय ।

स्वयं के मरने के पश्चात् क्या होगा, कौन बता सकता हैं ?

जो मनुष्य अपने जीवन काल में मरणोपरान्त की चिन्ता करता हो उसके लिए यह उपदेशात्मक उक्ति कही जाती है ।

६३. **आप मरचाँ बना सरग न दीखै ।**

आप मरे बिना स्वर्ग नही दिखाई देता ।

अपना काम स्वयं करने पर ही पूरा होता है ।

अपना कार्य दूसरे से करवाने पर जब बिगड़ जाता है, तब यह कहावत कही जाती है ।

६४. **आ बल मईं मार, सींग सूँ न तो पूंछ सूँ ईं मार ।**

आ बैल मुझे मार, सींग से नहीं तो पूँछ से ही मार।
व्यर्थ में आपत्ति मोल लेना।

किसी अनावश्यक कार्य को हाथ में लेने पर जब लाभ के स्थान पर हानि प्राप्त हो, तब इसका प्रयोग किया जाता है।

६५. **आमली बूढी होजाव, पण ऊँकी खटचाई न जाव।**
इमली बूढी हो जावे, पर उसकी खटाई नही जाती।
समय बीतने पर भी रसिक की रसिकता दूर नहीं होती।

जब किसी वृद्ध में साहस अथवा रसिकता के दर्शन हों, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६६. **आया को मूँडो, न ग्या की फीट।**
आये का मुँह, न गये की पीठ।
मनुष्यों को निर्जन स्थान खलता ही है।

आवागमन रहित स्थान मे निवास करने वाले मनुष्य इस उक्ति के द्वारा उस स्थान के निवास की निस्सारता बतलाते है।

६७. **आरे म्हारा लबरचा पाट, म्हूँ थन चाटूँ तू म्हन चाट।**
आरे मेरे लबरिये पाट (विनाश), मै तुझे चाटूँ तू मुझे चाट।
अपने विनाश-कर्ता से मित्रता करना।

जब कोई व्यक्ति अपने सर्वनाश का मार्ग दिखाने वाले व्यक्ति की प्रशंसा करते हुए पाया जाए, तब यह कहावत कही जाती है। पाट और चाट का अन्त्यानुप्रास भावोत्कर्ष में सहायता पहुँचाता है।

६८. **आरे राड़चा राड़ करां, घर बैठचाईं बाड़ करां।**
आरे रार-कर्त्ता रार (झगड़ा) करे, घर बैठे ही बाड़ करे।
झगड़ालू व्यक्ति से घर बैठे ही झगड़ा करना अच्छा नहीं।

व्यर्थ में किसी लड़ाई-झगड़ा करने वाले व्यक्ति से उलझ पड़ने पर कुछ हानि अवश्य उठानी पड़ती है। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६९. **आल्स क अर काम क न बण ।**

आलस्य के और काम के नहीं बनती ।

आलस्य कार्य का बाधक है ।

आलसी व्यक्ति कभी अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता । अतः इस कहावत द्वारा कार्य में बहाना ढूँढ़ने वाले व्यक्ति को आलस्य छोड़ देने का उपदेश दिया जाता है ।

७०. **आला बच न आपसूँ, सूखा बच न कोई का बाप सूँ ।**

गीले बचें न आपसे, सूखे बचें न किसी के बाप से ।

लेख शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिये ।

अस्पष्ट लेख को लिखने वाला तथा पढ़ने वाला दोनों ही कष्ट पाते हैं ।

७१. **आस पराई जे करै, ऊ होताई मर जावै ।**

आस पराई जो करे, वह होते ही मर जाय ।

पराई आस करना व्यर्थ है ।

मनुष्य को अपने पैरों पर खडा होना चाहिए । दूसरों पर अवलम्बित रहने से जीवन निष्क्रिय बनता है ।

७२. **आसरबाद अल्स को कीणों, नूँत्यो बामण झींमग्यो मीणों ।**

आशीर्वाद अलसी का कीणा, नोता ब्राह्मण जीम गया मीणा ।

अयोग्य व्यक्ति को प्रदत्त वस्तु वास्तविक फल को नहीं देती ।

किसी व्यक्ति ने वस्तु विशेष को किसी फल की इच्छा से योग्य व्यक्ति के निमित्त रख दिया हो तथा दुर्भाग्यवश वह वस्तु किसी अयोग्य व्यक्ति के हाथ लग जाये, तो उसका शुभ फल न मिलने के कारण यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

७३. **आसा अम्मर धन छै ।**

आशा अमर धन है ।

मनुष्यों को आशावादी होना चाहिये ।

निराश व्यक्ति को आश्वासन देने के लिए यह उक्ति कही जाती है।

७४. **आसोजाँ का तावड़ा, जोगी होग्या डावड़ा।**

आश्विन की धूप के कारण कुमार योगी हो गये।

आश्विन में गर्मी अधिक पड़ती है।

आश्विन मास मे कृषक-कुमारों को धूप योगी बना देती है अर्थात् सूर्य की कडी धूप के कारण उनका वर्ण श्याम हो जाता है।

७५. **आँक करे जे तो बाप बो न करे।**

आक करें वह तो बाप भी न करे।

अर्क वृक्ष बड़ा उपयोगी है।

आयुर्वेदिक परीक्षण के आधार पर अर्क वृक्ष अनेक रोगो मे राम-बाण सिद्ध हुआ है। अतः हाडौती प्रान्त मे इसका आदर पिता से भी अधिक किया जाता है।

७६. **आँकड़ो, नीमड़ो भैंस को सींगड़ो।**

आक, नीम और भैंस का सीग।

असमान वस्तुओं का मेल करना।

हर प्रकार की वस्तु का उपयोग कर लेने वाले व्यक्ति के प्रति यह उक्ति कही जाती है। "**इवा युवा मघोन**" का सम्मेलन भी ऐसा ही है।

७७. **आँख्याईं आंख्याँ मँ जीव छै।**

आँखो ही आँखो मे जीव है।

शारीरिक परिस्थिति शोचनीय होना।

रोगी अथवा दुर्बल की ऐसी स्थिति पर, जिनमे केवल पलकें ही गति कर सकती हों, इस उक्ति का प्रयोग होता है।

७८. **आँख्याँ का आँधा नाँव नणसुख।**

आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।

गुण के विरुद्ध नामकरण होना।

अपनी आकृति, गुण, धर्म के विरुद्ध नाम वाले व्यक्ति के प्रति इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

७९. **आँख्याँ देखी जीवती माँखी न नँगली जाव।**

आँखो से देखते हुए जीवित मक्खी नही निगली जा सकती।

प्रत्यक्ष में किसी भी प्रकार की गड़बड़ सम्भव नहीं हैं।

गिरा हुआ व्यक्ति भी अपने सामने होने वाले बुरे कार्य को छिपाने मे हिचकिचाता है अथवा किसी व्यक्ति को किसी पार्टी द्वारा झूठ बोलने के लिए बाध्य करने पर उस व्यक्ति द्वारा यह उक्ति कही जाती है।

८०. **आँख्याँ देखी परसराम कदी न झूँठी होव।**

आँखो देखी हुई हे परशुराम ! कभी झूठ नही होती।

प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

कोई अपराधी स्वय निर्दोषी बनने के लिए झूठ बोले तथा अपने अपराधी न होने का प्रमाण देने के लिए उद्यत हो, उस समय उसके अपराध को प्रत्यक्ष देखने वाला व्यक्ति इस उक्ति का प्रयोग करता है।

८१. **आँख्याँ मोची'र तड़को होयो।**

आँखे मूँदी और सबेरा हुआ।

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती।

किसी अवधि को लम्बी समझने वाले दुःखी व्यक्ति को सान्त्वना देने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

८२. **आँगल्याँ धरम करावो।**

अगुलियो से धर्म करवाना।

अपने विरोधी को किये का फल देने की चुनौती।

जब शत्रु अपना दुष्ट कार्य करता हुआ किसी प्रकार न माने, तब उसे अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों द्वारा अधिक हानि पहुँचाने का संकेत किया जाता है।

८३. **आँगली कट जींकै लोई आव छै।**

अंगुली कटे जिसके लहू आता है।

पीड़ित व्यक्ति ही अपनी पीड़ा का अनुभव कर सकता है।

दूसरे के भयङ्कर दुःख को न समझ कर उसके प्रति उपेक्षा दृष्टि रखने अथवा उपहास करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

"जाके पैर न फटे बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई" कहावत भी इसी भाव को व्यक्त करती है।

८४. **आँगली पकड़तां पकड़तां पूँच्यो पकड़बो।**

अंगुली पकड़ते पकड़ते पोंहचा पकड़ना।

थोड़ा थोड़ा करके सम्पूर्ण पर अधिकार जमाना।

किसी सज्जन की उदारता के कारण उसकी किसी वस्तु पर आंशिक अधिकार प्राप्त होते ही उसके सम्पूर्ण भाग पर आधिपत्य कर लेने की चेष्टा करने पर यह कहावत कही जाती है।

८५. **आँताँ सूँ न दाँताँ सूँ बोलबो।**

आँतों से नही दाँतो से बोलना।

कृत्रिम प्रेम का प्रदर्शन करना।

केवल मुँह से चिकनी-चुपडी बाते बनाने तथा हृदय में द्वेष-भाव रखने वालो का सम्भाषण इस प्रकार का होता है।

८६. **आँधाईं काँईं छाइजे ? दो आँख्याँ।**

अंधे को क्या चाहिये ? दो आँखे।

इच्छित वस्तु की प्राप्ति से सन्तोष हो जाता है।

मनुष्य को जिस वस्तु की आवश्यकता हो, उसी की सहज प्राप्ति हो जाने पर यह कहावत कही जाती है।

८७. **आँधा कबूतरा नै क्वोई क्वो दीख छै।**

अंधे कबूतर को कुँआ ही कुँआ दिखाई देता है।

परिमित ज्ञान का होना।

सीमित-ज्ञान वाले व्यक्ति के कार्यों की प्रत्यालोचना के रूप में इस कहावत का प्रयोग होता है ।

८८. **आँधा का खाँदा मँ देबो ।**

अन्धे के कन्धे में देना ।

ना समझ को ठग लेना ।

जब कोई व्यक्ति किसी की अज्ञानता से अनुचित लाभ उठा ले, तब इसका प्रयोग होता है ।

८९. **आँधा न नूँत, न दो झीमबा आव ।**

अन्धे को न्योते, न दो जीमने आवे ।

बुद्धि से कार्य न लेने पर दूनी हानि उठानी पड़ती है ।

अन्धे को निमन्त्रण देने पर उसका पथप्रदर्शक भी साथ में अवश्य आयेगा । व्यर्थ की दुगुनी हानि से रक्षा करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

९०. **आँधा मँ काणो राजो ।**

अन्धों में काना राजा ।

मूर्खों में अल्पगुणी भी सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है ।

अधिक गुणवालों की अनुपस्थिति में अल्पगुण वाले की पूजा हुआ करती है ।

९१. **आँधो घोड़ी फोफला चणाँ, खाव थोड़ा बखेर घणा ।**

अन्धी घोड़ी फोफले चने, खावे थोड़े बिखेरे घने ।

छोटे कामों में भी मूर्खों के द्वारा हानि की सम्भावना होती है ।

अपने हानि-लाभ का कोई ध्यान न रखकर बुद्धिहीनों पर जो व्यय किया जाय, उसका अधिकांश भाग जब व्यर्थ चला जाता है , तब यह कहावत कही जाती है ।

९२. **आँधो तोल न, तो सतोल तो सही ।**

अन्धा तोले नही , तो सतोले तो सही (अनुमान तो करे) ।

स्वाभाविक बुद्धि से तो सभी को काम करना चाहिये ।

जब कोई बुद्धिहीन व्यक्ति अनुमान को साधारण ज्ञान से परे रखकर किसी वस्तु को यथेष्ट से अधिक अथवा अत्यल्प बतावे , उस समय उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

९३. आँधो पीस'र कुत्ता खावं ।

अन्धी पीसे और कुत्ते खावे ।

बिना देखभाल के बरबादी अवश्यम्भावी है ।

धनोपार्जन करने वाला यदि अपनी सम्पत्ति की देख-भाल न करे तो उसे धूर्त्त व्यक्ति उडाने लगते है ।

९४. आँधो मँ बबूल्या की कुँण सुण ?

आँधी मे बबूले की कौन सुने ?

शक्तिशाली के सामने निर्बल की उचित बात भी नहीं चल सकती ।

अल्प शक्तिवाले की उपयुक्त बात जब बलवान् की अनुपयुक्त बात के सामने नही टिकती, तब इसका प्रयोग होता है ।

"नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने?" —कहावत में भी इसी भाव की अभिव्यक्ति मिलती है ।

९५. आँधो बाँट सीरणी, अपणाँ अपणाँ नै दे ।

अन्धा बाँटे सीरणी, अपने अपने को दे ।

संकुचित हृदय वाला व्यक्ति अपने व्यक्तियों का ही भला करता है ।

जब परिचित एव अपरिचित को भिन्न दृष्टियों से देखकर परिचित के साथ पक्षपात किया जाय, वहाँ यह उक्ति कही जाती है ।

९६. आँधो मूँत जींन जगत जाणं ।

अन्धा मूते जिसको जगत जाने ।

मूर्खों की सभी बातें प्रकाश में आ जाती हैं ।

व्यक्ति या समाज को धोखा देने के लिए जब कोई व्यक्ति अनैतिक

कार्य करता है तथा उसको गोपनीय रखने का प्रयत्न करता है, उस समय इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

९७. **आँबा की तस आँमल्याँ न भाग।**

आम की प्यास इमलियों से नहीं जाती।

विरोधी गुण वाली स्थानापन्न वस्तु मूलवस्तु के समान सन्तुष्टि नहीं दे सकती।

वस्तु विशेष के स्थान पर दूसरी वस्तु मिलने पर तृप्ति नही होती। मधुर रस वाले आम के स्थान पर अम्लरस युक्त इमली से सन्तोष भी किया जाय तो कहाँ तक ?

९८. **आँबा, लींबू, बाणियाँ दाब्याईं रस देय।**

आम, नीबू और बनिया दबाने से ही रस देते है।

वैश्य द्वारा कोई वस्तु सरलता पूर्वक प्राप्त नहीं हो सकती।

जिस प्रकार आम तथा नीबू बिना दबाये रस नही दे सकते उसी प्रकार बनिये से बिना दबाव के किसी वस्तु की उपलब्धि असम्भव है।

९९. **आँवली हाल़ी रात।**

आँवली वाली रात।

किसी कार्य का अदृष्ट रूप से हो जाना।

जब कोई कार्य किसी व्यक्ति के दृष्टिपथ में आये बिना ही जादू के चमत्कार के समान पूरा हो जावे, उस समय यह कहावत कही जाती है।

टिप्पणी—कहा जाता है कि आँवले के पेड़ पर जब फल लगते हैं उस समय वह सारा सोने का हो जाता है और सारे फल एक साथ ही लगते हैं। यह कार्य भी एक निश्चित और अल्पकाल में ही पूरा होता है। कहते हैं कि अक्षय नवमी की अर्धरात्रि में जादू के खेल की तरह आँवले के पेड़ में फल लग जाते हैं।

इ

१००. **इसक टं टं जर बुर्रां, कोडी द्यो तो य्हांईं मर्रां।**

इसक टे टे जेर बुर्रां, कौडी दो तो यही मर रहे ।

प्रेम में धन और स्वास्थ्य दोनों की ही समाप्ति हो जाती है ।

प्रेम में धन और स्वास्थ्य की आहुति देने वाले निर्धन व्यक्ति की दशा का वर्णन इस कहावत द्वारा व्यक्त करके उसको शर्मिन्दा किया जाता है ।

ई

१०१. ईलड़ो की भीलड़ो लसोड़ा की जड़ ।

ईलडी की भीलडी लिसोड़े की जड ।

बहुत दूर का सम्बन्ध होना ।

जब कोई दूर का सम्बन्धी आकर निकटतम सम्बन्ध बताने की चेष्टा करे, उस समय इस कहावत का स्मरणकर उसे उपेक्षा भरी दृष्टि से देखा जाता है ।

उ

१०२. उग्या को तोल न आँथ्या को ।

उदय का ध्यान न अस्त का ।

धनवानों का समय मनोरंजन में ही व्यतीत होता है ।

धन-सम्पन्न किन्तु बेखबर व्यक्ति के लिये यह उक्ति कही जाती है ।

१०३. उतरयो सणो मरदंग नाँव ।

उतरा शहना, मृदङ्ग नाम ।

अधिकार छिन जाने पर व्यक्ति की सामाजिक स्थिति शोचनीय हो जाती है ।

जिस प्रकार तहसीलदार का सन्देशवाहक **'शहना'** लोगो के द्वारा आदर सहित पूजा जाता है, किन्तु उस स्थान से हटने पर उसे कोई नही पूछता । इसी प्रकार किसी पदच्युत व्यक्ति से कोई राम-राम भी नही करता । इस कहावत में ऐसे ही व्यक्ति की स्थिति का लाक्षणिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

१०४. **उतावलो खमार काचाई बेच छ ।**

उतावला कुम्हार कच्चे ही बेचता है ।

शीघ्रता के कारण काम पूरा न होने पर भी पूरा बताना ।

किसी कार्य में शीघ्रता करने वाले व्यक्ति के प्रति यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

१०५. **उदली बू बलींडे साँप बतावे छ ।**

बदली हुई बहू बलीडे पर साँप बताती है ।

मन फिर जानेपर कार्य करने के लिये अनुचित बहाने बनाना ।

एक पति को छोडकर दूसरे के पास रहने की इच्छा रखने वाली स्त्री कष्ट न होने पर भी बहाने बनाती है ।

ऊ

१०६. **ऊई पूत पटलाँई में, ऊई गोबर फाणी में ।**

वही पुत्र पटेलाई में, वही गोबर पानी मे ।

एक व्यक्ति से ही उत्तम तथा अधम दोनों कार्य लेना ।

पिता की मृत्यु के उपरान्त भाईयों के अभाव में अकेले पुत्र को ही घर तथा बाहर सभी जगह कार्य की देखरेख करना पडता है ।

१०७. **ऊ दन होज्यो पगाँ फहरज्यो, लोग दणी सब सरगा ।**
परण्या जद तो फरचा उबाणा, अब काँई जूत्याँ फरगा ?

वह दिन होना, पैरो में पहनना, लोग दुनियाँ सब सराहेगे ।
परणे जब तो फिरे उभाने, अब क्या जूती पहनेगे ?

सूम पति पर पत्नी का व्यंग्य ।

एक पति अपनी पत्नी से क्रोधित होकर कहता है कि "अभी जूते मारूँगा ।" इस पर पत्नी व्यंग्य करती हुई कहती है कि विवाह के शुभ-समय तो आपने जूते पहने नही, अब क्या जूते पहनोगे ? अच्छा है , ईश्वर वह दिन लाये जिस दिन आप जूते धारण करो । उस समय संसार के सब लोग आपकी सराहना करने लगेगे ।

१०८. **ऊधो को लेणो, न माधो को देणो ।**

ऊधो का लेना, न माधो का देना ।

हर प्रकार से निश्चिन्त रहना ।

जिसको किसी से कुछ लेना या देना न हो, वह स्वच्छन्दता पूर्वक इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

१०९. **ऊपर खावं, गाँव गूँडे, बैठो नाँण पाटला मूँडे ।**

ऊपर खावे, गाँव को गूँडे, बैठी नायन पाटले मूँडे ।

परिवार में रहकर निष्क्रियता अच्छी नहीं ।

जब किसी परिवार में गृहणी कोई काम न करे तथा बैठी-बैठी खावे, उसके लिए यह कहावत प्रचलित है ।

११०. **ऊपर चल-चल, भीतर बल़-बल़ ।**

ऊपर चल-चल, भीतर बल-बल ।

बाह्य तथा आन्तरिक दृष्टियों में भेद होना ।

जो व्यक्ति देखने मे तथा व्यवहार मे अति उदार हो, किन्तु भीतर ही भीतर षड़यन्त्र रचता हो, उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

१११. **ऊबा खेंजड़ा बेज न पड़ ।**

खड़े खेजड़े में बेज (छिद्र) नही पड़ता ।

शान्ति से होने वाले कार्य में शीघ्रता नहीं हो सकती ।

जिस प्रकार खड़े वृक्ष में छेद होना अत्यन्त कठिन है, उसी प्रकार किसी कार्य को शीघ्रता से समाप्त कर डालना असम्भव है ।

११२. **ऊबो न्हाल़ लाखड़ी, बछाई न्हाल़ खाट ।**

खड़ी निहारे लकड़ी, बिछाई निहारे खाट ।

अकर्मण्य पुरुष जीवन में सफल नहीं हो सकते ।

जिस प्रकार अकर्मण्य कृषक चाहे कि उसकी लकड़ी तैयार मिले तथा उसके घर में आते ही खटिया बिछी हुई मिले तो अपने कार्य में उसे सफलता कदापि नही मिल सकती । दूसरों पर आश्रित रहने बाले व्यक्ति

संसार में अभ्युदय प्राप्त नही कर सकते। अकर्मण्य पुरुष को प्रेरित करने के लिए यह उक्ति कही जाती है।

११३. **ऊ लोलाटा'र ऊ खाल-उपाड़ा।**

वह ले लौटा और वह खाल-उखाड़।

ऐक का दूसरे से बढ़कर होना।

इस कहावत का आधार एक कहानी है जो इस प्रकार है :—

"दो मित्र थे। एक का नाम लोलाटा और दूसरे का नाम खाल-उपाड़ा था। एक तो किसी के पैसे लेकर देता नहीं था और दूसरा जिसको देता था उससे छोड़ता नहीं था। एक बार लोलाटा ने खाल-उखाड़ से एक पाई उधार ली। कुछ समय बीतने पर खाल-उखाड़ ने पाई माँगी, पर लोलाटा मरने का बहाना करके सो गया। मरघट में लोलाटा को पहुँचाया गया। रात्रि में जहाँ वह सो रहा था, वहाँ कुछ चोर आए और उसे भूत समझ कर अपना माल वहाँ छोड़कर भाग गये। लोलाटा भी खड़ा हो गया और खाल-उपाड़ा भी वहाँ आ गया। बराबर के हिस्से करने के बाद खाल-उपाड़ा ने उससे पाई माँगी। पाई के बदले में लोलाटा ने एक चोर का फेंटा उतार कर उसे दे दिया।"

११४. **ऊँक छान चालज, जींक बसजे बास।**

उससे चुपके चलना, जिसके आश्रय मे निवास है।

आश्रयदाता के सामने कोई अनैतिक कार्य नहीं करना चाहिये।

जिसके आश्रय में निवास हो, उसके समक्ष किसी भी प्रकार की उद्दण्डता अथवा दुष्टतापूर्ण कार्य नही करना चाहिए ; क्योंकि इससे वह आश्रयदाता की अप्रसन्नता का पात्र बन सकता है।

११५. **ऊँग छो'र बछावणों पायो।**

औंघता था और बिछौना पाया।

अनुकूल परिस्थिति का अनायास ही उपलब्ध हो जाना।

किसी व्यक्ति की इच्छा जिस कार्य को पूरा करने की हो, उसके लिए यथा-अवसर अनुकूल साधन प्राप्त हो जाये, तो यह कहावत कही जाती है।

११६. **ऊँची दूकान, फीका पकवान ।**

ऊँची दूकान, फीके पकवान ।

सजधज के अनुसार वस्तु प्राप्त न होना ।

बड़ी दूकान पर आडम्बर तो अधिक हो, किन्तु मिठाई हल्की मिले । इसी प्रकार शारीरिक वेश-भूषा श्रेष्ठ हो तथा विद्वत्ता की कमी हो, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

११७. **ऊँट का मूँडा में जीरो ।**

ऊँट के मुँह मे जीरा ।

आकार के अनुसार वस्तु की आवश्यकता होती है ।

अधिक खाने वाले को अति अल्प मात्रा में भोजन दिया जाय, तब यह कहावत कही जाती है ।

११८. **ऊँट की लाँबी नाड़ काटणी थोड़ोई खोछ ।**

ऊँट की लम्बी नाड़ (गर्दन) काटना थोडे ही कहा है ।

किसी की अधिक सम्पत्ति लूटने के लिये नहीं होती ।

जब धनवान व्यक्ति से किसी वस्तु के अधिक दाम माँगे जाये और इसका कारण उसका सम्पतिशाली होना बताया जाय, उस समय वह इस कहावत का प्रयोग करता है ।

११९. **ऊँट तो अड़ड़ाताई लद छ ।**

ऊँट तो अर्राते ही लादे जाते है ।

प्रतिरोध होने पर भी काम से पीछे नहीं हटना चाहिये ।

प्रतिरोध करने वाले दुष्टो के चिल्लाने पर भी कार्य तो करते ही चले जाना चाहिए । प्रतिरोध की स्थिति में घबरा जाने वाले व्यक्ति को प्रेरणा देने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

१२०. **ऊँट, बाँदरो अर दाइवों जीं नाव में बैठ्या हो, वा डूब्याई मान ।**

ऊँट, बन्दर और दायमा जिस नाव में बैठे हों, वह नाव डूबे ही माने ।

दायमा की प्रकृति ऊँट तथा बन्दर की प्रकृति के समान ही होती है ।

ऊँट, बन्दर तथा दाधीच तीनों प्रकार के प्राणी स्वभाव से ही धृष्ट होते हैं। नाव में तो उनका साथ कदापि अच्छा नहीं है। ये प्राणी समय आने पर नाव को डुबा सकते है।

१२१. ऊँट मर तो बी मारवाड़ क आडो मूँडो कर।

ऊँट मरे तब भी मारवाड़ की ही ओर मुँह करता है।

आपत्ति पड़ने पर अपनों की याद अवश्य आती है।

ऊँट रेगिस्तान का जहाज है। वह अपने स्वदेश मारवाड़ का स्मरण मरणपर्यन्त रखता है। कष्ट पाते हुए यदि कोई व्यक्ति अपने परिजनों का स्मरण करे, तो उस समय यह कहावत कही जाती है।

१२२. ऊँठ बी खाई अर पेट भी न भरचो।

जूठन भी खायी और पेट भी न भरा।

किसी की हानि करने पर भी स्वार्थ-सिद्धि न होना।

स्वार्थ-सिद्धि के लिए जान-बूझकर अन्याय करने वाला व्यक्ति जब अपने कार्य में असफल हो जाता है, तब अपने किये हुए पर पश्चाताप करता हुआ वह इस कहावत को प्रयोग में लाता है।

१२३. ऊँठ्या न मीठो छ।

जूठन खाने वाले को मीठा है।

नैतिकता को छोड़ने वाला मनुष्य सुख प्राप्त कर सकता है।

अपनी आत्मा को कुचलकर स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनर्थ कर डालने वाले व्यक्तियों से एक मीठी चुटकी इस कहावत द्वारा ली जाती है।

१२४. ऊँदराई सूँठ को गाँठ्यो मल जावे तो पसारी बण बैठ छ।

ऊँदरे को (चूहे) को सोंठ की गाँठ मिल जावे तो पंसारी बन बैठता है।

थोड़ी सी सिद्धि से बड़ा आडम्बर जमा लेना।

छोटा व्यक्ति थोड़ा सा अधिकार मिलने पर जब अधिक चमक-दमक के साथ समाज के सामने आता है, तब वह असह्य हो जाता है। ऐसे समय मनुष्य उसपर इस कहावत द्वारा फबतियाँ कसने लगते हैं।

ए

१२५. एक आँख की काँईं आँख, एक पूत को काँईं पूत ।

एक आँख की क्या आँख, एक पुत्र का क्या पुत्र ?

एक आँख तथा एक पुत्र का सदैव भय बना रहता है ।

एक आँख तथा एक पुत्र के होने पर लोगों का भयभीत होना इसलिए स्वभाविक है कि इसके नष्ट हो जाने पर अनर्थ की आशङ्का बनी रहती है ।

१२६. एक एक सूँ आगला पना भुवा का पूत ।

एक एक से आगले, (बढ़ कर) पन्ना बुआ के पुत्र ।

क्षत्रियों की सन्तानें एक दूसरे से बढ़कर होती है ।

शौर्य आदि गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्षत्रियों में एक से दूसरा बढ़कर मिलता है । पन्ना धाय को बुआ के रूप में मान कर उसके गौरव को इस कहावत द्वारा बढाया गया है ।

१२७. एक काम दो कारज ।

एक काम दो कार्य ।

एक बार के परिश्रम से दो प्रकार का फल मिलना ।

एक ही साधन से जब दो कार्यों को पूरा किया जाय, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१२८. एक को चोर जे सँस को चोर ।

एक का चोर जो सहस्त्र का चोर ।

चोरों का वर्गीकरण नहीं होता ।

चोर तो सदैव चोर ही रहेगा । एक वस्तु चुराने वाला भी हजार वस्तुओ का चोर समझा जाता है ।

१२९. एक घड़ी की नकटाई सँस घड़ी को आराम ।

एक घड़ी की नकटाई सहस्त्र घड़ी का आराम

अपने दुःख को प्रकट कर देने से सुख मिलता है।

लज्जा या सरलतावश कोई व्यक्ति अपना कष्ट किसी से न कहे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है। व्यवहार में स्पष्ट रहने वाला व्यक्ति सदा सुखी रहता है।

१३०. एक घर तो डाकण बी टाल् छ।

एक घर तो डायन भी छोड़ती है।

प्रत्येक व्यक्ति का एक निजी सम्बन्धी अवश्य होता है।

आततायी भी अपने किसी सम्बन्धी को तो सुरक्षित छोड़ देता है। दुष्टों से छुटकारा पाने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

१३१. एक तो गल्वाँ अर दूजी नीम चढ़ी।

एक तो गिलोय और दूसरे नीम चढ़ी।

दुष्ट व्यक्ति सङ्गति से और भी दुष्ट हो जाता है।

गिलोय पहले से ही कड़वी होती है। यदि वह नीम पर चढ़ जाये तो उसके कड़वेपन का क्या कहना? इसी प्रकार थोड़े अवगुण वाला भी दुष्टों के सङ्ग से अधिक बिगड़ जाता है।

१३२. एक दोड़ताँ सँस दोड़।

एक दौड़ते सहस्त्र दौड़े।

ऐश्वर्य का प्रदर्शन।

राजाज्ञा पालन के लिए अनेक दासों का एक साथ दौड़ना उनके ऐश्वर्य का सूचक है। राजाओं से सम्बन्धित कहानियों में यह उक्ति विशेष रूप से प्रयुक्त होती है।

१३३. एक नन्नो सो रोग टाल्।

एक नन्ना सौ रोग टाले (दूर करे)।

नकारात्मक उत्तर अनेक आपत्तियों से पीछा छुड़ाता है।

जहाँ हाँ कहने पर अनेक कष्ट उठाने पड़ें, वहाँ ना कह देने पर उनसे मुक्ति मिल सकती है।

१३४. एक फूल चढ'र एक उतर ।

एक फूल चढे और एक फूल उतरे ।

आनन्द पूर्वक दिन व्यतीत होना ।

ऐश्वर्य-वृद्धि के प्रकाशन के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

१३५. एक फूल सूं माला न बणं ।

एक फूल से माला नहीं बनती ।

सहयोग के बिना समाज नहीं बनता ।

अकेले व्यक्ति को कार्य में कई बाधायें आती हैं । अतः जहाँ अनेकों व्यक्तियो की आवश्यकता हो, वहाँ अकेला मनुष्य क्या कर सकता है ?

१३६. एक बाणच्यो कर मन को जाणद्यो ।

एक बनिया, करे मन का जाना ।

एक ही दूकान होने से मूल्य अधिक लिया जाता है ।

किसी गाँव में यदि एक ही दूकानदार हो तो वह अपने मन के भाव लगाकर लोगों से अधिक लाभ उठा लेता है ।

१३७. एक बेटा की मा'र बैठो बैठो खा,
दो बेटाँ की मा'र ईं कूलाँ सूं ऊं कूंलै जा ।

एक बेटे की माँ और बैठी बैठी खा, दो बेटों की माँ इस कूँले (मकान का छोर) से उस कूँले जा ।

एक पुत्र की माँ सुखी रहती हैं ।

जिस पुत्र के पास माता रहती है । वह यदि एक ही भाई हो तो सदैव उसे उसके पास ही रहना पड़ता है । यदि दो भाई हुए तो एक के यहाँ माता का मन चाहा न होने पर दूसरे के पास चली जाती है । इसी प्रकार यदि उसे वहाँ भी अच्छा न लगे तो पुनः पहले के पास लौट आती है, जिससे उसे दुःख ही होता है ।

१३८ एक मँडी दो बारणा, पंडो ले पंडी का बारणा ।

एक मंडी दो बारणे (द्वार), पंडा ले पंडी के वारणें (बलैया) ।

भ्रष्टाचार बिना बल-प्रयोग नहीं मिटाया जा सकता ।

पुजारिन का किसी से अनुचित सम्बन्ध हो जाने पर पुजारी दीनता से उसकी खुशामद करके इस कुत्सित कार्य को समाप्त कर देना चाहता है । इसी प्रकार अन्य पुरुषार्थहीन व्यक्तियों के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१३९. एक म्याँन मँ दो तरवार ।

एक म्यान में दो तलवार ।

समान स्वार्थ वाले दो व्यक्ति साथ-साथ नहीं रह सकते ।

एक ही वस्तु से जब दो व्यक्तियों का स्वार्थ सिद्ध न हो, तब यह कहावत कही जाती है ।

१४०. एक अर एक तो ग्यारा होव छ ।

एक और एक तो ग्यारह होते है ।

एक व्यक्ति का भी सहयोग बहुत होता है ।

दो मनुष्यों में सहयोग की भावना भरकर कार्य की सफलता के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा देने के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

१४१. एक रामजी कोई आसा छ ।

एक रामजी की ही आशा है ।

निराश व्यक्ति ईश्वर का ही सहारा लेता है ।

निराश व्यक्ति जब सब ओर से हताश हो जाता है, उस समय उसके हृदय से यही भावना व्यक्त होती है । उसे यह संसार झूठा प्रतीत होने लगता है ।

१४२. एक लख पूत, सवालख नाती, रावण कै घर द्या न बाती ।

एक लाख पुत्र, सवा लाख नाती, रावण के घर दिया न बाती ।

अभिमानी का निश्चय ही सर्वनाश होता है ।

कोई अभिमानी दुष्टता से बाज न आये तथा झूठा गर्व करता ही

रहे , उसे शिक्षा देने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

१४३. **एकला चणा सूं भाड़ न फूटै ।**

अकेले चने से भाड़ नही फूटता ।

अकेला व्यक्ति किसी बड़े काम को नहीं कर सकता ।

जब किसी अकेले व्यक्ति को किसी महत् कार्य के लिए प्रेरित किया जाय, उस समय वह इसका प्रयोग करता है ।

१४४. **एकलो भोमड़ो ल्हो की लाठ, बूँदी का म्हाराजा तीनसो स्याठ ।**

अकेला भीमसिह लोहे की लाठ, बूँदी के महाराजे तीन सौ साठ ।

महाराव भीमसिह जी अत्यन्त बलशाली थे ।

महाराव रामसिह जी के ज्येष्ठ पुत्र जो जोधपुर के भानजे थे, अत्यन्त वलवान थे । उनके प्रकृष्ट बल के सामने बूँदी के कोई भी राजा नही टिक सकते थे ।

१४५. **एक सूं दो भला ।**

एक से दो भले ।

अकेले होने से तो किसी का साथ होना अच्छा है ।

यात्रा के समय अनेक बाधाये उपस्थित होती है । किसी साथी के साथ यात्रा करने से यात्रा के अनेक दुःख दूर हो जाते है । सस्कृत साहित्य में ब्राह्मण कुमार व केकड़े की कहानी बडी प्रसिद्ध है ।

१४६. **एक हाथ सूं ताली न बाजै ।**

एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

झगड़ा दोनों ओर से ही होता है ।

जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती है, उसी प्रकार दोनों पक्षों के बिना तैश में आये झगड़ा नही हो सकता ।

ओ

१४७. **ओखली मँ काँदो, घर ज्वाँई बाँदो ।**

ओखली में काँदा (प्याज), घर जवाई बाँदा ।

ससुराल में रहने वाले दामाद का सम्मान नहीं होता ।

वैसे तो श्वसुर-गृह में निवास स्वर्ग तुल्य बतलाया गया है, किन्तु जो सदैव वही रहता है, उसके साथ दास के समान व्यवहार होता है ।

१४८. **ओखली में माथो द्यो'र धमका को डर ।**

ओखली में माथा (सिर) दिया और धमके का डर ।

किसी कार्य को प्रारम्भ करने पर आपत्तियों से नहीं डरना चाहिये ।

किसी काम को प्रारम्भ तो कर दिया, किन्तु बाधाओं के कारण अधूरा छोडने की इच्छा करने वाले व्यक्ति के प्रति इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१४९. **ओर काम तो राबाद्यो अर जींण पलाण माथ धरो ।**

और काम तो रहने दो और जीण पलाण (खोगीर) माथे पर धरो ।

निरर्थक कार्य करवाना ।

अपने आवश्यक कार्य में लगे हुए व्यक्ति से कोई निरर्थक काम करने के लिए कहे, तब किंचित् झुँझलाहट के साथ वह इस कहावत का प्रयोग करता है ।

१५०. **ओराँ क ढील-ढाल तमोल्याँ क त्यारी ।**

औरो के ढील-ढाल (शिथिलता) तमोलियो के तैयारी ।

आडम्बरहीन व्यक्तियों के काम में विलम्ब नहीं होता ।

अन्य जातियों के भोजन की व्यवस्था मे अधिक आडम्बर होने के कारण देर लग जाती है , किन्तु तमोलियों की व्यवस्था आडम्बररहित तथा शीघ्र हो जाने वाली होती है ।

१५१. **ओलाती को फाणी मँगर न चढ ।**

ओलाती का पानी मँगरे पर नही चढ़ता ।

विपरीत कार्य नहीं हो सकता ।

जिस प्रकार मँगरे का पानी ढलकर ओलाती पर आता है , किन्तु

ओलाती नीची होने के कारण पानी ऊपर नही चढ़ सकता , उसी प्रकार कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष की किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करते। अतः अपनी लघुता प्रदर्शित करने के लिए कन्या पक्ष के लोग इस कहावत का प्रयोग करते है।

अं

१५२. अंडा देख्याँ मुरगो कुड़क।

अंडे देखने पर मुर्गी कुड़क।

समान कार्यकर्ताओं को देखकर रोष प्रकट करना।

किसी कार्य के लिए कोई व्यक्ति बुलाया जाय तथा कार्य दूसरों से करवाया जाय, तब पहले व्यक्ति के मस्तिष्क में विकृति उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही है। इस कहावत द्वारा उस व्यक्ति के मनोविज्ञान का चित्रण किया गया है।

क

१५३. कंगाली मँ आटो गीलो।

कङ्गाली मे आटा गीला।

निर्धनता में थोड़ी क्षति भी असह्य होती है।

निर्धन व्यक्ति पर जब असामयिक-आर्थिक संकट आये, तब यह उक्ति कही जाती है।

१५४. कँडी द्वाव'र बाँडो लात मार।

केडी दुहावे और बंडी लात मारे।

ऐक दुष्ट हित करता हो तो दूसरा दुष्ट उसमें बाधा पहुँचाता है।

किसी प्रकार यदि कोई दुष्ट किसी को लाभ पहुँचाने के लिए तैयार हो रहा हो, तो दूसरा दुष्ट पहले दुष्ट को व्यंग्य वचनों द्वारा ऐसा करने से रोक देता है। 'केडी' शब्द टूटे सीग वाली गाय के लिए प्रयुक्त हुआ है।

१५५. कण कण जोड़याँ मण जुड़।

कण कण जोडने से मन जुडता है ।

थोड़ा-थोड़ा करके बहुत इकट्ठा किया जा सकता है ।

इस कहावत द्वारा सचय की प्रवृत्ति की सराहना की जाती है ।

१५६. **कण को चोर जे मण को चोर ।**

कण का चोर जो मन का चोर ।

थोड़ी वस्तु चुराने वाला भी बड़ा चोर हो सकता है ।

देखिए कहावत नम्बर १२८ ।

१५७. **कण खायो, कुबस बस्यो, करो जीव सूँ हाँण ।**
मरघट दे छै ओल्मा, सूँम उतार्‌यो आंण ।

कण खाया, कुवास बसा, करी जीव से हानि ।
मरघट देते ओलम्भा, सूम उतारा आनि ।

कंजूंस की सर्वत्र निन्दा होती है ।

थोडा खाया, बुरे स्थान पर निवास किया और शरीर को दुःख पहुँचाया । ऐसे व्यक्ति की मृत्यु पर श्मशान भी उपालम्भ देता है कि कैसा सूम यहाँ लाकर उतारा है । सूम व्यक्ति से श्मशान भी प्रसन्न नही होता ।

१५८. **कतनो'क सपनो अर कतनो'क रात ।**

कितना सा स्वप्न और कितनी सी रात ।

थोड़ा सा कष्ट सहने पर सुख मिलता ही है ।

किसी व्यक्ति के अत्यधिक अधीर होने पर उसको कष्ट सहने की प्रेरणा देने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

१५९. **क तो न्ह्वावे दाई माई क न्ह्वावगा पाँच भाई ।**

या तो नहलावे दाई-माई या नहलावेगे पाँच भाई ।

स्वास्थ्य के लिये स्नान करना अच्छा है ।

इस कहावत में यदा-कदा स्नान करने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य किया गया है । या तो वह जन्म के समय नहाया होगा या उसकी मृत्यु पर

पंच नहलावेगे। स्नान से डरने वाले व्यक्ति को प्रेरित करने के लिए यह उक्ति सुनाई जाती है।

१६०. **क तो बाप बताओ, क सराध करो।**

या तो बाप बताओ या श्राद्ध करो।

अपने वचनों का सर्वथा पालन करना चाहिये।

अपने कहे हुए वादे के लिए कोई व्यक्ति बहाना बनावे, तब इस कहावत के द्वारा उसके बहाने की सत्यता का प्रमाण माँगा जाता है।

१६१. **क तो भँसो भँस्यां मँ क कसाई क खूँटे।**

या तो भैसा भैसों में, या कसाई के खूँटे (पर)।

दुर्गुणी व्यक्तियों के स्थान निश्चित होते हैं।

दुर्गुणी के स्थान गिने हुए रहते है। अतः कोई व्यक्ति उनका पता पूछे, तब उत्तर में यह कहावत कह दी जाती है।

१६२. **क तो हँगो' ल, क मूँतई ल।**

या तो हँग ही ले, या मूत ही ले।

दो सुविधायें एक साथ नहीं मिल सकती।

एकतन्त्रवाद मे प्रजा की स्थिति का प्रकाशन करने अथवा क्रूर स्वामी के स्वभाव का चित्रण करने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१६३. **क तो हँस मोतीई चुग, क लंघणई कर।**

या तो हस मोती ही चुगे, या लंघन ही करे।

अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।

अच्छे पदार्थों का उपभोग करने वाला जब दूसरे अप्रिय पदार्थो का उपभोग न करे, तब यह कहावत कही जाती है।

१६४. **कद मरगो सासू'र कद आवगा आँसू।**

कब मरेगी सासू और कब आयेगे आँसू।

जो कुछ करना हो उसे अभी कर डालो ।

कोई व्यक्ति किसी कार्य को पूरा करने की स्वीकारोक्ति देकर बहाने ढूँढ़ने की कोशिश करे, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

१६५. **कदी घी घणाँ अर कदी मूँठी चणा ।**

कभी घी घना (बहुत) और कभी मुट्ठी चने ।

परिस्थिति हमेशा एक सी नहीं रहती ।

कभी तो उपभोग के लिए अधिक सामग्री प्राप्त हो जाती है तथा कभी विपरीत परिस्थितियों के आने पर मुट्ठी भर चनो पर ही सन्तोष करना पडता है ।

१६६. **कदी न राँड्या रण चढ्या, कदी न बाजी बम ।**
कदी न सूराँ-सर चढ्या, कदी न खेंच्यो तंग ।

कभी न राँड्या (हिजडे) रण चढे, कभी न बजी बम ।
कभी न शूरो के शर चढे, कभी न खेचा तग ।

कायर क्या युद्ध करेगा ?

निरुत्साहितो को युद्ध मे प्रेरित करने के लिए ऐसी उत्साह-वर्धक उक्तियाँ कही जाती है । इसमे कहा गया है कि कायर कभी जयघोष करते हुए युद्ध मे नही जाते । वे कभी शूरवीरो के बाण के लक्ष्य नही बनते । यहाँ तक कि घोड़ा कसकर भी तैयार नही होते ।

१६७. **कदी-मदी म्याँजी गया नद्दी ।**

कभी-कभी मियाँजी गये नदी ।

कभी-कभी शुभ-कार्य करना ।

कोई व्यक्ति किसी दिन किसी को दान आदि देकर अपने कार्य की प्रशसा करने लगे, उस समय लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

१६८. **कँदोई को सो बल्याव ।**

कन्दोई (हलवाई) का सा बिलाव ।

अत्यधिक पुष्ट होना ।

किसी हलवाई की दूकान पर रहने वाला बिलाव जिस प्रकार पुष्ट हो जाता है, उसी प्रकार मुफ्त का माल खाकर पुष्टि प्राप्त व्यक्ति के लिए यह विशेषण प्रयोग में लाया जाता है।

१६९. **कपड़ा फाट्या'र गरीबी आई।**

कपडे फटे और गरीबी आई।

फटे वस्त्र निर्धनता के सूचक हैं।

कपडे फटने पर जब लोग टोकते है, तब मनोरजन के लिए उनको यह उत्तर दे दिया जाता है।

१७०. **कमणगराँ कारीगराँ, और बजाजो हट्ट।**
अतरा मँ जे न मले, तो डूँमाँ मँ अलबत्त।

कमनीगरों, कारीगरों, और बजाजो हट्ट।
इतने में जो नही मिले, तो डूँमो में अलबत्त।

कमनीगर, कारीगर, बजाज तथा डूमों की झूठ प्रसिद्ध है।

कमनीगर, कारीगर तथा कपड़े वाले तो झू बोलते ही है; किन्तु कदाचित् इनमे झूठ न मिले, तो डूम लोगो में तो निश्चित् रूप से मिलती ही है।

१७१. **कमायाँ कर जदो समायाँ पड़ छ।**

कमाई करे, तब ही समाई पड़ती है।

निठल्ला व्यक्ति सबको बुरा लगता है।

एक परिवार में दस व्यक्ति खाने वाले हों तथा कमाने वाला एक ही हो, उस समय निठल्ले बैठे रहने वाले सदस्यों का निरादर करते हुए यह उक्ति कह दी जाती है।

१७२. **करम कँडारा को, मन राजा को।**

कर्म कँडारे का, मन राजा का।

कर्मद्वारा ही ऐश्वर्य प्राप्ति हो सकती है।

नीच कार्य करते हुए कोई राजा के समान बनने की चेष्टा करे,

तो यह अनुचित है। जब कोई व्यक्ति छोटे परिवार का होकर उच्च पद की अभिलाषा करे, तब उसके बड़े-बूढ़े उससे यह कहावत कहते है।

१७३. **करम मँ तो कोयलो, कोटो खाँ सूँ मल ?**

करम (भाग्य) में तो कोयला, कोटा कहाँ से मिले ?

भाग्य में न हो तो प्राप्त हुई वस्तु भी हाथ से निकल जाती है।

भाग्य के द्वारा प्राप्त हुए मनुष्य के विशेष परिवर्तन को बताने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

कहावत की उत्पत्ति—ठिकाना कोयला के आप साहब श्री प्रेमसिंह जी एक बार कोटा की गद्दी पर बिठा दिये गये थे, किन्तु उनकी अदूरदर्शिता के कारण उनको गद्दी से उतार कर महाराव श्री किशोरसिंह जी साँगोद वाले गद्दी पर बिठाये गये। उस समय से इस कहावत का प्रचलन हो गया।

१७४. **करम मँ तो टूटी टापरी, म्हलाँ का सपना।**

करम (भाग्य) मे तो टूटी टपरिया, महलों के स्वप्न।

भाग्य बिना सम्पत्ति नहीं मिल सकती।

यदि भाग्य में न हो तो कोई भी वस्तु प्राप्त नही हो सकती। हाड़ौती समाज का भाग्यवाद पर अटल विश्वास इन कहावतों से प्रकट होता है।

१७५. **करमहींण खेती कर, बल मर'क सूखो पड़।**

करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े।

भाग्यहीन को किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती।

भाग्यहीन खेती करे तो या तो उसके बैल मर जावें या सूखा पड़ जाये। उसके मार्ग में आगे से आगे बाधाये आती जाती है।

१७६. **करेगा सेवा तो पावेगा मेवा।**

करेगा सेवा तो पावेगा मेवा।

सेवा का फल अवश्य मिलता है।

माता, पिता, गुरु तथा बड़ों की सेवा करने से अवश्य लाभ होता

है। बड़ों की सेवा का महत्त्व बताने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१७७. **कलजुग की द्या हत्या हो'र लाग छै।**

कलियुग की दया हत्या होकर लगती है।

कलियुग में दया करना पाप है।

किसी दुखिया को भोजन कराने पर जब वह कपड़ा माँगने लगे, तब उसके इस प्रकार के व्यवहार पर यह कहावत कही जाती है।

१७८ **कँवरजी की री-री भागगी अर बाईजी का फेरा पड़ग्या।**

कुँवरजी की री-री भाग गई और बाईजी के फेरे पड गये।

एक ही कार्य से दो प्राणियों का प्रसन्न हो जाना।

दूकानदार का आग्रह पूरा हो जाये तथा बच्चों को वस्तु की प्राप्ति से प्रसन्नता हो जाय। ऐसे ही कार्यों के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१७९. **कस्या म्याँ मरग्या'र कस्या रोजा घटग्या ?**

कैसे मियाँ मर गये और कैसे रोज़े घट गये ?

कार्य के लिये तो अब भी अवसर है।

अकर्मण्य को उत्साह दिलाने के लिए यह कहावत कही जाती है।

१८०. **क सोवे जोगो अवधूत क सोवे माया को पूत।**
क सोवे बाँबी को साँप, क सोवे जींके माय न बाप।

या सोवे जोगी अवधूत, या सोवे माया का पूत।
या सोवे बाँबी का साँप, या सोवे जिसके मा न बाप।

योगी, धनवान, सर्प तथा आवारा ही सुख से सोते हैं।

संसार में योगी-अवधूत, सम्पत्तिशाली व्यक्ति, बाँबी में निवास करने वाला सर्प एवं मातृपितृविहीन व्यक्ति ही चिन्ता रहित होते हैं।

१८१. **काको काँणो छघाछ मलगो ? थारा लखणां सूँ तो दूध मलूँगो।**

काकी कानी छाछ रक्खोगी ? तेरे लक्षणो से तो दूध रक्खूँगी ।

किसी की कमियाँ बताकर उससे लाभ नहीं उठाया जा सकता ।

यह कहावत एक मनोरंजक संवाद के रूप में है । एक व्यक्ति किसी एक आँख वाली स्त्री से पूँछता है कि हे कानी चाची ! मुझे छाछ रख दोगी ? इस पर वह उत्तर देती है कि तेरे सद्व्यवहार से तो तुझे दूध रखना चाहिए अर्थात् छाछ भी नही मिल सकती । इस कहावत में काकुवक्रोक्ति द्वारा कहा गया चाची का उत्तर द्रष्टव्य है ।

१८२. **काकी काँगो राड़ खाँई की ? क वाई फूटा डचाँकी ।**

काकी कानी लड़ाई किसकी ? कि वही फूटी आँख की ।

तुच्छ बातों पर भी झगड़ा हो सकता है ।

किसी की शारीरिक कमियों की ओर सकेत करके उसे चिढ़ाना अच्छा नही होता । अन्धे को अन्धा कहने से झगड़ा हो सकता है, किन्तु सूरदास कहनेपर वह भी प्रसन्न हो जाता है ।

१८३. **काको खाव'र भतीजान स्वाद आव ।**

काका खावे और भतीजे को स्वाद आवे ।

वस्तु का अत्यन्त स्वादिष्ट होना ।

किसी वस्तु के अत्यधिक मृदु एव स्वादु बनने पर उसकी प्रशंसा में यह कहावत कही जाती है ।

१८४. **काको बस'क, काँवल्याँ, अर काकी नागरचाल ।**

काका बसे कि कॉवल्या (दूर) और काकी नागरचाल ।

पति-पत्नी का अत्यधिक दूर होकर आनन्द करना ।

काका तो चीलों की सी प्रकृति वाली स्त्रियों के साथ दूर चला जाता है और काकी नागरचाल (बूँदी जिले का एक भाग) में रहती है । किसी का पति बाहर चला जाय, उस समय भी यह उक्ति प्रयोग में आती है ।

१८५. **कागद अर छघाछ तो बधाव जतराई आछघा ।**

कागज (कन्दी) और छाछ तो बढ़ावे उतने ही अच्छे ।

लेन-देन तथा छाछ के बढ़ने से अधिक लोग लाभ उठाते हैं ।

कागज को कन्दी कहते है । जितनी कन्दी दी जावेगी उतना ही अधिक लाभ होगा तथा छाछ अधिक बढेगी तो अधिक सख्या में लोग उसका उपभोग कर सकेंगे ।

१८६. **काग फडाया पींजरा, फड्या च्यारूं बेद ।**
समझायाँ समझ्या नहीं, रह्या ढेड का ढेड ।
काक पढाये पीजरे, पढ गये चारों वेद ।
समझाये समझे नही, रहे ढेड (मूर्ख) के ढेड ।
मूर्खों को विद्या प्राप्त नहीं हो सकती ।

बुरे संस्कारवाला बालक भली प्रकार पढ़ाने से भी नही पढ सकता । "मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहि विरचि सम"—रामायण की इस चौपाई का भाव भी इस उक्ति से मिलता-जुलता है ।

१८७. **कागला का सराप सूं ढोर न मर ।**
कौवे के शाप से ढोर (पशु) नही मरते ।
दुष्ट के अपलाप सत्य नहीं होते ।

यदि कोई दुष्ट किसी व्यक्ति के अनिष्ट की घोषणा करे तो उसकी प्रकृति को जानने वाला मनुष्य भी इस कहावत द्वारा उसे निरुत्तर कर देता है ।

१८८. **कागला की नींत तो गू पई जाव छ ।**
कौवे की नीयत तो गू (विष्टा) पर ही जाती है ।
दुर्जन कभी भली बात नहीं सोच सकते ।

नीच मनुष्यों की प्रवृत्ति सदैव नीच कार्यों पर लगी रहती है । उनसे ऊँचे कार्य की आशा रखना व्यर्थ है ।

१८९. **काँच-कटोरा, नँण-जल, मन, मोती अर रतन ।**
येता फाट्या न मल, छाव लाख करो जतन ।

काँच-कटोरा, नयन-जल, मन, मोती और रत्न ।
इतने टूटे ना मिले, चाहे लाख करो यत्न ।
मन टूटने पर नहीं मिल सकता ।

यहाँ केवल मन का फटना स्पष्ट करने के लिए शीशे का प्याला, आँसू, मोती और रत्न के टूटने का वर्णन किया गया है । इन वस्तुओं का एक बार टूट जाने पर मिलना अत्यन्त कठिन है ।

१९०. काजीजी न्याव न करगा तो काँई घरण बी न जाबा देगा ?

काजी जी न्याय न करेंगे तो क्या घर भी न जाने देंगे ?
न्याय की बात कहने वालों का कदापि अनिष्ट नहीं हो सकता ।

कुछ समय पूर्व जब भारत में यवन शासन था, तब शहर-काजी ही न्याय किया करते थे । मुसलमानों की हिन्दू द्वारा की गई शिकायत पर वे कोई ध्यान नही देते थे । उस समय न्याय की बात कहने वाले साहसी हिन्दू इस कहावत का प्रयोग किया करते थे । किसी व्यक्ति के न्याय के विषय मे सन्देह होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

१९१. काट्ट्या को खाजे, पण उगट्या को मत खाजे ।

कट्ट्या का खाना, पर ऊगट्या (बदल जाने वाला) का मत खाना ।
जो खिलाकर गिनावे, उसके दूर ही रहना चाहिये ।

उस व्यक्ति की अपेक्षा जो खिलाकर गिना दे, महाब्राह्मण (कट्ट्या) का अन्न अच्छा है । कोई व्यक्ति किसी का कार्य करके उसे परोपकार का उदाहरण बनाले, उस समय यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

१९२. काँटो काँटा सूँ ई कढ छै ।

काँटा काँटे से ही निकलता है ।
नीच व्यक्ति नीच व्यवहार से ही सीधा होता है ।

दुष्ट व्यक्ति सीधेपन का दुरुपयोग करता है । अतः उसके साथ तो वैसा ही व्यवहार करना चाहिए ।

१९३. काठ को घोड़ो, जींण असवार ।

काठ का घोड़ा, जीन सवार ।

अयोग्यता की पराकाष्ठा हो जाना ।

किसी के अनुशासन में शिथिलता देखकर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१९४. **काठ की हाँडी बार बार न चढ़ ।**

काठ की हँडिया बार-बार नही चढ़ती ।

किसी को बार-बार धोखा नहीं दिया जा सकता ।

कोई दूकानदार किसी को धोखा देकर अधिक मूल्य एक बार ले सकता है, किन्तु वह बार बार नही ठगा जा सकता । कपट का व्यापार करने वाले व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

१९५. **काँण तो धड़ा मँ ईं आजाव छ ।**

काँण तो धड़े में ही आ जाती है ।

एक ओर की कमी दूसरी ओर से पूरी कर लेना ।

जब कोई व्यक्ति किसी से उचित से अधिक ले ले, तो उसकी उतनी ही क्षति-पूर्ति दूसरी वस्तु से हो जाने पर यह कहावत कही जाती है ।

१९६. **काँणी का ब्याव मँ सतरा रोवणां ।**

कानी के विवाह में सतरह रोने (झगड़े) ।

भाग्यविहीन के कार्य में विघ्न ही विघ्न आते हैं ।

भाग्यहीन व्यक्ति के शुभ कार्यों में अमङ्गल ही अमङ्गल दिखाई देते है । ऐसे समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१९७. **काँणो, खोड़ो, कूबड़ो, सरसूँ गंज्यो होय ।**
याँ सू बातां जद करे, जद हाथ मँ डंडो होय ।

काना, खोडा, कूबड़ा, सिर से गजा होय ।
इनसे बाते तब करे, जब हाथ में डंडा होय ।

काने, लङ्गड़े, कुबड़े तथा गंजे व्यक्ति स्वभाव से ही ऐबी (बदमाश) होते हैं ।

काने, लङ्गड़े, कुबड़े तथा गंजे व्यक्ति स्वभाव से ही ऐबी होने के कारण बनते कार्य में रोक लगाने वाले होते है तथा उनसे कुछ कहने पर झूठा रोब दिखाते है। अतः इनको मनाने के लिए डडे का भय आवश्यक है।

१९८. **काँणो भट्टो कुँण खाव ?**

काना भट्टा कौन खावे ?

व्यर्थ की बाधाओं में कौन फंसे ?

किसी अयोग्य व्यक्ति की आपत्ति के समय सहयोग की माँग होने पर यह उत्तर दिया जाता है।

१९९. **कात्या जींका सूत, अर जाया जींका पूत।**

काता उसीका सूत, और जाया उसी का पूत।

वस्तु का लाभ उसके लिये दुःख उठाने वाले को ही मिलना चाहिये।

जिस प्रकार सूत का पारिश्रमिक उसके कातने वाले को मिलता है, उसी प्रकार पुत्र की सेवा का लाभ उसके माता-पिता को ही मिलना चाहिए।

२००. **काती देख्याँ काल् अर सम देख्याँ सुकाल्।**

कार्तिक देखने पर अकाल और समय देखने पर सुकाल।

समय पर वर्षा हो जाना भी अति लाभकारी है।

कार्तिक मास तक यदि वर्षा न हो तो लोग अकाल समझने लगते है क्योंकि इससे आगे की फसल नही होती। यदि समय पर भी वर्षा हो जाय तो सुकाल ही समझना चाहिए। समय से तात्पर्य फसल को वर्षा की आवश्यकता होने के समय से है।

२०१. **काती न्हावं कूकड़ा, म्हा न्हावं सूरा।**
कदी न न्हावं भापड़ा, रामजी का पूरा।

कार्तिक नहावें कूकड़े, माघ नहावें सूरे।
कभी न नहायें बेचारे, रामजी के पूरे (भक्त)।

स्वास्थ्य के लिये बारह महीनों स्नान करना चाहिये ।

कार्तिक मे मुर्गे तथा माघ में सूकर स्नान करते है । बेचारे राम-भक्त तो कभी स्नान ही नही करते । पशु-पक्षी तक भी स्नान-प्रिय होते है । अत: मनुष्य को स्नान की प्रेरणा देने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

२०२. **काँदो, बाँदो, बाँदरो, थीनूँ एक नकास ।**
ऊ खाटै, ऊ लबूरै, ऊ मैं आवै बास ।

काँदा (प्याज), बाँदा, बन्दर, तीनो एक निकास ।
वह काटे, वह लबूरे (नोचे), उसमे आवे बास ।

प्याज, दास व बन्दर से सब घृणा करते हैं ।

प्याज मे दुर्गन्ध आती है, दास दुर्वचन बोलता है तथा बन्दर काटने दौड़ता है । इसलिए ये तीनों मनुष्यो के कृपा-पात्र नही हो सकते ।

२०३. **कान की नोल अर पेट की आँत बधावै जतरीई बध छै ।**

कान की नोल और पेट की आँत बढ़ावे उतनी ही बढ़ती है ।

अभ्यास से मनुष्य अधिक आहार कर सकता है ।

जिस प्रकार कान का निचला भाग सोना आदि धारण करने से बढ़ जाता है, उसी प्रकार अधिक खाने से पेट की आते भी बढ़ सकती है ।

२०४. **काम करबा सूँ फली ई सोचणो छाइजे ।**

काम करने से पहले ही सोचना चाहिये ।

बिना सोचे हुये कोई भी कार्य नहीं करना चाहिये ।

बिना विचारे काम करने से काम बिगड जाता है, तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

२०५. **काम पड़्याँ का काकीजी, न तो दारीजी ।**

काम पड़े तो काकी जी, नहीं तो दारीजी ।

गरज पड़ने पर ही खुशामद की जाती है ।

काम के समय आदर-सूचक शब्दों का प्रयोग तथा कार्य निकल जाने

पर गाली से बात करने वालों के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

२०६. काम पड़्याँ गध्धा न बी बाप बणाव छ।

काम पडने पर गधे को भी बाप बनाते है।

काम पड़ने पर क्षुद्र व्यक्तियों की भी खुशामद की जाती है।

नीच व्यक्ति से काम निकालने के लिए उसे भी सिर चढ़ाना पड़ता है। उसकी बातो को बड़े आदर के साथ मानना पड़ता है। अच्छे व्यक्ति द्वारा यह कार्य होते देखकर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२०७. काम सूँ काम आव छ।

काम से काम आता है।

एक काम जानने वाले को दूसरा काम आ जाता है।

कोई व्यक्ति किसी काम को जानता हो तो वह उस काम के बदले दूसरे व्यक्ति से दूसरा काम भी सीख सकता है।

२०८. काया राख'र धरम, पूँजी राख'र बणज।

काया रखकर धर्म, पूँजी रखकर व्यापार।

धर्म के लिये शरीर की तथा व्यापार के लिये धन की रक्षा करनी चाहिये।

शरीर पुष्ट और स्वस्थ नही होगा तो धर्म नही निभ सकता तथा उचित प्रमाण में धन सुरक्षित नही रखा जावेगा तो व्यापार नही चल सकता। निर्बल शरीर वालो को व्रत, उपवास आदि करते देखकर यह कहावत कही जाती है।

२०९. कार बार खडबा सूँ दुखई आव छ।

कार (मर्यादा) के बाहर निकलने से दुःख ही आता है।

मर्यादा में रहने से सदैव सुख मिलता है।

आर्थिक-शक्ति से अधिक खर्च करने वाले या परम्परागत नियमों को तोडने वाले व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

२१०. काल् का काचरा अर सुकाल् का बोर।

अकाल के काचरे और सुकाल के बेर।

अकाल में काचरे और सुकाल में बेर बहुत होते हैं।

काचरों की फसल यदि अच्छी हो तो लोग अकाल का अनुमान लगा लेते है तथा यदि झाडियों में बेर अधिक आवे तो लोग उसे सुकाल का शुभ सूचक समझते है।

२११. **काल क आग खुण को बद्या चाल छ।**

काल के आगे किसकी विद्या चलती है।

मृत्यु अवश्यम्भावी है।

अनेक प्रयत्न करने पर भी कोई व्यक्ति बच न पाये, तब यह उक्ति कही जाती है।

२१२. **काला को गत कालो जाण, क काला का घर का जाण।**

काला (गूँगा) की गति काला ही जाने या काले के घर वाले जाने।

मूक-व्यक्ति का रहस्य समझने में नहीं आता।

गूँगा अथवा मूक व्यक्ति बोल नही सकता। उसकी अवस्था वह स्वयं अथवा उसके परिवार वाले ही जान सकते हैं। अत्यधिक मूक रहने वाले व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२१३. **काला गोड धोलो बठै तो रंग न तो बरण तो पलटई सई।**

काले के पास यदि सफेद बैठे, तो रग नही तो वर्ण तो बदले ही एक सही।

सङ्गति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

किसी दुष्ट की सगति करने पर जब किसी मे अवगुणों की वृद्धि होने लगे, तब यह कहावत कही जाती है।

२१४. **कालो आँखर भैंस बराबर।**

काला अक्षर भैस बराबर।

निरक्षर होना।

अशिक्षित व्यक्ति के लिए यह विशेषण प्रयोग में लाया जाता है।

२१५. **कालो बामण गोरो सूद्र याँसूँ डरपै महारुद्र।**

काला ब्राह्मण गोरा शूद्र, इनसे डरे महारुद्र।

काले वर्ण वाले ब्राह्मण तथा गौर वर्ण वाले शूद्र बड़े चालाक बताये गये हैं।

ब्राह्मण तो सदैव गौर वर्ण के होते है तथा शूद्र कृष्ण वर्ण के, किन्तु वर्ण-विपर्यय के कारण उनकी प्रकृति भी बदल जाती है। अतः वे अनैतिकता के सभी कार्य करने में हिचकते नही हैं—ऐसा लोगों का अनुमान है।

२१६. **क्वाँरी बेटी क छत्तीस बर।**

कुमारी बेटी के छत्तीस वर।

कुमारी लड़की के विवाह के लिये अनेकों से बातचीत की जाती है।

कुमारी लड़की के सम्बन्ध की बातचीत अनेकों से हो सकती है। वर-विषयक बातचीत में गडबड़ होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२१७. **क्वा सूँ क्वो न मल, मनख सूँ मनख हजार बार मल छ।**

कुएँ से कुँआ नही मिलता, मनुष्य से मनुष्य हजार बार मिलता है।

समय आने पर परस्पर सहायता अवश्य करना चाहिये।

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से जीवन में अवश्य काम पड़ता है। अतः परस्पर सहायता के भाव की प्रेरणा देने के लिए यह कहावत कही जाती है।

२१८. **काँसी, कुत्ती, खबाड़ज्या, कर लाग्याँ कोकन्त।**

काँसी, कुत्ती, कर्कशा, कर लगते ही कूकती है।

काँसी (फूल) कुत्ती और कर्कशा असहिष्णु होते हैं।

फूल (काँस्य) की थाली, कुत्ती एवं कर्कशा स्त्री स्पर्शमात्र से चिल्लाने लगते है। कर्कशा के स्वभाव की तुलना के लिए इन दोनों का ग्रहण किया गया है।

२१९. **कुठोर खाटो, अर ससराजी बद।**

कुठोर काटी और श्वसुरजी वैद्य।

लज्जा के कारण कष्ट सहन करना।

पर्दे की प्रथा के कारण पुत्र-वधू श्वसुर से लाज करती है। श्वसुर वैद्य है, अतः स्थान विशेष की पीड़ा उनसे नही कही जा सकती।

२२०. **कुत्ता की पूँछ बारा बरस ताईं बाँस की नळी मैं राखो तो बी सूदी न होवै ।**

कुत्ता की पूँछ बारह बरस तक बाँस की नली में रक्खो तब भी सीधी नहीं होती ।

कठोर दण्ड मिलने पर भी मूर्खों का सुधार नहीं होता ।

सदुपदेशों की अवहेलना करने वाले तथा समझाने पर भी न समझने वाले मूर्खों के लिए किंचित् रोष के साथ इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२२१. **कुत्ता न मूँड लगावे तो मूँडो चाटबा दोड़ छै ।**

कुत्ते को मुँह लगावे तो मुँह चाटने दौडता है ।

नीच से प्रेम का व्यवहार करने पर सिर चढ़ता है ।

नीच व्यक्तियों से इस प्रकार का व्यवहार रखना चाहिए, जिससे उनका साहस न बढ सके और प्रतिष्ठा भंग न हो सके । दुष्ट के सिर चढने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२२२. **कुत्तो बी ठाम कुराल'र बैठ छै ।**

कुत्ता भी स्थान कुरालकर बैठता है ।

मनुष्य को स्वच्छता-प्रिय होना चाहिये ।

जो व्यक्ति सफाई पर ध्यान नही देता, उसका सुधार करने के लिए यह कहावत प्रयोग मे लाई जाती है ।

२२३. **कुल कोळी'र बाप तमोळी ।**

कुल कोली और बाप तमोली ।

वर्णशङ्कर होना ।

किसी की जाति आदि का पूरा पता न लगे तथा उसके माता-पिता का भी ठीक-ठीक ज्ञान न हो, उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

२२४. **क्यूँक धूँ चोकणा, क्यूँक खुराड़ा भूँटा ।**

कुछ तो धौ चिकना, कुछ कुल्हाड़ा भोंटा ।

दोनों पक्षों का दोषी होना ।

जब दो व्यक्तियों में आपस में झगड़ा हो जाय तथा लोग किसी एक व्यक्ति का ही दोष बतावें, तब समन्वयवादी व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

२२५. **केरड़ी खूँटा का जोर पं उछलं छं।**

केरड़ी (बछिया) खूँटे के जोर पर उछलती है।

निर्बल के द्वारा साहसिक कार्य पृष्ठ-पोषक के बिना नहीं हो सकता।

जब कोई अल्पशक्ति वाला व्यक्ति अपने बूते से बाहर का कार्य कर बैठे, तब उसके पृष्ठ-पोषक का दिग्दर्शन कराने के लिए यह कहावत कही जाती है।

२२६. **कोई की जीब चालं, कोई का हाथ चालं।**

किसी की जीभ चले, किसी के हाथ चले।

दुर्वचन बोलने वाले को शारीरिक हानि उठानी पड़ती है।

किसी के गाली-गलोच करने पर जब दूसरा व्यक्ति इसे सहन न करके उसको पीट दे, तब आपस मे समझौता कराने के लिए यह उक्ति कही जाती है।

२२७. **कोई झीम'र राजो होवं, कोई झमा'र राजो होवं।**

कोई खाकर राजी होता है और कोई खिलाकर राजी होता है।

मनुष्यों की प्रकृति अलग-अलग होती है।

जब खाने वाला खिलाने वाले व्यक्तियो की अच्छी बुरी आलोचना प्रारम्भ करदे, उस समय यह कहावत कही जाती है।

२२८. **कोई न बँगण बायड़ा, कोईन बँगण पच।**

किसी को बैगन वायु-वर्धक, किसी को बैगन पाचक।

एक ही वस्तु भिन्न स्थलों पर भिन्न गुणवाली हो जाती है।

मनुष्यों की प्रकृति भिन्न होती है। आयुर्वेद के अनुसार मनुष्यों की कफ, पित्त और वात की प्रकृतियाँ मानी गई है। जो वस्तु एक मनुष्य के लिए हितकारी हो, वही दूसरे के लिए हानिकर हो सकती है।

२२९. **कोइला की दलाली मँ काला हात।**

कोयले की दलाली में काले हाथ ।

अनुपयुक्त कार्य करने से निन्दा ही प्राप्त होती है ।

मनुष्यों को स्वानुरूप कार्य करना चाहिये । अच्छे कार्य न करने पर तनिक भी लाभ नही होता, प्रत्युत हानि ही उठानी पड़ती है ।

२३०. **कोई सूँ दो खाँ न, चार सुणाँ ।**

किसी से दो कहें, न चार सुने ।

सबसे प्रेम का व्यवहार रखना ही अच्छा है ।

अपने बुरे व्यवहार से ही लोग अपने साथ बुरा व्यवहार करते हैं । अतः यह उक्ति मानवोचित नीति का उपदेश करती है ।

२३१. **कोढ्या न बाणारस थोड़ीई मल छ ।**

कोढ़ी को बनारस थोड़ी ही मिलती है ।

भाग्यहीन की इच्छा पूरी नहीं होती ।

अभागे व्यक्ति के लिए कल्याण के सभी मार्ग बन्द रहते हैं ।

२३२. **कोली की छोरी, केसर को तलक ।**

कोली की छोरी, केसर का तिलक ।

वर्ण के अनुसार अलङ्कार शोभा देते हैं ।

नीच वर्ण के लोग उच्च वर्ण वालों के अनुरूप जब वस्तुओं का प्रयोग करने लगे, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

ख

२३३. **खँचर बाँध पागड़ली, दाब लुआव नुक्ख ।**
सकड़ी फेर मोचड़ली, हात करयाँ का दुःख ।

खीचकर बाँधे पागड़ी, दबाके लिवावे नख ।
सकड़ी पहने मोचडी, हाथ किये के दुःख ।

पगड़ी बाँधने, नाखून कटवाने तथा नये जूते पहनने में सावधानी की आवश्यकता है ।

खीचकर पगड़ी बाँधने से सिर दर्द करने लगता है, नाखून कच्चे कट जाने पर कष्ट होता है, तथा तंग जूते पहनने से पैरों को पीड़ा होती है।

२३४. **खज्यूर हाला बामण।**

खजूर वाले ब्राह्मण।

कार्य पूरा होते ही संकल्प से डिग जाना।

शुभ-कार्य की समाप्ति पर जब व्यक्ति अपने वचनों को न निभाये, तब यह कहावत कही जाती है।

यह कहावत निम्न कहानी के आधार पर बनी है—"स्वभाव से कृपण एक व्यक्ति किसी खजूर पर चढ़ गया। वह उतरते समय अत्यन्त दुःखी हुआ तथा ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि यदि मैं पेड़ से नीचे उतर आऊं तो सौ ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा। ज्यों-ज्यों वह नीचे उतरता जाता था ब्राह्मणों की संख्या मे कमी होती जाती थी। अन्त में जब वह पेड़ से नीचे उतर आया तो कहने लगा कि यह सब मेरी हिम्मत का ही खेल था। ब्राह्मण अब क्योंकर जिमाऊँ?" किसी भी व्यक्ति का सकल्प शिथिल पड़ जाय, उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

२३५. **खणो सोरो, पण करणो दोरो छ।**

कहना सरल है, पर करना कठिन है।

कहने तथा करने में बहुत अन्तर है।

कोई व्यक्ति उपदेश दे, किन्तु स्वयं जब काम न कर पाये, तब उलाहने के रूप में यह कहावत कहदी जाती है।

२३६. **खमार का घर मँ फूटो करवो।**

कुम्हार के घर में फूटा करवा।

कलाकार के के यहाँ टूटी वस्तु ही उपयोग में आती है।

उपयोगी कला के निर्माताओं के यहाँ प्रायः बिगड़ी हुई वस्तुओं का ही प्रयोग देखा जाता है। वे स्वयं कर्त्ता होते हुए भी अच्छी वस्तुयें बिक्री के लिए रख छोड़ते है।

२३७. **खमार खमारीन न पूग अर गधड़ी का कान आँवल।**

कुम्हार कुम्हारी को नही पहुँचे और गधी के कान एँठे ।

सबल से न जीत सकने पर निर्बल को सताना ।

जब शक्तिशाली विपक्षी के सामने अपनी विद्या न चले, तब निर्बलों पर गुस्सा उतारा जाता है ।

२३८. **खमार सूँ खीं'क गद्धाप बठ, पण न बठं ।**

कुम्हार से कहा कि गधे पर बैठ, पर नही बैठता ।

बुद्धिहीन दूसरों के कहने की परवाह नहीं करते ।

जब कोई मतिहीन कहने पर किसी कार्य को न करे, किन्तु आवश्यकतावश स्वय करले, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

२३९. **खैर को खूँटो ।**

खैर का खूँटा ।

दृढ़ता से अपनी बात का समर्थन करना ।

खैर के खूँटे में यह विशेषता है कि वह बड़ा मजबूत होता है । वह न गलता है और न सडता है, उसमें दीमक भी नही लगती । अतः जो मनुष्य अपने विचारों से टस से मस न हो, उसके लिए यह विशेषण प्रयुक्त होता है ।

२४०. **खैर, खून, खाँसी, खुशी, ब्याव, बैर अर परीत छपायाँ न छपै ।**

खैर, खून, खाँसी, खुशी, विवाह, बैर और प्रीति छिपाये नही छिपती ।

बैर और प्रीति प्रकट होकर ही रहते हैं ।

किसी के बेर अथवा प्रीति का दर्शन कराने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२४१. **खरी छोरी ! ठाकर साब, अन्दाता ! गाँव खै जद छै ।**

कह री छोकरी ! ठाकुर साहब, अन्नदाता ! गाँव कहे तब है ।

समाज के द्वारा ही सच्ची प्रतिष्ठा होती है ।

कोई व्यक्ति घरवालों को अपना आदर करने के लिए कहे उस समय यह कहावती-सम्वाद प्रयोग में आता है ।

एक राजपूत अपनी दासी से कहता है कि हे लड़की ! मुझसे ठाकुर साहब कहा कर। उसने उत्तर दिया कि हे अन्नदाता ! मेरे कहने से कुछ भी न होगा। जब सारा गाँव आपसे ठाकुर साहब कहेगा, **तब मान्य है। बड़ा** आदमी वही है, जिसे सब लोग बड़ा मानें।

२४२. **खरी मजूरी चोखो काम।**

खरी मजूरी चोखा काम।

पूरा पारिश्रमिक देना तथा पूरा काम लेना।

मजदूर को पूरा पारिश्रमिक न देने पर वह अच्छा काम नहीं कर सकता। इसी प्रकार अच्छा काम न करने पर पूरी मजदूरी भी नही मिल सकती।

२४३. **खाँक मँ छोरो गाँव मँ हेरो।**

बगल मे छोरा और गाँव में ढिढोरा।

समीप में पड़ी हुई वस्तु पर ध्यान न देकर उसे अन्यत्र ढूँढ़ना।

पास में रखी हुई वस्तु को भूलकर इधर-उधर उसकी खोज प्रारम्भ करने पर इसका प्रयोग होता है।

२४४. **खाट न, तो फूँकार तो सही।**

काटे नही, तो फुफकारे तो सही।

अत्याचारी को डरा अवश्य देना चाहिये।

सरल प्रकृति के मनुष्य की दुष्टों द्वारा हानि होते देखकर उपदेश के के रूप में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

इस कहावत का उद्गम भी एक कहानी है—एक साँप राहगीरों को काट लिया करता था। साधु के उपदेश से उसका यह कार्य बन्द हो गया। लोगों ने उसे पत्थर मार कर घायल कर दिया। साधु ने लौटकर उसकी परिस्थिति को देखा, तब कहा कि काटे नहीं तो फुफकार तो दिया कर।

२४५. **खांड खाबा हालान खाँडई मल छ।**

खाँड (शकर) खाने वाले को खाँड ही मिलती है।

भाग्यशाली को सदैव उत्तम वस्तु प्राप्त होती है।

जब किसी व्यक्ति को दुर्लभ वस्तु की अनायास प्राप्ति हो जाये, तब यह कहावत कही जाती है।

२४६. **खातां खाण, न न्हातां न्हाण।**

खाते खाना, न नहाते नहाना।

थोड़ा भी चैन न मिलना।

कार्याधिक्य के कारण जब दैनिक कार्य भी सन्तोषपूर्वक नही होने पावे, तब यह उक्ति कही जाती है।

२४७. **खातां खातां ईं ढेडां की हांडी मँ पड़ छ।**

खाते खाते ही ढेडों (चमारों) की हँडिया मे पड़ता है।

खाने को अधिक ललचाना।

जिसको जितना अधिक खाने को मिले, वह उतना ही अधिक खाने को ललचाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

२४८. **खाद कर अपराद।**

खाद्य करे अपराध।

सुविधापूर्वक भोजन मिलने से नौकर आलसी बन जाते हैं।

"खाद" शब्द किसान मजदूरों को उनके स्वामियों द्वारा दिये गए खाद्यान्न के लिये आता है। जब तक उनको खाद (खाद्य) मिलता रहेगा, तब तक वे काम की ओर रुचि नही दिखावेगे।

२४९. **खाबा पीबा मँ धाकड़ी, सतो होबा मँ छूवाण।**

खाने पीने में धाकडी, सती होने में चौहान।

धाकड़-स्त्री के समान खाने पीने में तथा चौहान-स्त्री के समान सती होने में दूसरी स्त्री नहीं।

धाकड जाति की स्त्री अधिक विषयासक्त होती है तथा चौहान राजपूतों की बालिकाएँ सती होने में अग्रणी समझी जाती है।

२५०. **खाबा मँ ऊँट, अर लदबा मँ बोतो।**

खाने में ऊँट और लदने में बोता।

जितना खावे उसके अनुसार काम न करना ।

जो व्यक्ति भोजन तो अधिक मात्रा में करता हो, किन्तु काम के समय अपनी असमर्थता प्रकट करता हो, उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

२५१. **खायत, खतरी, कूकड़ा, ज्यात-ज्यात नै पालै ।**
बामण, खाती, डूमड़ा, ज्यात-ज्यात नै मारै ।

कायस्थ, खतरी, कूकड़ा (मुर्गा), जाति-जाति को पालें ।
ब्राह्मण, खाती, डूमड़ा (बारेठ), जाति-जाति को मारे ।

कायस्थ, खतरी और मुर्गा सदैव अपनी जाति का भला चाहते हैं । ब्राह्मण बढ़ई और बारेठ अपने जाति वालों की जड़ें उखाड़ते हैं ।

यह कहावत जाति सम्बन्धी है । इसमे कायस्थ, खतरी और मुर्गों का अपनी जाति के प्रति प्रेम बताया गया है । साथ ही ब्राह्मण, बढ़ई और बारेठ अपने स्वार्थ के लिए अपनी जाति का अहित कर देते है—यह भी दिखाया गया है ।

२५२. **खाया पिया लगाया भोग, भूखाँ मर लुगायाँ का लोग ।**

खाया पिया लगाया भोग, भूखो मरे लुगाइयों के लोग ।

अकेले व्यक्ति को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती ।

अकेला व्यक्ति खाने पीने के लिए किसी के आश्रित नही रहता । किन्तु जिसके घरमें औरतें है, उसे तो समय पर ही भोजन मिल सकता है । कभी कभी उसे भूखों भी मरना पड़ता है ।

२५३. **खाया पिया होया सुखो, ऊंठ माँजतां बू दुखो ।**

खाया पिया हुए सुखी, जूठन माँजते बहू दुःखी ।

खाना सभी चाहते हैं, किन्तु काम कोई नहीं करना चाहता ।

खा-पीकर सभी सुखी हो जाते हैं और आराम करना चाहते है, किन्तु बहू जूठन साफ करते हुए दुःखी होती है ; क्योंकि पिछला सारा काम उसी पर पड जाता है ।

२५४. **खाँ राजा भोज अर खाँ गांगलो तेलण ।**

कहाँ राजा भोज और कहाँ गाँगुली तेलिन ।

विशेष एवं साधारण में समानता नहीं हो सकती ।

लोग प्रसिद्धि है कि भोज के राज्य में एक तेलिन बड़ी तान्त्रिक थी । उसके तन्त्र-मन्त्र भोज के सामने नही चल पाते थे । अतः इस कहानी के आधार पर इस कहावत का निर्माण हुआ है ।

२५५. खाली हात मूँडा ताईं न जावं ।

खाली हाथ मुँह तक नही जाते ।

बिना द्रव्य कोई भी काम नहीं होता ।

कोई निर्धन व्यक्ति रिश्वत चाहने वाले के सामने अपनी असमर्थता प्रकट करे, उस समय रिश्वत लेने वाला इस कहावत का प्रयोग कर देता है ।

२५६. खी खेत की, अर सुणी खलाँण की ।

कही खेत की, और सुनी खलियान की ।

बात को ठीक न समझ कर काम करना ।

जब किसी व्यक्ति से कहा कुछ जाय तथा वह उसके विपरीत कार्य कर डाले, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

२५७. खुराड़्या सूँ लत्ता धोवं अर करम कं भरोसं ले ।

कुल्हाडी से कपड़े धोवे और करम के भरोसे ले ।

जान बूझकर बुरा कार्य करके भाग्य का दोष बतलाना ।

बिना सोचे समझे कोई कार्य किया जाय तो उसका फल विपरीत ही निकलता है । उसमें भाग्य का क्या दोष ?

२५८. खून कं बदलं फाँसी ।

खून के बदले फाँसी ।

अपराध के अनुसार ही दण्ड मिलना चाहिये ।

न्याय के अनुसार मनुष्य का वध कर देने पर फाँसी की सजा मिलती है । अतः किसी को हानि पहुँचाने वाले दुष्ट द्वारा अधिक हानि देखकर इस कहावत का प्रयोग होता है ।

२५९. **खेती, पाँती, बीनती, चोथी आप खुजाल़।**
जे सुख छावो सायबा, तो आपूँ-आप सँभाल़।
खेती, पाँती (हिस्सेदारी), विनती, चौथे आप खुजालो।
जो सुख चाहो साहबा तो अपने आप सम्हालो।
कृषि, साजे का काम, प्रार्थना तथा खुजलाने का कार्य स्वयं करना चाहिये।
कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि हे पतिदेव ! यदि आप सुख चाहते है तो कृषि-कार्य, साझेदारी, भजन-पूजा और खुजलाने के कार्य को स्वय ही सम्पादन करे।

२६०. **खेल खलाड़ाँ का, अर घोड़ा असवाराँ का।**
खेल खिलाडियो का और घोडे सवारो के।
खिलाड़ी ही खेलों पर तथा सवार ही घोड़े पर काबू पा सकते है।
जब किसी खेल या घुडसवारी में किसी का अङ्ग भग हो जाय, तब लोग कहते है कि ये सब लोगो के वश के रोग नही है। खेल एवं घोड़ो से परिचित व्यक्ति ही उनको काम मे ले सकते है।

२६१. **खेल छनगाल़ी को, मोज कर मतवाल़ी को।**
खेले नखरेवाली का, मौज करे मतवाली का।
माता की प्रकृति का बालक पर प्रभाव पड़ता है।
नखरेवाली स्त्री अपने बालक के खेलने के लिए अनेक उपकरण जुटा देती है। अतः उसका शिशु उनसे क्रीडा किया करता है तथा मतवाली स्त्री का बालक मस्ती मे ही रहता है। माताओ का प्रभाव बालको पर अत्यधिक रूप मे पड़ता है।

२६२. **खोटो पो'सो अर कपूत बेटो आडो बगत मँ काम आव छ।**
खोटा पैसा और कपूत बेटा विपत्ति के समय काम आते है।
खोटे पैसे तथा कपूत बेटे को भी सँभाल कर रखना चाहिये।
विपत्ति के समय उदार व्यक्ति खोटा सिक्का लेकर भी वस्तु दे देते है तथा कुपुत्र भी अपने माता पिता को विपत्ति मे देखकर उदार अवश्य बन जाता है।

२६३. **खोड़्या, लँगड़्या मँ एक गुण जादाई र छ ।**

खोड़े, लँगड़े में एक गुण ज्यादा ही रहता है ।

अङ्गहीन सामान्य मनुष्य की अपेक्षा चालाक होते हैं ।

जिनके शरीर मे कोई कमी होती है, उनमें कोई न कोई बात (दुर्गुण) विशेष रूप से पाई जाती है ।

ग

२६४. **गंगा ग्या गंगादास, जमुना ग्या जमनादास ।**

गगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास ।

अवसरवादी होना ।

जैसा मौका देखा वैसे ही बन जाने वाले व्यक्ति के लिए यह उक्ति प्रचलित है ।

२६५. **गंगाजो को आबो, अर भागीरत न जस ।**

गगाजी का आना और भागीरथ को यश ।

होनहार प्रबल है ।

गंगावतरण के लिए राजा भागीरथ ने अत्यधिक तपस्या की थी, तब गगावतरण हुआ । किन्तु होनहार के कारण लोग उनका स्वय आना मानते है । अनायास होने वाले कार्य के यशभागी के लिए यह कहावत कही जाती है ।

२६६. **गंगा न्हाया न गोमती, चढ्या न गड गरनार ।**
बणज्यारा का बैल ज्यूँ, ग्या जमारो हार ।

गगा नहाये न गोमती, चढे न गढ़ गिरिनार ।
बनजारे के बैल ज्यों, गये जमारा (जीवन) हार ।

गृहस्थी में पड़कर परलोक न सुधार पाना ।

गङ्गा व गोमती के स्नान, गिरिनार पर्वत पर ऋषभदेव जी के दर्शन इत्यादि पुण्यकार्य न करके केवल दुःखमय जीवन व्यतीत करना, बनजारे

के लद्दू बैल के समान होता है। जीवन मे ऐसे कार्य अवश्य करने चाहिए। धार्मिक कृत्यों में विश्वास करने वाले व्यक्ति अपने अन्तिम दिनों में यह कहावत कहकर पश्चात्ताप करते है।

२६७. **गँडखड़ा ई गुड़ हँग लेगा तो घाणाईं कुण बूझगो ?**

गंडक (कुत्ता) ही गुड़ हँग लेगे तो घाने (कोल्हू) को कौन पूछेगा ?

दुद्धिमान का कार्य मूर्ख नहीं कर सकता।

जब किसी बुद्धि की अपेक्षा रखने वाले कार्य को मूर्ख करने को तैयार हो जाये, उस समय उसको समझाते हुए कहते है कि मूर्ख व्यक्ति ही ऐसा कार्य कर लेगे तो फिर विद्वानों की क्या आवश्यकता रहेगी ?

२६८. **गँडोला का जाया तो गारई कुरालेगा।**

गडोले (केंचुआ) के जाये तो गार ही कुरालेगे।

जातिगत स्वभाव दूर नहीं हो सकता।

किसी बालक को उसके पिता आदि का अनुकरण करते हुए देखकर लोग इस कहावत का प्रयोग करते है।

२६९. **गत कर'र गोरधन जी घालो।**

गत करके गोवर्धनजी घालो (स्थापित करो)।

चतुराई से कार्य करना चाहिये।

कोई व्यक्ति स्वच्छता का ध्यान न रखकर किसी कार्य को ऊँट-पटाँग ढङ्ग से करना चाहे, उसको यह परामर्श दिया जाता है।

२७०. **गत को न भाँत को, पण मईं बी देखो।**

गत (रूप) का न भाति (आकृति) का, पर मुझे भी देखो।

बुद्धिशालियों के सामने शेखी बघारना अच्छा नहीं।

कोई व्यक्ति जब दो मनुष्यों की बात के बीच में अपनी हाँकता चला जाय, वह भी इसलिए कि लोग उसे देखे ; ऐसे समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२७१. **गदधा फली गूँण उछलं।**

गधे से पहिले ही गोनी उछले ।

उपयुक्त व्यक्ति के स्थान पर दूसरे का बोल उठना ।

जब किसी व्यक्ति से भला बुरा कहा जाय, उस समय वह स्वयं तो कुछ न बोले, किन्तु उसके पक्ष के लोग उसकी ओर से प्रतिकार करते हुए दूसरो से झगड पड़े ; उस समय यह उक्ति कही जाती है ।

२७२. **गधड़ो क काँईं तोबरो चढ़ाणों ?**

गधी के क्या तोबरा चढाना ?

अयोग्य व्यक्ति के सम्मान की आवश्यकता नहीं होती ।

मूर्ख व्यक्ति का अधिक आदर-सम्मान करके उसको ऊँचा चढ़ाने से कोई लाभ नही है ।

२७३. **गधड़ो'र गजका !**

गधी और गजगाव !

मूर्ख की सजावट व्यर्थ है ।

जिस प्रकार गधी के दोनों ओर गजगाव (चँवर) डालना अनुपयुक्त है, उसी प्रकार कुरूप अथवा मूर्ख का शृङ्गार व्यर्थ है । विद्या के बिना उनकी शोभा नही हो सकती ।

२७४. **गर कर जसी बरी बी न कर ।**

ग्रह करे जैसी बैरी भी नही करता ।

ग्रहों का चक्कर प्रबल है ।

(शनि, राहु, केतु आदि) शत्रु से भी अधिक भयंकर होते है । क्योकि शत्रु का कार्य तो दृष्टिपथ में आ जाता है, किन्तु ग्रहो का कार्य अदृष्ट रहता है ।

२७५. **गरज जे बरस न, अर बरस जे गरज न ।**

गरजता जो बरसता नही और बरसता जो गरजता नही ।

कहने वाला करता नहीं तथा करने वाला कहता नहीं ।

जब कोई व्यक्ति बार बार किसी कार्य को करने की स्वीकृति देता

रहे, किन्तु उसे पूरा न करे, उस समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२७६. **गरज बावली होव छै।**

गरज बावली होती है।

काम पड़ने पर क्षुद्र व्यक्ति की भी अनुनय-विनय करनी पड़ती है।

समय पडने पर तुच्छ व्यक्ति का भी आदर करना पड़ता है। इस कार्य की आलोचना होने पर यह कहावत कहकर लोगों को समझा दिया जाता है।

२७७. **गरस्ती का छ्यारूँ पल्ला कीच मँ।**

गृहस्थी के चारों पल्ले कीच में।

गृहस्थी को सदैव एक न एक बाधा लगी ही रहती है।

गृहस्थ चतुर्दिक बाधाओं से घिरा रहता है। बच्चे-बच्चियों आदि की चिन्ता, परिवार के अन्य कार्य, सम्बन्धियों के प्रति व्यय आदि के कारण वह अपनी परिस्थिति का सुधार नही कर सकता। दुःखी गृहस्थ को सान्त्वना प्रदान करने के लिए यह कहावत कही जाती है।

२७८. **गरयाल बल चाल, जद सात मेर तोड़।**

गरियाल (निकम्मा) बैल चले, तब सात मुंडेर तोड़े।

निकम्मे व्यक्ति से कोई काम नहीं लेना चाहिये।

अकर्मण्य व्यक्ति से यदि काम लिया जायेगा तो वह जितना काम करेगा, उससे चौगुनी हानि कर देगा।

२७९. **गरीब की लुगाई, जगत की भाभी।**

गरीब की औरत जगत की भाभी।

निर्धन व्यक्ति को सब दबा लेते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति निर्धन व्यक्ति से बिना कुछ दिए काम लेना चाहता है तथा उसे अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह सब करना पडता है। निर्धनो की ऐसी शोचनीय परिस्थिति का दिग्दर्शन कराने के लिए यह कहावत कही जाती है।

२८०. **गरीब तो गद्धा होव छ ।**

गरीब तो गधे होते है ।

सबके समक्ष दीनता नहीं बतानी चाहिये ।

अर्थ सम्बन्धी वार्ता के समय लोग बहुधा कह देते है कि हम तो गरीब है । इस पर सामने वाला व्यक्ति उस पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि "गरीब तो गधे होते है ।"

२८१. **गरू करजे जाण, फाणी पीजे छाण ।**

गुरु करना जानकर, पानी पीना छान कर ।

विद्वान् गुरु तथा छना हुआ पानी ही ग्रहण करना चाहिये ।

हर किसी को गुरु बना लेने से यदि वह पथ भ्रष्ट कर दे तो सारा जीवन नष्ट हो सकता है तथा बिना छना पानी पीने से कई रोगों के कीटाणु पेट में पहुँच सकते है ।

२८२. **गरू तो गुड़ई रग्या, अर चेला सक्कर होग्या ।**

गुरु तो गुड़ ही रह गये और चेला शक्कर हो गये ।

शिष्य का गुरु से बढ़ जाना ।

कोई छोटा व्यक्ति जब बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करने लगे तथा तुलना में वयोवृद्धों से बढ जावे, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

२८३. **गलै गनखड़ी बांधगाँ, पण हटवाड़ो तो साधगाँ ।**

गले मे कुतिया बाधेगे, पर हाट तो साधेगे ।

भारी कष्ट उठाकर मनोरंजन के साधन जुटाना ।

किसी मनुष्य को आपत्तिजनक कार्य करने से रोका जाय, फिर भी यदि वह उसे करने के लिए बद्ध-परिकर हो तो उसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२८४. **गली सारां फली ।**

पगली सबसे पहिले ।

मूर्ख व्यक्ति अपनी अयोग्यता का विचार नहीं कर सकता ।

जब कोई व्यक्ति अपनी अज्ञानता के कारण सब कार्यों में अग्रणी बनना चाहे , उस समय यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

२८५. **गल्यो ठाकर ख पराणी बात ।**

पागल ठाकुर कहे पुरानी बात ।

समयानुकूल बात करनी चाहिये ।

नवयुगीन सभ्यता के सामने जब कोई प्राचीन सभ्यता की बात करे तथा दोनों की तुलना में प्राचीन को सर्वश्रेष्ठ बतावे, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

२८६. **गाई का भँस तल़, अर भँस का गाई तल़ ।**

गाय का भैस के नीचे और भैस का गाय के नीचे ।

किसी कार्य के लिये सुरक्षित द्रव्य को दूसरे कार्य में खर्च कर देना ।

परिवार की व्यय-सूची के अनुसार जब काम न चले और व्यय के लिए निश्चित धनराशि ही हो, तो गृहस्थ अत्यावश्यक कार्यों में कुछ अधिक एव कम आवश्यक कार्यों में कुछ कम व्यय करके अपना काम चलाते है । उनके इस कार्य का कथन इस उक्ति द्वारा प्रदर्शित किया जाता है ।

२८७. **गाई न बाछी, नींद आव आछी ।**

गाय न बच्छी, नीद आवे अच्छी ।

पशुपालन में अनेक कष्ट होते हैं ।

जिस व्यक्ति के पास पशु रहते है, वह सदैव ही कार्य में व्यस्त रहता है तथा कुछ अधिक कष्ट पाने पर उनसे उदासीनता प्रकट करके यह उक्ति कहने लगता है ।

२८८. **गाजो न बाजो, दूलाजी आँण बराजो ।**

गाजा न बाजा, दूल्हे जी आकर बिराजो ।

मांगलिक कार्यों के साथ गीत-वाद्य होना आवश्यक है ।

वैवाहिक मांगलिक-कार्यों में गीत-वाद्य का अभाव देखकर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

२८९. **गाँजो गुलाबरंग, भाँगरंग भूतिया।**
आफू अमीर रंग, दारू रंग तूतिया।
गाँजा गुलाबरग, भाँगरग भूतिया।
अफीम अमीररग, दारू (शराब) रग तूतिया।
गाँजा तथा अफीम, भङ्ग एवं शराब से अच्छे हैं।

नशा करने वाले अपने अपने नशे की प्रशसा किया करते है। उपर्युक्त कहावत मे गाँजा तथा अफीम का प्रेमी व्यक्ति अपने नशे के प्रति पक्षपात कर रहा है।

२९०. **गाँठ ई भलो, क बसवासई भलो।**
गाँठ ही भली या विश्वास ही भला।
विश्वास न हो तो वस्तु अपने पास ही रखना चाहिये।

कोई व्यक्ति किसी के पास अपनी वस्तु रख दे, किन्तु साथ ही यह सन्देह भी बना रहे कि कही वह उस वस्तु को दबा तो नही लेगा। ऐसे समय पर उस व्यक्ति से यह कहावत कही जाती है।

२९१. **गाडर प ऊन कोई बी न छोड।**
गाडर (भेड) पर ऊन कोई भी नही छोडता।
संसार स्वार्थमय है।

स्वार्थ के कारण मनुष्य अपने उपयोग की वस्तु को अपवित्र स्थान से भी प्राप्त कर लेते है।

२९२. **गाड़ो, घोड़ो डोकरो, थींनूँ होग्या संग।**
गाडी को टूटचो पाचरो, घोड़ो को टूटचो तंग।
गाडी, घोडी, डोकरी (बुढिया) तीनों होगये संग।
गाडी का टूटा पाचरा (पहिये का डडा) घोडी का टूटा तग।
कभी कभी तीव्रगामी एवं अल्पगति वाले भी साथ हो जाते हैं।

बैलगाड़ी, घोडी और बुढिया तीनों ने यात्रा प्रारम्भ की। इनमें शीघ्रगामी घोडी थी, उसके पश्चात् बैलगाडी तथा वृद्धा का स्थान था। किन्तु घोडी का तङ्ग एव गाडी के पहिए की "नेमि" टूट जाने पर तीनों

गन्तव्य पर एक साथ ही पहुँचे ।

२९३. गाडी बी ऊँग्या सूँ ईं चाल छ ।

गाडी भी ऊँगने (पहिये को तेल देने) से ही चलती है ।

बिना भोजन के शरीर के अवयव काम नहीं कर सकते ।

जीवन की गाड़ी से समानता बतलाई है । दूसरे गाडी (निर्जीव) को भी चलाने के लिए खुराक चाहिये, फिर मनुष्य बिना आहार के कैसे कार्य कर सकता है ?

२९४. गाडी देख्याँ लाडी का पग भारी होव छ ।

गाडी देखने पर लाड़ी (दुलहिन) के पैर भारी हो जाते है ।

साधन दिखाई देते ही सब का धैर्य टूट जाता है ।

जब तक साधन न दिखाई दे तब तक तितिक्षा बनी रहती है, किन्तु साधन देख लेने पर तो थकान बढती ही जाती है ।

२९५. गाडो बल पटलाँ का, ये ललकारा हाल्याँ का ।

गाडी बैल पटेलो के, ये ललकारे हालियो के ।

दूसरों की वस्तुओं से मौज करना ।

हाली लोग अपने स्वामी के गाडी बैलो को लेकर जेसा चाहते है वैसा दौडाते है तथा प्रसन्नता के कारण ध्वनि करते हुए चले जाते है । जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की वस्तु का उपभोग करके प्रसन्न होता है, तब उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

२९६. गाडी भरो धानकी, मूँठी भरो बानगी ।

गाडी भरी धानकी, मुट्ठी भर बानगी ।

वस्तु के ज्ञान के लिये थोड़ा नमूना ही पर्याप्त होता है ।

जब कोई व्यक्ति अपनी वस्तुओं या कार्यों का अवलोकन कराता ही चला जाय, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२९७. गाडो टूट जींको बूँल पे चत जाव छ ।

जिसका गाडा (छकडा) टूटे, उसका बबूल पर चित्त जाता है ।

आवश्यकता की वस्तु पर स्वतः ध्यान चला जाता है।

बबूल की लकडी ही छकड़ा बनाने के काम आती है, अतः जिसकी गाडी टूट जाय वह बबूल को अवश्य ध्यान से देखता है। इस कहावत में मनोविज्ञान के दर्शन होते है।

२९८. **गाढा नूँता, अर ढीला बलावा।**

गाढे (दृढ) निमंत्रण और ढीले (शिथिल) बुलावे।

झूठा निमंत्रण देना।

निमत्रण मे अत्यधिक आग्रह, किन्तु बुलावे में ढीलापन दिखलाना बनावटीपन का द्योतक है।

२९९. **गातां गातां ईं कलावंत होव छ।**

गाते गाते ही कलावंत होते है।

अभ्यास से ही पूर्णता प्राप्त होती है।

मनुष्य किसी विषय मे पारगत तभी हो सकता है, जब कि वह निरन्तर उसका अभ्यास करे।

३००. **गाबो अर रोबो तो सबो जाण छ।**

गाना और रोना तो सभी जानते है।

गाना और रोना तो जन्म-जात है।

किसी से गाने के लिए आग्रह करने पर जब वह यह कहे कि मुझे तो गाना नही आता, तब उसके उत्तर में यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

३०१. **गायाँ में गधड़ो चर, म्हारो नांव पीवल।**

गायो में गधी चरे, मेरा नाम पीवल।

आत्मश्लाघा करना अच्छा नहीं है।

योग्य व्यक्तियों के साथ रहने से ही कोई व्यक्ति अपने आपको अधिक श्रेष्ठ समझने लगे, तो यह उसकी भूल है। उसके अह को दबाने के लिए लोग इस उक्ति का प्रयोग करते है।

३०२. **ग्यानो भुगत ग्यान सूँ, मूरख भुगत रोय।**

ज्ञानी भोगे ज्ञान से, मूर्ख भोगे रोय ।

सांसारिक कष्ट तो सभी को भोगने पड़ते हैं ।

ज्ञानी लोग उनको बिना किसी के कहे भोग लेते हैं तथा मूर्ख लोग उनका पूर्ण विज्ञापन करके रोते हुए सहन करते है ।

३०३. **ग्यानी सूँ ग्यानी मल, कर ग्यान की बात ।**
मूरख सूँ मूरख मल, दो मुक्का दो लात ।

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की वात ।
मूरख से मूरख मिले, दो मुक्के दो लात ।

ज्ञानी तथा मूर्ख में बहुत अन्तर है ।

जब कभी दो व्यक्तियों को आपस मे लड़ते देखते हैं, तो इस कहावत का प्रयोग सदुपदेश के रूप में किया जाता है । ज्ञानी का विषय ज्ञान है तथा मूर्खो का विषय लड़ाई झगड़ा है ।

३०४. **ग्या बदरी अर काया सुदरी ।**

गये बद्री (बद्रीनाथ) और काया सुधरी ।

तीर्थाटन से आत्मा पवित्र हो जाती है ।

हाडौती क्षेत्र के अधिकाश व्यक्तियो का विश्वास है कि बद्रीनारायण की यात्रा से मुक्ति प्राप्त होती है । यहाँ के धार्मिक कार्यो मे तीर्थ स्थानों की यात्राओ का प्रमुख स्थान है ।

३०५. **गाल सारू थाप स्वाव छ ।**

गाल के अनुरूप चाटा सुहाता है ।

हैसियत के अनुसार व्यय करवाना चाहिये ।

किसी व्यक्ति से उसकी सामर्थ्य के बाहर रुपया देने के लिए कहा जाय, उस समय यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

३०६. **गार का नँगारा घर का बजाबा हाला ।**

गार (मिट्टी) के नगारे और घर के बजाने वाले ।

अपनी वस्तु के लिये अपनी ही व्यवस्था करना ।

मिट्टी के नगारे होते हुए भी अपनी व्यवस्था के कारण शीघ्र टूटते नही तथा टूट भी जाये, तो उनसे अधिक क्षति नहीं हो सकती। अपने घर वालों के द्वारा यह क्षति सह्य होती है।

३०७. **गार लार गारच्या, फाणी लार पजारच्या।**

गार लारे गारच्या, पानी लारे पैजारच्या (क्षुद्र व्यक्ति)।

दूसरों से काम लेना।

स्वय काम के हाथ न लगावे तथा दबाव से ही दूसरों के द्वारा काम करवाने वाले व्यक्ति की नीति को स्पष्ट करने के लिए यह उक्ति प्रचलित है।

३०८. **गाल्याँ सूँ काँई गूमड़ा होव छ ?**

गालियो से क्या फोडे (गूमडा) होते है ?

मनुष्य के लिये सहनशक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।

कोई व्यक्ति किसी मे गालियाँ निकाले तो उसे शान्तिपूर्वक सहन कर लेना चाहिए। क्योंकि गाली देने वाले की ही वाणी विकृत होती है, सुनने वाले का कुछ भी नही बिगड़ता।

३०९. **गाँव को छोरो'र बारलो बींद।**

गाँव का छोरा (लडका) और बाहर का बीद (दूल्हा)।

व्यक्ति का आदर बाहर ही होता है, अपने गाँव में नहीं।

गाँव के लोग तो उसके पैदा होने के समय से जानते है। अतः उनकी दृष्टि मे तो वह बालक ही रहेगा, किन्तु जिस प्रकार श्वसुर-गृह में दूल्हे का आदर होता है, वैसा ही उसका बाहर आदर होता है।

३१०. **गाँव की नपज गोइरे ई दीख्याव छ।**

गाँव की उपज गोईरे (गाँव का छोर) ही दिखाई दे जाती है।

मनुष्य के स्वभाव का अनुमान उसके विचारों से ही हो जाता है।

ग्राम की पैदावार का अनुमान उसके आसपास के खेतों से लगा लिया जाता है। इसी प्रकार मनुष्य अब क्या करना चाहता है—इसका अनुमान उसके विचारों से कर लिया जाता है।

३११. गाँव ग्या सूता जाग ।

गाँव गये, सोते हैं (या) जागते है ।

गाँव गये व्यक्ति के लौटने की कौन कह सकता है ?

गाँव गया व्यक्ति सो रहा है अथवा जाग रहा है, किसे मालूम ? अर्थात् गाँव गये व्यक्ति को अपने घर की भी याद आती है या नहीं, इसे कोई भी नहीं कह सकता ।

३१२. गांव थारो नाँव म्हारो ।

गाँव तेरा नाम मेरा ।

अपनी प्रसिद्धि के लिये स्वयं को किसी कार्य का कर्त्ता बताना ।

काम किया तो हो किसी दूसरे ने, किन्तु उस कार्य में उसका गौण स्थान बताकर प्रमुख स्थान अपना बना लेने वाले के लिए यह कहावत कही जाती है ।

३१३. गाँव बस्योई न, अर चोर फली ई आग्या ।

गाँव बसा ही नही और चोर पहले ही आगये ।

कारण से पूर्व कार्य होना ।

किसी कार्य के पूर्ण होने से पहले ही उसके पश्चात् होने वाले कार्यों की प्रेरणा करने वालों के प्रति इस कहावत का प्रयोग होता है ।

३१४. गाँव लार गँडकड़ा होव ई छ ।

गाँव के साथ गंडक (कुत्ते) होते ही है ।

हर स्थान पर बदमाश होते हैं ।

दुष्टों के द्वारा सताया हुआ व्यक्ति जब दुष्ट रहित स्थान के खोजने का प्रयास करता है, तब दूसरे व्यक्ति उससे यह कहावत कहकर उसे सहिष्णु बनाते हैं ।

३१५. गाँव सोव, अर गोमा घट्टी ओर ।

गाँव सोवे और गोमा घट्टी (चक्की) चलावे ।

मूर्ख समय के प्रतिकूल कार्य करते हैं ।

जब किसी अवसर पर किसी मूर्ख को विपरीत कार्य करते देखें, तब यह कहावत स्मरण हो आती है। जैसे शुभ कार्य के समय कोई क्रन्दन प्रारम्भ कर दे, तो यह कार्य सर्वथा विपरीत समझा जाता है।

३१६. ग्वाँर का माथा मँ अक्कल होव छ।

गवाँर के माथे (सिर) में अक्ल होती है।

मूर्खों की बुद्धि पिटने पर ठिकाने आती है।

मूर्ख के सिर में जब तक नही पड़े, तब तक उसका मस्तिष्क ठीक कार्य नही कर सकता।

"ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताडन के अधिकारी"—में भी तुलसीदास जी ने इसी भाव की अभिव्यक्ति की है।

३१७. ग्वाँर को गाल् हाँसी मँ टाल्।

गँवार की गाली को हँसी मे टालो।

मूर्ख के दुर्वचनों पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

जो मूर्ख है वह नही समझता, इसीलिए तो दुर्वचन बोलता है। यदि वह समझदार हो तो ऐसा क्यों करे? सुलझे हुए व्यक्ति मूर्ख की बातो पर ध्यान न देते हुए इस कहावत का प्रयोग करते है।

३१८. ग्वाँर खा मर क फ मर।

गवाँर खा मरे या झगड़ मरे।

मूर्ख व्यक्ति व्यर्थ ही उलझ कर अपना विनाश करलेते हैं।

बुद्धिहीन मनुष्य छोटी सी बात पर झगड़ा कर लेते है, वे आगा पीछा न सोचकर मरने मारने पर उतारू हो जाते है।

३१९. ग्वाल् छोड़ देगो तो धणी थोड़ोई छोड देगो।

ग्वाल छोड़ देगा तो धनी (मालिक) थोड़े ही छोड़ देगा।

मालिक को अपनी वस्तु की चिन्ता रहती है।

कोई व्यक्ति जब दूसरों की वस्तुओं की चिन्ता न करके उन्हें असुरक्षित छोड़ने को उद्यत हो जाय, उस समय यह कहावत कही जाती है।

३२०. **गुड़ की चोट खोथलो जाण छै ।**

गुड की चोट थैला ही जानता है।

जिस पर बीतती है, वही पीड़ा का अनुभव कर सकता है ।

आपत्ति पडने पर जिसे अनुभव होता है, वही समझ सकता है, दूसरा नही ।

३२१. **गुड़ खाव'र गुलगुलाँ सूँ परेज ।**

गुड़ खावे और गुलगुलों से परहेज ।

व्यर्थ का ढोंग अच्छा नहीं है ।

गुड खावे, किन्तु उससे बनी वस्तु से घृणा करना। जब लोग किसी दोषयुक्त वस्तु को अपनावे, किन्तु उससे बनाई हुई निर्दोष वस्तु से घृणा करे, तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

३२२. **गुड़'र घी सूँ सींचो, तो बी नींम मीठो न होव ।**

गुड़ और घी से सीचो, तब भी नीम मीठा नही होता ।

दुष्ट की प्रकृति बदली नहीं जा सकती ।

बुरे स्वभाव के व्यक्तियों के प्रति प्रेम तथा सद्व्यवहार दिखाया जाय, किन्तु जब उनमें कोई परिवर्तन न देख पड़े, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

३२३. **गुड़ डल्याँ अर घी आँगल्याँ ।**

गुड डलियों मे और घी अगुलियों में ।

गुड़ और घी थोड़े थोड़े में ही समाप्त हो जाते हैं ।

गुड और घी कुछ मँहगे आते है। अतः लोग इनका विशेष ध्यान रखने के लिए इस कहावत का प्रयोग करते है ।

३२४. **गुड़ता-गुड़ता ईं टोल होव छै ।**

गुड़ते-गुडते ही टोल (गोल) होते है ।

विपत्तियों को सहते-सहते ही व्यक्ति अनुभवशील बनता है ।

कष्टों के सहन करने की शक्ति न रखने वाले व्यक्ति को प्रेरणा

देने के लिए इसका उपयोग किया जाता है ।

३२५. गुड़ तो अँधेरा मँ ई मीठो लाग छ ।

गुड़ तो अँधेरे में ही मीठा लगता है ।

अच्छी वस्तु सभी परिस्थियों में अच्छी लगती है ।

विद्वानों के भाषण, सुन्दर संगीत तथा कलाओं के प्रदर्शन का उपयुक्त प्रबन्ध न होने पर भी रुचिकर प्रतीत होते है । इनकी रसात्मकता का आभास कराने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

३२६. गुड़ देताँईं मर जाव, तो जर क्यूँ देणो ?

गुड़ देते ही मर जावे, तो जहर क्यों देना ?

सरल उपाय से कार्य निकल जाय तो कठोर उपाय का आश्रय नहीं लेना चाहिये ।

जब सहजतया काम हो जाय, तो उसके लिए हिसक-प्रयत्नों का अवलम्बन अच्छा नही है ।

"माहुर दीन्हे जो मरे, क्यों दीजे विष ताहि"—में भी उपर्युक्त कहावत के सदृश शब्दावली प्रयुक्त हुई है ।

३२७. गुड़ को पूत ओगण ।

गुण का पुत्र अवगुण ।

भलाई के बदले बुराई ।

कोई मनुष्य किसी के साथ उपकार करे तथा वह कृतघ्नी उसके बदले उसकी बुराई करे, उस समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

३२८. गुलाब की लाराँ काँटो लगाई द्यो छ ।

गुलाब के साथ काँटा लगा ही दिया है ।

सर्वगुण सम्पन्न कोई भी नहीं होता ।

भद्र पुरुषों में भी कोई न कोई अवगुण पाया जाता है ।

३२९. गूँगा की गत गूँगो जाणे ।

गूँगे की गति गूँगा जाने ।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिस्थिति से स्वयं ही परिचित होता है ।

मनुष्यों के आन्तरिक भेद को तो वे स्वयं ही समझते है, दूसरे मनुष्य उनको कदापि नही समझ सकते ।

३३०. **गूजर, गोला, गँडकड़ा, पुचकारचाँ बसवास ।**
दुतकारचाँ धक्कै चढै, ये बना गरू को ज्यात ।

गूजर, गोले, गडकड़े (कुत्ते), पुचकारें विश्वास ।
दुत्कारे धक्के चढ़ें, ये बिना गुरु की जाति ।

गूजर, गोले (दास) तथा कुत्ते प्रेम के व्यवहार से ही प्रसन्न रहते हैं ।

गूजर, दास एव कुत्ते अनुशासन मे न रहने वाली जातियाँ है । अतः इनको प्रेम दिखाने पर ही विश्वास करते है, अन्यथा भर्त्सना करने पर ये विरोधी बन जाते है । इस कहावत द्वारा इन विशेष प्रकार के प्राणियों के स्वभाव का वर्णन हुआ है ।

३३१. **गूजर छावं ऊजड़ ।**

गूजर चाहे ऊजड ।

गूजर का कार्य पशु-चराना है ।

खेती वाले गाँव मे गूजर का गुजर नही हो सकता । अतः पशुओं की चराई के लिए वह जगल ही चाहता है ।

३३२. **गूजर सूँ ऊजड भला, मीणा सूँ नरदोष ।**
भीलाँ सूँ भाइली करी, ल्या गबूल्या कोस ।

गूजर से उजडु भला, मीणा से नरदोष ।
भीलों से मित्रता की, लिये गबूले (कपड़े) कोस (छीन लिए) ।

गूजरों, मीणों तथा भीलों के पड़ोस में नहीं रहना चाहिये ।

गूजरों के पास रहने से तो उजडु व्यक्तियों के पास रहना अच्छा है । मीणों के सामीप्य से दोषी, कलकी या जातिच्युत व्यक्तियों का पड़ोस अच्छा है । भीलों से मित्रता करने पर वे चोरी करके सब छीन लेते हैं । अतः इनके समीप निवास अच्छा नही है ।

३३३. गेला को घर राम राम में ई जावं छ ।

गेले (रास्ते) का घर राम-राम में ही जाता है ।

रास्ते में मकान होना श्रेयस्कर नहीं है ।

मार्ग में यदि किसी का निवास हो तो अतिथि अधिक सख्या में आते है तथा अतिथि-सत्कार के कारण ही वह घर नष्ट हो जाता है ।

३३४. गेला में हँग'र आँख्याँ क्यूँ खाड़ ?

गेले (मार्ग) मे हँगकर (मल त्याग कर) आँखे क्यों निकाले ?

अपराध करके डॉट नहीं बताना चाहिये ।

जब कोई व्यक्ति दोषपूर्ण कार्य करके भी बताने वाले से भला बुरा कहने लगे, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

"उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे"—में भी यही भाव व्यक्त हुआ है ।

३३५. गोइली को काल आवं जद भीलाँ कं पाड़ जावं ।

गोइली (एक सर्प वर्ग का जन्तु) का काल आवे, तब भीलों के पाड़े (मोहल्ले) मे जाती है ।

बुरे दिन आने पर बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।

मनुष्य भवितव्यता के कारण स्वतः काल के मुँह में पहुँच जाता है। वह स्वयं विपत्ति का आह्वान करने लगता है ।

"तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिले सहाय ।
आपु न आवे ताहिपे, ताहि तहाँ ले जाय ।"

उक्त दोहे मे तथा उपर्युक्त कहावत मे भाव-साम्य दृष्टिगोचर होता है ।

३३६. गोकल गाँव को पँडो ई नालो छ ।

गोकुल गाँव का (पँडा) नियम ही अलग है ।

अलग विचार धारा होना ।

किसी मनुष्य के विचार अन्य मनुष्यों के विचारों से मेल न खाते हों तथा उसके सिद्धान्त भी औरों से भिन्न हो, उसके लिए यह कहावत प्रचलित है ।

३३७. **गोदड़ी जतराई पग पसारो ।**

गोदड़ी उतने ही पैर पसारो ।

सामर्थ्य के अनुसार ही व्यय करना चाहिये ।

जितनी आय हो उससे अधिक खर्च करने पर कष्ट ही आते है । अतः सत्पुरुष उपदेश के रूप में इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

३३८. **गोबर को कीड़ो तो गोबर ई कुरालै छ।**

गोबर का कीड़ा तो गोबर ही कुरालता है (खोदता है) ।

स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता ।

देखिये कहावत नं० २६८ ।

घ

३३९. **घड़ी-पलक को मेलो छै ।**

घड़ी-पलक का मेला है ।

संसार क्षणभंगुर है ।

संसार की असारता को देखकर यह उक्ति कही जाती है ।

३४०. **घणा ग्या थोड़ा की बात, क्यूँ मार पड़ोसण लात ?**

घने (बहुत) गये थोड़े की बात, क्यों मारे पड़ौसिन लात ?

सबके अच्छे दिन भी आते हैं ।

किसी दुखी मनुष्य को कोई कष्टदायिनी बात सुनाये या कष्ट पहुँचाये, उसके लिए यह कहावत प्रचलित है ।

३४१. **घणा चोकसी कपड़ा धोवै ।**

घने (अनेक) सावधान कपड़े धोते है ।

अपनी बुद्धि पर गर्व नहीं करना चाहिये ।

जब बुद्धि पर गर्व करने वाले मनुष्य धोखा खा जाते है, तब यह कहावत कही जाती है ।

३४२. **घणाँ पटलाँ बगड़ गाँव ।**

घने (बहुत) पटेलों से गाँव बिगड़ता है ।

अधिक व्यवस्थापकों के द्वारा कार्य बिगड़ जाता है ।

किसी कार्य में अनेक सलाहकार होने से मतैक्य नहीं हो पाता । इसीलिए उनका कार्य कभी पूर्ण नहीं होता । इस कहावत में आधुनिक राजनैतिक परिस्थितियो का स्पष्ट रूप से चित्रण हुआ है ।

३४३. **घणीं नुई री ढोकली ! लेत कूप का प्राण ।**
घणा नवँ ये तीन बी, चीता, चोर, कबाण ।

घनी (अधिक) नवी (झुकी) री ! ढेकुली, लेत कूप के प्राण ।
घने (अधिक) नवँ ये तीन भी, चीता, चोर कबाण ।

चीते, चोर तथा कमान अधिक झुकनेवाले या विनम्र दिखाई देते हैं, किन्तु धोखेबाज होते है ।

अत्यधिक झुकने वाली ढेकुली कुएँ का सारा पानी खीच लेती है, उसी प्रकार चीता, चोर तथा कमान अत्यधिक झुककर मनुष्य के प्राण लेने में नही चूकते ।

"दगाबाज दूणाँ नवे, चीता, चोर, कबाण"—में भी इसी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ है ।

३४४. **घणों खावँ जे घणों मर छ ।**

अधिक खावे जो अधिक मरता है ।

हर वस्तु को लपकने की आदत बुरी है ।

अधिक खाने से मृत्यु भी हो जाती है । जिन बच्चों की हर वस्तु को छीनकर खा जाने की आदत पड जाती है, उनके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

३४५. **घर आयाँ का फावणा छ ।**

घर आये के पाहुने है ।

अतिथि का स्वागत तो घर आने पर ही हो सकता है ।

यदि कोई व्यक्ति किसी से यह कहे कि आपके सम्बन्धी मैंने बाजार में देखे थे, वे आपके अतिथि हैं । इसके उत्तर में इस कहावत का प्रयोग

होता है। घर पर आये बिना अतिथि कैसे कहा जा सकता है ?

३४६. घर आयां तो बैरी न बी बासो दे छै।

घर आये तो बैरी को भी वास (आश्रय) देते है।

घर आये हुये शत्रु से भी प्रेम का व्यवहार करना चाहिये।

भारतीय-सस्कृति के अनुसार अपने घर आये हुए शत्रु का भी सत्कार करना चाहिए। सम्भव है उसका हृदय परिवर्तित होकर वह मित्र बन सके।

३४७. घर का जोगी जोगड़ा, आंण गाँव का सद्ध।

घर का योगी योगडा, आन गाँव का सिद्ध।

विद्वान् का आदर बाहर ही होता है।

देखिये कहावत नं० ३०६

३४८. घर का घट्टी चाटं, बामण सीधो माँग।

घर के घट्टी (चक्की) चाटें, ब्राह्मण सीधा माँगे।

वस्तु-विहीन व्यक्ति से माँगना उचित नहीं है।

निर्धन व्यक्ति के यहाँ जब कोई याचक पहुँचे तो कम से कम उसके घर की परिस्थिति तो देख ही लेना चाहिए। याचक तो अपने लोभ के मारे छोटे तथा बड़े सबको एक समान देखता है।

"दीन्हेहु चसमा चखनि लघु पुनि बडो दिखाय"—से उक्त कहावत की तुलना की जा सकती है।

३४६. घर का खीर खाव'र देवता सुख मान।

घर के खीर खावें और देवता सुख मानें।

एक वस्तु से दो का सन्तोष होना।

श्राद्ध के दिनो में पितरों के लिए खीर बनाई जाती है। अतः उस समय पितरेश्वर जो देव योनि मे हैं उनके भी अर्पण हो जाय तथा घर वाले भी उसका उपभोग करलें।

३५०. घर का डाँडा सूँ माथो फूट, जद कोई काँई कर ?

घर के डाँडे से माथा (मस्तक या सिर) फूटे, तब कोई क्या करे ?

अपनों के द्वारा क्षति पहुँचना ।

जब कभी अपने परिवार के किसी सदस्य अथवा सगे-सम्बन्धी द्वारा कोई हानि पहुँचाई जावे, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

३५१. **घर का न मरता, तो एक गाँव बस जातो ।**

घर के (लोग) न मरते, तो एक गाँव बस जाता ।

होनहार होकर रहती है ।

जब कोई व्यक्ति यह कहे कि यदि ऐसा न होता तो ऐसा हो जाता । यद्यपि यह बात स्वयं सिद्ध है कि जो होना होता है वह होकर रहता है । अतः यह बात जानते हुए भी इस तथ्य का विरोध करने वाले व्यक्ति के प्रति इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

३५२. **घर का पूत क्वाँरा डोल, पाड़ोसी का फेरा ।**

घर के पुत्र क्वारे डोले (फिरे) पड़ोसी के फेरे (विवाह) ।

पहले घर की आवश्यकताओं की पूर्ति होना चाहिये ।

घर के लडके तो क्वारे फिरते रहे तथा पड़ौसी के लड़के के विवाह के लिए रुपया खर्च किया जाय, यह कैसे हो सकता है ? दूसरे के कार्यों में रुपया खर्च करने वाले व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

३५३. **घर की खाँड करकरी लाग, पलाँ को गुड़ मीठो ।**

घर की खाँड (शक्कर) करकराहट वाली लगती है, परों (दूसरों) का गुड़ मीठा लगता है ।

अपनी श्रेष्ठ वस्तु की अपेक्षा दूसरों की हीन वस्तु रुचिकर लगना ।

अपनी सुन्दर स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्रियों से प्रेम करने वाले व्यक्ति के प्रति यह व्यंग्यपूर्ण कहावत कही जाती है ।

३५४. **घर की राँड झोझरू पीसे, दगलो फरयाँ बोराजा दीखे ।**

घर की राँड (स्त्री) झोझरू (जो तथा चने) पीसे, दगला (अँगरखा) पहने बोहराजी दीखें ।

आडम्बर बनाने से पहले घर की परिस्थिति को भी सुधार लेना चाहिये।

मनुष्य अपने स्वार्थ के सामने जब अपनी गृहिणी की आवश्यक सुविधाओं की चिन्ता नहीं करते, तब उनको सब जगह धिक्कारा जाता है। घर की स्त्री तो चने तथा जो पीसती है तथा स्वयं अच्छी वेषभूषा धारण करके समाज के द्वारा सम्मान चाहते हैं। हाड़ौती समाज में स्त्रियों के सम्मान के लिये पर्याप्त कहावतें हैं। घर का ध्यान न रखने वाले व्यक्ति के लिए इसमे करारा व्यंग्य किया गया है।

३५५. **घर की खेती छ।**

घर की खेती है।

स्वयं के द्वारा उत्पादित वस्तु की अधिक चिन्ता नहीं होती।

घर मे उत्पन्न होने वाली वस्तु के नष्ट हो जाने पर लोग इस कहावत से सन्तोष प्राप्त करते है।

३५६. **घर को सूँनोई खोटो होव तो परखबा हाला को काँई दोस ?**

घर का सोना ही खोटा हो तो परखने वाले का क्या दोष ?

अपनी वस्तु की दूसरों द्वारा यथार्थ आलोचना को बुरा नहीं कहना चाहिये।

अपने पुत्र आदि के अवगुण को जब कोई व्यक्ति बतलावे, उस समय विचारक तथा सत्यप्रिय व्यक्ति इस उक्ति का प्रयोग करता है।

३५७. **घर घर गार का छूला छ।**

घर घर मिट्टी के चूल्हे है।

द्रव्य की चिन्ता तो धनी और निर्धनी दोनों को ही सताती है।

धनी हो या निर्धनी सबके यहाँ मिट्टी के ही चूल्हे हैं। धनी होने के नाते उसे सोने चाँदी के चूल्हे का उपयोग करना चाहिये ; किन्तु ऐसा नही होता। गृहस्थ की चिन्ता में डूबे हुए व्यक्ति को इस कहावत द्वारा सान्त्वना दी जाती है।

३५८. **घर मँ आग लगा'र तमासा काँई देखणो ?**

घर में आग लगाकर तमाशे क्या देखना ?

स्वयं अपनी हानि देखकर भी बचने का प्रयत्न न करना।

कार्य की अनुचित प्रक्रिया से कार्य बिगड़ जाने पर भी उसके सुधार का प्रयत्न न करने पर यह कहावत कही जाती है। इस कहावत में व्यक्ति की अयोग्यता के साथ-साथ उसकी निष्क्रियता भी प्रतिबिम्बित होती है।

३५९. घर में घर, न माल में खेती, राँड फर उलाला लेती।

घर में घर, न माल में खेती, राँड फिरे उलाला लेती (मारी मारी फिरती है)।

युवती का आवारा होना अच्छा नहीं है।

जिसके पास कोई काम न हो अर्थात् न तो घर का ही काम हो और न खेती का ही काम हो- वह इधर उधर मारी-मारी फिरती रहती है। जिसे अपने अच्छे बुरे का ध्यान न हो उसके लिए भी यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

३६०. घर में न चणाँ को चून, बेटो माँग मोतीचूर।

घर में नहीं चने का चून (आटा), बेटा माँगे मोतीचूर।

सामर्थ्य से बाहर की बात करना।

जहाँ साधारण भोजन ही मिलना दुर्लभ हो तथा पुत्र मिष्टान्न की इच्छा करे, तो यह सर्वथा अनुचित है।

३६१. घर में सीख जठ्याणी को, बार सीख पड़ोसण की।

घर में सीख जेठानी की, बाहर सीख पड़ोसिन की।

गृहिणी को परिस्थिति के अनुकूल शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

घर में रहते हुए जेठानी जैसा कहे वैसा करना चाहिए तथा अपने घर से बाहर चले जाने पर अपनी पड़ोसिन जैसा कहे, वैसा करना चाहिए। क्योंकि बाहर तो पडौसी ही अपने रिश्तेदार होते है।

३६२. घरहींण दीजे, पण बरहींण मत दीजे।

घरहीन को देना परन्तु वरहीन को न देना।

योग्य निर्धन को भी अपनी कन्या दे देनी चाहिये।

वर यदि निर्धन भी है तो कोई चिन्ता की बात नही। किन्तु वर

यदि किसी भी प्रकार अङ्ग, आकार, शिक्षा आदि में कम हो तो उसे कन्या नही देनी चाहिये ।

३६३. **घसड़-पसड़ की घाणी, आधो तेल आधो फाणी ।**

घसड-पसड की घानी, आधा तेल आधा पानी ।

कार्य का सुचारु रूप से न होना ।

जब कोई कार्य बिगाड कर किया जाय, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

३६४. **घी ढुल्यो, बसंदर मँ ग्यो ।**

घी गिरा, वैश्वानर में गया ।

अपनी हानि से अपनों का हित होना ।

जब कभी किसी वस्तु की हानि हो जाय, किन्तु उसका प्राप्ति कर्ता लोगो की दृष्टि मे योग्य हो, तो यह कहावत कहकर सन्तोष कर लिया जाता है ।

३६५. **घूघर माथो गाँव तमासो ।**

घुँघरू माथे (सिर), गॉव में तमाशा ।

छोटी सी बात पर बड़ा उपद्रव मच जाना ।

जब किसी तुच्छ बात पर बड़ा झगडा खडा करके गॉव के लोगों को इकट्ठा होने का अवसर दिया जाय, तब यह उक्ति कही जाती है । पैरो मे बाँधी जाने वाली वस्तु को सिर पर बाँधने से गॉव में तमाशा हो जाता है ।

३६६. **घोड़ा की लात सूँ घोड़ो न मर ।**

घोड़े की लात से घोड़ा नही मरता ।

पारस्परिक झगड़े से दो समान व्यक्तियों को कोई क्षति नहीं पहुँच पाती ।

जब दो समान बलवाले या समान उम्रवाले बच्चे आपस में झगडा कर बैठते है, तो उनको जो हानि होती है वह सहन करने योग्य होती है ।

३६७. **घोड़ा तो असवाराँ सूँ ईं दब छ ।**

घोड़े तो सवारों से ही दबते हैं ।

मनुष्य हर एक से प्रभावित नहीं होते ।

जिस पर जिसका प्रभाव पड़ सकता है, वह उसके ही वशीभूत हो सकता है, दूसरे के नही । जैसे घोड़ा सवार के अतिरिक्त दूसरे अनभिज्ञ पुरुष से नही दब सकता ।

३६८. **घोड़ाँ नँ काँईं घर दूरा छ ।**

घोड़ों को क्या घर दूर है ?

काम करने वाले समय नहीं पूछते ।

कार्य-कुशल व्यक्ति के समय की ओर ध्यान देने पर इस कहावत द्वारा उसे बढावा दिया जाता है। रेल तथा मोटर यानों के आविष्कार से पूर्व घोड़ा ही तीव्रगामी सवारी था । घोड़े को मीलों की दूरी पार करने में देर नही लगती ।

३६९. **घोड़ा सूँ घसाई म्हँगी ।**

घोड़े से घिसवाई मँहगी ।

सस्ती वस्तु सदैव दुःखदायी होती है ।

किसी सस्ती वस्तु को खरीदने के पश्चात् जब वह टूट जाय तथा उसकी मरम्मत के लिए अधिक दाम देने पड़ें, तब यह कहावत कही जाती है ।

च

३७०. **चड़ी कँ मूँडे सूँण छ ।**

चिड़िया के मुँह शकुन हैं ।

कार्य होने की सम्भावना है ।

लोगों का ऐसा विश्वास है कि शकुन चिड़िया कार्यों के पूर्ण हो जाने की सूचना देती है । पशु पक्षियों से शकुन जानने के लिए भी कई कहावतें है, जिनके संकेत विषयनिष्ठ पाँचवें वर्गीकरण के अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

३७१. **चड़ी चप्प ऊँदरा लप्प ।**

चिड़िया चुप, ऊँदरे (चूहे) लुप ।

वातावरण में स्तब्धता होना ।

नीरव एवं निस्तब्ध वातावरण के लिए यह उक्ति प्रयोग में लाई जाती है ।

३७२. **चड़ो बो लूंण चाबबा लागगो ।**

चिड़िया भी नमक चबाने लग गई ।

असम्भव कार्य का प्रारम्भ होना ।

जब कोई व्यक्ति अपनी शक्ति के बाहर की बात करे तथा ऊँची-ऊँची उड़ान भरे, उसके लिए यह अन्योक्ति काम में लाई जाती है ।

३७३. **चढंगो जे गरंगो ।**

चढ़ेगा जो गिरेगा ।

जिसका अभ्युदय होता है, उसका पतन भी निश्चित है ।

उत्थान एवं पतन क्रमशः आते ही रहते है ।

३७४. **चढती ज्वानी अर माँजो ढीलो ।**

चढ़ती जवानी और माँजा ढीला ।

यौवनावस्था में पुरुषार्थ की कमी होना ।

जब युवकों में शारीरिक निर्बलता दिखाई दे तथा वे छोटे छोटे कार्य भी न कर सकें, उस समय उनके लिए यह उक्ति कही जाती है ।

३७५. **चणा छा जद चाबबा हाला न छा,**
चाबबा हाला छै जद चणा कोई न ।

चने थे तब चबाने वाले नही थे, चबाने वाले हैं, तब चने नहीं है ।

समय पर सम्पत्ति न मिलना ।

जब सम्पत्ति थी, तब सन्तानें न थीं, किन्तु जब सन्तानें हुई तो सम्पत्ति न रही । भाग्य के अनुसार ही सम्पत्ति की प्राप्ति होती है ।

३७६. **चणा तो चरूंजो होग्या ।**

चने तो चिरौजी हो गये ।

सस्ती वस्तु का अधिक महँगी हो जाना ।

जब सस्ती वस्तु के भावों में सहसा बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाय, तब इसका प्रयोग होता है ।

३७७. **चणाँ न मानो बाह ।**

चनोने न मानी (चाही) बाह ।

चने के लिये बाह की आवश्यकता नहीं होती ।

खेतो में जो बाह आया करती है, चने के लिए उसकी आवश्यकता नही होती । यह कृषि सम्बन्धी कहावत है ।

३७८. **चत चँगेड़ो, मन मालव, ह्यो हाडोत्याँ जाय ।**

चित चगेरी, मन मालवे, हिया हाडौती जाय ।

कार्य साधक शक्तियों के केन्द्रित न होने से कार्य पूरे नहीं हो सकते ।

चित चगेडी (मेवाड का एक गाँव) जा रहा है और मन तथा हृदय क्रमश. मालवे और हाडौती जा रहे है । अत. कार्य की सिद्धि सुलभ नही है । अव्यवस्थित चित्तवाले के लिए यह कहावत कही जाती है ।

३७९. **चमठी चून, चोबार रसोई ।**

चुटकी भर चून (आटा), चौबारे में रसोई ।

छोटे से कार्य में बड़ा आडम्बर बनाना ।

कार्य की श्रेष्ठता के साथ ही उसमें आडम्बर शोभा देता है । थोडी सी वस्तु के लिए बड़ा आडम्बर करने पर यह उक्ति कही जाती है ।

३८०. **चमड़ो जाव, पण दमड़ो न जाव ।**

चमडी जावे, पर दमडी नही जावे ।

अत्यधिक लालची होना ।

शारीरिक हानि की चिन्ता न करते हुए जो पैसे की रक्षा करते है, उन शूम-शिरोमणियों के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

३८१. **चमार क्वा मँ जा'र बठ तो व्हाँ बी मँडको माथा प बठ्याँ मान ।**

चमार कुएँ में जाकर बैठे तो वहाँ भी मेंढक सिर पर बैठे माने ।

अभागे को कहीं भी आराम नहीं मिलता ।

जिसके भाग्य में सुख न लिखा हो, वह कही भी भागकर जावे, वहीं दुःख से पाला पड जायगा ।

३८२. **चमार की छोरी जड़ाव बाई नाँव ।**

चमार की छोरी, जड़ाव बाई नाम ।

रूप तथा गुण के अनुसार नामकरण न होना ।

रूप तथा गुण के विरुद्ध नाम भी हास्य का कारण बन जाता है । लोग व्यग्य में इस कहावत का प्रयोग करते है ।

३८३. **चमाराँ को दचाड़ो जूत्याँ सूँ ईं पातो दे छ ।**

चमारों की द्याडी (कुल देवी) जूतियों से ही पाती देती है ।

नीच मनुष्य डण्डे से ही वश में आता है ।

जब कोई व्यक्ति सीधे कहने से काम न करे, किन्तु डण्डे का भय बताने पर काम करने लगे, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

"जैसा देव वैसी पूजा"—मे भी उपर्युक्त भाव के दर्शन होते हैं ।

३८४. **चमाराँ न सरग की बेगार ।**

चमारो को स्वर्ग की बेगार ।

भाग्यहीनों को सर्वत्र परिश्रम करना पड़ता है ।

देखिये कहावत सं० ३८१ ।

३८५. **चरी आंगली पं कोई बो न मूँत ।**

चिरी हुई अँगुली पर कोई भी नही मूतता ।

समय पर कोई सहायता नहीं करता ।

ताजा कटे हुए स्थान पर पेशाब करने से रक्त का निकलना बन्द हो जाता है । ग्रामीणों का घायलों की पहली सहायता वाला यह एक प्रयोग है । अपने परिचितों के उपेक्षा भाव का अनुभव करके यह कहावत कही जाती है ।

३८६. **चलणों भलो न कोस को, बेटी भली न एक।**
देणों भलो न बाप को, इसवर राखै टेक।

चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक।
देना भला न बाप का, ईश्वर रक्खे टेक।

ऋण लेना अच्छा नहीं होता।

दो मील की यात्रा मे भी अनेक कष्ट प्राप्त होते है। पुत्री होने पर भी अनेक कष्टों का सामना करना पडता है। औरो का तो क्या कहा जाय—ऋण तो पिता का भी अच्छा नही। ऋण चुकाने में असमर्थ किन्तु ईमानदार व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करता है।

३८७. **चलती को नाँव गाडी छ।**

चलती का नाम गाडी है।

अच्छे समय में सब कोई पूछते हैं।

बुरे दिनो मे व्यक्ति अपने परिचितों का उपेक्षा भाव देखकर इस कहावत का प्रयोग करते है।

३८८. **चलतो न गाडी खै, असल चीज न खोयो।**
रंगो न नारंगो खै, देख कबीरो रोयो।

चलती को गाड़ी कहे, असल चीज को खोया।
रगी को नारगी कहे, देख कबीरा रोया।

संसार में सभी कार्य उल्टे होते है।

चलती हुई को लोग गाडी (गडी) कहते है। तत्त्व वाली वस्तु को खोया, तथा रगीन वस्तु को बिना रग वाली कहते है। यह देखकर कबीर रोये। यह दोहा कबीर का है। इसका हाडौतीकरण करके लोगों ने इसे कहावत के रूप मे अपना लिया है।

३८९. **चलतो-फरती छाया छ।**

चलती-फिरती छाया है।

लक्ष्मी स्थिर नहीं है।

जिस प्रकार छाया चलती-फिरती रहती है, उसी प्रकार धन एक से

दूसरे के पास जाता-आता रहता है।

३९०. **चातक, चकवा, चतुर-नर, आठूँ पहर उदास।**
खर, घग्घू, मूरख, पसू, सुखी रैत सब मास।
चातक, चकवा, चतुर नर, आठौ पहर उदास।
खर, घग्घू, मूरख, पशु, सुखी रहत सब मास।
सत्त्वगुण प्रधान प्राणी ही दूसरों के दुःख से चिन्तित होते हैं।

चातक स्वाति की बूँद के लिए, चक्रवाक अपने रात्रि-वियोग के कारण तथा विद्वान् सांसारिक दुःख से दुःखी रहते है। लौकिक अथवा पारलौकिक किसी भी प्रकार की चिन्ता न होने के कारण गधा, उल्लू, मूर्ख और पशु सदैव सुखी रहते है।

३९१. **चाँद चोपड़बा में तो तेलई कोईन, अर एक द्यो पोल में बो जोज्यो।**
चाँद (खोपडी) मे लगाने को तो तेल ही नही है और एक दिया पौर मे भी जलाना।
सामर्थ्य से अधिक व्यय करना।

जब कोई व्यक्ति किसी की आर्थिक-स्थिति पर विचार न करके उसे अधिक व्यय करने का परामर्श दे, उस समय यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

टिप्पणी—इस कहावत को शिष्ट बनाने के लिए इसके प्रथम शब्द में परिर्तवन किया गया है।

३९२. **च्यार दनाँ की चाँदणी, फेर अँधेरी रात।**
चार दिनों की चाँदनी, फिर अँधेरी रात।
सुख की घड़ियाँ थोड़ी एवं अस्थाई होती हैं तथा दुःख की घड़ियाँ अधिक एवं स्थाई होती है।

कोई मनुष्य अपने वैभव पर गर्व करे तथा उसे देख-देख कर फूला न समावे, तो उसके उद्‌बोधन के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

३९३. **चारणी में दूध दोव, अर करम के भरोसे ले।**
चलनी मे दूध दुहे और करम (भाग्य) के भरोसे ले।

स्वयं बुरा कार्य करके उसका फल भाग्य पर डाल देना ।

बहुत से मनुष्य किसी कार्य को विचारपूर्वक नही करते अर्थात् कार्य की विरुद्ध-प्रक्रिया को अपनाने पर जब उसका बुरा परिणाम निकलता है, तो लोग कहते है कि भाग्य में यही लिखा था ।

३९४. **चारणी को चाम, संजोगी को जाम ।**
खायत को गुलाम, खदी न आवे काम ।

चारणी का चमडा, सयोगी का जाम (पुत्र) ।
कायस्थ का गुलाम, कभी न आवे काम ।

चारणी का चमड़ा, बाबा जी का पुत्र व कायस्थ का नौकर कभी काम नहीं आते ।

चारणी का चमडा किसी उपयोग मे नही आ सकता तथा बाबाजी का पुत्र तथा कायस्थ का नौकर दूसरो के काम नही आ सकते ।

३९५. **चालता को फागड़ो न खींचणो ।**

चलते की पगड़ी नही खीचना ।

किसी व्यक्ति को व्यर्थ तङ्ग नहीं करना चाहिये ।

अपने कार्य मे व्यस्त व्यक्ति को जब किसी काम के लिए तङ्ग किया जाता है, तब यह कहावत कही जाती है ।

३९६. **चालता बैल के आर न लगाणो ।**

चलते बैल के आर (लकडी पर लगी हुई कील) न लगाना ।

कार्य में लगे हुए को व्यर्थ ही तङ्ग न करना चाहिए ।

जैसे कोई मजदूर निरन्तर अपना काम कर रहा हो, फिर भी बीच-बीच में उसकी बुराइयाँ बताकर डॉट-डपट दिखाई जाय, तो वह कार्य सुधारने के बजाय बिगाडता ही है ।

३९७. **चालतो घोड़ो आपरतो ई दाणों माँग लेगो ।**

चलता हुआ घोड़ा अपने आप दाना माँग लेगा ।

समय पर दुष्टों का स्वतः ही सुधार हो जाता है ।

दुष्ट को अच्छी सलाह देने का जब विचार किया जाय, तब सज्जन पुरुष यह कहावत कहते है ।

३९८. **चालबो सड़कको, छाव फेरई हो, दूध भैंस को, छाव सेरई हो ।**
भुजा भायाँ को छाव बैरई हो, झीमबो ज्यात को छाव जैरई हो ।
चलना सडक का, चाहे फेर ही हो, दूध भैंस का, चाहे सेर ही हो ।
भुजा भाइयों की, चाहे बैर ही हो, जीमना जाति का, चाहे जहर ही हो ।
सड़क पर चलना, भैंस का दूध पीना, भाईयों से प्रेम-व्यवहार तथा जाति-बन्धु के यहाँ भोजन करना अत्यन्त श्रेष्ठ है ।

सड़क पर चलने से पथ-भ्रष्ट होने का भय नहीं । भैंस का दूध अधिक पौष्टिक होता है । भाई समय पर जान लडा देते हैं तथा जाति-बन्धु के यहाँ का भोजन अपने अनुकूल होता है । अतः ये सब ग्रहणीय वस्तुएँ है ।

३९९. **चाँवल् की कणी, अर माला की अणी**
चावल की कनी और भाले की अनी ।
चावल को ठीक पकाकर खाना उचित है ।

यदि चावल का कण पकने में कच्चा रह जाय, तो वह आँतों के लिए उसी प्रकार दुःखदायी होता है, जैसे भाले की नोंक ।

४००. **चाँवल् तो एकई मसक्यो जाव छ ।**
चावल तो एक ही मसका (दबाया) जाता है ।
भले बुरे की परीक्षा तो एक ही बार की जाती है ।

छोटा सा काम पड़ने पर अपने हितू की परीक्षा करली जाती है । जिससे काम पड़े, वह व्यक्ति बहाना करे, तो उससे यह कहावत कही जाती है ।

४०१. **चावलाँ में बपत पड़ जद छधाछ सूँ खाव ।**
चावलों में विपत्ति पड़े, तब छाछ से खाते हैं ।
विपत्ति पड़ने पर योग्य व्यक्ति को भी नीच काम करने पड़ते हैं ।

हाड़ौती प्रान्त मे चावल सदैव शक्कर मिलाकर खाये जाते है। यदि कोई उन्हे किसी दूसरी वस्तु के साथ खाता हो तो उसकी हँसी उड़ाई जाती है। इसीलिए जब उन्हे मट्ठे से खाया जाय तो कहा जाता है कि यह चावलों की विपत्ति का समय है, जबकि उन्हे शक्कर के स्थान पर मठे जैसी साधारण वस्तु के साथ खाया जाता है। योग्य व्यक्ति का नीच कार्य के साथ योग देखकर यह कहावत कही जाती है।

४०२. चींटी चाली सासर, नो मण सुरमो सार।

चीटी चली ससुराल, नो मन सुरमा सार (लगाकर)।

आवश्यकता से अधिक शृङ्गार व्यर्थ है।

अधिक सुरमा लगाने वाले या अधिक शृङ्गार-प्रिय व्यक्ति के प्रति इस कहावत का प्रयोग होता है।

४०३. चींटी की लात अर माछर को धक्को,
राम बचावे तो बचे, न तो बचे न बात।

चीटी की लात और मच्छर का धक्का, राम बचावे तो बचे नही तो बचे न बात।

मृत्यु के लिये अत्यन्त लघु बहाना भी पर्याप्त है।

जब मृत्यु आने वाली होती है, तो किसी भी बहाने से हो सकती है। समय आने पर जिनसे मृत्यु नही हो सकती, वे भी कारण बन जाते है।

४०४. चींटी के मरती बार फाँखड़ा उग जावे छे।

चीटी के मरते समय पख उग जाते है।

अत्यधिक गर्व विनाश का सूचक है।

वर्षा-ऋतु में बहुधा चीटियों के पर निकल आते है। उसके कारण ही उनकी मृत्यु हो जाती है। वे पूर्णतया उड़ने में असमर्थ होने के कारण दीपक पर जलकर मर जाती है।

४०५. चुपड़ी'र दो दो।

चुपड़ी और दो दो।

बड़े आनन्द से दिन व्यतीत होना।

तृप्तिपूर्वक भोजन से भी एक स्वर्गीय-आनन्द प्राप्त होता है। भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था का दिग्दर्शन कराने के लिए यह कहावत कही जाती है।

"पाँचों अँगुलियाँ घी में होना"–में भी यही भाव प्रदर्शित होरहा है।

४०६. **चून का द्या न घर मँ मल तो उँदरा खावं,**
बार मल तो कागला ले जावं।

चून (आटे) के दिये को घर में रक्खे तो चूहे खावें, बाहर रक्खें तो कौवे ले जावे।

निर्बलों के लिये कोई स्थान नहीं है।

किसी निर्बल व्यक्ति को जब सब स्थानो पर तङ्ग किया जाय, तो उसके रक्षक इस कहावत का प्रयोग करते है।

४०७. **चेचट राँड चड़ो को बासो, अन्न मल तो बलीता को साँसो।**

चेचट राँड चिडिया का निवास है, जहाँ अन्न मिले तो ईंधन की चिन्ता रहती है।

चेचट गाँव में निवास नहीं करना चाहिये।

चेचट कोटा जिले के अन्तर्गत एक तहसील है। उसके लिए लोगों ने इस कहावत का निर्माण किया था। वह पक्षी के नीड़ के समान बताई गई है, जहाँ किसी भी प्रकार अन्न मिल जाय, तो ईधन नही मिल सकता।

४०८. **चेला हाला चेज चलावं, गँडका व्हाल बाड़ पलावं।**

चेला वाला चेल (आज्ञा) चलावे, कुत्तों द्वारा बाड पिलवावे।

अपने कार्य को किसी अयोग्य के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिये।

कोई गुरु अपने शिष्य को किसी कार्य के लिए आज्ञा दे। उसके पश्चात् वह शिष्य दूसरे से तथा दूसरा तीसरे से–इसी क्रम से करते चले जाये, तो वह कार्य पूर्ण नही हो सकता।

४०९. **चोटी को पसीनो एडीताईं आवं, जद धन पदा होवं छं।**

चोटी का पसीना एड़ी तक आवे, तब धन पैदा होता है।

घोर-परिश्रम से धन पैदा होता है।

कठिन परिश्रम से कमाये धन को आलसी मनुष्य व्यर्थ खर्च करें, उस समय इस उक्ति को प्रयोग में लाते है ।

४१०. **चोदू अर संख पलाँ को फूँक सूँ ईं बाज छ ।**

मूर्ख और शङ्ख दूसरो की फूँक से ही बजते है ।

मूर्ख अपनी बुद्धि से काम नहीं कर सकता ।

जिस प्रकार शख फूँक मारने से बज उठता है, उसी प्रकार मूर्ख भी दूसरो के ही कथनानुसार बहकावे मे आकर अर्थ-अनर्थ कुछ भी कर डालता है ।

४११. **चोर का पग काचा होव छ ।**

चोर के पैर कच्चे होते है ।

चोर सचाई को अधिक समय तक नहीं छिपा सकता है ।

किसी चोर को जब यातना मिलने लगती है, तब थोडी ही देर में वह सम्पूर्ण बात कह देता है ।

४१२. **चोर की माई ख क म्हारा बेटा क तरवार लाग जाज्यो,**
पण काँटो मत भागज्यो ।

चोर की माता कहती है कि मेरे बेटे के तलवार लग जाना, पर काँटा मत लगना ।

काँटा चोर का शत्रु है ।

चोर के तलवार लगने पर तो वह भागकर घर आ सकता है, किन्तु काँटा लगने पर भाग नही सकता है । अतः इस कहावत के द्वारा चोर की माता की मनोकामना वर्णित की गई है ।

४१३. **चोर की मा चंडाल क जावो ।**

चोर की मा चाडाल के जाओ ।

दूसरों की बातों से कोई प्रयोजन न होना ।

सांसारिक परिस्थितियों पर जब ध्यान देते हैं तो शुद्ध विचारक यही परिणाम निकालते है कि दूसरों का उपकार करने वाले स्वयं कष्ट पाते है । अतः अपने कार्य से ही मतलब रखना चाहिए ।

४१४. चोर की मा छान-छान रोवे ।

चोर की मा चुपके चुपके रोवे ।

दुष्टता करने वाले के सम्बन्धी छिपकर अनुताप प्रकट करते हैं ।

जब चोर को किसी प्रकार की सजा हो जाती है, तब उसकी मा छिपकर रोती है । इसलिए कि कही लोगों को चोर के साथ पुत्र का नाता ज्ञात न हो जाय ।

४१५. चोर चोर माँवसी जाया भाई ।

चोर चोर मौसेरे भाई ।

दुष्ट कार्य करने वाले आपस में सम्बन्धी हो जाते हैं ।

दुष्ट कार्य करनेवालों को जब दूसरे अपरिचित चोर मिल जाते हैं, तो वे सब चोरी से प्राप्त हुई वस्तु का आपस में विभाजन कर लेते है ।

४१६. चोर चोरी करं, घर मँ बोल साँच ।

चोर चोरी करे, घर मे बोले सच ।

घरवालों से कोई भेद नहीं छिपाया जाता ।

किसी का पुत्र अथवा सम्बन्धी कोई बुरा कार्य कर आया हो, किन्तु सच न बोलता हो, तो उस समय उससे यह कहावत कही जाती है ।

४१७. चोर न कॉईं मार, चोर को माई न मार ।

चोर को क्या मारे, चोर की मा को मार ।

बुराई की जड़ को नष्ट कर देना चाहिये ।

चोर को मारने से कोई लाभ नही । उसकी माता को मार देना चाहिए, जिससे वह चोरो को जन्म ही न दे सके ।

४१८. चोर साऊकार न डंड ।

चोर साहूकार को दड दे ।

अपराध स्वीकार न करके दूसरों को दोषी ठहराना ।

अपराधी अपराध करके जब धौस जमाने लगे, तब यह कहावत कही जाती है ।

"उल्टा चोर कोतवाल को डाटे"—कहावत भी इसी भाव को व्यक्त करती है।

४१९. **चोर सूं खो क चोरी करजे, अर साऊकार सूं खो क जागतो रीजे।**

चोर से कहा कि चोरी करना और साहूकार से कहा कि जागता रहना।

दोनों पक्षों को बनाये रखना।

यह कहावत ऐसे व्यक्ति के लिए प्रचलित है, जो लड़ाई-झगड़ा भी करादे तथा सुलह भी करा दे।

४२०. **चोरी को गुड़ मीठो।**

चोरी का गुड़ मीठा।

चोरी का धन अच्छा लगता है।

चोरी से प्राप्त वस्तु अपने पास रखी हुई वस्तु से अधिक प्रिय लगती है।

४२१. **चोरी को धन मोरी में।**

चोरी का धन मोरी मे।

बुरे काम का पैसा बुरे काम में ही लग जाता है।

जो धन जैसे आता है, वैसे ही उसका उपयोग होता है। चोरी का द्रव्य सुकार्य में कभी नही लग सकता। वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है। अच्छा पैसा सदैव अच्छे कार्य मे लगता है।

छ

४२२. **छणगा टाँक, छंद कर, अदक दखाव रूप।**
याँ घर मत रीझो गोरी, ये बांदी-गडा रजपूत।

छनगा (तुर्रा) टाँगे, छद करे, अधिक दिखावे रूप।
इन घर मत रीझो गोरी, ये (बाँदीगडा) दासीसुत राजपूत।

आकर्षक वस्तु शुद्ध और सच्ची नहीं होती।

एक सखी अपनी शुद्ध क्षत्रिय राजकुमारी से कहती है कि हे गोरी!

यह व्यक्ति जो अपने साफे के छोर को तुर्रे के रूप में टाँगे हुए है तथा अनेक प्रकार का अभिनय करके अपने रूप का अत्यधिक विज्ञापन करता है, उसके घर जाने के लिए प्रसन्न न हो। यह दासी पुत्र है, शुद्ध राजपुत्र नही है। यह तुझे भुलावे में डाल रहा है।

४२३. छाया मँ आणो, अर छाया मँ जाणो।

छाया में आना और छाया मे जाना।

दूकानदारी के लिये पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है।

सूर्यास्त के बाद आने तथा सूर्योदय से पूर्व दूकान पर जाने वालों से यह कहावत कही जाती है।

इस कहावत का आधार एक कहानी है—

एक महाजन ने मरते समय अपने बच्चों को यह शिक्षा दी कि 'छाया में आना और छाया में जाना।' उनमें से किसी ने अपनी दूकान तक टीन लगवा दिये। फिर किसी ने इस बात को समझा कि सूर्योदय से पूर्व दूकान खोलकर तथा सूर्यास्त तक रखने से अत्यधिक लाभ होता है।

४२४. छावो छुरी खड़बूजा प पड़ो, छाबो खड़बूजो छुरी प पड़ो, बात एकई छै।

चाहे छुरी खरबूजे पर पड़े, चाहे खरबूजा छुरी पर पड़े, बात एक ही है।

निर्बल एवं शक्तिशाली के बीच झगड़ा होने पर निर्बल ही मारा जाता है।

जिस प्रकार हर परिस्थिति मे खरबूजे की ही हानि निश्चित है, उसी प्रकार सदैव निर्बल ही मारा जाता है। चाहे निर्बल पहले झगडा करे अथवा सबल पहले लडे। बात एक ही है।

४२५. छींचोड़ी न कँरो बाँसो मलई जाव छ।

छीचोड़ी को (केरा) टेढा बाँसा मिल ही जाता है।

जैसे को तैसा मिलना।

जब किन्ही दो दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियो का मेल हो जाय, उस समय यह कहावत कही जाती है।

४२६. छोल का घुसाला मँ माँस को काँई काम ?

चील के घोंसले में मांस का क्या काम ?

उपभोक्ता के पास वस्तु का संग्रह नहीं हो सकता ।

जैसे किसी मित्र के यहाँ किसी को कोई पदार्थ न मिले तो यह कहावत प्रयोग मे लाई जाती है । चील सब मास खा जाती है, अन्य के लिए नही छोड़ती ।

४२७. **छूलो तो म्हारो मनको मोजी, छट म्हीनं सलगगो ।**
फावणो बी अस्यो रंगीलो, अँदर धडूक्याँ जावगो ।

चूल्हा तो मेरा मन का मौजी, छठे महीने सुलगेगा ।
पाहुना भी ऐसा रंगीला, इन्द्र-गाज पर जावेगा ।

सूम के घर निर्लज्ज मेहमान का आना ।

कजूस के घर अतिथि के आने पर उसकी स्त्री कहती है कि "मेरा चूल्हा मन का मौजी है, छै महीने में जलेगा । किन्तु मेहमान भी ऐसा रगीला आया है कि इन्द्र-गर्जन अर्थात् वर्षाऋतु होने पर ही लौटेगा ।"

४२८. **छेलो न दूध तो द्यो, पण मींगणचाँ पटक'र ।**

छेली (बकरी) ने दूध तो दिया, पर मेगनी डालकर ।

दुःखी करके कार्य पूरा करना ।

अत्यधिक प्रतीक्षा के बाद और हार्दिक ग्लानि बढ़ने पर किसी का कोई कार्य सम्पन्न हो, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

४२९. **छोको बाणचों पड़्यो बरचोबर, पड़्यो बाणचों मरचो बरचोबर ।**

अच्छा बनिया रोगी के बराबर, बीमार बनिया मरे के बराबर ।

बनियों में शारीरिक दुर्बलता अधिक होती है ।

श्रम के कार्यो मे बहाने बनाने पर बनियों की कलई खुल जाती है । अधिक शारीरिक श्रम न कर सकने के कारण बनियों के लिए यह कहावत प्रचलित हो गई ।

४३०. **छोटो मूँडो बडी बात ।**

छोटा मुँह बडी बात ।

योग्यतानुसार बात ही शोभा देती है ।

अपनी योग्यता से अधिक बात करने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

४३१. **छोटो जतरो ई खोटो ।**

छोटा उतना ही खोटा ।

छोटे में अधिक अवगुण होते हैं ।

आयु में छोटा व्यक्ति जब बड़े व्यक्ति से कार्य अथवा बातचीत में बढकर निकल जाये, तब यह कहावत कही जाती है ।

४३२. **छोड ईंस'र बठ बीस ।**

छोड़े ईस और बैठ बीस ।

पलङ्ग पर ईंस छोड़कर बैठना चाहिये ।

पलङ्ग के चारों ओर की लकडियों को छोड़कर बीस व्यक्ति भी बैठ जाये, फिर भी पलंग नही टूटता ।

ज

४३३. **जग-जण को सुख साधतां बेसां रगी बाँझ ।**

जन-जन (प्रत्येक व्यक्ति) का सुख साधने से वेश्या बन्ध्या रह गई ।

दूसरों के सुख के साथ साथ अपने सुख का भी ध्यान रखना चाहिये ।

केवल दूसरों का उपकार करने से जब किसी को बडा भारी दुःख उठाना पड़े, उस समय के लिए यह उक्ति प्रचलित है ।

४३४. **जणीं न ब्याई, स्वा-रोग खां सूं लाई ?**

जनी न बियाई, प्रसूति-ज्वर कहाँ से ले आई ?

नियम से रहते हुये अस्वस्थ हो जाना ।

स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन न करने पर भी जब सहसा कोई रोग पैदा हो जाये, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

४३५. **जतरा ताल न, उतरा मंजीरा फूटग्या ।**

जितने ताल नही, उतने मंजीरे फूट गये ।

मूल से अधिक हानि पहुँचना ।

जब किसी व्यापार में किसी को हानि हो जाये अर्थात् उस वस्तु का असली मूल्य भी प्राप्त न हो सके, तब यह कहावत कही जाती है ।

४३६. **जतरा पूला उतरी झाल ।**

जितने पूले उतनी झाल ।

जितना सामान होगा उतना ही कार्य बनेगा ।

जिस प्रकार अग्नि में जितने घास के पूले डाले जायेंगे, उतनी ही ऊँची उसकी ज्वाला उठेगी । इसी प्रकार जितनी अधिक तैयारियाँ होंगी उतना ही बड़ा कार्य होगा । कारण यह है कि साधना के परिमाण के अनुसार ही कार्य का परिमाण होता है ।

४३७. **जतरा मूँडा उतरी बात ।**

जितने मुँह उतनी बाते ।

मनुष्यों के विचार अलग-अलग होते है ।

किसी कार्य के लिए एकत्र हुए लोगों मे भिन्न विचार-धारा के दर्शन हों, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

४३८. **जतरा म्याँ मरचा, उतराई रोजा कम होया ।**

जितने मियाँ मरे, उतने ही रोजे कम हुए ।

जितने दुष्ट चले जावें, उतना ही दुःख कम हो जाता है ।

किसी के यहाँ से भोज आदि के समय यदि कुछ दुर्जन उठकर चले जाये तो उसे उतनी ही बचत हो जाती है ।

४३९. **जतरो गुड़ घालो उतरोई मीठो छ ।**

जितना गुड़ डालो उतना ही मीठा है ।

कार्य की अच्छाई बुराई व्यय पर निर्भर है ।

जिस कार्य में जितना अधिक व्यय किया जायगा, वह उतना ही अधिक सुन्दर कार्य होगा ।

४४०. **जद हलाणीं जदी पलाणीं ।**

जब हिलानी (कहे) तब ही पलानी (चल पड़े) ।

कार्य का भी निश्चित समय होता है ।

किसी भी कार्य को समय-कुसमय न देखकर करने की सलाह या आज्ञा देने पर इस कहावत का प्रयोग होता है ।

४४१. **जमीं जोरू जोर की जोर हटचाँ पं ओर की ।**

जमीन (और) जोरू जोर की, जोर (बल) हटने पर अन्य की ।

भूमि एवं स्त्री का उपभोग सबल ही कर सकते हैं ।

बलशाली ही भूमि और स्त्री की रक्षा कर सकते हैं । व्यक्तियों का बल कम हो जाने से उनपर दूसरों का आधिपत्य हो जाता है ।

४४२. **जर सूं जर दबं छ ।**

जहर से जहर दबता है ।

दुष्ट दुष्टता से ही मानते हैं ।

जिस प्रकार एक विष के उतार के लिए दूसरा विष काम मे लाया जाता है, उसी प्रकार दुष्ट को दबाने के लिए दुष्टता का ही प्रयोग होना चाहिए ।

४४३. **जर को कीड़ो तो जर ई खाव छ ।**

जहर का कीडा तो जहर ही खाता है ।

दुष्ट तो दुष्टता करता ही है ।

जातिगत स्वभाव के कारण नीच प्रवृत्ति के मनुष्यो का ध्यान उच्च कार्यों की ओर नही जा सकता । "विष कीरा विष खात"—कहावत खडी बोली में प्रसिद्ध ही है ।

४४४. **जसो करगा उसो भरगा ।**

जैसी करेगा वैसी भरेगा ।

कार्य के अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है ।

अच्छे कार्यों का फल अच्छा मिलता है तथा बुरे कार्यों का फल बुरा मिलता है ।

"जैसी करनी वैसी भरनी"—में भी उपर्युक्त शब्दावली जैसा आनन्द प्राप्त होता है।

४४५. **जसो थारो घूघरो, उस्याई म्हारा गीत।**

जैसी तेरी घूघरी, वैसे ही मेरे गीत।

पारिश्रमिक के अनुसार ही कार्य होता है।

जिस मनुष्य को जितना पारिश्रमिक मिलेगा, उतना ही वह कार्य करेगा। उससे अधिक कार्य के लिए उससे आशा नही की जा सकती।

४४६. **जसो बाल् बाग, उस्योई ताव देणों।**

जैसी हवा चले, वैसा ही ताव देना।

समयानुसार ही कार्य करना चाहिये।

परिस्थिति के अनुकूल बनकर कार्य करने से ही मनुष्य इस युग मे सफल हो सकता है। अतः वयोवृद्ध इस कहावत का प्रयोग प्रायः सदुपदेश के रूप में किया करते है।

४४७. **जस्या कंथा घर रह्या, उस्या रह्या बिदेस।**

जैसे कंत (पति) घर रहे, वैसे रहे विदेश।

पति का रुषार्थहीन होना।

घर पर रहते हुए भी पति की उदासीनता की प्रवृत्ति देखकर एक स्त्री कहती है कि उसके पति के लिए विदेश में रहना तथा घर पर रहना एकसा ही है। घर पर रहकर उदासीनता धारण करना विदेश में रहने के समान ही है।

४४८. **जस्या देखगा, उस्या करगा।**

जैसा देखेंगे, वैसा करेंगे।

बच्चे माता-पिता का अनुकरण करते हैं।

बच्चों में संस्कारजन्य दोष उनके माता-पिता के अनुकरण करने के कारण ही होते है। अतः इस कहावत द्वारा उनके माता पिताओं को उद्‌बोधन दिया गया है कि वे स्वयं इस प्रकार का बुरा कार्य न करें, जिससे बच्चों को भी उसे सीखने का अवसर मिल जाय।

४४९. **जस्या बोवगा उस्याई काटगा ।**

जैसा बोवेंगे वैसा ही काटेंगे ।

कर्मानुसार फल मिलता है ।

देखिए कहावत नं० ४४४ ।

४५०. **जस्यो देस उस्यो भेस ।**

जैसा देश वैसा भेष ।

परिस्थिति के अनकूल बन जाना ।

जिस स्थान पर रहें, वहाँ के ही रीति-रिवाजों को अपनाना चाहिए । क्योंकि उनके विपरीत चलने से हानि होने की संभावना रहती है ।

४५१. **जस्यो खाव अन्न, उस्यो होव मन्न ।**

जस्यो पीव पाणी, उसी होव बाणी ।

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन ।

जैसा पीवे पानी, वैसी होवे वाणी ।

खाने पीने में शुद्धता रखनी चाहिये ।

अन्न के सूक्ष्म अंश से मन बनता है । अतः जैसा भोजन किया जायेगा, बैसा मन बनेगा तथा जैसा पानी पिया जायेगा, वैसी ही वाणी होगी ।

४५२. **जागता पुरस की माया छ ।**

जागते पुरुष की माया है ।

आत्मा के कारण ही शरीर गतिमान है ।

यह एक दार्शनिक कहावत है । जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक गति है । प्राणों के चले जाने के पश्चात् इसकी संज्ञा जड हो जाती है ।

४५३. **जाँघ्यो हाल्यो'र भीडू चाल्यो ।**

जाँघ्या (नेकर) हिला और भीडू (साथी) चला ।

आज्ञा की देर है, काम करने की देर नहीं ।

किसी भी ग्रामीण खेल में अपने साथी के संकेत पर ही दूसरा साथी

अपना कार्य प्रारम्भ कर देता है। इसमें साथी के अत्यधिक सावधान होने की व्यंजना से आज्ञापालकों की सतर्कता का दिग्दर्शन कराया गया है।

४५४. **जाट ख सुंण जाटणी, इसी गाँव मँ रणा।**
ऊँट बल्याई लेगई, तो हाँजी-हाँजी करणा।
जाट कहे सुन जाटनी, इसी गाँव मे रहना।
ऊँट को बिल्ली ले गई, तो हाँजी-हाँजी करना।
गाँव वालों का व्यर्थ में विरोध नहीं करना चाहिये।

एक जाट जो किसी ऐसे गाँव में आकर रहने लगा जहाँ आदमी झूठ अधिक बोलते थे। उसने देखा कि यदि वह उनकी हाँ में हाँ न्ही मिलाये तो उसका रहना दूभर हो जाय। अतः वह अपनी पत्नी जाटनी को सम्बोधित करके कहता है कि यदि इसी गाँव मे रहना हो तो लोगो के यह कहने पर कि ऊँट को बिल्ली ले गई। यही कहना–"हाँ, अवश्य ले गई।"

४५५. **जाट, ज्वाँई भाणजा, रबारी'र सुंदार।**
ये न आपणा होवसी, लाख करो सतकार।
जाट, जवाई, भानजा, रेबारी और सुनार।
ये न अपने हो सके, लाख करो सत्कार।
जाट, दामाद, भानजा, रेबारी एवं सुनार कृतघ्नी होते हैं।

जाट, दामाद, भानजा, रेबारी (ऊँट पालने वाली जाति) तथा सुनार के साथ कितना ही उपकार किया जाय, किन्तु साधारणतया इनके चरित्र मे किये हुए उपकार को न मानने की विशेषता होती है। इनकी जातिगत प्रकृति का विश्लेषण इस कहावत मे प्रस्तुत किया गया है।

४५६. **जाण न पछाण बाबा राम-राम।**
जान न पहिचान बाबा राम-राम।
बिना परिचय के सम्बन्ध स्थापित करना।

जब कोई व्यक्ति किसी से कहने लग कि मैंने आपको अमुक स्थान पर देखा है। आपसे मेरा परिचय अमुक स्थान पर हुआ था इत्यादि। इन झूठी बातों से झुंझलाकर लोग इस कहावत को कह बैठते हैं।

४५७. **जाणतेर जगत को सालो, जावे घोड़े आवे पालो।**

जानतेर (तंत्रवेत्ता) जगत का साला, जावे घोड़े पर, आवे पैदल।

संसार में मतलब का व्यवहार है।

झाड़ा-फूँका करने वाला साले के समान सबका प्रिय होता है। जब कहीं जाता है तो उसके लिए सवारी का प्रबन्ध किया जाता है, तथा कार्य सिद्ध होने पर उसे पैदल घर आना पड़ता है।

४५८. **जान देख्याँ भात राँध।**

जान (बरात) देखकर भात पकाना चाहिए।

अनुमान से व्यर्थ व्यय की सम्भावना रहती है।

बरात में आने वाले व्यक्तियों की संख्या कम हो तो खाद्य-सामग्री बेकार चली जाय अथवा संख्या अधिक होने पर खाद्य सामग्री की कमी हो सकती है। आवश्यकता से अधिक या कम व्यय के प्रसग में यह कहावत कही जाती है।

४५९. **ज्याँ का काम ज्याँनई छाजे, ओर करे तो डींगा बाजे।**

जिनके काम जिनको ही साजे, और करे तो डींगे बजे।

कार्य में नियत व्यक्ति को ही काम सौंपना चाहिये।

नियत व्यक्ति के अतिरिक्त कोई व्यक्ति कार्य करने का अनुरोध करे, तब यह कहावत कही जाती है।

इस कहावत के साथ हितोपदेश की एक कथा का सम्बन्ध जुड़ता है। एक बार धोबी के घर में चोर घुसने पर कुत्ते के स्थान पर गधा चीत्कार कर उठा। मालिक की नींद में बाधा पड़ने से उसने गधे को इतना पीटा कि वह मर गया।

४६०. **ज्याँ का जस्या पड़्या सभाव, जासी जीव सूँ।**
नींम न मीठो होय, सींचो गुड़ ओर घीव सूँ।

जिनके जैसे पड़े स्वभाव, जावेगे जीव से।
नीम न मीठा होय, सीचों गुड़ और घी से।

मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन नहीं हो सकता।

मनुष्य की प्रकृति जैसी होती है, वैसी ही अन्त तक बनी रहती है। जिस प्रकार नीम को गुड़ तथा घी से सींचने पर भी मीठा नहीं हो सकता, उसी प्रकार प्रकृति सदैव जैसी की तैसी बनी रहती है।

४६१. **ज्यात क भाँत लाग, कामला क गाँठ न लाग।**

जाति के भाँति लगे, कम्बल के गाँठ नही लगे।

अविनीत का सुधार हो सकता है, दुर्विनीत का नहीं।

अन्य प्रकार के कपड़े में गाँठ लग सकती है, कम्बल के गाँठ नही लग सकती। उसी प्रकार नम्र का सुधार शीघ्र हो सकता है, धृष्ट का नही।

४६२. **ज्यात को ज्यात सूँ भलो न होव।**

जाति का जाति से भला नही होता।

जाति वाले एक दूसरे के विरोधी होते हैं।

अशिक्षा के कारण जाति वाले एक दूसरे की बढ़ती नही देख सकते। अत. एक दूसरे से ईर्ष्या करते है।

४६३. **ज्याँका ठाकुरजी वाँनईं परसाद कोई न।**

जिनके ठाकुरजी उनको ही प्रसाद नही है।

वस्तु के स्वामी को उसका लाभ अवश्य मिलना चाहिये।

जिस व्यक्ति ने कोई कार्य किया हो, उसे उसका लाभ न मिलकर किन्ही अन्य व्यक्तियों को मिले, तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

४६४. **ज्याँ फाणी बताव व्हाँ कीच बी न खड।**

जहाँ पानी बतावे वहाँ कीच भी न निकले।

झूठ की अति कर देना।

जब कोई व्यक्ति झूठ बोलकर लोगों को धोखा देता रहे तथा एक भी बात उसकी सच्ची न निकले, तब उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

४६५. **ज्याँ मली दो, व्हाईं रया सो।**

जहाँ मिली दो, वहाँ ही रहे सो।

निष्क्रिय व्यक्ति को केवल भोजन की चिन्ता रहती है।

जहाँ पेट भरने के लिए दो रोटी मिल गई, वहीं सो रहे। पारिवारिक चिन्ताओं से रहित निष्क्रिय व्यक्ति के लिए यह उक्ति प्रचलित है।

४६६. **जार भैंस फाणी में।**

जारे भैंस पानी में।

आशा निराशा में परिवर्तित हो जाना।

जब कोई बना बनाया कार्य बिगड़ जाय, तो आत्म सन्तोष के लिए यह कहावत कह दी जाती है।

४६७. **ज्वाँ की मारी गोदड़ा न फांक्या जावं।**

जुओं के मारे गोदड़े (बिस्तर) नहीं फेंके जाते।

थोड़े से कष्ट के लिये भारी क्षति नहीं उठाई जाती।

किंचित् कष्ट से दुःखी होकर कोई व्यक्ति जब अपने कार्य को छोड़कर निराशा में पड़ जाता है, तब उसके उद्‌बोधन एवं सदुपदेश के रूप में यह कहावत कही जाती है।

४६८. **ज्याबो अर मारबो भगवान कई हात छ।**

जिलाना और मारना भगवान के ही हाथ है।

जीवन और मरण मनुष्य के हाथ में नहीं हैं।

मनुष्य ने प्रकृति को वश में करके अनेकों कार्य किये है। वैज्ञानिक आविष्कार करके अनेक चमत्कार दिखा चुका है, किन्तु जीवन और मृत्यु पर उसका वश नही है।

"हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ"—भी द्रष्टव्य है।

४६९. **ज्वार में भोडा'र गाँव में मोडा तो होव ई छ।**

ज्वार मे भोडे, (फूँकले) और गाँव में मोडे (झगड़ालू) तो होते ही हैं।

झगड़ालू प्रत्येक गाँव में पाये जाते हैं।

जिस प्रकार बिना भोडे वाली ज्वार नही मिल सकती, इसी प्रकार

ऐसा गांव नही मिल सकता जहाँ व्यर्थ की बातो पर झगड़ा करने वाले न मिलें।

४७०. **जींक बेटो होगो, ऊंक बू आवगी।**

जिसके बेटा होगा, उसके बहू आयेगी।

कारण से ही कार्य होते हैं।

व्यक्ति के किसी कार्य को देखकर जब लोग आलोचना करने लगते हैं, तब उनको समझाने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

४७१. **जींक काँटो भाग, ऊंक सीसाड़ो आव छ।**

जिसके काँटा लगता है, उसीकी आह निकलती है।

जिसकी हानि होती है, उसी को कष्ट होता है।

किसी की हानि देखकर जब लोग उस पर दुःख प्रकट करने के बजाय उसकी हँसी उड़ावें, उस समय यह उक्ति काम में लाई जाती है।

"जाके पैर न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई"—में भी इसी भाव की अभिव्यक्ति मिलती है।

४७२. **जींका छूला नीचे पाक जेई खाव छ।**

जिसके चूल्हे नीचे पकता है, वही खाता है।

सब अपना-अपना खाते हैं।

कोई व्यक्ति किसी को व्यर्थ ही दबाना चाहे, उस प्रसग के लिए यह कहावत प्रचलित है।

४७३. **जींकी जूती ऊंको ई मांथो।**

जिसकी जूती उसका सिर।

वस्तु से लाभ उठाकर उसका व्यय दूसरों पर डाल देना।

किसी मनुष्य के पास रखी हुई वस्तु का उपभोग करके उसकी हानि को उसके स्वामी के सिर डालने पर यह कहावत कही जाती है।

४७४. **जींकी नींत बगड़ ऊंका दन फलो बगड़।**

जिसकी नीयत बिगड़े, उसके दिन पहले बिगड़ते है।

मति-भ्रष्ट होने पर जीवन सुख से व्यतीत नहीं होता।

जिस व्यक्ति की इच्छा कुमार्ग पर चलने लगती है, उस व्यक्ति की सभी परिस्थितियाँ जो जीवनोपयोगी हैं, बिगड़ जाती हैं। उनके कारण उसे अत्यधिक दु खी होना पड़ता है। नैतिकता के नियमों का उलंघन करने वाला व्यक्ति जीवन में दुःख ही दुःख उठाता है।

४७५. **जींको खावं ऊंको गावं।**

जिसका खावे, उसका गावे।

जिससे कुछ लाभ हो, उसी के यश का वर्णन किया जाता है।

जिसके द्वारा किसी की उदरपूर्ति हो तो वह व्यक्ति उसी का गुणगान करेगा। भले ही दूसरे व्यक्ति उसके विरोधी हों।

४७६. **जींको मूंडो न देख्यो ऊंका ढूंगा देखणा पड़्या।**

जिसका मुख नहीं देखा उसकी गुदा देखनी पड़ी।

अपरिचित की अत्यधिक खुशामद करना।

स्वाभिमानी व्यक्ति को जब अपने कार्य के लिए किसी अपरिचित व्यक्ति की खुशामद करना पड़े, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

४७७. **जींको हात पोलो, ऊंको जगत गोलो।**

जिसका हाथ पोला, उसका जगत गोला (दास)।

रुपये के सब दास है।

जो मनुष्य दूसरो के लिए रुपये खर्च करता रहता है, उसके सभी क्रीतदास हो जाते है।

४७८. **जीं गाँव जाणो ई न, ऊंको गेलो बी क्यूं पूछणो ?**

जिस गाँव जाना ही नही, उसका रास्ता भी क्यों पूछना ?

जिस कार्य को नहीं करना, उसकी क्रिया जानना व्यर्थ है।

जो व्यक्ति किसी मनुष्य की बाहरी एव भीतरी बातें जानने को उत्सुक हो, तथा अपने आपको सभी के भले बुरे से दूर रखता हो, उसके लिए सदुपदेश के रूप में यह कहावत प्रचलित है।

४७९. **जीं घर लाग्यो बाणधो, ऊ घर जातो न जाणधो ।**

जिस घर से लगा बनिया, वह घर जाता हुआ न जाना ।

ऋण लेने वाले व्यक्ति शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

बनिये से रुपये उधार लेने पर उसका ब्याज दर ब्याज रुपया बढ़ता रहता है । मूल तक तो कभी सीमा आने ही नहीं पाती । ब्याज चुकाते-चुकाते ही मनुष्य की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है ।

४८०. **जीणा जतर भर पीणा ।**

जीना जितने भर पीना ।

जितने दिन जीना है, उतने समय तक जीवन सम्बन्धी कार्य तो करने ही पड़ेंगे ।

जीवन से उदासीन व्यक्ति जो कड़ा परिश्रम करके भी आवश्यकताओं को पूरी नही कर पाता, वह इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

४८१. **जींन चाँच दी, ऊ ई चुगो बी देगो ।**

जिसने चोंच दी, वही चुगा भी देगा ।

ईश्वर सबका भरण-पोषण करता है ।

इस सृष्टि में जितने प्राणधारी है, उन सबके लिए ईश्वर ने खाद्य-पदार्थ बनाये है । इस कहावत से मनुष्यों का ईश्वर पर अटल विश्वास ध्वनित होता है ।

"अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम ।
दास मलूका यों कहे, सबके दाता राम ।"

उपर्युक्त दोहे से उक्त कहावत की तुलना की जा सकती है ।

४८२. **जींन माँडो झोली, ऊंन डूम गणयो न कोली ।**

जिसने फैलाई झोली, उसने डूम गिना न कोली ।

याचक दान की पवित्रता और अपवित्रता पर ध्यान नहीं देते ।

द्विजों का दान शुद्ध एवं शूद्रों का दान अशुद्ध गिना जाता है । किन्तु जिसको माँगना ही है, वह किसी शूद्र को भी नही छोड़ता ।

४८३. **जीवतो हाती लाखको, मरयो हाथी दो लाख को ।**

जीवित हाथी लाख का, मरा हाथी दो लाख का ।

हाथी का मरने पर दूना मूल्य हो जाता है ।

हाथी को रखने में अधिक व्यय होता है । अतः विशेष-विशेष मनुष्य ही खरीद सकते है । बेचने पर उसका मूल्य कम ही प्राप्त होता है । किन्तु उसके मरने पर उसके दाँत, नाखून, हड्डियाँ आदि मँहगे भाव पर बेची जाती है । इसलिए उसका मूल्य दुगुना हो जाता है ।

४८४. **जों हाँडी मँ खाथो ऊँमंईं बेज पाड़्यो ।**

जिस हँडिया मे खाया उसी मे ही छेद किया ।

कृतघ्नी होना अच्छा नहीं ।

किसी के द्वारा किये गये उपकार के बदले में उसीकी निन्दा करने वाले के प्रति यह कहावत कही जाती है ।

४८५. **जुर, जोगी अर फावणा, थींनूँ एक नकास ।**
तीन दना लंघण करै, तो खदो न आवै पास ।

ज्वर, योगी और पाहुना, तीनों एक निकास ।
तीन दिनों लंघन करे, तो कभी न आवे पास ।

लंघन से ज्वर का नाश होता है ।

ज्वर नाश के उपाय के साथ ही यह भी बतलाया गया है कि योगी (साधु) और अतिथि के आने पर उन्हें तीन दिन लंघन करा दिया जावे तो वे फिर कभी घर पर नहीं आ सकते ।

४८६. **जूती टूट जावै तो ओर आजावगी ।**

जूती टूट जावे तो और आजावेगी ।

एक स्त्री के मरने पर दूसरी से विवाह हो सकता है ।

अशिक्षित व्यक्ति औरत को जूती के सदृश समझते थे । जिस प्रकार जूती टूटने पर दूसरी पहन ली जाती है, उसी प्रकार एक स्त्री के मरने पर दूसरी आ सकती है ।

४८७ **ज्यूँ चाल्या छै आगला, ज्यूँईं चालगा पाछला ।**

जैसे चले हैं अगले, वैसे ही चलेंगे पिछले ।

पूर्वजों का अनुकरण करना श्रेयस्कर है ।

जिन जीवनोपयोगी सुन्दर नियमों का पालन पूर्वज करते आये थे, उन्हीं पर उनके वंशजों को चलते हुए देखकर यह कहावत कही जाती है ।

४८८. **ज्यूं ज्यूं भीजे कामड़ी त्यूं त्यूं भारी होय ।**

ज्यों ज्यों भीजे कामड़ी (लकड़ी) त्यों त्यों भारी होय ।

अनुभव के साथ गम्भीरता बढ़ती जाती है ।

सांसारिक अनुभव मनुष्य की बुद्धि को विस्तृत कर देते है । उसमे उसी प्रकार उत्तरोत्तर गभीरता आती जाती है, जिस प्रकार भीगने पर लकडी में भारीपन ।

४८९. **जेठ का जे पेट का ।**

जेठ के जो पेट के ।

जेठ के पुत्र भी पुत्र हैं ।

किसी स्त्री के पुत्र न हो और वह इसी दुःख से दुःखी रहे, तब दूसरी स्त्रियाँ उसके जेठ के बच्चों का ध्यान दिलाकर कह दिया करती है कि उन बच्चों को ही तुम अपना मानो ; क्योकि वे दूसरे नहीं है ।

४९०. **जे धन जातो जाणजे आधो दीजे बांट ।**

जो धन जाता जानना, आधा देना बाँट ।

सम्पूर्ण धन के विनाश को देखकर आधे को छोड़ देना चाहिये ।

सारे में से आधे धन की ही यदि रक्षा हो जाय तो वही श्रेष्ठ है, क्योंकि जब सम्पूर्ण ही नष्ट हो रहा हो तो उसमें से कुछ तो शेष रह पायेगा ।

"अरध तजहिं बुध सर्वस जाता"—में भी तुलसीदासजी ने यही उपदेश दिया है ।

४९१. **जे बोले, ऊई भैंस्यां में जावे ।**

जो बोले, वही भैंसों में जावे ।

समस्या का हल बताने वाला ही उसे सम्पादन करे।

कार्य की ओर संकेत करने वाले के सिर पर ही जब कार्य का भार आ पड़े, उस समय यह कहावत कही जाती है।

इसके साथ भी एक कहानी कही जाती है—

"एक पुत्र ने अपनी मा को बताया कि भैंसों की पाड़ियाँ आज घर ही रह गई, चरने नहीं गई। मा ने उसी से कहा कि जाकर तू ही इनको चराकर ले आ।"

४९२. **जेसाकूँ तेसा मल्या, तू बेसाँ म्हाँ भाँड।**

जैसे को तैसे मिले, तू वेश्या हम भाँड।

जैसे को तैसा मिल ही जाता है।

समान अवगुण वालो के मिल जाने पर यह कहावत कही जाती है।

इस कहावत का आधार निम्न कथा है—

एक वेश्या ने अपने अन्तिम दिनों में ब्रह्मभोज, दानादि पुण्यकार्य करके मोक्ष पाने का विचार किया। नगर के सब विप्रों को आदर सहित उसने भोजन कराया। कुछ भाँडों ने उस वेश्या से धन-प्राप्ति की आशा में ब्राह्मण वेष धारण किया तथा उसके द्वार पर चले गये। उसने उन्हें ब्राह्मण समझ कर उनका सत्कार किया। भोजन तथा दक्षिणा के पश्चात् उसने उनसे पूछा कि महाराज "मैं तर जाऊँगी न?" इस पर वे भाँड हाड़ौती बोली में इस प्रकार बोले—

"खायो खूब घी'र खाँड, होग्या मोटा ताजा साँड।
तरेगी काँई राँड, तू बेसाँ म्हाँ भाँड।"

४९३. **जो को खाँण सरग को द्वार, गऊँ को खाँण बार-त्यौहार।**

जौ का खाना स्वर्ग का द्वार, गेहूँ का खाना बार-त्यौहार।

जौ ही सर्वश्रेष्ठ अन्न है।

जो का भोजन स्वर्ग के द्वार पर पहुँचाने वाला है। इसीलिए मारवाड़ में जहाँ जौ बहुतायत से होते हैं, लोग गेहूँ को केवल बार-त्यौहार ही खाते हैं। सामान्यतः निर्धन व्यक्ति भी जौ का ही उपयोग करते हैं। अतः जौ की प्रशंसा में यह उक्ति कही जाती है।

४९४. **जोड़-जोड़ मर जावेगा, अर माल ज्वाँई खावेगा ।**
ज्वाँई न होया तो, खालसे लग जावेगा ।

जोड़-जोड मर जावेगे और माल जँवाई खावेगा ।
जँवाई न हुआ तो, खालसे लग जावेगा ।

कृपणता निंदनीय है ।

धन एकत्र करके जो मनुष्य जोते जी उसका उपभोग नहीं कर सकते, उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके दामाद ही उसका उपभोग करते है । यदि दामाद न हुए तो सारा धन राज्य-कोष में चला जाता है । अतः कृपण के लिए सदुपदेश के रूप में यह कहावत प्रचलित है ।

झ

४९५. **झूंट के काँई पण लाग छै ?**

झूठ के क्या पग लगती है ?

झूठे का कोई समर्थन नहीं करता ।

कोई व्यक्ति झूठी बात बनाकर दूसरों को धोखे में लाना चाहे, उस समय इसका प्रयोग होता है ।

४९६. **झूंट की दोड़ पलस्या ताईं ।**

झूठ की दौड़ पलस्या (खलिहान का फाटक) तक ।

झूठ अधिक समय तक नहीं चल सकती ।

झूठ बोलने वाले आदमी का भेद शीघ्र ही खुल जाता है ।

४९७. **झूंट को बोलबा हालो, अर धरत्यां को सोबा हालो सकड़ाई क्यूं भुगतै ?**

झूठ का बोलनेवाला और धरती पर सोने वाला सकड़ाई (तंगी) क्यों भोगे ?

झूठे व्यक्ति जो भरकर झूँठ बोलते हैं ।

झूठे व्यक्ति के लिए झूठ का विस्तृत क्षेत्र है । वह कही से भी अपने विषय की सामग्री खोज सकता है तथा भूमि पर सोने वाला लम्बी-चौड़ी जगह में आनन्द से सो सकता है ।

४९८. **झूंटा क आग सांचो रो'र भाग छ ।**

झूठे के आगे सच्चा रोकर भागता है ।

झूठ के सामने सत्य की नहीं चलती ।

आधुनिक युग की परिस्थितियों की ओर संकेत करके यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

४९९. **झूंपड़ो मँ र'र म्हलां का सपना ।**

झोपड़ी मे रहें और महलों के सपने ।

परिस्थिति के अनुसार ही अभिलाषा करना चाहिये ।

अपनी अवस्था से ऊँची बात सोचने वाले के लिए इसका प्रयोग होता है ।

५०० **झोली सूं मोतीचूर टपक छ ।**

झोली से मोतीचूर टपकते है ।

धन का बाहुल्य होना ।

अपने धन पर वृथा गर्व करने वाले व्यक्ति पर यह व्यंग्य कसा जाता है ।

ट

५०१. **टका को मुरगो नो टका खाल उधड़ाई ।**

टके की मुरगी (और) नौ टके खाल (चमड़ा) उधड़वाई ।

कम मूल्य की वस्तु पर अधिक व्यय करना मूर्खता है ।

मुरगी की कीमत एक टका हो । उसकी नौगुनी कीमत केवल चमड़ा निकलवाने के लिए व्यय करना श्रेयस्कर नही है ।

५०२. **टको-पी'सो लापर-छापर ।**

टका-पैसा लापर-छापर (ऊँचा-नीचा) ।

वस्तु खरीदते समय पैसे दो पैसे की ओर ध्यान नहीं दिया जाता ।

जिस वस्तु की ओर हमारा हृदय आकर्षित हो जाता है तथा जो रुचिकर प्रतीत होती है, उसके खरीदते समय कुछ पैसों पर ध्यान नहीं

देते हुए इस उक्ति का प्रयोग करते है ।

५०३. टट्टू टट्टू कर'र फोज भेली हो जावं छ ।

टट्टू टट्टू करके फौज इकट्ठी हो जाती है ।

धीरे-धीरे आवश्यकता से अधिक व्यक्ति बढ़ जाते हैं ।

किसी के प्रीतिभोज के समय जब मनुष्यों की सूची बनाई जाती है, उस समय एक एक का स्मरण करके लिखने पर आवश्यकता और सामर्थ्य से बाहर संख्या पहुँच जाती है ।

५०४. टापरा मँ आग लगा'र तापबो आछ्यो न ।

टापरे (झोंपड़ी) में आग लगाकर तापना अच्छा नहीं ।

अधिक हानि उठाकर तुच्छ आवश्यकता की पूर्ति करना अच्छा नहीं है ।

जिस प्रकार केवल तापने के लिए अपनी विशाल झोपडी को नष्ट करना मूर्खता है, उसी प्रकार सारे द्रव्य को पानी की तरह बहाकर क्षुद्र आवश्यकताओं की पूर्ति करना बुद्धिमानी नहीं है ।

५०५. टूकड़ी सूं कांई भूखड़ो भागगो ?

टुकड़े से क्या भूख भगेगी ?

अपर्याप्त वस्तु से तृप्ति नहीं हो सकती ।

जीवन की मूल आवश्यकता की पूर्ति के लिए भी जब पूर्ण साधन उपलब्ध न हो सकें, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

५०६. टूटी क बूंटी न लाग ।

टूटी के बूँटी नहीं लगती ।

जिसका काल निकट आ गया हो वह किसी भी प्रकार नहीं बच सकता ।

मृत्यु का समय निश्चित होता है । उस निश्चित समय पर किसी भी प्रकार की ऊँची से ऊँची औषध कार्य नहीं करती ।

५०७. टूटो मूंड कटारो खां ताईं लड़ ।

टूटे मूँड (सिर) कटारा कहाँ तक लड़े ?

शोचनीय परिस्थिति होने पर भी पारिवारिक संकटों का सामना करना ।

जिस गृहस्थ को निरन्तर आर्थिक सङ्कटों का सामना करना पड़ता है, उसकी स्थिति इस कहावत के द्वारा व्यक्त की गई है। वह उस योद्धा के समान है जिसके हाथ में खडित कृपाण है तथा जो बराबर प्रतिद्वंदियों से लड़ता जा रहा है।

५०८. **टोटा का टापरा मँ रोठाँ को राड़।**

टोटे के टापरे में रोटियों की लडाई।

निर्धन के घर में खाने मात्र का भी पूरा प्रबन्ध नहीं होता।

धनवानो के यहाँ आपसी झगड़े वैभव की वस्तुओं पर होते हैं। किन्तु जिसके यहाँ भोजन भी न मिले, उस परिवार में झगड़े केवल खाने-पीने की वस्तुओं पर ही होते है।

५०९. **टोटा मँ टोटो, खा राँड गऊँ को रोटो।**

टोटे में टोटा, खा राँड गेहूँ का रोटा।

अधिक कर्जदार व्यक्ति कर्ज बढ़ने की चिन्ता नहीं करता।

जिस व्यक्ति पर अधिक कर्जा हो जाता है, वह इस ओर से कुछ बेपरवाह सा हो जाता है। वह सोचने लगता है कि जहाँ पाँच सौ कर्जा है, वहाँ हजार सही।

५१०. **टोल क टाँची न लाग।**

टोल के टाँची (अथवा टाँकी) नही लगती।

जड़मूर्ख पर उपदेशों का प्रभाव नहीं पड़ सकता।

कठोर एव गोल पत्थर पर लोहे की टाँकी का जिस प्रकार असर नही होता, उसी प्रकार अत्यधिक मूर्ख को अच्छे से अच्छे विद्वान की शिक्षा से कोई लाभ नहीं हो सकता।

ठ

५११. **ठकाणा सूं ईं ठाकर बाग छ।**

ठिकाने से ही ठाकुर कहलाते है।

मनुष्य का मूल्य उसके स्थान से ही आंका जाता है।

इस अपार सृष्टि में स्थान भ्रष्ट पुरुष नहीं पूजा जाता, क्योंकि उसकी विशेषताओं से सभी का परिचित होना तो असम्भव है।

५१२. **ठंडी कर'र खाबो छाइजे, ताती-ताती खाबा सूं मूंडो भलस जाव छ।**

ठंडी करके खाना चाहिए, गरम-गरम खाने से मुँह झुलस जाता है।

प्रतिशोध में शीघ्रता अच्छी नहीं है।

विरोध का प्रतिकार जब शीघ्र ही कर दिया जाता है, तब लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। सोच-विचार कर किये हुए प्रतिकार में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

५१३. **ठंडो ल्हो ताता ल्वान काट दे छ।**

ठंडा लोहा, गरम लोहे को काट देता है।

सहिष्णु क्रोधी को परास्त कर देता है।

इस कहावत को भी कहावत नं० ५१२ का ही पूरक समझना चाहिए।

समय पर किसी विरोध को सहन कर लेने वाला अपने विरोधी को उसी प्रकार छिन्न-भिन्न कर देता है जैसे ठंडा लोहा गरम लोहे को।

५१४. **ठलकड़ो की हाँसी'र खणगेटचा को मरण।**

गिलहरी की हँसी और गिरगिट का मरण।

गम्भीर पुरुष का उपहास न करना चाहिये।

छोटा व्यक्ति जब किसी गम्भीर विचार वाले मनुष्य का उपहास करता है, तब वह मनुष्य उसे सत्य समझकर उससे होने वाली क्षति को सहन करता है।

५१५. **ठाकर आया ठुकराणी, चूल्ल आग, न फराँड फाणी।**

ठाकुर आये ठकुरानी, चूल्हे में आग, न परांडे (जल-गृह) में पानी।

गृहकार्य में महिलाओं का आलस्य श्रेयस्कर नहीं है।

पति के कहीं चले जाने के पश्चात् पत्नी का नियमित गृहकार्यों से सन्यास लेना समाज में निन्दा का कारण होता है।

५१६. **ठाकर तो कूँल मँड्यो ई दे छ।**

ठाकुर तो क़ूले पर मँडा ही देता है।

क्षत्रिय का ऋण कभी नहीं डूबता।

ब्याज पर रुपया उधार देने वाले महाजनों का यह अनुभव है कि ठाकुर को उधार दिया हुआ कर्ज कभी नही डूब सकता। ठाकुर तो दीवार पर लिखे हुए ऋण को भी चुका देता है।

५१७. **ठाँड बी छ अर फो'ठो बी कर छ।**

ठाँडता (गरजता) भी है और गोबर भी करता है।

भय दिखाना तथा स्वयं भी भयभीत होना।

कोई बलवान निर्बलों को अपना बल दिखाये तथा सबलों को देखकर पलायन कर जाये, उस समय यह कहावत कही जाती है।

ड

५१८. **डाकण को दाव चाँचवाँ मँ लाग छ।**

डाइन का दाव चाँचवों में लगता है।

शत्रु विपत्ति में ही अपना बैर निकालता है।

जब कोई मनुष्य किसी को उसकी आपत्ति के समय धोखा दे अथवा उसे कोई हानि पहुँचा दे, उस समय यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

५१९. **डाकण खावे तो कालो मूँडो अर न खावे, तो कालो मूँडो।**

डाइन खावे तो काला मुँह, और न खावे तो काला मुँह।

कुख्यात व्यक्ति पर सदैव ही सन्देह किया जाता है।

डाइन बच्चे-बच्चियों को खाने के लिए बदनाम है। किसी का बच्चा मरने पर सर्व प्रथम संदेह उसी पर होता है। इसीलिए कोई चोर चोरी न करे, फिर भी संदेह में पकड़ा ही जाता है।

५२०. **डाकण बेटा ले क दे ?**

डायन बेटा ले या दे ?

लोभी से दान की आशा व्यर्थ है ।

कोई व्यक्ति किसी कजूस व्यक्ति का नाम दानियों की सूची में लाना चाहे, उस समय दूसरे परिचित व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करते है ।

५२१. डाडी, दाँत, सँवार, ये ई लाराँ लागसी ।
छुरी, कटारी, नारचाँ नै पर-नर ताकसी ।

दाढी, दाँत सँवार, ये ही साथ लगेगे ।
छुरी, कटारी, नारियों को पर-नर ताकेगे ।

दाढ़ी तथा दाँत ही मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हैं ।

मनुष्य की आकृति को प्रभावोत्पादक एव आकर्षक बनाने वाली दाढ़ी एव दाँत है । अत: प्रथम इनकी रक्षा अनिवार्य है । छुरी, कटार और स्त्री को बलक्षीण होने पर दूसरे हरण कर लेते है ।

५२२. डाल् को चूक्यो बाँदरो अर असाडी को चूक्यो करसो कदी न सँभल् ।

डाली से चूका हुआ बन्दर और आषाढ़ का चूका हुआ कृषक कभी नही सँभलता ।

बीज बोने का समय निकल जाने पर किसान की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो जाती है ।

जिस प्रकार किसी वृक्ष से नीचे गिर जाने पर बन्दर जीवित नही रह सकता, उसी प्रकार आषाढ का समय निकलजाने से कृषक पर विपत्ति के बादल मँडराने लगते है ।

५२३. डूंगर दूरा सूं ई स्वावणा लाग छ, गोड सूं टोल्याई टोल्या दीख छ ।

डूंगर (पहाड़) दूर से ही सुहावने लगते है, निकट से टोल (पत्थर) ही टोल दिखाई देते है ।

रिश्तेदार बड़े आदमी दूर से ही भले जान पड़ते है ।

बड़े आदमियों के निकट जाने पर उनकी समस्त बुराइयाँ सामने आ जाती है । वे तो दूर से ही भले प्रतीत होते है ।

"दूर के ढोल सुहावने"—कहावत से उक्त कहावत की तुलना की जा सकती है ।

५२४. डूमड़ा बरो गायो, क मा-बाप पूरो होयो ।

डूमड़े (बारेठ) ! बुरा गाया, (वह बोला) कि मा-बाप पूरा हुआ ।

कार्य रुचिकर न होने पर शीघ्र समाप्त कर देना श्रेयस्कर है ।

डूम के बुरा गाने पर जब उससे कहा कि भाई तुमने अच्छा नही गाया तो उसने उत्तर दिया कि हुजूर यह तो पूरा हो गया । आप तो अत्यन्त दयालु है । कुछ दान दे दीजिए । मैं अपना रास्ता लेता हूँ ।

५२५. डूम धणचाँ क फावणा, उजाला सती बछावणा ।

डूम घनी के पाहुने, उजाला रहते हुए ही बिछौने ।

दयालु व्यक्ति अपने छोटे से छोटे अतिथि का पूरा ध्यान रखते हैं ।

बारेठ जब कभी अपने उदार यजमान के यहाँ अतिथि बनकर जाते है तो उन्हे दिन रहते ही भोजन करवा दिया जाता है तथा वे जल्दी ही बिछौने लगा लेते हैं । वहाँ उनका कार्य केवल खाना और सोना ही होता है ।

५२६. डोकरी थारा घर में न्हार आयो ।

डोकरी (बुढिया) तेरे घर मे नाहर आ गया ।

निर्बल पर सबल का आक्रमण करना ।

जब किसी बलवान के द्वारा कोई अशक्त व्यक्ति दबाया जाय, तब वह अपनी रक्षा करने में अत्यन्त असमर्थ हो जाता है । उस समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

५२७. डोकरी मरबा को सोच न, पण मोत घर देखगी ।

डोकरी (बुढ़िया) मरने का सोच नही, पर मौत घर देख गई ।

निरन्तर बड़ी हानि की सम्भावना करना ।

बुढिया का मरना अल्प-हानि है, किन्तु उसके पश्चात् किसी की अकाल मृत्यु की सम्भावना पर कहा जाता है कि यमराज इस घर का मार्ग जान गया । जब किसी व्यक्ति की निरन्तर हानि होती रहे, ऐसे समय इस कहावत का प्रयोग होता है ।

५२८. डोड अक्कल आप में, अर आधी अक्कल ओरां में ।

डेढ़ अक्ल आप में, और आधी अक्ल औरों में।

संकीर्ण विचारवाला व्यक्ति स्वयं को ही अधिक बुद्धिमान समझता है।

जब कोई अल्पज्ञानी किसी गम्भीर और विद्वान पुरुष के कार्य की आलोचना करे, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

ढ

५२९. ढलतो फरतो छाया छै।

ढलती फिरती छाया है।

किसी के दिन एक समान नहीं रहते।

जिस प्रकार छाया चढती उतरती है, उसी प्रकार अच्छे तथा बुरे दिनों का क्रम जीवन में चलता रहता है।

त

५३०. तगदीर फूटणहार होव, जद घरका डांडा सूंई फूट जाव छै।

तकदीर फूटनेवाली हो, तब घर के डांडे से ही फूट जाती है।

बुरे दिन आने पर अपने व्यक्तियों द्वारा भी हानि हो सकती है।

समय पर अपने भी पराये हो जाते है। यहाँ तक कि कुसमय पर अपना हाथ ही शत्रु बन जाता है।

५३१. तड़का को भूल्यो स्यांम को घरण आजाव, तो भूल्यो न कह्वा'व।

सुबह का भूला शाम को घर आ जावे, तो भूला नहीं कहाता।

अपनी भूल को शीघ्र ही मान लेना चाहिये।

अपनी विपरीत बात पर अडा रहने वाला व्यक्ति यदि कुछ समय पश्चात् ही ठीक रास्ते पर आजाये, तो लोग उसकी निंदा नही करते।

५३२. तबेला मं लातालात छोखो न।

तबेले में लातें चलाना अच्छा नही।

एक ही स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों को प्रेम-व्यवहार से रहना चाहिये।

समीप में बसने वाले व्यक्तियों में आपसी मनमुटाव अथवा लड़ाई झगड़ा देखकर यह कहावत कही जाती है।

५३३. तरिया चरत जाण नंह कोई, खसम मारक सत्ती होई ।

त्रिया चरित जाने नहीं कोई, खसम मारकर सती होई ।

स्त्री का चरित्र अगम्य है ।

बहुधा सभी प्राचीन ग्रन्थों मे यहाँ तक कि श्रीमद्भागवत में भी स्त्रियों मे स्वभावतया आठ अवगुण—साहस, अनृत, चपलता, माया, भय, अविवेक, अशौच तथा अदया बताये है । इनके कारण ही नारी का चरित्र रहस्यमय बतलाया गया प्रतीत होता है ।

५३४. तरिया तेल हमीर हट, चढै न दूजी बार ।

तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढे न दूजी बार ।

अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना चाहिये ।

विवाह के समय पर कन्या को तेल चढ़ाया जाता है । वह तेल स्त्री को पुनः नही चढ़ सकता, अर्थात् उसका दुबारा विवाह नहीं हो सकता । इसी एकार हम्मीर का हठ भी प्रसिद्ध है । यह कहावत एक दोहे का अर्द्धाश है । पूरा दोहा इस प्रकार है :—

"सिह गमन, सज्जन वचन, कदली फल एक बार ।
तिरिया तेल, हमीर हठ, चढे न दूजी बार ।"

५३५. तलक की बेर ललाट न फरणो ।

तिलक के समय ललाट न फेरना (मोड़ लेना) ।

लाभ के समय टाल लगाना अच्छा नहीं ।

कोई व्यक्ति अपने शुभ कार्य की अवहेलना करे तथा अपने हित को न समझ कर बनते हुए कार्य को बिगाड़ दे, उस समय यह उक्ति प्रयोग में आती है ।

५३६. तल घटै, न राई बधै ।

तिल घटे, न राई बढ़े ।

अत्यधिक समानता होना ।

जब कभी किसी के गुण, स्वभाव, प्रवृत्तियों आदि की समानता किसी दूसरे व्यक्ति से बतलाई जाय, तब इस उक्ति को काम में लाया जाता है ।

५३७. **तरवार तो नान्ते ई रगी ।**

तलवार तो नान्ते ही रह गई ।

अवसर आने पर बहाना बनाने से काम नहीं चलता ।

चम्बल के इस पार कोटा शहर है तथा उसके दूसरे पार नान्ता नामक एक छोटा सा गाँव है । युद्ध में सम्मिलित होने के लिए नान्ते से आये हुये किसी राजपूत ने बहाना बनाकर यह कह दिया कि मेरी तलवार तो नान्ते रह गई, अब मैं किससे लड़ूँगा ? अतः समय पर बहाना बनाने वाले के लिए यह कहावत कही जाती है ।

५३८. **तरवार-बाजी आछी, पण दाँत-बाजी खोटी ।**

तलवार-बाजी अच्छी, पर दाँत-बाजी खोटी ।

मुँह से लड़ने की अपेक्षा शस्त्र से लड़ना अच्छा है ।

शस्त्र लेकर लडने मे तुरन्त फैसला हो जाता है, किन्तु दाँत पीसने व गाली गलौच करने से विष न जाने कब तक फैलता रहता है तथा उसका प्रभाव एक पर नहीं अनेकों पर पड सकता है ।

५३९. **ताँत बाजी, अर राग पछाणी ।**

ताँत बजी और राग पहचाना ।

समझदार व्यक्ति बात छिड़ते ही उसका भावार्थ समझ लेते हैं ।

मनुष्य की बातचीत के द्वारा उसके अच्छे बुरे भाव प्रकट हो जाते है । बुद्धिमान व्यक्ति शीघ्र ही यह जान लेते है कि वक्ता कितने गहरे पानी मे है ।

५४०. **तातो खायो न रातो फरचो ।**

गरम खाया, न (लाल) रक्त (वस्त्र) पहना ।

रंच भी सुख प्राप्त न होना ।

जिसने जीवन में कष्ट उठाये हों तथा न कभी गरम खाना मिला हो और न रंगीन कपड़ा पहनने को मिला हो, वह अपने दुःख को इस कहावत द्वारा प्रकट करता है ।

५४१. **ताँबा की देकची कल्ली की भड़क ।**

ताँबे की देगची (पर) कलई की भड़क ।

आडम्बर से असलियत नहीं छिप सकती ।

बाह्याडम्बर करके जो अपने आपको श्रेष्ठ बतलाते हैं, ऐसे व्यक्तियों के लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

५४२. ताँबा की मेख, तमाशा देख ।

ताँबे की मेख (से) तमाशा देख ।

पैसे से संसार में सब कुछ हो जाता है ।

ताँबे की खूँटी ठोककर जो चाहो वही कर सकते हो । पैसे के लिए सारा विश्व नाचता है । जिस प्रकार लोहे की खूँटी से बँधा हुआ मदारी का बन्दर नाचता है, उसी प्रकार ताँबे की खूँटी (पैसे) से बँधा हुआ संसार नाचता है ।

५४३. त्वा पं सूँ उतरी'र छूला मँ गरी ।

तवे से उतरी और चूल्हे में गिरी ।

एक के पश्चात् दूसरी विपत्ति आना ।

जिस प्रकार रोटी तवे पर से उतर कर चूल्हे मे अगारों पर गिरती है, उसी प्रकार एक दुःख तो पूरा ही न हुआ हो तथा दूसरे दुःख का आगमन हो जाय, वहाँ इसका प्रयोग होता है ।

५४४. तीतर पंख्या बादला, बधवा काजल रेख ।
वा बरसै वा घर करै, ईमँ मीन न मेख ।

तीतर पंखे बादले, विधवा काजल-रेख ।
वह बरसे, वह घर करे, इसमें मीन न मेष ।

तीतर के पंख के समान रंगवाले बादल बरसते हैं तथा काजल लगाने वाली विधवा अवश्य दूसरा पति चुनती है ।

इस दोहे में "मीन-मेष" शब्द में श्लेष है । तीतर पंखवाले बादल अवश्य बरसते है तथा काजल लगाने वाली अवश्य दूसरा पति चुनती है । इसमें सन्देह के लिए स्थान नहीं है । अन्य पति वरण के लिये उसे मीन या मेष राशियों की गणना करके मुहूर्त या मेलायक की अपेक्षा नहीं होती ।

५४५. **तीतर फस्यो, लवा फसी, तू क्यूं फसी बटेर ?**
संगत का फल लागताँ, रैगी डघाँ नटेर।
तीतर फँसा, लवा फँसी, तू क्यों फँसी बटेर ?
संगत का फल लगते, रहगई आँख तरेर।
संगति के कारण दुर्बल अधिक हानि उठाते हैं।

किसी ने बटेर से प्रश्न किया कि हे बटेर ! तीतर फँस गया, लवा फँस गई; फिर तू क्यों फँसी ? इसका उत्तर बटेर आँख तरेर कर देती है कि भाई संगत का फल लगने से ऐसा हुआ। किसी असमर्थ एवं सीधे व्यक्ति को कुसंगति में पड़कर दुःख उठाते हुए देखकर यह कहावत कही जाती है।

५४६. **तीन काणा, ज्यांका ओगद न पाणा।**
तीन काने, जिसकी औषध न पाणे (पेय)।
तीन व्यक्तियों को किसी शुभ कार्य के लिये साथ नहीं जाना चाहिये।

जब कभी तीन आदमी किसी शुभ कार्य के लिए साथ जाते हों, उस समय यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

५४७. **तीन झूंपड़ी'र थेरस को न्हांण।**
तीन झोपड़ी और तेरस का नहान।
थोड़े व्यक्तियों से बृहद् कार्य का रूप दिखाई नहीं देता।

होली के तेरह दिन पश्चात् कोटा राज्य में नहान का उत्सव मनाया जाता था। इस दिन यह उत्सव बहुत बड़े रूप में आयोजित किया जाता था। थोड़े व्यक्तियों में कोई बहुत बड़ा आयोजन देखकर यह व्यंग्योक्ति प्रयुक्त होती है।

५४८. **तीन तणीं पै कोई न चढ।**
तीन तनी (तराजू की डोरियाँ) पर कोई नही चढ़ता।
तराजू तो पूरा ही तौलती है।

तराजू की तीन डोरियों से बँधे पलड़े पर जितने बाँट होंगे, उतनी ही वस्तु चढ़ेगी, कम या अधिक नहीं।

५४९. **तीन मं, न तेरा मं, मरदंग बजावे डेरा मं ।**

तीन में, न तेरह मे, मृदङ्ग बजावे डेरे में ।

किसी की अच्छी बुरी में न पड़ने वाला सदैव सुखी रहता है ।

जो किसी की अच्छी बुरी बात में सम्मिलित नही है, वह अपने डेरे में अर्थात् मकान में सुख के राग अलापता है ।

५५०. **तीन लोक सूं मथरा न्यारी ।**

तीन लोक से मथुरा न्यारी ।

कुछ लोगों का स्वभाव दूसरों से अत्यन्त भिन्न होता है ।

कृष्ण की जन्म-भूमि होने के कारण जिस प्रकार मथुरा तीनों लोकों से न्यारी है, इसी प्रकार जब किसी मनुष्य में अन्य लोगों की अपेक्षा कुछ अधिक विशेषता पाई जाय, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

५५१. **तुझे पराई क्या पड़ी ? अपणी-अपणी नबेड़ ।**

तुझे पराई क्या पड़ी ? अपनी-अपनी निबेर ।

अपनी सामर्थ्य देखकर ही परोपकार करना चाहिये ।

जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के झगड़े में किसी का पक्ष करता है, उसके लिए सदुपदेश के रूप में यह कहावत कही जाती है ।

५५२. **तुरकड़ी का चाख्या मं काँईं खाटो'र काँईं मीठो ?**

तुरकी (स्त्री) के चखे हुए में क्या खट्टा और क्या मीठा ?

विद्वान के द्वारा कही बात में सन्देह के लिये कोई स्थान नहीं होता ।

चतुर व्यक्ति किसी वस्तु के भीतरी तथा बाहरी पक्षों पर विचार करके उसे अपनाता है । तुर्की स्त्री भी अत्यधिक चतुर होती है । इसीलिए इस कहावत में उसका प्रसङ्ग लाया गया है ।

५५३. **तू ई राणी, मूं ई राणी, कुंण भरंगो फाणी ?**

तू ही रानी, मै ही रानी, कौन भरेगा पानी ?

सभी बड़प्पन की शेखी मारने लगें तो आवश्यक सेवा का कार्य कौन करे ?

जब एक दूसरे की देखा-देखी लोग किसी काम को करने में लज्जा का अनुभव करें तथा मना कर दे, तब यह कहावत कही जाती है ।

५५४. तू काँई राणाजी की बेटी छ ?

तू क्या राणाजी की बेटी है ?

इतना अभिमान अनुचित है।

महाराणा प्रताप के वंशजों की राजकुमारियों का भी राजकुमारों के समान ही सम्मान होता है। पतिगृह में भी सब लोग अर्थात् पति, श्वसुर सास इत्यादि उनके आगमन पर खड़े हो जाते है, किन्तु उनके लिए यह नियम नही है। अतः अल्पवय होते हुए भी इस प्रकार सम्मान की पात्री होती है। जब कभी कोई कन्या बड़ों के कुछ कहने पर उनका विरोध करे, उस समय उससे प्रश्न के रूप में यह कहावत कही जाती है।

५५५. तू फढ्यो छ तो म्हूँन बो खोर बाटी छ।

तू पढ़ा है तो मैंने भी खोर (ईंट का चूरा) बाँटी है।

एक दूसरे के चक्कर में न आना।

स्लेटों के उपयोग से पहले लकड़ी के तख्तों पर ईंट का चूरा डाल-कर लकड़ी की बत्ती से लिखा जाता था। जब कोई व्यक्ति अपनी विद्वत्ता की अधिक डींग मारे और उसे अपने चक्कर में लेना चाहे, तब उसके लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

५५६. तूंबो तरै, तूंबो तारै, तूंबो खदी न भूखां मारै।

तुम्बा तरे, तुम्बा तारे, तुम्बा कभी न भूखों मारे।

तुम्बे में अनेक गुण होते हैं।

साधु लोग जो पात्र अपने साथ रखते है उसे तूमा कहते हैं। बरसात में कटु-तुम्बी की बेल में यह फल लगता है। सूख जाने पर इसे अन्दर से खोखला करके पात्र बना लिया जाता है। यह पानी में डूबता नहीं है। कटि के दोनों ओर तूमें बाँधकर लोग तैरना सीखते हैं। इसको पास रख कर भिक्षा-वृत्ति करके साधु उदर-पोषण के योग्य अन्न प्राप्त कर लेते हैं।

५५७. तेल तो तल्याँ मं सूंई खड छ, घाणो लाठ मं सूं न खड।

तेल तो तिलों में से ही निकलता है, घानी लाठमें से नही निकलता।

सब खर्चा वस्तु की कीमत से निकलता है।

वस्तुओं का मूल्य बढ़जाने पर व्यापारी ग्राहकों से ही अधिक मूल्य लेगे। स्वयं हानि उठाकर अपने पास से थोड़ा ही रख देगे।

५५८. तेल देखो'र तेल की धार देखो।

तेल देखो और तेल की धार देखो।

किसी वस्तु की या पुरुष की परीक्षा शान्तिपूर्वक तथा भली प्रकार करनी चाहिये।

तेल को ऊपर से देखने पर उसके तले में बैठी हुई मिट्टी का पता नही चल सकता। अतः ताजा एवं पुराने तेल की परीक्षा उसकी धार को देखकर करनी चाहिए।

५५९. तेल बल़ बाती बल़, नाँव द्या को होय।

तेल जले, बत्ती जले, नाम दिये का होय।

श्रम कोई करे तथा उसका यश किसी दूसरे को मिले।

जब कभी कार्यकर्त्ताओ को यश न मिलकर दूसरों को यश मिले, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

५६०. तेली क सूँ खल़ उतरी, होई पल़ीता जोग।

तेली के (यहाँ) से खल उतरी, हुई पलीते योग्य।

दृष्टि पथ से उतरी हुई वस्तु का पश्चाताप नहीं होता।

दुराचारिणी स्त्री को अपने घर से बाहर निकाल देने पर दूसरे व्यक्ति उसके पति से उसे पुनः रखने का अनुरोध करें, तब वह इस कहावत का प्रयोग करता है।

५६१. तेलो का तीन मरो, ऊपर सूँ लाठ पड़ो।

तेली के तीन मरें, ऊपर से लाट पड़े।

किसी के भले बुरे से कोई काम नहीं होना।

उदासीन या परोपकार में ठोकर खाया हुआ व्यक्ति किसी के भले बुरे में नहीं पड़ता। वह प्रायः इस कहावत को कहकर लोगों से अपना पीछा छुड़ा लेता है।

५६२. **तेलीई मणस करयो तो फाणी सूं क्यूं पग धोवै ?**

तेली ही पति बनाया तो पानी से क्यों पैर धोवे ?

अवसर का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहिये ।

जिस घर में जो वस्तु बहुतायत से पैदा होती है, उसे काम में न लाना भी तो मूर्खता है ।

५६३. **तोड़ थारी जीब को थुंणगल्यो ।**

तोड़ तेरी जीभ का तिनका ।

ऐसी बात कदापि न कहना ।

अपनी भूल स्वीकार कर लेना बुद्धिमानी है । किसी अशोभनीय बात को सुनकर यह कहावत कही जाती है ।

थ

५६४. **थाक बता'र गोच्यो देबो आछ्यो कोई न ।**

थाक बताकर डुबो देना अच्छा नही ।

किसी को सलाह देकर उसे धोखा नहीं देना चाहिये ।

जब कोई व्यक्ति किसी को रास्ता बताकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उसके विनाश की चेष्टा करता है, तब उसके इस घृणित कार्य का प्रकाशन इस कहावत द्वारा किया जाता है ।

५६५. **थांका जाया बी खदी पगाँ चालगा ?**

तुम्हारी संतान भी कभी पैरों चलेगी ?

तुम्हारे वादे भी कभी पूरे होंगे ?

किसी व्यक्ति को अपना वादा पूरा करने में बहाने बनाता हुआ देखकर उससे व्यंग्यरूप में यह प्रश्न पूछ लिया जाता है ।

५६६. **थार म्हार बण न, थँ बनां म्हार सर न ।**

तेरे मेरे बनती नहीं (तथा), तेरे बिना मुझे सरता नहीं ।

एक साथ रहने वाले व्यक्तियों को आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिये ।

जब एक दूसरे की सहायता के बिना काम न चलता हो तो सदैव

प्रेम व्यवहार से ही कालयापन करना चाहिये। बच्चों के पारस्परिक झगड़ों को देखकर उनसे बहुधा यह कहावत कही जाती है।

५६७. **थारी काँण क थारा धणी की काँण ?**

तेरी कान (मर्यादा) या तेरे धनी (स्वामी) की कान।

सेवक स्वामी की प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकते।

जब आपस में झगड़ा हो जाय उस समय मर्यादा का उल्लघन करते हुए छोटा व्यक्ति इसका प्रयोग करता है।

५६८. **थारो छ्याछ्य म्हारा बैंगण।**

तेरी छाछ मेरे बैंगन।

सम्मिलित कार्य हानिकर होता है।

किसी कार्य में जब हिस्सेदारी की जाय। उस समय उसमें कोई अधिक तथा कोई कम धन लगाये तथा उसका लाभ बराबर बाँटा जाय, तब यह कहावत कही जाती है।

५६९. **थारो म्हारो मँ काँईं धरयो छ ?**

तेरी मेरी में क्या रक्खा है ?

किसी की निन्दा करने से कोई लाभ नहीं।

पर-निदकों के लिए सदुपदेश के रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

५७०. **थारो गोबर को सीदड़ो, ऊँ की लखड़ी की तरवार।**

तेरा गोबर का सीदड़ा (पात्र), उसकी लकड़ी की तलवार।

वस्तु के अनुरूप ही उसके विनाश की सामग्री मिल जाती है।

गोबर का सीदड़ा (तेल इत्यादि रखने का पात्र) भी शीघ्र टूटने वाला है तथा काठ की तलवार भी अधिक कठोर नही होती। अतः दोनों पक्षों के निर्बल होने से दण्ड किसी को भी नही मिल सकता।

५७१. **थेरा का तौन ही दीज्यो, पण नाँव दरोगो धर दीज्यो।**

तेरह के तीन ही देना, पर नाम दरोगा रख देना।

कई मनुष्य पद के भूखे होते हैं।

उच्चपद के लिए आर्थिक हानि को भी सहन करने वाले व्यक्तियों के लिए यह उक्ति प्रचलित है।

५७२. **थोड़ी-थोड़ी ओर बजगी, तेज्यो मरग्यो ओर करगी।**

थोड़ी थोड़ी और बजेगी, तेज्या मर गया और करेगी।

आनन्द के लिए थोड़ी हानि भी सह्य है।

जो मनुष्य एक बार हानि उठाने पर भी नही सँभलता उसे चिढ़ाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

५७३. **थोड़ा फाटर गधड़ी का ह्या।**

थोड़ा फटरे गधी के हृदय।

हे मूर्ख! थोड़ा अभिमान कर।

जब कोई व्यक्ति अत्यधिक रूप में आत्म-श्लाघा करे, तब लोग उससे ऊबकर यह कहावत कहने लगते हैं।

५७४. **थोथो चणों बाज घणों।**

थोथा चना बाजे घना।

सारहीन पुरुष अधिक आडम्बर करता है।

जब कोई व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने के लिए अत्यधिक सारहीन बातें करे, तब उसकी कलई शीघ्र ही खुल जाती है।

द

५७५. **दगाबाज दूंणा नवं, चीता, चोर, कबाण।**

दगेबाज दूने नवें, चीते, चोर, कमान।

धोखेबाज व्यक्ति अधिक झुककर सलाम करते हैं।

अपना स्वार्थ पूरा करने तथा दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए धोखेबाज व्यक्ति चीते, चोर तथा कमान की तरह नम्र हो जाते हैं।

"नवनि नीच के अति दुःखदाई, जिमि अंकुश, धनु, उरग बिलाई"— में भी उपर्युक्त भाव की अभिव्यंजना मिलती है।

५७६. **दे दाल में फाणी, बीत तो मैंन जाणीं ।**

दे दाल में पानी, बीते तो मैंने जानी ।

मनुष्यों की संख्या बढ़ जाने पर प्रस्तुत अल्प को ही बढ़ाकर काम चलाया जाता है ।

जब कभी अधिक मेहमान आजावे तथा साग या दाल कम रह जाये, उस समय दाल में पानी डालकर उसे बढ़ा लेते है ।

५७७. **दन अस्त'र मजूर मस्त ।**

दिन अस्त और मजदूर मस्त ।

संध्या होते ही श्रमिक प्रसन्न हो जाते हैं ।

दिन भर परिश्रम कर लेने के पश्चात् मजदूर सायंकाल जब अपने कार्य से निवृत्त होता है, उस समय वह अत्यधिक आनन्द का अनुभव करता है ।

५७८. **दमड़ी का तीन तीन घणां ई रोता फर छ ।**

दमड़ी के तीन तीन बहुत ही रोते फिरते हैं ।

बिना काम की वस्तु को कोई नहीं पूछता ।

कोई अयोग्य व्यक्ति जब अपने काम की शेखी मारता है, उस समय उसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

५७९ **दमड़ी की दाल, न्यारी ई टाल ।**

दमड़ी की दाल न्यारी (अलग) ही टाल ।

अपना काम अलग ही करना चाहिये ।

छोटी वस्तु को बड़ी वस्तु में मिला देने पर उसका अस्तित्व नष्ट हो जाता है । अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपना छोटा कार्य स्वयं अलग ही करना चाहिये ।

५८०. **दम भाई जे नज भाई, ओर भाई घसड़-पसड़ ।**

दम भाई जो निज भाई, और भाई घसड़-पसड़ ।

नशेबाजों में प्रेम की मात्रा अधिक रहती है ।

गाँजा पीने वालों में परस्पर सगे भाइयों का सा प्रेम रहता है। उनकी दृष्टि में उनके साथी ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

५८१. दरजी की हाल, सुंदार की खाल।

दरजी की अभी (और) सुनार की कल।

दर्जी और सुनार कथित समय पर काम पूरा करके नहीं देते।

दर्जी के पास कपडे लेने जाये तो कहेगा जेब लगानी है, प्रेस करनी है, बटन लगाने है, अभी ले जाना। इसी प्रकार सुनार भी कार्याधिक्य बताकर ग्राहक को कल के लिए टालता रहता है।

५८२. दे र पांड्या आसीस, क म्हूं कांई, म्हारी आतमा देगी।

देरे पांड्या आशीष, कि मै क्या, मेरी आत्मा देगी।

उपकार करने पर उसके प्रकट आशीर्वाद की आवश्यकता नहीं होती।

आत्मसंतुष्टि के पश्चात् ही मनुष्य के हृदय से सद्भावनाओं का प्रस्फुरण होता है।

५८३. दरीखाना हाली लात।

दरीखाने (राज दरबार) वाली लात।

अपने महत्त्व का प्रदर्शन करना।

राजदरबार में अपने उत्तरदायित्व को आग सरकाने की प्रवृत्ति रहती है। जैसे राजा ने मन्त्री को आज्ञादी। मन्त्री ने अधिकारी को। अधिकारी ने सेनापति को और सेनापति ने छोटे अफसरों को। इस प्रकार वह आज्ञा (लात) एक छोटे सिपाही तक आ पहुँचती है।

५८४. दलालां क कांई दवाला, अर मजीतां क कांई ताला ?

दलालों के क्या दिवाले और मस्जिदों के क्या ताले ?

व्यापार की हानि तो सेठ को ही उठानी पड़ती है।

दलाल लाखों का सौदा करा देते है, किन्तु हानि तो व्यापारियों को ही होती है। मसजिदों में भी सामान के अभाव में ताले नहीं लगाये जाते। कार्य की हानि तो कर्त्ता ही उठाता है, दूसरा नहीं।

५८५ **दस भायाँ की बँण ववाँरी डोल ।**

दस भाईयों की बहिन कुँवारी डोले (अविवाहित रहे) ।

कई कार्य-कर्ताओं के होने से उत्तरदायित्व किसी एक पर नहीं रहता ।

दस भाई होने से बहिन के विवाह का भार सभी पर होता है । अत: वे एक दूसरे के भरोसे पर यह कार्य छोड देते है ।

५८६. **दाइनो ले'र आयो छ ।**

दाहिनी लेकर आया है ।

अच्छे शकुन से पहुँचना ।

किसी का कार्य पहुँचते ही पूरा हो जाय, तब यह कहावत कही जाती है ।

५८७. **दाई सूँ पेट थोड़ो ई छप छ ।**

दाई से पेट थोडा ही छिपता है ।

जानकार से कोई बात छिपी नहीं रहती ।

जो व्यक्ति जिसके स्वभाव से परिचित है, वह उसकी प्रत्येक बात को जानता है । उसको किसी प्रकार धोखा नहीं दिया जा सकता ।

५८८. **दाणों न चारो खुर्रो तीन तीन बार ।**

दाना न चारा खुर्रा तीन तीन बार ।

काम वाले व्यक्ति के भोजन की उचित व्यवस्था होनी चाहिये ।

जब किसी आदमी से अत्यधिक काम लिया जाय और उसकी केवल प्रशंसा करके छोड दिया जाय । उसकी भोजन आदि की व्यवस्था पर ध्यान न देने पर इस कहावत का प्रयोग होता है ।

५८९. **दाँत काटी रोटी ।**

दाँत से काटी हुई रोटी ।

अपने अधिकार की वस्तु का इच्छानुकूल प्रयोग किया जा सकता है ।

कोई वस्तु जो अपनी ही हो उससे जैसा चाहें वैसा काम ले सकते हैं । उस वस्तु पर पूर्णाधिकार प्रदर्शन करने के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

५९०. **दाँत, दतेरू दाईवाँ, दारी अर दरबान ।**
कदो न होसी आपणाँ, लाख करो सनमान ।

दाँत, दरोंती, दाहिमा, दारी और दरबान ।
कभी न अपने हो सके, लाख करो सन्मान ।

दाँत, हँसिया, दाधीच ब्राह्मण, कुल्टा स्त्री एवं दरबान विश्वासघाती होते है ।

दाँत, हँसिया, दाहिमा ब्राह्मण, कुल्टा एव दरबान का स्वभावगत दोष यह होता है कि वे किए हुए उपकार को नही मानते तथा दूसरे व्यक्ति से जरा सी चूक हो जाने पर शीघ्र ही प्रतिशोध के लिए अभिमुख हो जाते है ।

५९१. **दाँतण मित्र पछाणिया, सगा साँकड़ी बार ।**
तरिया नै पछाणिये, नरधन जद भरतार ।

दाँतन से मित्र पहचानिये, सगे को साँकडी (सकीर्ण समय) वार ।
स्त्री को (तब) पहचानिये, निर्धन जब भर्तार ।

मित्र, सम्बन्धी और स्त्री के भाव समय आने पर बदल जाते है ।

मित्र को दातौन देते समय पहचानना चाहिये । यह देखना चाहिये कि अच्छी दातौन वह रखता है या तुम्हे देता है । सम्बन्धियो को आपत्ति के समय तथा पति के निर्धन होने पर स्त्री की परीक्षा करना चाहिए ।

"धीरज, धरम, मित्र अरु नारी, आपत्काल परखिये चारी"— तुलसीदास की इस उक्ति में उपर्युक्त कहावत का भाव-साम्य स्पष्ट रूप से मिलता है ।

५९२. **दाता दे'र भंडारी पेट फोड़ ।**

दाता दे और भडारी पेट फोड़े ।

किसी का भला होते समय बाधक नहीं बनना चाहिये ।

जब कभी दानी दान कर रहा हो, उसी बीच मे उसका कोई आदमी उसमे आड़ लगादे तो वह निर्धन के प्रति न्याय नही करता । उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

५९३. **दाता सूं सूम भलो जे फली ई नट जावै ।**

दाता से सूम भला जो पहले ही नाही कर दे ।

प्रतीक्षा के बाद दान देने से न देना अच्छा है ।

कजूस व्यक्ति भिखारी को देखते ही कह देता है कि आगे जाओ— वह देने से मना कर देता है । अत वह कजूस उस दानी से अपेक्षाकृत अच्छा है, जो चिर प्रतीक्षा के पश्चात् कुछ देता है ।

५६४. **दानो तो दुसमन बी आछ्चो ।**

दाना (वृद्ध) तो दुश्मन भी अच्छा ।

मूर्ख मित्र से कोई लाभ नहीं है ।

यदि वयोवृद्ध शत्रु भी होगा तो हमे शिक्षा देने का ही प्रयत्न करेगा । उसमे हमारे विनाश की भावना न होगी । अतः वृद्ध तो हर परिस्थिति मे दूसरो को लाभ ही पहुँचाने की चेष्टा करते है । किन्तु यदि मूर्ख मित्र मिले तो वह किसी भी भाव में अच्छा नही है ।

५६५. **दामां को लोभी बातां सूँ न धापै ।**

दामो का लोभी बातो से तृप्त नही होता ।

धनलोलुप धन से ही संतुष्ट होता है ।

लालची मनुष्य को कितनी ही शिक्षाप्रद बातें बताई जायें, किन्तु वह कभी सतुष्ट नही होगा । उसकी आत्मा तो धन से ही तृप्त होगी ।

५६६. **दारू गोड आग न खटावै ।**

बारूद के पास आग नही खटाती (ठीक लगती) ।

युवक तथा युवतियों का सम्पर्क हानिकर है ।

जिस प्रकार बारूद के पास आग रख दी जाय तो विस्फोट का भय रहता है, इसी प्रकार युवा तथा युवतियो का पारस्परिक सम्पर्क आत्मसयम का बाँध तोड देता है ।

५६७. **दारूड़ा पी'र मारूड़ा गावै छै ।**

दारू (शराब) पीकर मारू (राग) गाते है ।

शराब को ही अपने जीवन का अवलम्ब समझना भूल है ।

क्षत्रियो की शोचनीय परिस्थिति का प्रकाशन इस कहावत द्वारा किया जाता है। वे केवल विलासिता एव शराबखोरी को ही अपना सर्वस्व समझते है।

५९८. **द्या की लू लाग, सूंना की फाँस भाग।**

दिये की लू लगे, सोने की फाँस भगे।

अत्यधिक कोमल होना।

जब कोई व्यक्ति अति कोमलता के साथ प्रत्येक कार्य करे तथा बच्चो के योग्य कार्यो मे भी अपनी असमर्थता प्रकट करे, उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

५९९. **द्या तल अंधेरो।**

दिये तले अंधेरा।

अपने अवगुण दिखाई नहीं देते।

जहाँ बहुत सी अच्छाइयाँ होती है, उन्ही के निकट कुछ बुराइयाँ भी होती है, किन्तु वे उस व्यक्ति के दृष्टिपथ में नही आ पाती।

६००. **द्या बल्या'र फोत गल्या।**

दिये जले और दाँव गले।

कार्य का भी निश्चित समय होता है।

किसी काम का समय निकल जाने पर जब उस कार्य के लिए पुनः कहा जाय, तो उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

६०१. **द्या बात'र बू खाट।**

दिये बत्ती और बहू खाट (पर)।

आलसी गृहिणी संध्या होते ही सो जाती है।

जिस बहू का ध्यान गृहकार्यों में कम रहता है तथा जो केवल आराम को ही अपना जीवन समझती है, उसकी निंदा एव आलोचना के लिए यह कहावत प्रसिद्ध है।

६०२. **दोखत का डब्बल, चाल पूंण पो'सा में।**

देखने में बड़े, (किन्तु) चलें पौन पैसे में ।

मनुष्य का मूल्य उसके कार्यों से ही आँका जाता है ।

जो देखने मे सरल प्रकृति एवं सर्वगुणों से सम्पन्न दिखाई देता हो किन्तु लोक व्यवहार में जब उसका मूल्य सामने आता है, तो वह व्यक्तियों की आँखों से गिर जाता है ।

६०३. **दीन मँ न दनियाँ मँ ।**

दीन में न दुनियाँ में ।

धर्म एवं लोक व्यवहार से शून्य व्यक्ति किसी काम का नहीं है ।

जो व्यक्ति धर्म तथा लोकाचरण के विरुद्ध कार्य करे, वह समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है ।

६०४. **दूखे जींके दूखणो, चाले जींके पीड़ ।**

दूखे जिसके दुखना, चले जिसके पीड़ ।

जिसको पीड़ा होती है, उसी को उसके दुःख का अनुभव होता है ।

जिस मनुष्य पर आपत्ति आती है, वही कष्टों को जानता है । दूसरे मनुष्य तो ऐसे अवसर पर उसका उपहास करते है । उनकी इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६०५. **दूध को दाज्यो छ्याछ्ं न बी फूँक फूँक'र पं छ्ं ।**

दूध का जला छाछ को भी फूँक फूँककर पीता है ।

दुष्टों से एक बार ठगाया हुआ व्यक्ति साधुओं का भी सहसा विश्वास नहीं करता ।

जो व्यक्ति अपने जीवन में एक बार धोखा खा चुकता है, वह लोक व्यवहार में अधिक सतर्क हो जाता है ।

६०६. **दूध का दूध, अर फाणी का फाणी ।**

दूध का दूध और पानी का पानी ।

सच्चे न्याय की सर्वत्र प्रशंसा होती है ।

जिस प्रकार नीर-क्षीर विवेकी हस दूध तथा पानी को अलग अलग

कर देता है, उसी प्रकार न्यायी जब अपने विवेक से काम लेकर सच्चा न्याय करता है, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६०७. **दूध देती गाई की लातबी सणी पड़ छै।**

दूध देती हुई गाय की लात भी सहनी पड़ती है।

स्वार्थ के लिये भला बुरा भी सुनना पड़ता है।

जिस व्यक्ति से अपना काम निकलता हो, यदि वह किसी प्रकार का कष्ट भी पहुँचाये, तो वह भी सहन किया जाता है।

६०८. **दूध बी धोल़ो'र छ्याछ बी धोल़ो।**

दूध भी धवल और छाछ भी धवल।

सरल प्रकृति वाले मनुष्य दुष्ट और सज्जन को समान ही समझते हैं।

अच्छे बुरे का भेद जिसकी दृष्टि में न हो, वह व्यक्ति जीवन में धोखा खाता है। क्योंकि यह सरलता विवेकहीनता मे परिणित हो जाती है।

६०९. **दूध'र दोवणी दोनी ई र जावं।**

दूध और दोहनी (दुहने का पात्र) दोनों ही रह जावे।

बिना हानि कार्य सम्पन्न हो जाना।

विषम परिस्थितियो मे कार्य करते हुए सफल हो जाना तथा थोड़ी भी हानि न होने देना बुद्धिमानों के ही प्रयासों का फल है।

६१०. **दूध हाल़ो उफाण छै।**

दूधवाला उफान है।

क्षणिक-आवेश में आना।

जिस मनुष्य को शीघ्र ही क्रोध आ जाये तथा थोडी देर में शान्त भी हो जाये, उसकी प्रकृति की तुलना दूध से की जाती है।

६११. **दूबल़ी अर दो असाड**

दुबली और दो आषाढ।

दुर्बल पर अधिक मार पड़ना।

बकरियाँ ग्रीष्म ऋतु में वैसे ही दुबली हो जाती है। किन्तु कभी कभी दो आषाढ आ जावे तो उनके कष्ट का क्या कहना ? इसी प्रकार दुर्बल व्यक्ति से अधिक काम लेने पर यह कहावत प्रयोग में आती है।

६१२. **दूर ज्वाँई फूल बरचाबर, गाँव ज्वाँई आधो।**
घर ज्वाँई गद्धा बरचाबर, छाव जदो लादो।
दूर जँवाई फूल बराबर, गाँव जँवाई आधा।
घर जँवाई गधा बराबर, चाहे तब ही लादा।
दामाद का आदर दूर रहने पर ही होता है।

दूर रहने वाला दामाद पुष्प के समान आदर का पात्र होता है। एक ही गाँव मे रहने से आदर आधा रह जाता है। इसके अतिरिक्त जो दामाद श्वसुर-गृह में ही निवास करता है, उसकी तुलना तो उस गधे से की जाती है, जिसे जब चाहें तभी लाद देते हैं।

६१३. **दूसरा की थाली मँ घी ई घी दीख छ।**
दूसरे की थाली मे घी ही घी दिखाई देता है।
दूसरों की वस्तु ही अच्छी लगती है।

अपने उपभोग के पदार्थो में रुचि न रहने के कारण दूसरों के उपभोग के साधनों का प्रिय लगना स्वाभाविक ही है।

६१४. **देखत भूलाँ को तमासो छ।**
देखत-भूलों का तमाशा है।
संसार मनुष्य को अपनी ओर खींचता है।

जिस प्रकार तमाशे में एक वस्तु सामने आने पर लोग दूसरी वस्तु को भूल जाते है। इसी प्रकार संसार को देखकर मनुष्य अपना स्वरूप भूल जाता है।

६१५. **देख दखंता, सीख सखंता।**
देख दिखंता, सीख सिखंता।
अवगुण तो देखने से ही सीख लिये जाते हैं।

किसी सीधे लड़के को बुरी प्रवृत्तियों में फँसा हुआ देखकर उस पर

आश्चर्य करने वालो के प्रति इस कहावत का प्रयोग होता है ।

६१६. **देख पराई चोपड़ी, मत ललचाव जीव ।**
रूखी सूखी खा'र, ठंडो फाणी पी ।

देख पराई चुपडी, मत ललचावे जीव ।
रूखी सूखी खाकर, ठण्डा पानी पी ।

अपनी वस्तु पर ही सन्तोष करना श्रेयस्कर है ।

जब दूसरे धनी व्यक्ति को देखकर कोई मनुष्य अपने मन में उसी प्रकार के विचार बनाने लगे, उस समय सदुपदेश के रूप में कहा जाता है कि दूसरों की श्रेष्ठ वस्तु को देखकर मन को चचल नहीं बनाना चाहिए । सहज सुलभ वस्तु पर ही सतोष करना श्रेष्ठ है ।

६१७. **देखाँ खटी की बाल् बाग छ ।**

देखे किधर की वायु बहती है ।

न्याय का कौनसा पक्ष सामने आयेगा ।

हेत्वाभासयुक्त कार्य की समाप्ति का ठीक पता न चलने पर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

"देखे ऊँट किस करवट बैठता है"—में भी इसी भाव को दोहराया गया है ।

६१८. **देखाँ खुण की माईन घूँसो खायो छ ?**

देखे किसकी मा ने धौसा खाया है ?

वीर माता का वीर पुत्र कौन है ?

कभी किसी को युद्ध के लिए अथवा अन्याय का पक्षपात करने की चुनौती दी जाय, तब इसका प्रयोग होता है ।

६१९. **देखाँ देखो साध जोग, घट काया बध रोग ।**

देखादेखी साधे योग, घटे काया बढ़े रोग ।

अनुकरण से पूर्व अपनी सामर्थ्य का विचार न करना ।

देखादेखी योग साधने पर शरीर दुर्बल होता है तथा रोग बढ़ते हैं ।

"देखा देखी मत करो, घर पर गौर करो।
आमदनी को देखकर, पैसा खर्च करो।"
उपर्युक्त दोहा इस कहावत की तुलना मे द्रष्टव्य है।

६२०. **देख्यो राणाजी थारो देस, राँड स्वागण एकई भेस।**

देखा राणाजी तुम्हारा देश, विधवा-सुहागिन एक ही भेष।

विधवा एवं सुहागिन की वेषभूषा में अन्तर न होना।

मेवाड़ में विधवाओं तथा सुहागिनों की वेषभूषा एक सी ही होती थी। इसका कारण यह था कि स्त्रियाँ अपने वीर पति के साथ सती हो जाया करती थी। अतः विधवा भी सुहागिन के वेष में ही दिखाई देती थी। यह कहावत व्याजस्तुति का सुन्दर उदाहरण है।

६२१. **दे'ल़ी को भूत सात पुस्त की जाण।**

देहरी का भूत सात पुश्त की जाने।

निकटवर्ती मनुष्य घर की सम्पूर्ण बातों को जानता है।

समीप में रहने वाले मनुष्य से सदैव मित्र-भाव बनाये रखना चाहिए, क्योंकि समय आने पर वह उन सम्पूर्ण बुराइयो को प्रदर्शित कर देता है, जो हमारे या हमारे कुटुम्बियों द्वारा अपनाई गई हों।

६२२. **देव की आँख बल़'र भोपो पाती माँग।**

देव की आँख जले और भोपा (पुजारी) पाती माँगे (वरदान माँगे)।

कार्यकर्ता जब स्वस्थचित्त हो, तभी कार्य हो सकता है।

किसी अस्वस्थ चित्तवाले मनुष्य के द्वारा बलपूर्वक कोई कार्य करवाया जाय, तो वह बिगड़ता ही है।

६२३. **देस चोरी, परदेस भीक।**

देश चोरी, परदेश भीख।

देश में निम्न श्रेणी के कार्य छिपकर किये जाते हैं, किन्तु परदेश में भीख माँगने में भी लोग लज्जा का अनुभव नहीं करते।

स्वदेश में परिचित व्यक्तियों की संख्या अधिक रहती है, इसलिए

वहाँ नीचकार्य दूसरों से छिपकर किया जाता है। किन्तु परदेश में कोई नही जानता, इसलिए भीख माँगने के समान अधम कार्य करने में भी लोगों को सकोच नही होता।

६२४. **देसी घोड़ो पूरबी चाल।**

देशी घोड़ी पूर्वी चाल।

अपने देश का रिवाज छोड़कर दूसरे देश का रिवाज ग्रहण करने से उपहास होता है।

अपने देश के रीतिरिवाजो को त्याग करना तथा दूसरे देशों के रीति-रिवाजो को अपनाना अच्छा नही है।

६२५. **दोड़ बू द्वाळी आई, तीन पापड़ी पाँती आई।**

दौड बहू दिवाली आई, तीन पापडी (पाँती) बाँटे में आई।

परिश्रम का पूरा फल न मिलने पर ग्लानि होती है।

सास ने बहू को दीपावली आने पर आनन्दोत्सव का प्रोत्साहन देकर रातदिन काम लिया। किन्तु दीपावली आने पर बहुत थोड़ी मिठाई ही उसे मिल पाई। अतः ग्लानि से भरकर यह कहावत कही जाती है।

६२६. **दो तो गारकाई बरा होव छ।**

दो तो गार के ही बुरे होते है।

दो व्यक्ति एक की अपेक्षा कई गुना अधिक काम कर सकते हैं।

जब दो व्यक्तियो पर कुछ लोग वार करें और वे दोनो उसका प्रतिशोध न ले सके, तो उस समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६२७. **दोन्यूँ रोड़ बरचाबर मलग्या, कोई न माँड्यो खाँधो।**
ईं बाँदा नें जान बगाड़ी, ईं बाँदा नें माँडो।

दोनों रोड़ बराबर मिल गये, किसीने न मिलाया कधा।
इस बाँदे ने जान (बरात) बिगाड़ी, इस बाँदे ने मडप।

दुष्टों का सम्मेलन शुभ-कार्य में विघ्न ही डालता है।

दो लड़ाकू व्यक्ति विवाह में सम्मिलित हुए। उनमें एक भी सहनशील

नहीं था। इसलिए लड़-भिड़कर एक ने तो बारात में खलबली मचादी तथा दूसरे ने मण्डप बिगाड़ दिया।

६२८. **दो पो'सा की हांडी में कुत्ता की ज्यात पछाणली जाव छ।**

दो पैसे की हँडिया में कुत्ते की जाति पहचान ली जाती है।

थोड़ी सी हानि से दुर्जन की पहचान कर लेना।

कोई दुष्ट यदि किसी को कुछ आर्थिक क्षति पहुँचा देता है, तो इस कहावत द्वारा लोग सान्त्वना प्राप्त कर लेते हैं।

६२९. **दो मूँडा की चकलूंड।**

दो मुँह की चकलौड।

झूठी-सच्ची मिलाने वाला।

जो व्यक्ति बातें मिलाकर किन्ही दो व्यक्तियों में झगड़ा करवादे, उसके लिए विशेषण रूप में ऐसा कहा जाता है।

ध

६३०. **धणीं को तो ग्वाड़ोई खालो होग्यो, पण चोराँ क पाँती केरड़ी बो न आई।**

धनी (मालिक) का तो बाडा ही खाली हो गया, पर चोरों के हिस्से में बछिया भी न आई।

निर्धन का माल हड़पने से कोई लाभ नहीं होता।

कई व्यक्ति मिलकर जब किसी को आर्थिक हानि पहुँचावे, तब उसकी तो भयकर क्षति हो जाती है तथा उन व्यक्तियों को बहुत थोड़ा लाभ हो पाता है। ऐसे समय में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

६३१. **धणीं बना काँई ढोर ?**

धनी बिना क्या ढोर (पशु) ?

संरक्षक के बिना कोई आदर नहीं करता।

जिसका आश्रयदाता न हो, उसकी दशा उस पशु के समान हो जाती है, जिसका कोई मालिक न हो।

६३२. **धरम हार, धन हर कोई खावो ।**

धर्म हार, धन हर कोई खाओ ।

धर्म गँवाकर धन का आदर करना मूर्खता है ।

धन की अपेक्षा धर्म की रक्षा अनिवार्य है ।

"धन दे तन को राखिए, तन दो मन के काज ।
धन दे, तन दे राखिए, एक धर्म की लाज ।"

उपर्युक्त दोहे में भी इसी कहावत के भाव की व्यंजना हुई है ।

६३३. **धाकड़ाँ हाल्यो धान कर घालबो ।**

धाकडो वाला धान कर डालना ।

भोजन सुव्यवस्थित रीति से ही बनाना चाहिये ।

धाकड एक कृषक जाति है । उनमें जब कोई विवाहादि उत्सव होते है, उस समय हजारो मनुष्य एकत्र होते हैं । उनके लिए जो चूरमा (कच्चे लड्डू) बनाया जाता है, उसे बैलों के पैरों से रौदवाकर तैयार करते है । इस व्यवस्था के आधार पर ही इस कहावत की उत्पत्ति हुई है ।

६३४. **धाप्यो सूर बारा बीघा को उजाड़ कर छ ।**

तृप्त शूकर बारह बीघे का उजाड करता है ।

तृप्त व्यक्ति अकारण ही अधिक क्षति पहुँचाता है ।

जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का उपभोग न करके उसे अधिक मात्रा मे बिगाड़े, उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

६३५. **धूल धाणी'र पल्ल फाणी ।**

धूल धानी और पल्ले पानी ।

किसी वस्तु का तहस-नहस हो जाना ।

जब कोई वस्तु या कार्य अत्यधिक रूप से बिगड जाय तथा पुन: सुधरने की सम्भावना न हो, वहाँ पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६३६. **धोबी क चोरी होई, डूब्यो गाँव को लोग ।**

धोबी के चोरी हुई, डूबा गाँव का लोग ।

धोबी के चोरी हो जाने पर गाँव के लोगों की ही हानि होती है ।

धोबी के पास लोगों के वस्त्र होते है । उसके यहाँ से जब उन्हीं वस्त्रों की चोरी हो जाय तब वह निर्धन होने के कारण लोगों की क्षति-पूर्ति नही कर सकता । वह हानि लोगों को ही सहन करनी पड़ती है ।

६३७. **धोवती मं सब नागा छ ।**

धोती में सब नंगे है ।

प्रत्येक व्यक्ति अपने अवगुण छिपाकर रखता है ।

प्रत्येक व्यक्ति में अवगुण भी होते है तथा गुण भी । अत: अधिकांश व्यक्तियों में अवगुण देखकर यह साधारणीकरण का सिद्धान्त बनाया गया है ।

न

६३८. **नंग बडा परमेसुर सूं ।**

नगा बड़ा परमेश्वर से ।

नंगों (निर्लज्जों) से बचकर रहना चाहिये ।

नंग (शिव) परमेश्वर (विष्णु) से बड़े है । ईश्वर की सृष्टि का विनाश करने के कारण उनका अत्यधिक महत्त्व माना गया है । इसी प्रकार जिसे अपनी मान-मर्यादा की चिन्ता नही है, वह दूसरे की इज्जत बिगाड़ने मे क्षणभर की देर नही करता ।

६३९. **नंगा बेटा कला मं घर ।**

नगे बेटे किले मे घर ।

झूठी प्रशंसा नहीं करना चाहिये ।

शत्रुओं से अपने जान माल की रक्षा करने के लिए धनाढ्य लोग किले में रहते थे । जो व्यक्ति निर्धन हो किन्तु बढ़-बढ़ कर बातें करता हो, उसकी लोक में निंदा ही होती है । ऐसे व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६४०. **नंदी कलाल का बाप की थोड़ीई छ ।**

नदी कलाल के बाप की थोड़ी ही है ।

किसी वस्तु का अनुचित लाभ नहीं उठाया जा सकता।

कलाल शराब के स्थान पर नदी का पानी नही बेच सकता। अतः नदी बहती है तो कलाल के अनुचित उपयोग के लिए नहीं।

६४१. **नंदी न नाल़ा, सूँसा ड़ा फलो ई आग्या।**

नदी न नाले (सूँसाडे) शब्द पहले ही आगया।

बिना ही कारण क्रोधित हो जाना।

कोई व्यक्ति अकारण ही किसी से कुपित हो जाय, उस समय उसे शान्त करने के लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

६४२. **नंदी नाव संजोग।**

नदी नाव सयोग।

एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य की अवश्य सहायता करनी चाहिये।

जिस प्रकार नदी तथा नाव का संयोग होता है, उसी प्रकार मनुष्य का भी पारस्परिक मेल होना चाहिए। कभी काम पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करना सबका कर्त्तव्य है।

६४३. **नकटाई थारोई आँसरो।**

नकटपन (निर्लज्जता) तेरा ही सहारा।

निर्लज्ज बनने से लोक में निन्दा होती है।

जो किसी के कहने-सुनने की परवाह न करता हो, उसे नकटा या निर्लज्ज कहते है। वह उचित अथवा अनुचित करके भी नहीं लजाता।

६४४. **नकटा के नोबत बाज, च्यार धड़ाका बदका लाग।**

निर्लज्ज के नौबत बजे, चार धड़ाके अधिक लगे।

निर्लज्ज को अपने अपमान का भय नहीं होता।

नकटे को किसी भी बात की चिता नहीं होती। यदि उसकी पिटाई भी हो तथा दो चार डडे अधिक पड़ भी जाँय, फिर भी वह किंचित् दुःखी नही होता।

६४५. **नकटा की नाक पे फोफली उगी, तो चालो छायाई होई।**

नकटे की नाक पर पीपली (वृक्ष) उगी, तो चलो छाया ही हुई।

प्राकृतिक संकटों द्वारा भी निर्लज्जता दूर नहीं हो सकती।

निर्लज्ज की नाक जैसी कोमल जगह पर पीपल का वृक्ष पैदा हो जाय तो वह समझता है चलो छाया ही हुई। प्रकृति भी निर्लज्ज को नहीं सुधार सकती।

६४६. **नकटा गरू, बंगटचा चेला।**

निर्लज्ज गुरु, (तथा) पथभ्रष्ट चेला।

पथभ्रष्टों पर निर्लज्जों का अधिक प्रभाव पड़ता है।

जो व्यक्ति कुमार्गगामी है, वह निर्लज्ज से शीघ्र ही निर्लज्जता सीख जायेगा।

६४७. **नकटा, बूचा सबसूँ ऊँचा।**

नकटा, बूचा (कान कटा हुआ) सबसे ऊँचा।

निर्लज्ज अपने आपको सबसे श्रेष्ठ समझता है।

जब कभी समितियों अथवा सभाओं में अयोग्य तथा निर्लज्ज बढ़-बढ कर बोलता है तथा दूसरों को शान्त रहना पड़ता है, तब वे इस कहावत का प्रयोग कर सान्त्वना पालेते हैं।

६४८. **नकटी क लोठचो होव तो ओगटचाँई पे।**

निर्लज्ज के पास लोटा होवे तो अंजलि से ही पिये।

निर्लज्ज का सभ्यता से कटु-विरोध है।

निर्लज्ज के पास यदि पानी पीने का पात्र भी है तो वह पात्र से पानी पीना सभ्यता के विरुद्ध समझता है। वह सभ्यता प्रदर्शित करने वाले साधन को काम में न लाकर असभ्य बनने का ही प्रयास करता है।

६४९. **नकटी क होई पीतल, भीतर धरूं क बार ?**

निर्लज्ज के होई पीतल, (वह सोचती है) भीतर रखूँ कि बाहर ?

निर्लज्ज अपनी थोड़ी वस्तु का भी प्रदर्शन चाहता है।

निर्लज्ज के पास थोड़े भी पीतल के गहने हो जाये तो वह उन्हें दिखाने के लिए कभी बाहर तथा कभी भीतर जाती है।

६५०. **नकटी तो रायतो बगार ।**

निर्लज्ज तो रायता बघारे ।

निर्लज्ज नगण्य बात पर ही कुपित हो जाती है ।

जिस प्रकार रायते मे बघार नही लगता, किन्तु निर्लज्ज तो उसमें भी बघार लगा देती है । इसी प्रकार क्रोध न लाने वाली बात पर भी कुपित हो जाना निर्लज्ज का नित्य-कर्म है ।

६५१. **नखरा का नो टका, बेचं तो न आवं जींका दो टका ।**

नखरे के नौ टके, बेचे तो न आवे जिसके दो टके ।

कुरूप स्त्री अधिक चटक-मटक दिखाती है ।

जो बदसूरत स्त्री शृङ्गार करने में अधिक कोमलता दिखाये, उसका समाज में आदर नही होता । क्योकि समाज प्रकृति चाहता है, विकृति नही ।

६५२. **नखरा की मारीई मथरा जावं छ ।**

नखरे के मारे ही मथुरा जाती है ।

सीमा से अधिक चटक-मटक दिखाना अच्छा नहीं है ।

जो स्त्री या पुरुष शृङ्गार में अधिक समय नष्ट करे तथा हर समय शृङ्गार विषयक बाते करे, तो उससे यह कहावत कही जाती है । इसका तात्पर्य है कि वह गोपिका बनने की प्रतिस्पर्धा करती है ।

६५३. **नटता नं जगत परोसं ।**

मना करने वाले को जगत परोसता है ।

मना करने वाले का आग्रह अधिक किया जाता है ।

मना करनेवाले से हानि की सम्भावना तो होती नही है, अतः यह स्वार्थी संसार उसी का अधिक आग्रह करता है ।

६५४. **नटं न उत्तर दे ।**

मना भी न करे तथा (हाँ का) उत्तर भी न दे ।

किसी को संशय में रखना अच्छा नहीं है ।

जिन मनुष्यों के हृदय मे द्वंद्व चला करता है तथा जो शीघ्र ही किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते, उनकी अवस्था का चित्रण इस उक्ति द्वारा किया जाता है।

६५५. **नत क्वो खोदणो अर नत फाणो पीणो।**

नित्य कुँआ खोदना और नित्य पानी पीना।

नित्य परिश्रम करके पेट पालन करना।

श्रमिकों तथा निर्धनों की शोचनीय परिस्थिति का प्रकाशन करने के हेतु इसका प्रयोग होता है।

६५६. **नत गुण छाव राँगड़ो, पलक-पलक मँ बाण्यो।**

नित गुण चाहे राँगड़ा, पलक-पलक में बनिया।

राजपूत एक दिन में तथा बनिया एक पलक में किये हुये उपकार को भुला देता है।

राजपूतो के साथ प्रतिदिन उपकार करते रहने से स्मृति बनी रहती है, क्योकि दिन भर मे वे उसे भूल जाते है। वैश्य यदि पल-पल मे उपकृत न किया जाय तो किये हुए उपकार का कोई मूल्य नही।

६५७. **नत नागा'र थ्वार भूका।**

नित्य नगे और त्यौहार भूखे।

मितव्ययिता न करने वाले को कष्ट उठाने पड़ते हैं।

जो व्यक्ति कमाये हुए धन को नित्य ही उड़ाता जाय तो आवश्यकता के समय उसे कष्ट उठाना ही पड़ता है।

६५८. **नन्याणमँ को फेर।**

निन्नानवे का फेर।

धन का लोभी कष्ट उठाता है।

किसी व्यक्ति के पास निन्नानवे रुपये तो हो गये, किन्तु वह सोचने लगा कि सौ कैसे पूरे किये जाये। इसी बात की चिन्ता अथवा चक्कर में उसे दूसरे कार्य नहीं सूझते।

६५९. **न नो मण तेल होवे, न राधा नाचे ।**

न नौ मन तेल होवे, न राधा नाचे ।

कार्य न करने वाला कई बहाने मिलाता है ।

किसी काम को करने की इच्छा न रखने वाला व्यक्ति कोई शर्त ऐसी रखदे जो पूरी न हो सके, तब यह उक्ति कही जाती है ।

६६०. **नमन भली संसार में, नहीं नवे जे नीच ।**
धारा सूं परबत कटे, रे गूँदला बीच ।

नमन (विनय) भली ससार में, नही नवे वह नीच ।
धारा से पर्वत कटे, रहे गूँदला (एक प्रकार की घास) बीच ।

नम्रता या विनय जीवन में लाभकारी है ।

मनुष्य का नम्र होना अच्छा है । जो नम्र नही होता वह नीच है । धारा पर्वत को काट देती है, किन्तु जो गूँदला (एक प्रकार की घास) है वह उसमें ही बना रहता है । धारा की गति के साथ ही वह घास झुक जाती है, किन्तु पर्वत नही झुकता । इसीलिए झुकने वाला सुखी होता है, न झुकने वाला कष्ट भोगता है ।

६६१. **न मानी बडाँ की सीख, ले'र ठीकरो माँगी भीख ।**

नही मानी बडों की सीख, लेकर ठीकरा (फूटा पात्र) माँगी भीख ।

बड़ों की शिक्षा न मानने से कष्ट उठाना पड़ता है ।

जो व्यक्ति अपने वयोवृद्धों के बताये हुए मार्ग पर नही चलता, वह इतना पतित हो जाता है कि समय आने पर उसे भिक्षावृत्ति करने के लिए बाध्य होना पडता है ।

६६२. **न मामा सूं काण्यो मामोई आछ्यो ।**

मामा न होने से काना मामा ही अच्छा ।

न होने से कुछ होना अच्छा है ।

अभाव की अपेक्षा यदि अपर्याप्त-वस्तु भी मिल जाय तो भी श्रेष्ठ है ।

६६३. **न रंगो बाँस, न बाजगो बंसरी ।**

न रहेगा बाँस (और) न बजेगी बाँसुरी ।

कारण नष्ट होने पर कार्य नहीं हो सकता ।

कोई व्यक्ति किसी वस्तु के द्वारा होने वाले कष्ट से अधिक दुःखी हो जाय तो वह उस वस्तु को नष्ट करने का प्रयत्न करते हुए इस कहावत का प्रयोग करता है ।

६६४. **नरधन को बेली राम ।**

निर्धन का रक्षक राम है ।

निर्धनों की चिन्ता ईश्वर को होती है ।

ईश्वर पर विश्वास करने वाले दरिद्रों का अस्तित्व रखने वाला ईश्वर ही है ।

६६५. **नर में नाई, पखेरू में काग, फाणी में को खाबच्यो, थींनूं दगाबाज ।**

नर में नाई, पक्षियों में कौआ और पानी में का कछुआ, तीनों दगाबाज ।

नाई, कौआ तथा कछुआ बड़े धोखेबाज होते हैं ।

मनुष्यों में नाई अधिक चतुर होता है तथा पक्षियों में कौआ बड़ा धूर्त होता है । कछुओं में पानी वाला कछुआ पहाड़ी कछुवे से तथा अन्य जलचरों से अधिक चालाक होता है ।

६६६. **नरसीजी हाल्यो गाडो ।**

नरसीजी वाली गाड़ी ।

निर्धन व्यक्ति टूटी फूटी वस्तुओं से ही अपना काम निकालते हैं ।

नरसी मेहता की गाड़ी के लिए क्षण-क्षण यही भय रहता था कि अब टूटी, अब टूटी । उसी प्रकार दरिद्र परिवार रूपी गाड़ी का भी भय जिनको हरदम बना रहता है, वे इस उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

६६७. **नल्यो र जाव, पण गल्यो न र ।**

नलिका रह जावे, पर गला नहीं रहता ।

बीज से पूर्व खाद्य की समस्या हल होनी चाहिये ।

खेतों में अनाज नलिका द्वारा हल की लीक में बोया जाता है । खेत में बोपाई न हो तो कोई बात नही, किन्तु मनुष्यों के गले में डालने (खाने)

के लिए तो अनाज होना ही चाहिये।

६६८. नस्टदेव की भ्रस्टपूजा।

नष्टदेव की भ्रष्ट पूजा।

दुष्ट के साथ दुष्टता करनी ही चाहिए।

जो व्यक्ति जिस योग्य है, उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए।

६६९. नाई को जान मँ सब ठाकर ई ठाकर।

नाई की बरात मे सब ठाकुर ही ठाकुर।

जाति मे प्रत्येक जाति-बन्धु का समान आदर होता है।

विवाह आदि मे नाई काम करते है, किन्तु नाई के विवाह में नाई का काम कौन करे, यह समस्या सामने आती है।

६७०. नाई नाई बाल कतरा छ ? अन्दाता ! अबार सामन आव छ।

(नाई से पूछा) नाई नाई ! बाल कितने है ? (उसने उत्तर दिया) अन्दाता ! अभी सामने आते है।

शीघ्र ही सामने आनेवाली वस्तु के लिये पूछताछ की आवश्यकता नहीं होती।

जिस कार्य का फल प्रत्यक्ष में शीघ्र ही होने वाला हो, उसके अनुभव के लिए सहनशील बनकर प्रतीक्षा करनी चाहिए। अधीर न होना चाहिए।

६७१. नाक कटा'र जगालजो ढोकबो।

नाक कटाकर अजयपाल जी ढोकना।

चरित्रबली के सामने पराजय स्वीकार करना।

कभी काम पडने पर अपने मान-अपमान को छोड़कर लोग जब चरित्रवान् व्यक्ति के सामने सिर झुका देते है, तब यह कहावत कही जाती है।

यह एक ऐतिहासिक कहावत है। इसमें गढ़वाल के राजा अजयपाल (समय १२५४ ई०) का वर्णन है, जिन्होंने अपने चरित्रबल से काफू जैसे सरदार को पराजित किया था। हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन मंत्रों मे भी अजयपाल का नाम सम्मिलित किया मिलता है।

६७२. नाक को सो बाल।

नाक का सा बाल ।

सर्वश्रेष्ठ वस्तु होना ।

नासिका में उत्पन्न होने वाला बाल शरीर के अन्य बालों से श्रेष्ठ गिना जाता है । अतः सबसे अच्छी वस्तु के लिए इस विशेषण का प्रयोग होता है ।

६७३. **नागो नाच नो नो हात ।**

नगा नाचे नौ नौ हाथ ।

निर्लज्ज मन भरके अपनी उद्दंडता का प्रदर्शन करता है ।

निर्लज्ज व्यक्ति यदि किसी से झगडा कर बैठे तो सब से अधिक वाणी का दुरुपयोग उसी के द्वारा होता है ।

६७४ **नागो न्हावे निचोवे काँई ?**

नगा नहावे निचोवे क्या ?

धनहीन किसी कार्य में धन खर्च नहीं कर सकता ।

जो स्वय नंगा है, उसके पास पैसा कहाँ है । वह कोई कार्य करना चाहे, तो उसमें द्रव्य नही लगा सकता ।

६७५. **नाचणी अर गावणी क अगाज होव छ ।**

नर्तकी और गायिका के घमड होता है ।

कलाकार अपनी कला पर गर्व करते हैं ।

कलाकार लोगों के द्वारा बड़ी खुशामद तथा मनुहार करने के पश्चात् प्रसन्न होते है । उनकी कला का प्रदर्शन बिना उनको प्रसन्न किये नही हो सकता ।

६७६. **नाचबा चाली'र घूँघट की लाज ।**

नाचने चली और घूँघट की लाज ।

कला-प्रदर्शन के समय लज्जा अच्छी नहीं है ।

कलाकार यदि अपनी कला के प्रकाशन में लजाये, तो कला का अवगुंठन नहीं खुल पाता । वह अपनी सर्वाङ्ग कला नहीं दिखा सकता ।

६७७. **नाचबा हाल्यो का खुल्हा आपरताई फड़कबू करं छ ।**

नाचने वाली के कूल्हे अपने आप ही फड़का करते है ।

कलाकार अपने को नहीं छिपा सकता ।

कलाकार को दूसरे के द्वारा प्रेरणा मिलते ही उसकी कला स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगती है । अतः लोग इस कहावत का प्रयोग करके उसका परिचय सबको करा देते है ।

६७८. **नाँचूँ कस्याँ ? आँगणो बाँको ।**

नाचूँ कैसे ? आँगन बाँका (टेढा) ।

काम न जानने वाला समय आने पर अनेकों बहाने बना लेता है ।

जो व्यक्ति काम न जानता हो, किन्तु कहता यही हो कि मै सब कुछ जानता हूँ । वह समय आने पर कोई न कोई दोष बताकर काम करने से मना कर देता है ।

"नाच न जाने आँगन टेढा"—मे केवल वाक्य रचना का ही अन्तर है ।

६७९. **नादान को भाइलो, जीवको जंजाल ।**

नादान की दोस्ती जीवका जंजाल ।

नादान व्यक्ति से मित्रता करने पर हानि उठानी पड़ती है ।

विचारो को पूर्णतया समझाने मे असमर्थ होने के कारण नादान व्यक्ति के द्वारा हानि की सभावना ही अधिक रहती है ।

"लायक ही सौ कीजिए व्याह, बैर अरु प्रीति"—मे भी योग्य मित्र की ओर सकेत किया गया है ।

६८०. **न्याव का नन्याणमं गेला ।**

न्याय के निन्नानवे मार्ग ।

न्याय को जिधर चाहें उधर मोड़ सकते है ।

न्याय करने का एक निश्चित नियम न होने के कारण अनेक प्रकार से न्याय किया जा सकता है ।

६८१. **नारगढ़, सेरगढ़, भँवरगढ़ ताजा।**
लोग पीसें पोसणों लुगायाँ म्हाराजा।
नाहरगढ, शेरगढ़, भँवरगढ़ ताजा।
लोग पीसें पीसना, औरतें महाराजा।
नाहरगढ़, शेरगढ़ तथा भँवरगढ़ में स्त्रियाँ पुरुषों पर शासन करती हैं।

नाहरगढ़, शेरगढ तथा भँवरगढ़ कोटा जिले के अन्तर्गत तीन कस्बे है। लोगों ने उपहास के रूप में तुक मिलाकर यह कहावत बनाई है।

६८२. **नाला घरका नाला बारणा।**
न्यारे (अलग) घरों के न्यारे बारणे (दरवाजे)।
कुटुम्बियों के अलग हो जाने पर सभी वस्तुएँ अलग हो जाती हैं।

किसी पडौसी अथवा कुटुम्बी से सम्बन्ध-विच्छेद होजाने पर इस कहावत द्वारा उनका पारस्परिक भेद प्रगट किया जाता है।

६८३. **नाँव का लखपत, देख्याँ की या गत।**
नाम के लखपति, (किन्तु) देखने पर यह गति (दशा)।
बड़ा वही है, जिसके कार्य भी बड़े हैं।

जिस व्यक्ति का कार्य एवं रहन-सहन दरिद्र जैसा हो तथा वह लखपति हो तो उससे कोई लाभ नही। मनुष्य को अपनी स्थिति के अनुकूल रहना चाहिये।

६८४. **नाँव लेवा'र फाणी देवा बी न रह्या।**
नाम लेने वाले और पानी देने वाले भी नहीं रहे।
गर्व करने वाला समूल नष्ट हो जाता है।

जो गर्व करता है या कुमार्ग की ओर प्रवृत्त होता है, उसके नाम लेने के लिए तथा तर्पण करने के लिए कोई अवशिष्ट नहीं रहता। ऐसे परिवारों की ओर सकेत करके यह कहावत कही जाती है।

६८५. **न्हाया जतरोई पन्न होयो।**
नहाये जितना ही पुण्य हुआ।

भूल मालूम होने पर भावी-हानि से बचना ।

किसी अच्छे कार्य में रुपया व्यय करते-करते जब उस कार्य का खोखलापन ज्ञात हो जाय, तब इस कहावत द्वारा आत्मशान्ति का प्रयास किया जाता है ।

६८६. **न्हार-बकरी एक घाट पाणी पे छ ।**

नाहर (सिह) बकरी एक घाट पानी पीते हैं ।

अत्यधिक प्रभावशाली होना ।

अच्छे शासक की राज्य-सीमा अथवा तपोबल द्वारा प्रभावित क्षेत्र में जीवो का नैसर्गिक विरोध शात हो जाता है । प्रभावशाली शासन या ऋषि के प्रभाव-प्रदर्शन के लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

६८७. **न्हार को डाढ में सूँ कुँण खाड ?**

नाहर (सिह) की दाढ मे से कौन निकाले ?

भयङ्कर कार्य करने के लिये कोई अभिमुख नहीं होता ।

जब सबल व्यक्ति के पास से किसी वस्तु का प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो, तब यह कहावत कही जाती है ।

६८८. **नीचो करी नाड़, तो माथा स्वाँणी बाड़ ।**

नीची करी नाड (गर्दन), तो माथे (सिर) के बराबर बाड ।

कुछ निर्लज्ज बनने से काम निकल जाता है ।

अपने कार्य की सिद्धि के लिए कभी-कभी निर्लज्ज बनना बुरा नही है । जब कार्य बनता ही न हो ; तो वयोवृद्ध भी इस कहावत द्वारा सामयिक-निर्लज्जता की आज्ञा प्रदान कर देते है ।

६८९. **नीचो करचो खाँध'र झाँकबा हालो आँधो ।**

नीचा किया कधा और देखने वाला अधा ।

निर्लज्जता के द्वारा शीघ्र ही कार्य-सिद्धि हो जाती है ।

कुछ निर्लज्ज बनने पर हमारी ओर देखने वाला ही दोषी बनता है । कहावत न० ६८८ भी अवलोकनीय है ।

६९०. **नींत सारू बरकत ।**

नीयत के सदृश बरकत (वृद्धि) ।

विचारों की पवित्रता लाभप्रद है ।

किसी व्यक्ति के मन में बुराई बैठ जाय, तो उसकी उन्नति में बाधा उत्पन्न हो जाती है ।

६९१. **नींद न जाणै टूटी खाट, तसायो न जाणै धोबी घाट ।**
भूख न जाणै ऊँठ्यो भात, इसक न जाणै ज्यात-कुज्यात ।

नींद न जाने टूटी खाट, प्यासा न जाने धोबी घाट ।

भूख न जाने जूठा भात, इश्क न जाने जात-कुजात ।

नींद, प्यास, भूख तथा प्रेम अंधे होते हैं ।

जब नीद आती है तो टूटी चारपाई पर ही आ जाती है । प्यासा व्यक्ति धोबी घाट का मैला पानी भी पान कर लेता है । भूखा व्यक्ति जूठे भात को भी नही छोडता, तथा प्रेम करने वाला जातिगत ऊँच-नीच का ध्यान नही रखता ।

६९२. **नींमर को बद काँईं कर ?**

ठोस का वैद्य क्या करे ?

दृढ़तापूर्वक अपनी बात पर अड़े रहने वाले व्यक्ति को कोई भी नहीं समझा सकता ।

जो व्यक्ति किसी की बात ही न मानता हो तथा अपनी ही बात को सर्वश्रेष्ठ मानकर चलता हो, उसके लिए सदुपदेश भी निरर्थक है ।

६९३. **नुई जोगण, पावाँ ताईं जटा ।**

नई योगिन, पैरों तक जटा ।

नया व्यक्ति अधिक आडम्बर करता है ।

जब कोई व्यक्ति किसी मत को अपनाता है तब उसके नियमों का अक्षरशः पालन करता है । उसकी इस प्राथमिक लगन को देखकर यह कहावत कही जाती है ।

"नया मुसलमान अल्ला-अल्ला अधिक पुकारता है"—कहावत मे भी

इसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति मिलती है ।

६९४. **नुई लाडी को नो दन को लाड ।**

नई बहू का नौ दिन का प्यार ।

नई वस्तु की कुछ दिन ही सार-सँभार रहती है ।

जिस प्रकार नई दुलहिन से आते ही आते कोई भी काम नहीं लिया जाता । उसी प्रकार नई वस्तु भी बहुत सावधानी के साथ काम में ली जाती है । थोड़े समय के पश्चात् जब उससे मन भर जाता है, तब उसकी कोई चिन्ता नही करता ।

६९५. **नूतो नूता क, क नूतो गाँव पटलाँ क, क नूतो चुगलीखोराँ क ।**

न्योता न्योते के या न्योता गाँव पटेलों के, या न्योता चुगलखोरों के ।

व्यावहारिकों तथा गाँव के पटेलों के साथ ही साथ चुगलखोर भी आमंत्रित किये जाते हैं ।

गाँव में जब किसी के यहाँ भोज होता है तो वह अपने व्यवहारिको एवं मुखिया को तो आमत्रित करता ही है, साथ ही शिकायत करने वाले व्यक्ति को भी भय के कारण अवश्य आमत्रित करता है ।

६९६. **नोकरी को जड़ भाटा प ।**

नौकरी की जड पत्थर पर (होती है) ।

नौकर को बड़ी सावधानी से कार्य करना चाहिए ।

जिस प्रकार पत्थर पर उत्पन्न होने वाला पौधा शीघ्र ही उखड़ सकता है, उसी प्रकार नौकरी भी मालिक के भ्रूभग मात्र से ही हट सकती है ।

६९७. **नो खाव, थेरा की भूख ।**

नौ खावे (और), तेरह की भूख ।

आवश्यकताओं की सीमा नहीं होती ।

किसी संतुष्टि रहित परिवार पर निरन्तर व्यय करते रहने वाला हताश व्यक्ति इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

६९८. **नो ढोबा को पाव ।**

नौ ढोबा (दोनों हाथों की अंजलि भर) का पाव ।

जड़ मूर्ख होना ।

पाव भर तो लगभग एक अजलि में ही हो जाता है । अतः जो साधारण बुद्धि में आजाने वाली बातों से भी अनभिज्ञ हो, उसके लिए विशेषण रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

६९९. **नो ताला मँ धर, तो बी मोत आव ई छै ।**

नौ ताले मे रखे तो भी मौत आती ही है ।

मनुष्य मौत के मुँह से किसी प्रकार भी नहीं बचाया जा सकता ।

अत्यधिक सुरक्षित रखने पर भी मनुष्य को मृत्यु का ग्रास बनना पडता है ।

७००. **नो नगद, न थेरा उधार ।**

नौ नकद, न तेरह उधार ।

मिलने वाली अनिश्चित वस्तु से हाथ की थोड़ी वस्तु ही अच्छी है ।

तेरह उधार के रुपयों से हाथ के नौ रुपये श्रेष्ठ हैं, क्योंकि उधार के रुपयों का क्या भरोसा ? न जाने कब आवें ।

७०१. **नो चोका थेरा पूर्व्या ।**

नौ चौके तेरह पूर्विये ।

एक मत न होना ।

पूर्विये एक प्रकार के ब्राह्मण होते हैं । उनका अस्पर्श सीमा का भी उल्लंघन कर गया है । जो एक सिद्धान्त को मानकर नहीं चलते हों, उन व्यक्तियों से यह कहावत कही जाती है ।

प

७०२. **पंखा क सर पोन छ, अर उद्दम क सर काम ।**

पखे के आश्रित पवन है और उद्यम के आश्रित काम ।

बिना उद्योग किए कार्यसिद्धि नहीं हो सकती ।

जिस प्रकार बिना पखा चलाये पवन प्राप्त नही हो सकती, उसी प्रकार उद्योग के बिना कार्य पूर्ण नही हो सकता ।

७०३. **पगाँ को धूल बी माँय आव छ ।**

पैरों की धूलि भी सिर पर आती है ।

अत्यधिक अत्याचार से निस्तेज में भी तेज प्रकट हो जाता है ।

जिस प्रकार ठोकर मारने पर पैरों की धूलि सिर पर उड़कर आ जाती है, इसी प्रकार निरन्तर अत्याचारों को सहते रहने पर कमजोर भी उबल पड़ता है ।

७०४. **पंच तो पणमेसर होव छ ।**

पच तो परमेश्वर होते है ।

पंचों में परमेश्वर का निवास है ।

पचों का निर्णय सर्वथा मान्य होना है, क्योंकि उनके सत्य में ईश्वर की सहायता रहती है ।

"पच जहाँ परमेश्वर" की वाक्य रचना भी इसी प्रकार की है ।

७०५. **पटलजी गाडो दीज्यो, क गाडा सूँ पाडो बँध रयो छ ।**

पटेल जी गाडा देना, (उन्होने कहा कि) गाड़े से तो पाडा (भैसा) बँध रहा है ।

किसी को वस्तु न देने के अनेकों बहाने हो सकते है ।

किसी व्यक्ति ने पटेल जी से गाड़ा माँगा, तो उन्होने कहा कि "भाई गाड़े से तो मेरा भैसा बँध रहा है ।" इसके आगे का सवाद इस प्रकार चलता है—उस व्यक्ति ने कहा कि "जरा भैसे को खोल दो ।" इस पर पटेल जी बोले कि "तेरी बुद्धि मारी गई है । यदि मुझे देना होता तो मै बहाना ही क्यो बनाता ?"

७०६. **पड़द लछमी बस छ ।**

परदे में लक्ष्मी बसती है ।

अपने धन का प्रदर्शन करना अच्छा नहीं है ।

धन के प्रदर्शन करने से उसके विनाश के साधन जुट जाते हैं, अतः उसको छिपाकर रखना ही श्रेयस्कर है।

७०७. **पड़ पेट में चून की, जद सबो याद आव छ।**

पड़े पेट में चून को (रोटी), तब सभी याद आते हैं।

भूख में कोई काम नहीं हो सकता।

जब तक पेट में रोटी नही पडती तब तक मन भोजन की ओर ही लगा रहता है।

"भूखे भजन न होई गोपाला, यह ले तेरी कठी माला"—में इसी प्रकार भावों की समानता दृष्टिगोचर होती है।

७०८. **पड़ी पड़ो ठसक'र नो रोटी मसक।**

पडी पड़ी टसके (कराहे) और नौ रोटी मसके (खाले)।

पेट भर भोजन कर लेने वाला अस्वस्थ नहीं कहा जा सकता।

कोई स्त्री जो खाना तो खा लेती हो, किन्तु काम के नाम पर पड़ी पड़ी कराहती हो, उसके चरित्र को इस कहावत द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

७०९. **पड़ूँ पड़ूँ कर छो, धकोलबा हाला थारो भलो होज्यो।**

गिरूँ गिरूँ करती थी, धक्का लगाने वाले तेरा भला होना।

पतन के निकट पहुँची वस्तु का शीघ्र विनाश ही श्रेयस्कर है।

जो वस्तु अपने विनाश की ओर अत्यधिक झुकी हुई हो, यदि उसके नष्ट करने में कोई सहायक हो जाय, तो वह पुण्य का ही कार्य करता है।

७१०. **पड़्यो सींगड़ो जड़ मल।**

पड़ा हुआ सीग जड रक्खे।

पड़ा हुआ धन भी अपनी वृद्धि का मार्ग खोज लेता है।

भूमि पर पड़े हुए पशुओं के सीग भी वर्षा ऋतु में उग आते है। इसी प्रकार पडा हुआ धन भी समय पर अवश्य लाभ पहुँचाता है।

७११. **पतला गू में भाटो पटक, तो माँथा ताईं छाँटा आव छ।**

पतले गू (पुरीष) में पत्थर डाले, तो सिर तक छीटे आते है ।

दुष्टों से विरोध करने का परिणाम अच्छा नहीं होता ।

दुष्ट स्वभाव से ही असहिष्णु होते है । अतः उनके लिए कुछ भी कह देने पर वे प्रतिष्ठा भग करने मे रच भी सकोच नही करते ।

७१२. पतलो देख'र लड़नो न, अर मोटो देख'र डरनो न ।

पतला देखकर लडना नही और मोटा देखकर डरना नही ।

आकार को ही देखकर बल का अनुमान नहीं करना चाहिए ।

किसी को पतला देखकर नही लड़ना चाहिए तथा किसी मोटे को देखकर डर नही जाना चाहिये । क्योकि कभी-कभी पतले व्यक्ति बलवान तथा मोटे व्यक्ति कमजोर निकल आते है ।

७१३. पतलो छ्याछ में फाणो ।

पतली छाछ मे पानी ।

एक दोष में पुनः दूसरा दोष उत्पन्न हो जाना ।

पतली छाछ मे पानी डालने से वह अधिक पतली हो जाती है । कभी कभी विचारपूर्वक काम न करने से परिस्थिति अधिक भयकर हो जाय, उस स्थिति का प्रकाशन इस कहावत द्वारा होता है ।

७१४. पथवारयाँ ई पग सूजग्या, जद गंगाजी खाँ नोरड़ो ?

पथवारी तक जाने मे ही पैरो मे सूजन आ गई, तब गगाजी कहाँ पास ?

कार्यारम्भ में ही शिथिल हो जाने पर कार्य की पूर्णाहुति कैसे हो सकती है ?

कार्य सिद्धि के लिए अन्त तक साहस की आवश्यकता होती है । गाँव के बाहर पथवारी (गगा जी की मूर्ति) तक जाते ही जिसके पैरो मे सूजन आजाये, उस व्यक्ति के गंगाजी तक पहुँचने में शङ्का हो सकती है । रेल व मोटर के आविष्कार से पूर्व लोग हरिद्वार, बद्रीनाथ आदि तीर्थो की पैदल यात्रा किया करते थे ।

७१५. पन्न की जड़ सदाँ हरी ।

पुण्य की जड सदा हरी ।

पुण्य का फल सदैव मिलता रहता है ।

पुण्य करने से लोक और परलोक दोनो सुधरते है । इसलिए वैदिक विधानों में इष्टापूर्ति का उल्लेख किया गया है । पुण्य कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

७१६. परजा तो भरतजी की बी सगी न होई ।

प्रजा तो भरतजी की भी सगी नही हुई ।

संसार निर्दोषी को भी कलङ्क लगा देता है ।

भरत ने अपने तप, त्याग एव भ्रातृ-प्रेम से यह सिद्ध कर दिया था कि उसका प्रेम निष्कपट है । किन्तु लोगों ने तो ऐसे पवित्र व्यक्ति को भी पापी ठहरा दिया ।

७१७. परमोलाँ धोड़ाँ चढ़, पर घर कर अणन्द ।
तू क्यूँ रीझी गोरज्याँ, ये फाफानन्द फलन्द ।

पर-लीने घोड़े चढे, पर-घर करे आनन्द ।
तू क्यों रीझे गौरिजे, ये फाफानन्द फलन्द ।

यथार्थ वस्तु के प्रति ही आकर्षण होना चाहिए ।

एक शुद्ध क्षत्रिय कुमारी से उसकी सखी कहती है कि जिस पर तुम रीझ रही हो वह क्षत्रिय कुमार नही है । वह तो दास है । यह दूसरे के खरीदे हुए घोड़े पर चढता है और दूसरे के घर पर ही आनन्द करता है । सब ओर से खोखला है, अत: ऐसे व्यक्ति की ओर आकर्षित मत हो ।

७१८. परणघा ईं सुख न द्यो, तो नात करघो काँई सुख देगो ?

पति ने ही सुख नही दिया, तब नात्रावाला क्या सुख देगा ?

विवाह की अपेक्षा नाता अधिक बुरा होता है ।

एक स्त्री को किसी ने सलाह देते हुए कहा कि तुम नात्रा कर लो । इस पर वह कहती है कि "मुझे वहाँ अधिक दु ख उठाना पड़ेगा । विवाहित पति ने ही सुख नही दिया, तब दूसरा क्या सुख देगा ?

७१९. परणघा न, तो जान मँ तो ग्या होंगा ?

परणे (ब्याहे) नही, तो बरात में तो गये होंगे ?

कार्य स्वयं न किया, तब भी देखा तो है ।

जब कोई किसी से यह कहे कि तुम इस कार्य के बारे में क्या जानो ? तुमने काम तो कभी किया ही नही । तब वह व्यक्ति सर्वथा अनुभव-शून्य न होने की अभिव्यजना के लिए इस कहावत का उपयोग करता है ।

७२०. पराई थाली में घी घणो दीखे छे ।

पराई थाली में घी घना दिखाई देता है ।

मन में आशङ्का होने से दूसरे व्यक्ति हम से अधिक सम्पन्न जान पड़ते हैं ।

मन में विकल्प होने के कारण दूसरे का लाभ या धन का सुख सदा अपने से अधिक दृष्टिगोचर होता है ।

७२१. पराधीन सपनाँ सुख नाहीं ।

पराधीन सपनेहु सुख नाही ।

दूसरों की अधीनता में सुख नहीं मिलता ।

दूसरो के अधीन रहने के कारण पराधीनो का स्वतन्त्र-व्यक्तित्व कु ठित हो जाता है । अत वे इस कहावत का प्रयोग करते है ।

७२२. परीत छपायाँ न छपे ।

प्रीति छिपाये ना छिपे ।

प्रेम छिपाने से नहीं छिप सकता ।

किसी व्यक्ति का प्रेम छिपाने से नही छिपता । थोड़े समय मे वह प्रकट हो ही जाता है । देखिये कहावत नं० २४० ।

७२३. परीत बनाँ धर राख लुगाई, हेत बनाँ धर राख सगो ।
आग बनाँ धर राख तमाखू, पाग बनाँ धर राख झुगो ।

प्रीति बिना धर रखो लुगाई, हेत बिना धर रखो सगा ।
आग बिना धर रखो तमाखू, पगडी बिना धर रखो झँगा ।

प्रीति, स्नेह, अग्नि तथा पगड़ी के बिना क्रमशः औरत, सम्बन्धी, तम्बाकू और झँगा किसी काम नहीं आ सकते ।

औरत को रखना हो तो उससे प्रीति करनी चाहिये। अपने सम्बन्धी के प्रति हेत रखने से ही सम्बन्ध बना रहता है। तम्बाकू आग के बिना नही पी जा सकती तथा बिना पगडी झगा शोभा नही देता।

७२४. **पलाँ क घर जाव, अर बुरा गीत गाव।**

दूसरों के घर जावे, और बुरे गीत गावे।

किसी के यहाँ जाकर दूसरे की निन्दा नहीं करनी चाहिए।

जब कोई व्यक्ति किसी से मिलने के लिए जाये तथा वहाँ जाकर दूसरो की निन्दा करता रहे, उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

७२५. **पलाँ की थाली मँ घी घणो दीख।**

दूसरो की थाली मे घी अधिक दिखाई देता है।

दूसरे की वस्तु अच्छी जान पड़ती है।

अपनी अच्छी वस्तु को छोडकर दूसरे व्यक्ति की वस्तु की ओर आकर्षण होने पर यह कहावत कही जाती है।

७२६. **पलाँ का धन सूँ बो'रो बणबा मँ काँई छ ?**

पराये धन से बोहरा बनने मे क्या है ?

दूसरे के धन से सेठ कहलाना सहज है।

जो व्यक्ति दूसरो का धन लेकर सेठ बन जाता है, उसके कार्य की निन्दा इस कहावत द्वारा होती है।

७२७. **पसीना मँ फाँणी न पीणो छाइजे।**

पसीने मे पानी नही पीना चाहिए।

पसीने में पानी पीने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

स्वास्थ्य के लिए उपदेश के रूप में यह कहावत कही जाती है। पसीने में पानी पीने से जुकाम हो जाता है।

७२८. **पाइजामो स्वाँव छ तो मूँतबाको ठोर बी रखाण छ।**

पाजामा सिलाते है तो मूत्र करने की ठौर भी रखते है।

कार्य करने वाला व्यक्ति उसमें आने वाले विघ्नों के प्रतिवाद का उपाय भी रखता है।

प्रत्येक कार्य करने मे पहले उसके आन्तरिक एव बाह्य पक्षों पर विचार कर लेना चाहिए। ऐसा होने पर भी कोई उसमे त्रुटि बतलाये, तो उससे यह कहावत कह दी जाती है।

७२९. **पाका भाँडा मँ काँई गार लाग छ।**

पके भाँडे (मिट्टी की माथनी) में क्या मिट्टी लगती है ?

अवस्था पक जाने पर सुधार नहीं हो सकता।

पके हुए मिट्टी के पात्र मे जैसे जोड नही लग सकता, उसी प्रकार उम्र निकलजाने पर सुधार नही होता।

"बुड्ढा तोता कुरान नही पढ सकता"—में इसी भाव की व्यंजना हुई है।

७३०. **पाको कर टका की ऑण।**

पका हुआ (वृद्ध) टके की आन करता है।

वृद्ध पैसा खर्च करते समय दुःखी होता है।

नवयुवक को पैसे की चिता नही होती। उसकी उम्र बहुत होने से वह फिर कमा सकता है, किन्तु वृद्ध के सामने पैसे का मूल्य अधिक है। उसके पास पैसा कमाने का समय नहीं होता।

७३१. **पाँड्या जी पसतावगा, बाई चणा को खावगा।**

पाडे जी पछताओगे, वही चने की खाओगे।

युक्तिसंगत बात को ग्रहण करने में ही कल्याण है।

जो व्यक्ति पहिले बहुत समझाने पर भी काम न करे और अन्त में पछताकर उसी काम को करे, उसके उद्‌बोधन के लिए यह कहावत कही जाती है।

७३२. **पान पड़्या पटेल क, डूँगा रकसण्याँ चाल।**

हाथ पड़े पटेल के, कूल्हे सरकाकर चल।

किसी दुष्ट व्यक्ति के अधिकार में आने पर उसके संकेतों पर ही चलना पड़ता है ।

कोई व्यक्ति किसी दुष्ट स्वभाव वाले व्यक्ति के पल्ले पड जाय तो उसे जो कष्ट होता है, उसके दिग्दर्शन के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

७३३. **पाप कर जे धाप'र खाव, धरम कर जे भूखाँ मर ।**

पाप करे जो तृप्त होकर खावे, धर्म करे जो भूखों मरे ।

इस युग में पापी सुखी एवं धर्मी दुःख उठाते हुए दिखाई देते हैं ।

युग की कठिनाइयो के कारण धर्म करने वाले के कर्त्तव्य-पालन में अनेको बाधाये आती है । अतः प्रत्यक्ष मे तो भौतिक-ऐश्वर्य का उपभोग पापी ही करते है, धर्मी नही ।

७३४. **पाप को धन पर लेजाय ।**

पाप का धन पर (दूसरा) ले जाता है ।

पाप का धन शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

पाप की कमाई बुरे कामो में नष्ट हो जाती है । उसमें स्थायित्व नही होता । उसका आनन्द दूसरे ही उठाते है ।

७३५. **पाप को भाँडो भर जाव, जद फूट ई छ ।**

पाप का (भाड) पात्र भर जाता है, तब फूटता ही है ।

बढ़ जाने पर पाप का अवश्य भण्डाफोड़ होता है ।

कुकर्मी के कर्म अत्यधिक बढ जाने पर सामने आते ही है, क्योकि अधिक बढने पर उन्हे छिपाना कठिन हो जाता है ।

७३६. **पापी को मन पाप मँ, जोगी को मन राख मँ ।**

पापी का मन पाप में, योगी का मन राख में ।

वृत्ति के अनुसार रुचि होना ।

पापी को पाप के सिवाय कुछ भी नही सूझता तथा योगी भस्म रमाने के अतिरिक्त अन्य कार्यो मे मन नही लगा सकता ।

७३७. **पाप तो मंगर बठ'र बोल छ ।**

पाप तो मँगरे पर (घर के सबसे ऊँचे भाग पर) बैठकर बोलता है ।

पाप स्वयं प्रकट हो जाता है ।

पाप एक न एक दिन प्रकट होकर ही रहता है । उसका फल कर्त्ता को अवश्य ही भोगना पडता है । देखिये कहावत न० ७३५ ।

७३८. **पाव मँ सूं पूँणी बो न कती ।**

पाव मे से एक पूनी भी नही कती ।

बहुत काम शेष होना ।

जब कोई किसी से पूछे कि काम कितना और शेष है, तब उस कार्य के लिए जिसका स्वल्पाश भी पूरा न हुआ हो, यह कहावत कही जाती है ।

७३९. **पीर, बबर्ची, भस्ती, खर ।**

पीर, बबर्ची (रसोइया), भिश्ती और खर (गधा) ।

ऊँचा और नीचा सब काम करने वाला ।

ब्राह्मणो की पतनावस्था का चित्र इस उक्ति द्वारा बतलाया जाता है । वे पूजे भी जाते है, रसोई भी बनाते है, पानी भी पिलाते है, और समय आने पर यजमान के साथ गधे की तरह सामान उठाने का काम भी कर लेते है ।

७४०. **पोसबा हालीक चाबबा को स्वाद ।**

पीसने वाली के चबाने का स्वाद ।

बिना स्वार्थ के कोई काम नहीं करता ।

आटा पीसने वाली यदि बिना मजदूरी ही आटा पीसने को उद्यत हो जाय, तो वह भी अन्न चुराकर स्वार्थ पूरा कर लेती है ।

७४१. **पो'सा क मूँड मूँछ छ ।**

पैसे के मुँह पर मूँछ है ।

सब कार्य पैसे से ही चलते हैं ।

ससार के प्रत्येक कार्य मे पैसे की आवश्यकता होती है । अतः पैसे

के बिना कोई काम पूरा नहीं हो सकता।

७४२. पी'सा सूँ पी'सो बध छ ।

पैसे से पैसा बढता है।

धन से ही धन कमाया जा सकता है।

बिना पैसे व्यापार नहीं हो सकता तथा "व्यापारे वसते लक्ष्मी" के अनुसार व्यापार से ही धन की वृद्धि होती है।

७४३. पी'सो तो गाडा का पागा क मँन होरचो छ।

पैसा तो गाड़े के पहिये के समान हो रहा है।

पैसे का कठिनाई से संचय किया जाता है।

धन कमाने में अनेक कष्ट सहन करने पड़ते हैं। अतः कोई निर्धन से पैसा माँगे, तो वह यह उत्तर देकर याचक से अपना पीछा छुड़ा लेता है।

७४४. पी'सो तो जर खाबा मँ बी कोई न।

पैसा तो जहर खाने के लिए भी नहीं है।

द्रव्य का अत्यधिक अभाव होना।

जब किसी का हाथ बहुत तंग हो तथा उस समय उससे कोई पैसा माँगे, तो वह यह उत्तर देता है। देखिये कहावत नं० ७४३।

७४५. पी'सो तो फाणी मँ गेलो करदे छ।

पैसा तो पानी में रास्ता कर देता है।

पैसों से सब कुछ सुलभ है।

पैसा ही भौतिक जीवन का साधन होने के कारण प्रत्येक वस्तु के क्रय-विक्रय का माध्यम है। अत. पैसे के द्वारा कठिन से कठिन कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते है।

७४६. पी'सो न कोडी, बाई फर दोड़ी।

पैसा न कौड़ी, बाई फिरे दौड़ी।

बिना पैसे केवल परिश्रम से कोई काम नहीं हो सकता।

बाई इधर-उधर दौड़ी फिरती है, किन्तु पैसा नहीं है। अतः कार्य सिद्धि नही हो सकती।

७४७. पी'सो हात को मल छ।

पैसा हाथ का मैल है।

पैसा हृदय खोलकर खर्च करना चाहिए।

जैसे हाथ के मैल को उतारकर फेंक देते है, वैसे पैसे का भी दान करते रहना चाहिए। हाथ का मैल जैसे जमा होता रहता है, वैसे ही पैसा आता रहता है। अच्छे कार्य में अधिक पैसा खर्च हो जाने पर यह कहावत कही जाती है।

७४८. पूछता पूछता तो दल्ली चल्या जाव।

पूछते पूछते तो दिल्ली चले जावे।

पूछताछ करके तो बड़े कार्य में भी सफलता मिल सकती है।

जब किसी आदमी से कही जाने के लिए अथवा कोई कार्य करने के लिए कहा जाय और वह यह कहे कि "मैं अनभिज्ञ हूँ।" उस समय उसको इस उक्ति द्वारा प्रेरित किया जाता है।

७४९. पूँजी अंट'र बद्या कंठ।

पूँजी अंट (की) और विद्या कंठ (की)।

पास का द्रव्य तथा कंठस्थ-विद्या सदैव काम आती है।

जो द्रव्य पास है, उससे आवश्यकता के समय सारा काम चलाया जा सकता है। इसी प्रकार जो विद्या याद है, उसका भी अवसर आने पर उपयोग किया जा सकता है।

७५०. पूँजी मँ पटाको पड़्यो, बेचबा को छाव।

पूँजी में पटाका (घाटा) पडा, बेचने का चाव।

हानि उठाकर व्यापार करना मूर्खता है।

व्यापार में लगाई हुई सम्पत्ति मे घाटा पडने पर भी जिसे बेचने का शौक हो, वह अपनी सम्पत्ति को नष्ट करना ही चाहता है। ऐसी विचार धारा के प्रति व्यग्योक्ति के रूप में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

७५१. पूत का लक्खण पालणईं दीख छ ।

पुत्र के लक्षण पालने में ही दीखते है ।

सन्तान आगे चलकर कैसी होगी इसका अनुमान बचपन में ही हो जाता है ।

जब किसी कार्य का आसार पहले से ही दिखाई देने लगे, तब यह कहावत कही जाती है ।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात"—से इसकी तुलना की जा सकती है ।

७५२. पूत माँगबा गो'र खसम का साँसा ।

पुत्र माँगने गई और पति की चिन्ता (पड़ी) ।

छोटी वस्तु चाहने पर बड़ी वस्तु की क्षति की सम्भावना हो जाना ।

जब कोई मनुष्य थोड़े लाभ के लिए प्रयत्न करे और उसमें अधिक हानि हो जाय, उसके लिए यह कहावत प्रचलित है ।

"बलि चाहा आकाश को, हरि पठवा पाताल"—इस उक्ति में भी उपर्युक्त भावों की समानता दृष्टिगोचर होती है ।

७५३. पेट पापी बणायो छ ।

पेट पापी बनाया है ।

सारे पाप पेट भरने के लिए ही किए जाते हैं ।

बुरे कार्यों के प्रति ग्लानि होते हुए भी आवश्यकतावश कोई अनैतिक काम कर देने पर मनुष्य इस कहावत को कहता है ।

७५४. पेट मँ आँत न'र, मूँडा मँ दाँत न ।

पेट में आँते नहीं और मुँह में दाँत नही ।

अति वृद्ध होना ।

जब वृद्धावस्था की सीमा आने लगती है, उस समय मुँह में एक भी दाँत नही रहता तथा पेट इतना अधिक चिपक जाता है कि आँतों का अस्तित्व ही संदिग्ध हो जाता है ।

७५५. पेट मँ समाई जस्याँई हाँडी मँ बी समावंगी ।

पेट में समाई वैसे ही हँडिया मे भी समावेगी ।

विवाहिता कन्या पीहर में भी रह सकती है।

किसी लड़की को यदि उसका पति निकाल दे, उस पर उस लड़की का पिता यह कहावत कहता है। इसका अर्थ यह है कि जैसे उदर में रक्खा, वैसे ही घर में भी रख सकेंगे।

७५६. पेट हाली लुगाई की सी मंसा।

पेट वाली (गर्भिणी) स्त्री के सदृश मंशा (इच्छा)।

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उपभोग की उत्कट अभिलाषा।

गर्भिणी की इच्छा "दोहद" कहलाती है। वह उत्कट होती है। उसे पूरा करना ही चाहिए, क्योंकि इसका सम्बन्ध उदरस्थित गर्भ से होता है। ऐसी प्रबल इच्छा का साम्य इस कहावत द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

७५७. पोपाँ बाई को रावलो।

पोपाँबाई का रावला (अन्तःपुर)।

आवागमन पर कोई रोकटोक न होना।

पोपाँ बाई का रावला कोटा जिले के आवाँ नामक गाँव में स्थित है। पोपाँबाई बडी धर्मात्मा थी। उनके यहाँ आने वाले अतिथियों को किसी प्रकार की रुकावट नही थी। वैसे राजपरिवार के अन्तःपुर में प्रवेश का निषेध होता है। लेखक ने उक्त रावले के खंडहरों के दर्शन किये हैं।

रावले मे कुछ मन्दिर बड़े प्राचीन है। मुख्य मन्दिर में बद्रीनारायण की प्रतिमा है, जो उन्ही की स्थापित की हुई बतलाई जाती है।

७५८. पोलघटा की पोलाँपोल, भरया का दो टका, अर रीता का नो टका।

पोलघटे की पोलापोल, भरे के दो टके और रीते (खाली) के नौ टके।

मनमाना कर वसूल करने पर कोई प्रतिबन्ध न होना।

जहाँ पर अबाध गति से नियम-विरुद्ध कार्य होता हो तथा कहने सुनने वाला कोई न हो, वहाँ यह कहावत प्रयुक्त होती है। इसके साथ एक कहानी है—

"किन्हीं सज्जन ने राजा को यह बतलाया कि हुजूर आपके राज्य में बड़ी पोल चल रही है। राजाने उनसे कहा तुम भी किसी पोल में घुस जाओ। उन्होंने एक

अच्छा सा आवागमन का मार्ग चुन लिया तथा कर वसूल करने लगे। भरी गाड़ी के दो टके तथा खाली के नौ टके लेते। कोटा जिले के अन्तर्गत ठिकाना बलवन में यह पोलघटा नामक स्थान विद्यमान है।

७५९. **पोस खालड़ो खोस।**

पौष खाल-खोस (खीच)।

पौष में अत्यधिक शीत पड़ता है।

पौष के जाड़े के कारण हाथ-पैर फट जाते है, इसीलिये उसे चमड़े को खीचने वाला कहा गया है।

फ

७६०. **फकीर हालो द्यो।**

फकीर वाला दिया (चिराग)।

थोड़ी भी चिन्ता शरीर को सुखा देती है।

किसी को व्यर्थ की चिन्ता लगी हो, वह इस कहावत का प्रयोग करता है। इससे अन्तर्गत एक कहानी है—

"एक फकीर बेफिकर था। वह अत्यन्त पुष्ट था। उसे देखकर किसी राजा ने अपने मंत्री से कहा कि मंत्री यह क्या बात है। यह क्यों ऐसा है? मंत्री ने उस फकीर को बुलाया तथा उसको मासिक वेतन पर मसजिद में प्रतिदिन चिराग जलाने के लिए नियुक्त कर दिया। कुछ समय पश्चात् जब उसे देखा गया तो ज्ञात हुआ कि चिन्ता के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया है।

७६१. **फड्ग्या पूत खमार का, सोला दूनी आठ।**

पढ गये पुत्र कुम्हार के, सोलह दूनी आठ।

संस्कारों से ही विद्या प्राप्त होती है।

कुम्हार आदि जातियो के लड़कों का संस्कार नही हो पाता, अतः उनकी बुद्धि मन्द रहती है।

७६२. **फड़ फारसी बेच तेल, देखो रे कुदरत का खेल।**

पढ़े फारसी बेचे तेल, देखो रे कुदरत (भाग्य) का खेल।

दुर्भाग्य के कारण पढ़े लिखे भी मारे-मारे फिरते हैं।

जब पढ़ा लिखा आदमी कोई छोटा कार्य करने लगे, तब विधि को विडम्बना की ओर संकेत करते हुए यह कहावत कही जाती है।

७६३. फडबा सूँ च्यार आँख्याँ हो जावं छै।

पढ़ने से चार आँखें हो जाती हैं।

शिक्षा अत्यन्त हितकारी है।

मनुष्य के दो चर्म-चक्षु तो है ही, साथ ही दो ज्ञान-चक्षु भी होते है। विद्या-प्राप्ति से वे ज्ञान-चक्षु खुल जाते है। उसी समय मनुष्य दो आँखों वाला न रहकर चार आँखो वाला बन जाता है।

७६४. फड्यो तो छ, पण गुण्यो कोई न।

पढ़ा तो है, पर गुना नही है।

अभ्यास के बिना पढ़ना व्यर्थ है।

बिना क्रिया के पुस्तकीय ज्ञान लाभकार नही है। जो सीखा है, उसका स्वय अनुभव न किया हो, तो उसकी सार्थकता सिद्ध नही होती।

७६५. फणिहारी की नेज सूँ, सहज कट पाखाण।

पनहारी की नेज (रस्सी) से, सहज कटे पाषाण।

अभ्यास से मूर्ख भी विद्यावान बन जाता है।

जिस प्रकार पानी भरने वाली स्त्री की रस्सी से पत्थर कटता चला जाता है, उसी प्रकार निरन्तर अभ्यास से जड़ता नष्ट हो जाती है।

"करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जातते, सिल पर होत निशान।"

उपर्युक्त दोहे में भी यही भाव स्पष्ट किया गया है।

७६६. फरंगो जे चरंगो, बँध्यो भूकाँ मरंगो।

फिरेगा सो चरेगा, बँधा भूखों मरेगा।

घर बैठे पेट नहीं भरता।

जो पशु घर पर बँधा रहता है, वह भूखों मरता है। जो इधर-उधर फिरता है, वह अपना साधन खोज लेता है। इसी प्रकार घर बैठने वाला को जीविका-निर्वाह का साधन प्राप्त नहीं हो सकता।

७६७. फर फाँद घर हुंग घर क चाँद ।

फिरे फाँदे और हुँगे घर के चाँदे (दीवार के सहारे) ।

घर के निकट गन्दगी फैलाना अच्छा नहीं है ।

जब कोई बच्चा गाँव भर में चक्कर लगाता हो, किन्तु घर आते ही मलमूत्र विसर्जन करे, उसको स्वास्थ्य के नियम सिखाने के लिए माता-पिता यह कहावत कहते हैं ।

७६८. फरचाँ ओड्चाँ तो गार की गणगोर ई छोखी लाग छ ।

पहनने ओढ़ने से तो गार की गनगोर ही चोखी (अच्छी) लगती है ।

वस्त्राभूषणों से कुरूप भी सुन्दर बन जाते हैं ।

जब किसी शृङ्गार किये हुए मनुष्य अथवा नारी की प्रशंसा की जाय, तब प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रशसा करने वाले व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करते है ।

७६९. फल्याँ का मनख झूँट बोल छा तो मर जाव छा, पण अबारकान को तो माथो बी न दूखे ।

पहले के मनुष्य झूठ बोलते थे तो मर जाते थे, पर अभी के मनुष्यों का तो सिर भी नही दुखता ।

झूठ बोलना इस युग की विशेषता है ।

अधिकांश व्यक्तियों को झूठ बोलते देखकर ग्लानि सहित वृद्ध पुरुष इस कहावत द्वारा सतयुग एवं कलियुग की तुलना किया करते है ।

७७०. फलो पेट पूजा, पाछे काम दूजा ।

पहले पेट पूजा, पीछे काम दूजा ।

सब काम छोड़कर भोजन कर लेना चाहिये ।

पेट भर जाने पर ही सब कार्यों में चित्त लग सकता है । अतः समय पर भोजन कर लेने से कार्य की क्षमता में अन्तर नहीं आ सकता ।

७७१. फलो लख, पाछे द, भूल पड़, कागद सूँ ल ।

पहले लिख, पीछे दे, भूल पड़े कागज से ले ।

रुपया उधार देने से पहिले दस्तावेज अवश्य लिखवाना चाहिए ।

महाजनो का यह वसूल है कि रुपया उधार देने से पूर्व सब बाते लिखवा लेते है । यदि कभी कोई व्यक्ति रुपया देने से मना कर दे, तो लिखावट के आधार पर कोर्ट मे दावा करके वसूल किया जा सकता है ।

७७२. फलो सुख नरोगी काया ।

पहला सुख निरोगी काया ।

शरीर का निरोग होना सबसे पहला सुख है ।

मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहे तो वह ससार के सभी कार्य कर सकता है । अतः स्वास्थ्य की प्रशसा मे यह कहावत कही जाती है ।

७७३. फागड़ी बेच'र घी न खाणो ।

पगडी बेचकर घी नही खाना ।

अच्छे भोजन के लिए प्रतिष्ठा भंग नहीं करना चाहिए ।

अपनी मान-मर्यादा की रक्षा करते हुए जैसा रूखा-सूखा मिल जाय, उसी पर सन्तोष करना मनुष्य का कर्त्तव्य है । इससे विपरीत चार्वाको का सिद्धान्त है ।

७७४. फाँचूँ आँगल्याँ घो में, अर माथो खड़ाई में ।

पाँचों अगुलियाँ घी मे और माथा (सिर) कडाही में ।

निरन्तर लाभ होना ।

जब किसी मनुष्य को अन्न-धन की निरन्तर प्राप्ति हो, उस समय उससे कहा जाता है कि भाई आजकल तो गहरे में हाथ है । इस वाक्य के साथ इस कहावत का प्रयोग भी किया जाता है ।

७७५. फाँचूँ आँगल्याँ स्यार की न होव ।

पाँचों अगुलियाँ एक सी नहीं होती ।

सब मनुष्य (अथवा वस्तुयें) बराबर नहीं होते ।

जब प्रासगिक रूप में एक मनुष्य अथवा वस्तु के साथ दूसरे मनुष्य अथवा वस्तु की तुलना की जाय, उस समय उनमे भेद की शङ्का उठाई

जाने पर यह कहावत कही जाती है।

७७६. पाछै सूं तो राजाजी मँई गाल्याँ खाडल छै।

पीछे से तो राजाजी में ही गालियाँ निकाल लेते हैं।

सामने भला बुरा कहने के लिए नैतिक बल की आवश्यकता है।

कोई किसी के पीठ पीछे बुराई करे तथा यह बात उस व्यक्ति को किसी प्रकार ज्ञात हो जाय, तो वह गम्भीर पुरुष इस कहावत का प्रयोग करके उस बात को उड़ा देते है। इससे क्रोध का मनोविकार बढ़ने नही पाता।

७७७. फाट्या दूध मँ जावँण न लाग।

फटे दूध मे जामन नही लगता।

टूटे हुए मन आपस में जुड़ नहीं सकते।

जिस प्रकार फटे हुए दूध में जामन नहीं लग सकता, उसी प्रकार दो हृदयों से नष्ट हुए प्रेम का पुनः उत्पन्न हो जाना असम्भव है।

७७८. फाट्या न सींणों अर रूस्या न मनाणों।

फटे को सीना और रूठे को मनाना।

फटे वस्त्रों को सीना तथा रूठे व्यक्ति को मनाना उचित है।

फटे हुए वस्त्र को सीने से उसकी आयु बढ जायेगी तथा रूठे हुए व्यक्ति को मना लेने से उसके हृदय में मनोविकारों की उत्पत्ति नही होने पाती।

७७९. फाड़्याँ की च्यार, पछाड़्याँ को आठ।

फाड़ने पर चार, पछाडने पर आठ।

स्त्रियों को घर के कार्य में आलस्य नहीं करना चाहिए।

जो स्त्री मोटी ताजा होते हुए भी काम करने में बहाने बनाये, दूसरी स्त्रियाँ इस कहावत द्वारा उसकी आलोचना करती हैं। इसका अर्थ है कि यदि इस औरत को फाड़ा जाय तो हम सरीखी चार बने तथा पछाडा जाय तो आठ बने।

७८०. फाणी पी'र ज्यात काँईं बूझणी ?

पानी पीकर जाति क्या पूछनी ?

काम करने से पूर्व ही उसका विचार कर लेना चाहिये।

किसी काम को कर चुकने के बाद यदि कोई उस पर विचार करे तो उसे उपदेश के रूप में यह कहावत सुनाई जाती है।

"पानी पी घर पूछनो नाही भलो विचार"—इस सूत्र में भी उक्त प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति मिलती है।

७८१. फाणी पीजे छाण'र, बेटी दीजे जाण।

पानी पीना छानकर, बेटी देना जानकर।

पानी छानकर पीना चाहिये तथा अपनी पुत्री का विवाह वर को भली प्रकार देखकर करना चाहिए।

जिस प्रकार बिना छना हुआ पानी पीने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते है, उसी प्रकार वर की बाह्य एवं आन्तरिक परीक्षा के बिना पुत्री देने से अनेक सकट सामने आते हैं।

७८२. फाणी फली पाल़ बाँधबो छाइजे।

पानी पहले पाल बाँधना चाहिए।

विघ्न सामने आने से पूर्व ही प्रयत्न कर लेना चाहिए।

अनुपात का सम्यक् ज्ञान रखने वाला व्यक्ति पहले ही सब प्रकार का प्रबन्ध कर लेता है, ताकि उसे समय पर हानि न उठानी पड़े।

७८३. फावड़ी को नाँव गुलसप्पा।

फावड़ी का नाम गुलसफा।

केवल आडम्बर होना।

जब कभी किसी मनुष्य को आशा से कम मिले तथा अधिक पाने की आशा में उसने मन लगाकर काम किया हो, तो वह इस कहावत द्वारा दाता की आलोचना करता है।

७८४. फावणां घर बसै, न लावणां टकां टलै।

गाहुनो से घर बसे, न लावणों से टकें (समय) टलें (निकलें)।
मेहमानों से घर नहीं बसता तथा थोड़ी सी मिठाई से एक समय का भोजन भी नहीं हो पाता।

अतिथि कुछ समय के लिए ही होते हैं। अतः उनसे घर की संख्या नही बढ़ सकती। इसी प्रकार जो विशेष अवसरों पर मिठाई बाँटी जाती है, उससे सबेरे तथा शाम का भोजन नहीं हो सकता।

७८५. **फावणाँ सूँ काँईं चोर मराबो ?**
पाहुने से क्या चोर मरवाना ?
किसी कठिन काम में अतिथि को नहीं फँसाना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति स्वयं काम न करके दूसरे से ही काम करवाये तथा वह स्वय बैठा-बैठा देखता रहे, उस समय उसके इस कार्य को देखकर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

७८६. **फीर कै भरोस घाघरो क्यूँ बाल़ ?**
पीहर के भरोसे घाघरा (लहँगा) क्यों जलाये ?
भविष्य की आशा में विद्यमान वस्तु को नष्ट नहीं करना चाहिए।

पीहर से नया मिलने के विश्वास पर अपने लँहगे को जला देना अच्छा नही है।

"गागर कैसे फोड़िए, उनयो देखि पयोद"—में भी उक्त कहावत के भावों की समानता अवलोकनीय है।

७८७. **फूँक फूँक'र पाँव धरबो छाइजे।**
फूँक फूँक कर पैर रखना चाहिये।
कार्य को विचारपूर्वक करना चाहिए।

जो मनुष्य फूँक-फूँक कर पैर रखता है, उसे ठोकर लग जाने का डर नही रहता। इसी प्रकार अच्छी तरह विचार करके जो कार्य किया जाता है, उससे कभी अनिष्ट नही हो सकता।

७८८. **फूटग्या करम फकीर का, भरी चलम ढुल जाय।**
फूटे करम फकीर के, भरी चिलम गिर जाय।

भाग्य विपरीत होने पर बना बनाया कार्य भी बिगड़ जाता है ।

जब भाग्य साथ नही देता, उस समय सभी अनुकूल परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल हो जाती है ।

७८९. फूफाजी रूस तो भ्वाजीन राख ।

फूफाजी रूठे तो बुआजी को रक्खे ।

कोई नाराज होकर किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ।

आत्माभिमानी व्यक्ति के नैतिक कार्य से किसी के नाराज होने की आशङ्का हो, तब वह दृढतापूर्वक इस कहावत द्वारा अपनी सत्यनिष्ठा प्रकट करता है ।

७९०. फूलगो जे कमलावगो ।

फूलेगा सो कुम्हलावेगा (मुरझायेगा) ।

जो पैदा हुआ है, वह मृत्यु को अवश्य प्राप्त होगा ।

जिसने इस संसार में जन्म ग्रहण किया है, उसे अनिवार्यतः काल का ग्रास बनना पड़ेगा । मृत्यु को अवश्यंभावी बतलाने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

७९१. फूल न तो फाँखड़ो ।

फूल नही तो पखुडी ।

बहुत नहीं तो थोड़ा ही सही ।

अधिक सेवा न बन सके तो थोड़े रूप में ही सही, करनी अवश्य चाहिए ।

७९२. फेराँ को दोस बी मत लागज्यो ।

फेरों का दोष भी मत लगना ।

सप्तपदी के पश्चात् विधवा हो जाना ।

जिसने विवाह होने के पश्चात् अपने पति का सुख भी न देखा हो, ऐसी विधवा के प्रति सबकी सहानुभूति होती है । उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है । इसमें ईश्वर से प्रार्थना है कि हे भगवान ! इसको फेरो का भी दोष न लगे ।

७९३ **फो'ठो पड़ छ ऊबो धूल ले'रई उठ छ ।**

पोअटा (गोबर) गिरता है, वह भी धूल लेकर ही उठता है ।

पुरुषार्थ करने पर अवश्य लाभ होता है ।

अनुत्साही व्यक्तियो को कार्य करने की प्रेरणा देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है ।

ब

७९४. **बकरा की माई के थावर टालगी ?**

बकरे की मा कितने थावर (शनिवार) टालेगी ?

वादे को अधिक दिनों तक नहीं टाला जा सकता ।

बकरे को बलिदान मे मरना ही पड़ेगा, अतः बकरे की मा कब तक खैर मनावेगी । जो व्यक्ति कर्ज चुकाने मे टाल लगाता है, उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

७९५. **बकुण्ठ साँकड़ो अर मोड्या घणा ।**

बैकुण्ठ सकरा और मुण्डे (साधु) घने (बहुत) ।

थोड़े स्थान में बहुतों का समावेश होना अत्यधिक कठिन है ।

स्वर्ग संकुचित है तथा साधु बहुत है । जब थोड़े स्थानों के लिए अनेक उम्मीदवार हो, तब इस कहावत द्वारा उस विषम-परिस्थिति का द्योतन किया जाता है ।

७९६. **बगड़गा काऊका, सुधरगा नाऊका ।**

बिगड़ेगा किसी का, (तथा) सुधरेगा नाई का ।

दूसरों की हानि से अपना सुधार करना अवांछनीय है ।

नापित का लड़का जो अभी हजामत बनाना सीखता है, उसे किसी की हजामत बनाने के लिए नियुक्त करने पर बनवाने वाले का सिर खराब हो जाता है तथा नापित-कुमार का अभ्यास बढ़ जाता है । इसी प्रकार किसी अपक्व हुनर वाले के कार्य को देखकर उससे यह कहावत कही जाती है ।

७९७. **बगड़्या ब्याव मँ नाँण फर ।**

बिगड़े विवाह मे नाइन फिरे ।

किसी कार्य के बिगड़ जाने पर कुछ पाने की आशा रखने वाले छोटे व्यक्ति ही उसके सुधार का प्रयत्न करते है ।

विवाह से नाइन को लाभ होता है । जब विवाह बिगड़ जाता है तो उसे पूछने वाला कोई नही रहता । अत. दोनो पक्षों में समझौते के प्रयत्न करने के लिए उसे ही अधिक फिरना पडता है ।

७९८. **बगड़ी को काँईं बगड़गो ?**

बिगडी का क्या बिगड़ेगा ?

बिगड़ी का सुधार चाहना व्यर्थ है ।

कोई व्यक्ति किसी बिगडी वस्तु या बात को सुधारने का परामर्श दे तब उदासीन व्यक्ति यह कहावत कहकर उसके सुधार की आशा को निर्मूल बतलाता है ।

७९९. **बगड़ी बगत मं कोई आडो न आव ।**

बिगडे वक्त मे कोई काम नही आता ।

भाग्य के विपरीत होने पर अपना भी पराया हो जाता है ।

विपत्ति के समय कोई किसी की मदद नही करता । अच्छे समय में तो हजारो आदमी हाँजी-हाँजी करते है, किन्तु समय पर कोई बात तक नही पूछता ।

८००. **बगत खड जाव छ अर बात र जाव छ ।**

वक्त निकल जाता है और बात रह जाती है ।

समय पर दूसरे की सहायता अवश्य करनी चाहिए ।

किसी मनुष्य की आपत्ति के समय सहायता करने से उसे सदैव याद रहती है तथा वह दूसरों से भी सहायको की प्रशसा तथा विरोधियों की निन्दा करता रहता है ।

८०१. **बगत पड़्याँ गद्धा ईं बो बाप बणाणों पड़ छ ।**

वक्त पड़ने पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है ।

समय पड़ने पर मूर्खों की भी खुशामद करनी पड़ती है ।

अपना काम निकालने के लिये मूर्ख एव घृणित व्यक्तियों का भी आदर-सत्कार किया जाता है ।

८०२. **बगत-बगत की रागण्याँ छ ।**

वक्त-वक्त की रागनियाँ है ।

मनुष्यों को समय के अनुकूल बात करना चाहिए ।

जिस प्रकार अलग-अलग समय पर भिन्न-भिन्न रागनियाँ अच्छी लगती है, उसी प्रकार समय के अनुकूल बातचीत सुख की वृद्धि करती है ।

८०३. **बगलो मारचाँ फाखाँ को ढेर ।**

बगुला मारने पर पखों का ढेर (मिलता है) ।

आडम्बर वाले मनुष्य से धन की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

जिस प्रकार बगुले को मारने पर केवल पख ही पंख प्राप्त होते है, इसी प्रकार आडम्बर से युक्त धनी दिखाई देने वाले व्यक्ति से धन की आशा करना व्यर्थ है ।

८०४. **बजार की छींक अर राँड बर को रोबो ।**

बाजार की छीक और (रॉडबेर) विधवा का रोना ।

दो अपशकुनों का एक साथ आना ।

शकुनो पर विश्वास करने वाले व्यक्ति अपशकुनों द्वारा हानि को निश्चित् रूप से स्वीकार करते है । किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाने वाले व्यक्ति को बाजार को छीक तथा विधवा का रोना सुनाई पड़ जाय, तो उसकी कार्यसिद्धि कदापि नही हो सकती ।

८०५. **बँटी ओगद अर मुँडचा जोगी को ज्यात को तोल न पड़ ।**

बटी हुई औषधि और मूँडे (हुए) योगी की जाति की पहचान नहीं होती ।

पिसी हुई औषधि तथा मुण्डित सिरवाले योगी का पता नहीं चलता ।

पिसी हुई औषधि मे कौन-कौन सी वस्तुएँ सम्मिलित है, यह नही जाना जा सकता । इसी प्रकार मूँडे हुए साधु का भी पता नही चलता कि वह कौन से पंथ का है अथवा कितना पहुँचा हुआ है ।

८०६. **बैठ्यां सूताईं घर में घोड़ो घालबो छोखो न ।**

बैठे-सोते ही घर मे घोडा घुसा डालना चोखा नही ।

आराम में रहते हुए स्वयं विपत्ति खड़ी कर लेना श्रेयस्कर नहीं है ।

जब कोई व्यक्ति स्वयं की प्रेरणा से किसी कार्य को करने का उत्तरदायित्व लेले तथा जब उसमे कठिनाइयाँ दृष्टिगोचर होने लगें, उस समय वह इस कहावत द्वारा अपने कार्य की आलोचना करता है ।

८०७. **बैठ्यां सूँ बेगार भली ।**

बैठे से बेगार भली ।

नहीं करने से कुछ करना अच्छा है ।

दिन भर निकम्मे बैठे रहने से तो कोई भी काम करते रहना अच्छा है, क्योकि आलस्य मे दिन बिताना श्रेयस्कर नही ।

८०८. **बैठी तो राजा की राणी बी न र ।**

बैठी तो राजा की रानी भी नही रहती ।

गृहणियों का आलस्य निंदनीय है ।

राजा की रानी भी कोई न कोई कार्य अवश्य करती रहती है । अत जब श्रेष्ठ नारियाँ ही गृह कार्य का आदर्श सामने रखती है, तो सामान्य नारियो का आलस्य गर्हणीय हो जाता है ।

८०९. **बैठ्या ठाकर कॉईं कर ? घर खोद'र कूँलोई चुण ।**

बैठा ठाकुर क्या करे ? घर खोदकर कूँला (दीवार) ही चुने ।

राजपूत चुप नहीं बैठ सकता ।

बैठा हुआ राजपूत घर खोदकर दीवारें ही चुनने लगता है । राजपूत स्वभावत. परिश्रम के कार्यो को ही अपनाते है ।

८१०. **बैठ्यो बाण्यो काईं कर ? अठी को ढूमलो अठी उठा'र धर ।**

बैठा बनिया क्या करे ? इधर का ढूमला इधर उठाकर धरे ।

वैश्य भी निठल्ला बैठना अच्छा नहीं समझता ।

वैश्य जो निकम्मा बैठा हो, वह स्वभाववश दूकान के सामानो या वस्तुओ को इधर-उधर जमाया करता है ।

८११. **बडा आदमी क तो भूत कमाव छ ।**

बड़े आदमी के तो भूत कमाते हैं ।

धनी का धन बिना परिश्रम ही बढ़ता है ।

धनी व्यक्ति का व्यापारादि से कमाया हुआ धन इतना अधिक होता है कि उतने परिमाण में धन कमाना किसी मनुष्य की शक्ति से बाहर होता है । अतः उसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

८१२. **बड़ा घराँ बेटी दी, मलबा का साँसा ।**

बड़े घरों में बेटी दी, मिलने की चिन्ता ।

धनी व्यक्तियों को अपनी कन्या नहीं देनी चाहिए ।

जब कई तरह के अवरोधों के कारण पिता भी पुत्री के सुसराल में पुत्री से नही मिल सकता, तब ऐसे धनियों के यहाँ पुत्री को ब्याहने से क्या लाभ ?

८१३. **बडा बडाई न करे, बडा न बोले बोल ।**
हीरो मुँख सूँ न खे, लाखाँ म्हाको मोल ।

बड़े बड़ाई नही करे, बड़े न बोले बोल ।
हीरा मुख से नही कहे, लाख हमारा मोल ।

बड़ा वही है, जो आत्मश्लाघा न करे ।

जो मनुष्य गर्व के कारण अपनी प्रशंसा के पुल बाँध देता हो तथा दूसरे को तुच्छ गिनता हो, तो वह बड़ा नही कहला सकता । ऐसे मनुष्य को शान्त करने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

८१४. **बडी बू बडा भाग ।**

बड़ी बहू बड़े भाग्य ।

बड़ी बहू भाग्यशाली को ही मिलती है ।

जब किसी का विवाह किसी बड़ी लड़की से हो जाय, तो उसके सतोष के लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

८१५. **बणताँ तो देर लाग, पण बगड़ताँ देर न लाग ।**

बनते तो देर लगती है, पर बिगड़ते देर नही लगती।

निर्माण की अपेक्षा विनाश सरल है।

निर्माण कार्य में अनेकों कठिनाइयाँ आती है, इसलिए वह शीघ्र नहीं हो सकता। किन्तु विनाश का कार्य अल्प समय में ही पूर्ण हो जाता है।

८१६. **बणिया मित्र न बेसाँ सती, कागा हंस न गधा जती।**

बनिया मित्र न वेश्या सती, कौआ हस न गधा यति।

बनिया, वेश्या, कौआ तथा गधा क्रमशः मित्र, सती, हँस और यति नहीं बन सकते।

बनिये का प्रकृति-जन्य दोष उसको मित्र बनने से रोकता है। वेश्या अपने कार्य के कारण सती नही बन सकती। अपने स्वभाव के कारण कौआ हंस नही हो सकता तथा मूर्ख साधु नही बन सकता।

८१७. **बती गंगा मँ हात पखालबो सब जाणै छ।**

बहती गंगा में हाथ पखालना सब जानते है।

दूसरों के साथ अपनी भी स्वार्थसिद्धि कर लेना।

जब सभी व्यक्ति किसी व्यक्ति अथवा वस्तु से लाभ उठा रहे हों, उस समय दूसरे देखने वाले निष्पक्ष व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करते है।

८१८. **बँधग्या जेई मोती छ।**

बँध गये वे ही मोती हैं।

जो कार्य हो गया वही श्रेष्ठ है।

जब कभी किसी का अनमेल विवाह हो जाय तथा उभय पक्ष के लोग पश्चाताप करने लगे, उस समय उनकी ग्लानि का शमन इस कहावत द्वारा किया जाता है।

८१९. **बधाता का लख न टलै।**

विधाता के लेख नही टलते।

भाग्य में लिखा हुआ तो होकर ही रहता है।

जब कभी अनहोनी बातें सामने आये, उस समय वृद्ध एव अनुभवो पुरुष होनहार के विषय में यह कहावत कहते हैं।

८२०. **बँधी ब्वारी लाख की, खुल्याँ पाछ खाक की ।**

बँधी हुई बुहारी लाख की, खुले पीछे खाक की ।

प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए भेद नहीं खोलना चाहिए ।

अपने रहस्य का उद्घाटन कर देने पर प्रतिष्ठा बिगड़ने का अवसर आ जाता है, अतः सदुपदेश के रूप में अलग होते हुए भाइयों के लिए इसका प्रयोग होता है ।

८२१. **बन में मोर नाच्या खुँण न देख्या ?**

बन में मोर नाचे, किसने देखा ?

अच्छे कार्य का लाभ सबको मिलना चाहिए ।

जब कोई व्यक्ति भोज इत्यादि दे और कुछ ही व्यक्तियों को संतुष्ट करके उसका विज्ञापन करने लगे, तब लोग इस कहावत द्वारा अपने विचार प्रकट करते है ।

८२२. **बना उसील नोकरी, बना ढाल को ज्वान ।**
ये थींनूँ फीका लगै, बना सपारी पान ।

बिना वसीले नौकरी, बिना ढाल का जवान ।
ये तीनों फीके लगे, बिना सुपारी पान ।

वसीले से नौकरी, ढाल से सिपाही तथा सुपारी से पान शोभा देते हैं ।

बिना सिलसिले के नौकरी नही मिल सकती । यदि मिल भी जाय तो वह अस्थाई होगी । बिना ढाल का सिपाही अपनी रक्षा भली प्रकार नहीं कर सकता तथा सुपारी के बिना पान स्वाद में अच्छा नही होता ।

८२३. **बना गरज लरज नहीं, बाणच्यो, भैंस, अहोर ।**

बिना गरज लरजे नही, बनिया, भैंस, अहीर ।

वैश्य अपने स्वार्थ से ही झुकता है ।

वैश्य, भैंस तथा अहीर अपने स्वार्थ के लिए ही दूसरों के सामने झुकते है अन्यथा वैश्य धन के कारण, भैंस पशु बल के कारण तथा अहोर मूर्खता के कारण अभिमान से आवृत्त रहता है ।

८२४. **बना तलक को बामण सूदर बरचाबर ।**

बिना तिलक का ब्राह्मण शूद्र बराबर ।

ब्राह्मण तिलक धारण से पहचाना जाता है ।

ब्राह्मण बिना तिलक के शोभा नही देता, उसका लोग आदर नहीं करते । बिना तिलक उसमें तथा शूद्र मे कोई अन्तर नही रह जाता ।

८२५. **बना पींदा को लोठचो ल्हाव जठी ई गुड़क जाव छ ।**

बिना पेदे का का लोटा चाहे जिधर ही लुडक जाता है ।

वचनों पर दृढ़ न रहना ।

जो अपनी एक बात पर स्थिर न रह सके, एक से कुछ कहे और दूसरे से कुछ । इस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक वह लोटा बतलाया गया है कि जो बैठक न होने के कारण किसी भी ओर ढुलक जाता है ।

८२६. **बना बच्यारां जे कर, उ पाछे पछतावे ।**

बिना विचारे जो करे, वह पीछे पछताये ।

विचारपूर्वक काम करना चाहिए ।

उपदेश के रूप मे यह कहावत प्रयोग मे आती है । जो मनुष्य बिना विचारे काम करता है, उसे अन्त मे पश्चाताप करना पडता है । यह हिन्दी के एक दोहे का पूर्वार्ध जान पडता है । पूरा दोहा इस प्रकार है—

"बिना विचारे जो करे, सो पीछे पछताय ।
काम बिगाड़े आपनो, जग मे होत हँसाय ।"

८२७. **बना मान को फावणो, बाप क मूँड हंगावणो ।**

बिना मान का पाहुना, बाप के मुँह हँगावना ।

बिना बुलाये जाने से अतिथि का अपमान होता है ।

कोई व्यक्ति किसी के यहाँ बिना बुलाये ही पहुँच जाय तथा उसका अतिथि बनने का प्रयत्न करे, तो आदर के स्थान पर उसका अनादर ही होता है ।

८२८. **बना रोयां तो माई बी दूध न प्यावे ।**

बिना रोये तो मा भी दूध नही पिलाती ।

अपने कार्य के लिए बार-बार याद दिलाना ही पड़ता है ।

यदि बच्चा रोये नही तो माता का ध्यान दूध पिलाने पर नहीं जा सकता । इसी प्रकार दूसरे को अपने सुख-दुःखों के बताये बिना कार्य-सिद्धि नही हो सकती ।

८२९. **बपत मँ आडो आव ऊई सगो छ ।**

विपत्ति में काम आये वही सगा (सम्बन्धी) है ।

समय पर सहायता करने वाले को ही रिश्तेदार समझना चाहिए ।

अनेक व्यक्ति अपने सम्बन्धियों को समय पडने पर मदद नहीं करते । यह देखकर लोग ग्लानि एवं विषाद के साथ इस कहावत का प्रयोग करते है ।

८३०. **बम को तो दवाई ई कोई न ।**

बहम की तो दवाई ही नही है ।

संदेह करने वाले को समझाना अति कठिन है ।

किसी मनुष्य को समझाने पर भी उसका सदेह दूर न हो सके, तब यह कहावत कह दी जाती है ।

८३१. **बैरी के गल लाग'र न रोबो छाइजे ।**

बैरी के गले लगकर नही रोना चाहिए ।

अपने शत्रु को अपनी सहायता के लिए बुलाना अच्छा नहीं है ।

आपस की फूट में परिवार पर रोप करके अपने शत्रु को अपना अतिथि बना लेना श्रेयस्कर नही होता ।

८३२. **बलगो तो मुरदोई, खाँध्या थोड़ोई बलगा ।**

जलेगा तो मुर्दा ही, कंधा लगाने वाले थोड़ी ही जलेंगे ।

हानि तो व्यक्ति विशेष की ही होती है, साथ देने वालों की नहीं ।

पक्षपाती लोग आर्थिक या शारीरिक हानि नही उठाते । उस व्यक्ति को ही सब कुछ भोगना पड़ता है, जिसने कोई अनैतिक कार्य कर दिया है ।

८३३. **बैल क अगाड़ो अर घोड़ा क पछ्याड़ो ।**

बैल के आगे और घोड़े के पीछे ।

बैल के आगे तथा घोड़े के पीछे नहीं जाना चाहिए ।

बैल के सींग होने के कारण तथा घोड़े के टाप मारने के कारण उनके सामने तथा पीछे नहीं जाना चाहिए ।

८३४. **बलती लाई मं कुण कूद ?**

जलती आग में कौन कूदे ?

जान को जोखिम में कोई भी नहीं डालता ।

किसी पर अत्यधिक मुसीबत आये या झगड़ा बढ़ जाये, तब किसी की मदद के लिए लोग इसलिए तैयार नहीं होते कि उनको भी अपने जीवन की चिन्ता रहती है ।

८३५. **बल न बगो तो बूढो बी न होवगो कांई ?**

बैल नही बहेगा तो बूढ़ा भी न होगा क्या ?

श्रम न करने वाले को भी बुढ़ापा आता ही है ।

जिसे कोई काम नही करना पड़ता उसका उदाहरण देने पर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

८३६. **बल्यां मरतां बोपच्या पोव छ ।**

जले मरते बोपचे (मोटी तथा जली हुई रोटी) पोती (बनाती) है ।

क्रोध के कारण काम बिगाड़ना अच्छा नहीं है ।

किसी कारण क्रोधित होने पर क्रोध किसी दूसरी वस्तु पर निकाला जाय, तब यह कहावत कही जाती है ।

८३७. **बल्ली क सराप्यां छींको न टूट ।**

बिल्ली के शाप से छींका नही टूटता ।

बुरा चाहने वालों की इच्छा से ही किसी का बुरा नहीं हो जाता ।

दुष्टों की इच्छा अच्छे व्यक्तियों के अनिष्ट की ओर जाती है; किन्तु उनकी इच्छा से ही किसी का अनिष्ट होना सम्भव नहीं है ।

८३८. **बल्ली को चाल जाणों'र कुत्ता की चाल आणों।**

बिल्ली की चाल जाना और कुत्ते की चाल आना।

कार्य में बिल्ली और कुत्ते की तरह चतुर होना चाहिए।

बिल्ली जब अपना कार्य प्रारम्भ करती है तब चुपचाप तथा सावधानी पूर्वक आगे बढ़ती है। कुत्ता जब काम करके लौटता है, तब शीघ्र ही लौट आता है।

८३९. **बल्ली को गू लींपबा को न थापबा को।**

बिल्ली का गू (विष्ठा) लीपने का न पाथने का।

निकम्मा व्यक्ति किसी काम का नहीं होता।

जिस प्रकार बिल्ली की टट्टी न लीपने के काम आ सकती है और न पाथने के ही, इसी प्रकार निकम्मा व्यक्ति भी किसी काम में नहीं आ सकता।

८४०. **बल्ली को मूंत अबार ई लावो।**

बिल्ली का मूत्र अभी ही लाओ।

कार्य में शीघ्रता नहीं हो सकती।

जब कोई व्यक्ति किसी को काम में अतिशीघ्रता करने के लिए कहे, उस समय उसकी इस अविचारपूर्वक कही गई बात का उत्तर इस कहावत द्वारा दिया जाता है।

८४१. **बाँक अर बांदो तो पलां का जोर पं ई आंसर छ।**

बाँक (ढाक की जड़) और बाँदा तो दूसरे के जोर पर ही अकड़ते हैं।

गुलाम दूसरों पर ही गर्व करते हैं।

ढाक की जड़ की बरसात में रस्सी बनाई जाती है। वह पानी मे भीगने से अधिक चलती है और सूखने पर शीघ्र टूट जाती है। उसी प्रकार गुलाम भी अपने मालिक के जोर पर अकड़ जाता है।

८४२. **बाघ स्वाल्यो'र बीछू खाटयो।**

बाघ सियारिन और बिच्छू काटा।

साधन पाकर दुर्गुणी अधिक चंचल हो उठते हैं ।

सियारिन पहले ही अत्यधिक चचल तथा चालाक होती है, फिर उसे बिच्छू खा जाय, तो उसकी चंचलता का क्या कहना ?

८४३. **बांझ न ब्यावर की काँईं पीड़ ?**

बाँझ (वन्ध्या) को ब्यावर (प्रसूति) की क्या पीड़ा ?

जिस पर बीतती है, वही उसके कष्ट का अनुभव कर सकता है ।

जिसने कभी कोई कष्ट नही सहा, वह किसी पीड़ा को उसी प्रकार नही जान सकता, जिस प्रकार बाँझ स्त्री प्रसव की पीड़ा को नही जान सकती ।

८४४. **बाटी खावं दूरं का, भूखां मरं हजूर का ।**

बाटी खावे दूर के, भूखो मरे हूजूर के ।

दूसरे व्यक्तियों से पहले अपने व्यक्तियों की सहायता करना चाहिए ।

जब किसी व्यक्ति के द्वारा अपनो को छोडकर दूसरे व्यक्तियों को लाभ पहुँचाया जाय, उस समय इस कार्य के प्रति क्षोभ प्रकट करते हुए यह कहावत कही जाती है ।

८४५. **बाटी बोतो'र बूच्यो भाग्यो ।**

बाटी बीती और बूच्या (कुत्ता) भागा ।

स्वामी के निर्धन हो जाने पर स्वार्थी सेवक भाग जाते हैं ।

अपनी स्वार्थ-पूर्ति का साधन लुप्त होते ही स्वार्थी व्यक्ति स्वामी को एकदम छोड देते है । जिसके आश्रय मे इतने दिनों तक रहे, उसकी रच भी परवाह नही करते ।

८४६. **बाड़ई खेत न खाबा लाग जाव, जद काँईं खो जाव ?**

बाड ही खेत को खाने लग जाय, तब क्या कहा जाय ?

रक्षक ही जब भक्षक बन जाय तो अन्य से आशा करना व्यर्थ है ।

खेत की रक्षा के लिए लगाई गई बाड़ स्वय शस्य का विनाश करने लगे, तब अन्य विनाशकारी पशुओ से शस्य की रक्षा कैसे हो सकती है ?

८४७. **बाड़ी बारा, हाट अठारा, घर बैठ्याँ चोईस ।**

बाड़ी मे बारह, हाट में अठारह, घर बैठे चौबीस ।

ग्राहक की आवश्यकता पर सामान मँहगा मिलता है ।

किसी वस्तु को जहाँ वह पैदा होती है, लेने जायें तो उसका मालिक एक पैसे या एक आने की बारह देगा । बाजार में वह अठारह बिकेगी तथा घर बैठे चौबीस आजायेगी ।

८४८. **बाण्याँ को कूल्यो छ तो घीसूँ ई ऊँगो ।**

बनिये की कूली है तो घी से ही ओगो (चिकनी करो) ।

धनी के धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए ।

बनिये के धनी होने के कारण उसकी कूली में तेल के स्थान पर घी का प्रयोग करना आवश्यक नही । धनी हो या निर्धन जो वस्तु जिस काम में आती हो, उसको उसी काम मे लेना चाहिये ।

८४९. **बाण्याँ को पड़ोसी, नरक कुंड मँ जाव ।**

बनिये का पड़ौसी, नरक कुण्ड में जावे ।

बनिये के पाप का फल उसके पड़ोसियों को भी भोगना पड़ता है ।

बनिया का काम झूठ बोलना है । अतः पड़ौसी भी उसके संसर्ग से झूठ बोलना सीख जाते है ।

८५०. **बाण्याँ को बेटो धूल मँ लोट, तो काँई काँई गुण सूँ ।**

बनिये का बेटा धूल में लोटे, तो किसी न किसी गुण से ।

बनिये का प्रत्येक कार्य स्वार्थपूर्ण होता है ।

बनिया व्यापार करने में सिद्धहस्त होता है । वह नीचा कार्य भी करता है, तब भी उसके पीछे कोई न कोई कारण छिपा रहता है ।

८५१. **बाण्याँ थारो बाण, फाणी पीय छाण, लोई अणछाणचो पिय ।**

बनिये तेरी बान, पानी पीये छान, लोहू बिना छना पिये ।

बनिये दूसरे का खून चूसने वाले होते हैं ।

कोई व्यक्ति बनिये को सम्बोधित करके कहता है कि हे वैश्य ! मैंने

तेरी आदत पहचान ली है। तू पानी तो छानकर पीता है, किन्तु रक्त तो छाने बिना ही पी जाता है।

८५२. **बाणचो'र बल पछाण'र मार छ।**

बनिया और बैल पहचानकर मारते है।

बनिया परिचित व्यक्ति से अधिक दाम लेता है।

एक ही बनिये के यहाँ से जो वस्तुएँ खरीदता है तथा उसी पर विश्वास कर लेता है, उससे बनिया अधिक दाम लेता है। बैल भी अपने परिचित मनुष्य की पीठ से सिर खुजलाना चाहता है।

८५३. **बाणचो ठग बार-बार, राम ठग एक बार।**

बनिया ठगे बार-बार राम ठगे एक बार।

धोखा देकर संचित किया हुआ पैसा एक बार में ही खर्च हो जाता है।

लोगों को धोखा देकर अर्जित धन समय आने पर एक साथ ही नष्ट हो जाता है।

८५४. **बाणचो पड़्यो स्वायो, तेली पड़्यो क्वायो।**

बनिया पड़ा सवाया, तेली पड़ा कवाया (पूरा)।

बनिये की वस्तु भूमि पर गिर जाये तो सवाई हो जाती है तथा तेली की सारी ही बेकार चली जाती है।

बनिये का किराना जब जमीन पर बिखर जाता है, तब उसके साथ मिट्टी, कंकर आदि मिलाकर उसे सवागुना कर देते है अथवा दिनो तक भडार मे पड़े रहने पर भी सवाये दामो मे बिकता है। इसके विपरीत तेली का तेल नीचे गिर जाये, तो उसके हाथ कुछ भी नही आता तथा वह बहुत दिनो तक पडा रहे, तो उसके दाम मारे जाते है।

८५५. **बाणचो मोल मं बी मार अर तोल मं बी मार।**

बनिया मोल मे भी मारे, और तौल मे भी मारे।

बनिये मोल और तौल दोनों मे ही लूटते हैं।

बनिये भाव में पैसे अधिक लेते है तथा कम तौलकर देते है। यह कहावत बनियो की सामान्य प्रवृत्ति की परिचायक है।

८५६. **बात चाल बारा कोस, फाँगो चाल अठारा कोस ।**

बात चले बारह कोस, फाँगा चले अठारह कोस ।

बात से गल्प अधिक रोचक होती है ।

कथा या कहानी का आधार ऐतिहासिक भी हो सकता है, किन्तु गप्प तो कोरी कल्पना पर ही आधारित होती है । इस कहावत में 'गल्प' के लिए 'फाँगा' शब्द द्रष्टव्य है ।

८५७. **बात मँ हूँकारो अर फौज मँ नँगारो ।**

बात में हूँकारा (समर्थन) और फौज मे नगाड़ा ।

फौज में नगाड़े की भांति बात कहते समय हुँकृति द्वारा समर्थन अत्यावश्यक है ।

बाते कहते समय उनके समर्थन-सूचक शब्द तथा युद्ध मे नगाड़ों की तुमुल-ध्वनि से क्रमशः कथा कहने वालों और लड़ने वालों मे उत्साह की वृद्धि होती है ।

८५८. **बात सरीखो झूटो न, खाँड सरीखो मीठो न ।**

बात सरीखी झूठी नही, खाँड (शक्कर) सरीखी मीठी नही ।

झूठी कहानी शक्कर जैसी मीठी होती है ।

बात के समान संसार मे झूठा कुछ भी नही है तथा शक्कर के समान मीठा कुछ भी नही है। कहावत नं० ८५६, ८५७ व ८५८ को कहानी सुनानेवाला कहानी की पूर्वपीठिका के रूप मे कहानी कहने से पहले सुनाता है ।

८५९. **बात सूँ गेलो अर बगत कट जावं छं ।**

बात से राह और वक्त कट जाता है ।

कहानी से राह की थकान तथा समय की दीर्घता ज्ञात नहीं हो पाती ।

बातों में मन लगा रहता है । अतः लम्बा रास्ता भी कहानी कहते हुए पार किया जा सकता है । निकम्मे बैठे रहने से जो समय की दीर्घ सूत्रता दिखाई देती है, वह भी जाती रहती है ।

८६०. **बाताँ सूँ काँईं पेट भर छं ।**

बातों से क्या पेट भरता है ?

बातों से कभी तृप्ति नहीं होती ।

इस कहावत के दो अर्थ होते है । पहला तो यह कि बातों से उदरपूर्ति नही हो सकती । अतः केवल बातों में अपना समय व्यतीत न करना चाहिये । दूसरा यह है कि बाते मनोरजन का साधन है, अतः सुनते-सुनते मनुष्य अघाता नही है ।

८६१. **बादल़ पेल़ा, म्हेव सेल़ा, बादल़ राता, म्हेव ताता, बादल़ काल़ा, म्हेव मतवाल़ा ।**

बादल पीले, मेह सेला (शिथिल), बादल राते (लाल), मेह ताता, बादल काले, मेह मतवाला ।

पीले रंग के बादल मेह नहीं बरसाते, लाल रंग के बादल मेह बरसाते हैं, किन्तु काले रंग के बादलों से घनी-वृष्टि होती है ।

इस कहावत के द्वारा हमे हाड़ौती के वर्षा-विज्ञान के दर्शन होते है । अनुभव करते रहने के कारण ग्रामीण लोग मेघो के रग देखकर वर्षा का अनुमान कर लेते है ।

८६२. **बाँदरा न सीख देताँ, घर ब्या को जाव ।**

बन्दर को सीख देते, घर बया का जावे ।

कुपात्र को शिक्षा देने से स्वयं की हानि होती है ।

बया ने वर्षा के कष्टों का ध्यान दिलाकर बन्दर को घर बनाकर आराम से रहने की शिक्षा दी । इस पर बन्दर ने बया का घोंसला तोड़ डाला । मूर्ख को शिक्षा देने से वह शिक्षक का ही पहले अनिष्ट करता है । हिन्दी में इसे निम्न प्रकार कहा गया है—

"सीख वाको दीजिए जाको सीख सुहाय ।"

८६३. **बाँदरा हाल़ो घाव ।**

बन्दर वाला घाव ।

थोड़ी पीड़ा को भी सहन न कर सकना ।

बन्दर के यदि घाव हो जाये, तो वह उसे बार-बार देखता है तथा

कुरेदने लगता है। इसी प्रकार कोई व्यक्ति किसी छोटे से दर्द का बार-बार स्मरण करके दुःखी होने लगे, तब उसे समझाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

८६४. **बाप को मरबो, अर काल् को पड़बो।**

बाप का मरना और अकाल का पड़ना।

आपत्ति पर आपत्ति असह्य हो जाती है।

एक तो किसी का बाप मर जाये तथा दूसरे अकाल पड़ जायै, तो ऐसे व्यक्ति को अपनी गृहस्थी का पोषण भार स्वरूप दृष्टिगोचर होने लगता है।

८६५. **बाप खाणी खो, छाव रॉंड खाणी खो, बात एक ई छ।**

बाप खाने वाली कहो, चाहे रॉंड खाने वाली कहो, बात एक ही है।

बात को दोनों प्रकार से कहा जा सकता है।

जब किसी एक ही बात को घुमा फिरा कर कहा जाये, तब उसको स्पष्ट करने के लिए इस कहावत को काम मे लाया जाता है।

८६६. **बाप चोर बेटो अन्याई, ईं को कसर ऊँ मॅं आई।**

बाप चोर बेटा अन्यायी, इसकी कमी उसमे आई (पूरी हुई)।

बाप और बेटे का बेईमान होना।

यदि पिता में किसी अवगुण की कमी है, तो उसे उसके पुत्र ने पूरा कर दिया है।

८६७. **बाप जमार चाब्या न पान, पीक थूँकताँ ग्या पराण।**

बाप के होते हुए चबाये न पान, पीक थूँकते गये प्राण।

श्रम का अभ्यास करते रहना चाहिए।

बाप के जीवित रहते हुए जिससे कार्य नही किया गया हो, यदि वह बाद में करे, तो उसे कष्ट उठाने पड़ते है।

८६८. **बाप न तो ऊँदरी बी न मारी, पण बेटा न्हार मारबा चाल्या।**

बाप ने तो चुहिया भी नही मारी, पर बेटे नाहर (शेर) मारने चले।

अत्यधिक शेखी बघारने वाले की निन्दा होती है।

अपनी शक्ति से बाहर होने वाले कार्य के लिए जो बढ़-बढ़ कर बातें करता चला जाय, उसका मुँह बन्द करने के लिए यह कहावत कही जाती है। हिन्दी साहित्य में इस कहावत को निम्न प्रकार कहा गया है—

"बाप न मारी मेंडकी, बेटा तीरन्दाज।"

८६९. **बाप बताओ, न तो सराध करो।**

बाप बताओ, नहीं तो श्राद्ध करो।

सत्य का प्रमाण देने पर ही मुक्ति मिल सकती है।

दो शर्तों में से एक की स्वीकृति के लिए बाध्य करते हुए इसका प्रयोग होता है।

८७०. **बाप तो क्वाँराई मर्‌ग्या, अर बेटा दो दो परणगा।**

बाप तो क्वाँरे ही मर गये और बेटे दो दो परणेंगे (विवाह करेंगे)।

पूर्वजों की प्रतिष्ठा रखने के लिए शेखी मारना अच्छा नहीं है।

वंश परम्परा के विपरीत कार्य करने वाले की समाज मे इस कहावत द्वारा सदा ही आलोचना की जाती है।

८७१. **बाबाजी तपो छो ? बच्चा काया जाण छ।**

बाबाजी तप रहे हो ? बच्चा काया जानती है।

कार्य स्वयं करने पर ही उसके सुख दुःख की वास्तविकता का पता चलता है।

किसी कार्य में होने वाले कष्टों का अनुभव तो उसका साधक ही जानता है। यह कष्ट सब लोगों के सामने रखा भी नही जा सकता।

८७२. **बाबा भूरा'र लेखा पूरा।**

बाबा भूरा और लेखा पूरा।

हिसाब बराबर होजाना।

पूरी वस्तु पूरे व्यक्तियों में बँट जाय अथवा किसी के लेन-देन का हिसाब बराबर हो जाय, उस समय यह कहावत कही जाती है।

८७३. **बाबो परणयो अर डोकरी मरगी, वे ई तीन का तीन ।**

बाबा का परिणय हुआ और बुढ़िया (दादी) मरगई, वे ही तीन के तीन ।

लाभ और हानि का बराबर हो जाना ।

बाबा ने परिवार वृद्धि के लिए विवाह किया, किन्तु दादी का देहावसान हो गया । इस प्रकार प्रयत्न करने पर भी तीन से चार न हो सके ।

८७४. **बामण का मूंडा मँ जे पतड़ा मँ ।**

ब्राह्मण के मुँह में वही पंचाङ्ग में ।

विद्वान का कथन सत्य होता है ।

पडित अथवा विद्वानों के अत्यधिक अनुभव के कारण उनकी सभी बाते सत्य निकलती हैं । अतः उन पर विश्वास बनाये रखने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

८७५. **ब्याव को टूटो तणीं, अर फावणाँ को कोई न धणीं ।**

विवाह की टूटी तनी (बन्दरवार) और पाहुनों का कोई न धनी ।

बन्दरवार खुलते ही अतिथियों को प्रस्थान कर देना चाहिए ।

विवाह में बारात की विदा के साथ वर मण्डप की बन्दरवार खोल देता है । उसी समय से अतिथियों का आदर-सत्कार वैसा नहीं रह जाता, जैसा आते समय होता है ।

८७६. **ब्याव की बगड़ी लुगायाँ, अर होल्यो का बगड़्या छोरा न सुधर ।**

विवाह की बिगड़ी औरतें और होली के बिगड़े छोरे नहीं सुधरते ।

विवाह में स्त्रियों को तथा होली पर बालकों को अश्लील गीतों का प्रयोग नहीं करने देना चाहिए ।

विवाह के समय स्त्रियाँ तथा होली के अवसर पर लड़के अश्लील गाने गाते हैं । इस प्रकार पड़ी हुई कुटेव प्रायः कठिनाई से छूट पाती है । अतः सभ्यता के युग में ऐसे अवसरों पर चरित्र-निर्माण करने वाले गीत प्रयोग में आने चाहिये ।

८७७. **बारठ का टापरा को खोलू बी तान सूं ईं फूटं छ ।**

बारहठ के टापरे का कवेलू भी तान से ही फूटता है ।

बारहठ के घर का वातावरण संगीतमय होता है ।

बारहठ जाति राजपूताने में एक गाने वाली जाति है । उनके जीवन का सगीत के साथ ऐसा समन्वय दिखाई पड़ता है कि मानो उनकी प्रत्येक वस्तु रागमय बन गई हो ।

८७८. **बारह गाँव अर एक लखारी ।**

बारह गाँव और एक लखारी ।

सारा लाभ एक ही व्यक्ति को प्राप्त होना ।

बारह गाँवो में यदि एक लाख के चूड़े बनाने वाली हो, तो उसे मुँह माँगे दाम मिलने के कारण अधिक लाभ होता है ।

८७९. **बारा बरस ताईं पाँव खोड़ा में राख्यो अर चालती बेर तुड़ायो ।**

बारह वर्ष तक पैर खोड़े मे रक्खा और चलती बार तुडवाया ।

अत्यधिक सावधानी रखते हुए भी विघ्नों की समाप्ति पर हानि उठाना ।

खोड़ा लकड़ी की एक तग सन्दूकची होती थी, जिसमें अपराधी का पैर बन्द कर दिया जाता था । विपत्ति की समाप्ति पर अपनी किंचित् असावधानी के कारण धोखा खा जाने वालों के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

८८०. **बारा बरस दल्ली में रच्या, फेर बी भाड़ ई झूंक्यो ।**

बारह बरस दिल्ली मे रहे, फिर भी भाड़ ही झोका ।

अच्छे स्थान में रहकर भी लाभ न उठाना ।

अच्छे स्थान से यदि व्यक्ति लाभ न उठा सके, तो यह उसके आलस्य अथवा निकम्मेपन का द्योतक है ।

८८१. **बारा बरस में तो रेवड़ी का बी दन बावड़ छ ।**

बारह वर्ष में तो घूरे के भी दिन फिरते हैं ।

समय आने पर कष्ट उठाने वाले को भी सुख मिलता है ।

निर्धन व्यक्ति जो अधिक समय से दुःख उठा रहा हो, उसको सान्त्वना का आधार यह कहावत है ।

८८२. **बारा बरस मँ बोल्यो फेरबी कुराँ कुराँ ।**

बारह वर्ष में बोला फिर भी कुराँ कुराँ ।

जन्म-जात संस्कार नहीं बदलते ।

दिनों में बातचीत करने पर भी जब कटु तथा तीक्ष्ण वचनों का प्रयोग सुन पड़े, तब सुनने वाला कहने वाले के प्रति धिक्कार देता हुआ इस कहावत का प्रयोग करता है ।

८८३. **बारा बरस मँ माथो न्हायो, जेला सूँ सुलझायो ।**

बारह वष में सिर नहाया, जेला (आकड़े) से सुलझाया ।

स्त्रियों को अपने केशों की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए ।

किसी स्त्री ने दिनों में सिर को धोया, इसलिए बाल उलझ गये । वे इतने उलझ गये कि उनके सुलझाने के लिए कृषि कार्य में भूसा आदि खीचने का लकडी का आँकडा काम में लाया गया ।

८८४. **बारा म्हीना क गेल चाल क छ महीना क ?**

बारह महीने की गेल चले या छै महीने की ?

समय अधिक लगने पर भी सरल मार्ग से चलना ही श्रेयस्कर होता है ।

बारह महीने वाला रास्ता लम्बा होगा, किन्तु विघ्नविरहित होगा । इसके विपरीत छै महीने का मार्ग छोटा, किन्तु कठिनाइयों से भरा होगा ।

८८५. **बालक तो बास्या होव छ ।**

बालक तो बादशाह होते है ।

बालक किसी से नहीं डरता ।

बालक बादशाह की भांति अपनी मर्जी का मालिक होता है । वह अच्छा-बुरा काम करते हुए किसी की परवाह नही करता ।

८८६. **बालक तो राख्या सूँ ई र छ ।**

बालक तो रखने से ही रहते है ।

बालक लाड़-प्यार पाकर ही दूसरों के पास टिक सकता है ।

बच्चो को यदि डाट फटकार द्वारा रखा जाय, तो वे नही रहते। वे तो प्रेम के भूखे होते है। प्रेम से वे अपने बनाये जा सकते है।

८८७. **बाल्कॉ की ठण्ड तो बाकरा चर छ।**

बालकों की ठण्ड तो बकरे चरते है।

बच्चों पर शीत का प्रभाव नहीं पड़ सकता।

बच्चो के शरीर का तापमान अधिक होने के कारण उनको सरदी कम लगती है। वे कडाके की सर्दी मे भी निर्भय फिरते रहते है।

८८८. **बाल् बाग अर सुरल्ा उड छ।**

वायु बहती है और सुरले (कड़वी के छिलके) उडते है।

लक्षित स्थान में कार्य का अभाव होना।

जब कही किसी घटना अथवा कार्य के होने की आशा की जाये, किन्तु उस स्थल पर तत्सम्बन्धी चिह्न तक न मिले, तब ऐसा कहा जाता है।

८८९. **बाल्पणाँ की आफू खड खड'र आवगी।**

बालपने की अफीम निकल-निकल कर आयेगी।

कार्य अत्यधिक कठिन है।

किसी कार्य की कठिनता तथा कर्त्ता की असमर्थता का अनुमान करके उसे चेतावनी के रूप में यह उक्ति सुनाई जाती है।

८९०. **बावन तोल्ा अर पाव रत्ती।**

बावन तोले और पाव रत्ती।

बिल्कुल ठीक होना।

किसी कार्य का औचित्य प्रदर्शन करने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

८९१. **बावन बार मसाव जद बावन बीर ख्वाव।**

बावन बार ठगाये तभी बावन वीर कहाये।

अधिक बार ठगाने पर मनुष्य अधिक होशियार बनता है।

मनुष्य जितनी बार ठगा जायेगा उतना ही उसका अनुभव बढ़ेगा।

८९२. **बावल्या गाँव में हाती आयो।**

बावले गाँव में हाथी आया।

प्रचलित वस्तु पर आश्चर्य करना।

छोटी सी वस्तु को जो पहले से प्रचार में आ चुकी हो, उसे देखकर उसकी ओर आकर्षित हो जाने पर इसका प्रयोग किया जाता है।

"पागल गाँव मे ऊँट तमाशा।"—कहावत में भी इसी भाव को दोहराया गया है।

८९३. **बावल्या हाल्यो घाट।**

बावले वाला घाट (कार्य)।

बुद्धिहीनता का कार्य पागलों का लक्षण है।

जब कोई व्यक्ति बिना सोचे समझे ही कार्य करता चला जाये, तथा किसी की एक भी न सुने, उस समय इस कहावत द्वारा उसको उद्‌बोधन दिया जाता है।

८९४. **बासण सूँ बासण भड़क ई छ।**

बरतन से बरतन टकराते ही है।

साथ रहने वालों में झगड़ा हो ही जाता है।

एक साथ बसने से कभी-कभी अवसर आने पर झगड़ा होना सर्वथा सम्भव है।

८९५. **बाँस तो डूबग्यो अर पेरी तर छ।**

बाँस तो डूब गया और पौरी तैरती है।

आसन्न मृत्यु होना।

कोई मनुष्य अत्यधिक बीमार हो तथा उसके बचने की रंच भी आशा न हो, उस समय कहा जाता है कि सारा बाँस तो डूब चुका, केवल ऊपरी छोर अब डूबने वाला है।

८९६. **बासी बच न कुत्ता खाव।**

बासी बचे न कुत्ते खाये ।

कुछ भी बाकी न बचना ।

कोई वस्तु यदि पूरी काम में आ जाये, तो योग्य व्यक्तियो के हाथ में पड़ने का भय नही रहता ।

८९७. **बीच बीच में लाडा की भत्रा ।**

बीच-बीच मे लाडे की (वर की) बुआ ।

बिना पूछे दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।

कुछ मनुष्यो का स्वभाव हो जाता है कि वे दूसरे के कार्यो में जबरदस्ती दखल देने लगते है, उनके लिए यह कहावत कही जाती है ।

८९८. **बीजा बरगी बाणियाँ, ओर हराणचा गोड़ ।**
तीजो मलग्यो दाईमो, तो करे साह ने चोर ।

विजयवर्गीय बनिया और हरानिया गौड़ ।

तीसरा मिल गया दायमा, तो करे शाह को चोर ।

विजयवर्गीय बनिया, हरानिया गौड़ तथा दायमा तीनों जातियों के मनुष्य स्वभाव से ही चालाक होते है ।

ये तीनों व्यक्ति मिल जायें तो साहूकार को भी चोर बना देते है । अर्थात् इनका नैतिक-स्तर अत्यधिक गिरा हुआ बतलाया गया है ।

८९९. **बीजा मूँत ज्याँ बीछू ब्याव छ ।**

विजयवर्गीय मूत्र करे, वहाँ बिच्छू उत्पन्न होते है ।

विजयवर्गीय का प्रत्येक कार्य भयोत्पादक होता है ।

विजयवर्गीय का मूत्र विसर्जन ही भय कारक होता है, तो फिर वह स्वयं कैसा होगा ? यह विचार करके लोग इस जाति से भयभीत रहते है ।

९००. **बोड़ा की दूब तो चूँटचाँ चूँटचाँ ई हल्की होव छ ।**

बोडे की दूब तो चूँटते चूँटते ही हल्की होती है ।

ऋण थोड़ा थोड़ा करके ही चुकाया जाता है ।

साहूकार जब ऋणी से उसकी इच्छा के विरुद्ध समय-समय पर कुछ न कुछ ले लिया करता है, तब लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

९०१. **बीती जोन भूलजा, आग की सुध ल ।**

बीती जिसे भूलजा, आगे की सुधि ले ।

विगत की चिन्ता न करके भावी को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए ।

जो समय व्यतीत हो गया है, उसे भूलकर अपने भविष्य की ओर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि भूत की चिन्ता में भविष्य भी बिगड़ सकता है ।

९०२. **बीरो आयो, बण हँसी, देग्यो साठ अर लेग्यो असी ।**

वीरा (भाई) आया, बहिन हँसी, दे गया साठ और ले गया अस्सी ।

थोड़ा देकर अधिक लेजाना ।

भाई को आया देखकर बहिन अत्यधिक प्रसन्न हुई । किन्तु उसने साठ रुपये तो जमा किये और अस्सी रुपये ले गया ।

९०३. **बूडो पाडो अर फजीतवाड़ो ।**

बूढ़ा पाडा (भैसा) और फजीतवाड़ा ।

वृद्धावस्था में पग-पग पर प्रतिष्ठा बिगड़ने का भय रहता है ।

अङ्ग शिथिल हो जाने के कारण समस्त इन्द्रियों की शक्ति का भी ह्रास हो जाता है, अतः असावधानी के अनेक कार्य हो जाते है ।

९०४. **बूडान बानी छाई ।**

बूढे को बानी (राख) छाई ।

वृद्ध मनुष्य मोटे ताजा नहीं हो सकते ।

वृद्ध मनुष्य मोटे ताजा नही होते । जब कोई वृद्ध उस आयु में मोटा ताजा होने के उपाय करने लगे, उस समय उसके उपहास के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

९०५. **बेगोई सरग को उतावलो होग्यो ।**

शीघ्र ही स्वर्ग का उतावला हो गया ।

अकाल मृत्यु हो जाना ।

अल्पायु में ही मरजाने वाले व्यक्ति के प्रति इसका प्रयोग किया

जाता है। इसमे मृतक के प्रति स्नेह या श्रद्धा का भी दिग्दर्शन हुआ है।

९०६. **बेट्याँ का खाया घर, अर चड़्याँ का चुग्या खेत, खदी बी न उपरलै।**

बेटियो के खाये घर और चिडियों के चुगे खेत कभी भी सम्पन्न नही होते।

बेटियों को अपना सारा घर नहीं खिला देना चाहिए।

जिस प्रकार चिडियों द्वारा चुगा हुआ खेत नष्ट होजाता है, उसी प्रकार पुत्रियो द्वारा खाया हुआ पिता का घर सम्पत्ति-शून्य हो जाता है।

९०७. **बेटी अर बल तो डोर ज्यांई जाव छ।**

बेटी और बैल तो लेजावे वही जाते है।

पुत्री को वर तथा बैल को खरीदने वाला जहाँ लेजाता है, वहीं जाते हैं।

बैल को रस्सी से बाँधकर ले जाने को "डोरना" कहते है, उसी प्रकार विवाह के समय वस्त्रो के द्वारा कन्या का गठ-बन्धन किया जाता है। बैल को खरीद कर तथा कन्या का दानग्रहण करके जहाँ ले जाया जाय, वही चली जाती है।

९०८. **बेटी दे'र बेटो ले छ।**

बेटी देकर बेटा लेते है।

दामाद भी पुत्र के समान ही समझा जाता है।

विवाह के समय से ही वर का पिता कन्या को अपनी पुत्री तथा कन्या का पिता वर को अपना पुत्र समझने लगते है।

९०९. **बेटी बापकी'र, धरती राजकी।**

बेटी बाप की और धरती राज की।

कन्या पर पिता का तथा भूमि पर राजा का अधिकार होता है।

पिता अपनी कन्या का वाग्दान अपनी इच्छानुसार कर सकता है, इसी प्रकार राजा भी भूमि जोतने के लिए जिसे चाहे उसे दे सकता है।

९१०. **बेटो न कमाव जतरो ब्याज कमाव छ।**

बेटा नही कमावे उतना ब्याज कमाता है।

ब्याज पर रुपया उधार देने वाला शीघ्र ही सम्पन्न बन जाता है।

सूद पर जो रुपया उधार दिया जाता है वह चक्रवृद्धि ब्याज से थोडे समय में ही अधिक बढ़ जाता है। अतः पुत्रों से अधिक ब्याज द्वारा आमदनी हो सकती है।

६११. बोल न्याव, अर चाल कुन्याव।

बोले न्याय और चले कुन्याय।

वचन और कर्म में भेद होना।

"बोले कुछ और तथा करे कुछ और" के अनुसार जिसके वचन और कर्म में अन्तर हो, उसके लिए इसका प्रयोग होता है।

६१२. बोल्याँ का बूँमला, अणबोल्याँ की रास।

बोलने वाले के बूमले, (छिलके), न बोलने वाले की राशि।

बोलने वाले के कठिन काम भी बन जाते हैं, किन्तु चुप रहने से कुछ भी नहीं होता।

बोलनेवाला व्यक्ति अपनी वाचालता के कारण दूसरों को आकर्षित करके अपने छिलके भी बेच देता है, किन्तु न बोलने वाले की अच्छे अनाज की ढेरी भी पड़ी ही रह जाती है।

"गात माहि बात करामात है"—कहावत भी भाव–साम्य के कारण द्रष्टव्य है।

६१३. बोल भलाई ई लाराँ जाव छ।

बोल-भलाई ही साथ जाती है।

सबसे नम्रता का व्यवहार करना चाहिए।

नम्र व्यवहार के कारण मरणोपरान्त भी लोग व्यक्ति याद करते है।

६१४. बोल्या अर मारचा।

बोले और मारे।

दूसरे की बात सुनने की सहनशीलता होनी चाहिए।

किसी के बोलते ही बुरी बात निकालने वाले के कार्य की आलोचना करने के लिए यह कहावत प्रयोग में आती है।

भ

९१५. भगवान देबा लाग तो छप्पर फाड़'र दे छ ।

भगवान देने लगे तो छप्पर फाड़कर देता है ।

ईश्वर के अनुग्रह से अनायास ही द्रव्य प्राप्त हो जाता है ।

परमात्मा के अनुकूल होने पर सभी सुख सहजतया मिल जाते हैं । सम्पत्ति के लिए भी कठिन परिश्रम की आवश्यकता नही होती ।

९१६. भगवान सूं बडो कुंण छ ?

भगवान से बडा कौन है ?

ईश्वर ही सबसे बड़ी शक्ति है ।

भगवान जो कुछ करता है, उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए, क्योकि उससे बडी कोई शक्ति न होने के कारण उसीसे दु खनिवारण की प्रार्थना करनी पडती है ।

९१७. भगवान ई सबको बेली छ ।

भगवान ही सबका रक्षक है ।

ईश्वर सबकी रक्षा करता है ।

परमात्मा को अत्यन्त सूक्ष्म जीवधारी से लेकर महाकाय प्राणियों तक सबकी याद रहती है । समय-समय पर उसी की दया से उन्हें आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त होती रहती है, ऐसा आस्तिकों का मत है ।

९१८. भजोई छ जे तो मुंडाणो ई पड़गो ।

भिगोई है, वह तो मुँडवानी ही पड़ेगी ।

जिस कार्य को आरम्भ कर दिया है, उसे तो पूरा करना ही पड़ेगा ।

दाढ़ी को भिगो लेने पर तो मुँडवाना आवश्यक हो जाता है । इसी प्रकार किसी कार्य को स्वीकार कर लेने पर उसमें विघ्नो की आशङ्का होने पर भी उसे पूरा करने का दृढ़ संकल्प करने वाले लोग इस कहावत का प्रयोग करते है ।

९१९. भटचारी गंठ को फलोथण न मल ।

भटियारिन गाँठ का पलोथन नहीं रखती ।

व्यापारी हानि उठाकर व्यापार नहीं करता ।

भटियारिन अपने पास से पलोथन नही रखती । यदि वह ऐसा करे तो खाये क्या ? किसी व्यक्ति के यह कहने पर कि मैं यह बहुत सस्ती वस्तु खरीद लाया, शायद व्यापारी को हानि हुई होगी । इसके प्रत्युत्तर में इस कहावत का प्रयोग होता है ।

६२०. **भड़जी भट्टा खावं, ओरां न पच बतावं ।**

भट्टजी भट्टे खाये, औरो को पच बताये ।

दूसरों को उपदेश देना, किन्तु स्वयं पालन न करना ।

भट्टजो स्वय तो बैंगन खाते है और दूसरो को न खाने का उपदेश देते है ।

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे"—मे तुलसीदासजी ने उपर्युक्त भाव का ही स्पष्टीकरण किया है ।

६२१. **भरम भारो, टपारा खालो ।**

भरम भारी, टिपारा खाली ।

भ्रम से लोग द्रव्यहीन को भी धनी समझ बैठते हैं ।

लोग समझते है कि अमुक के पास धन बहुत है, किन्तु वास्तव मे उसके पास निकलता कुछ नही है ।

६२२. **भरचा गाडा मं छाजला को काँई बोझ ?**

भरे गाडे मे छाजले (सूप) का क्या बोझ ?

किसी के छोटे से कार्य के लिए मना नहीं करना चाहिए ।

अधिक के साथ थोड़ा आसानी से चल सकता है । जैसे भारी गाडी मे सूप का कोई वजन मालूम नही होता, वैसे ही कोई व्यक्ति अपने बड़े कार्य के साथ किसी का छोटा काम निकाल सकता है ।

६२३. **भरचा मं सब भर छ ।**

भरे में सब भरते है ।

धनी के पास ही धन आता है ।

निर्धन को न देकर जब धनी के लिए लोग पैसा खर्च करते है, उस

समय यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

६२४. **भला मल्या भरतार, वा नकटी तो ऊ पाटाउतार ।**

भले मिले भर्तार, वह नकटी तो वह पाटाउतार ।

एक में दूसरे से अधिक अवगुण होना ।

यदि पत्नी निर्लज्ज है, तो पति अधिक बेशर्म है । इस प्रकार दो मनुष्यों के अवगुणो में जब होड मची हुई हो, तब उनके लिए यह कहावत प्रयोग में आती है ।

६२५. **भस में तणग्यो नांख'र म्हादेव जी दूरा ऊबा ।**

भूसे मे चिनगारी डालकर महादेवजी दूर खडे ।

धूर्त व्यक्ति लोगों मे कलह कराकर अलग हो जाते हैं ।

भूसे की ढेरी मे चिनगारी से ही आग लग जाती है । इसी प्रकार हलके मस्तिष्क वाले छोटी सी बात पर लड पडते हैं । धूर्त व्यक्ति छोटी सी बात कहकर महादेव जी के समान निर्लेप रूप से अलग खड़ा हो जाता है ।

६२६. **भैंस क आगं खल मल तो रूंथ-रूंथ'र खाव छ ।**

भैंस के आगे खल रखे तो रौंथ-रौंथकर खाती है ।

अयोग्य व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ वस्तु का कोई मूल्य नहीं होता ।

मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तु का प्रयोग नही जानते । अतः उनके उपयोग के लिए रक्खी हुई श्रेष्ठ वस्तु का कोई मूल्य नही है ।

६२७. **भैंस को तोर पाडो फलोई पछाण ले छ ।**

भैंस का तोर पाड़ा पहले ही पहचान लेता है ।

परिचित व्यक्ति मनुष्य का रुख पहले ही जान लेते हैं ।

परिचित व्यक्ति दूसरे की इच्छा को पहले ही जानकर उसके अनुसार काम करने लगते हैं ।

६२८. **भैंस खल सूं भाइली बांध तो खाव कांई ?**

भैंस खल से मित्रता करे तो खाये क्या ?

व्यापार में मित्रता का निर्वाह नहीं हो सकता ।

जीविकोपार्जन के साधनो को यदि कोई किसी के लिए छोड दे, तो अपनी उदरपूर्ति किस प्रकार करे ?

६२९. **भैंस ब्यावे अर पाडो अरड़ावे ।**

भैंस बियाये और पाड़ा (भैंसा) अरडाये ।

पैसा खर्च करने वाले के पक्षपातियों को दुःख होना ।

व्ययकर्त्ता को तो कोई चिन्ता न हो, किन्तु जब दूसरे व्यक्तियो को अधिक पीडा हो तथा वे उसकी आलोचना करना प्रारम्भ करे—उस समय उनका मुँह बन्द करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है ।

६३०. **भाई, भतीजा, माणजा, भाँड, भाट, भोपाल ।**
अतरा, भज्बा टाल'र करो कंत बोपार ।

भाई, भतीजा, भानजा, भाँड, भाट, भूपाल ।
इतने भकार टाल कर, करो कन्त व्यापार ।

भाई, भतीजे, भानजे, भाँड, भाट तथा राजा से व्यापार में लाभ नहीं उठाया जा सकता ।

एक स्त्री अपने व्यापारी पति से कहती है कि हे कन्त ! भाई, भतीजो भानजो, भाँड, भाट तथा राजा को छोडकर व्यापार कीजिये अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि उठानी पडेगी ।

६३१. **भाई सरीका सोखी न, अर भाई सरीका दोखी न ।**

भाई सरीखे सुखदाई नही और भाई सरीखे दुखदाई नही ।

भाई के समान मित्र और शत्रु दूसरा नहीं हो सकता ।

आपत्ति में भाई ही एक दूसरे के काम आते है । किन्तु धन के अथवा भूमि के बँटवारे के समय भाईयों के समान कोई दुश्मन नही होते ।

६३२. **भाग छिप न भभूत रमायां ।**

भाग्य छिपे न विभूति रमाये ।

साधु बन जाने से भाग्य नहीं छिपता ।

राख लगाकर घर छोड देने पर भी भाग्य तो सदैव साथ ही

रहता है ।

९३३. भागता भूत को लँगोटी ई सई ।

भागते भूत की लँगोटी ही सही ।

जिससे बिल्कुल आशा न हो उससे जो कुछ मिल जाय वही अच्छा है ।

भूत को पकड़ने दौड़े तो भूत भाग गया पर उसकी लँगोटी हाथ में आगई । जब कुछ भी प्राप्त न हो सके, तो जो थोड़ा कुछ मिले, उसी पर सन्तोष कर लेना चाहिये ।

९३४. भाग बना भोग नहीं, भली बस्त का भोग ।
दाख पकै जद काग कै, होत कंठ में रोग ।

भाग्य बिना भोगे नही, भली वस्तु के भोग ।
दाख पके जब काग के, होत कंठ में रोग ।

अच्छी वस्तु भाग्य से ही प्राप्त होती है ।

परिवार के उपभोग के लिए कोई अच्छी वस्तु लाई जाय, किन्तु उसको उपभोग करने में असमर्थ प्राणियों को देखकर यह कहावत कही जाती है ।

९३५. भाग्यो जावे अर बगारघो भावे ।

भागा जावे और बघारा हुआ भावे ।

शीघ्रता में श्रेष्ठवस्तु मिलना असम्भव है ।

जल्दी में जाने वाले को छोंकी हुई शाक नही मिल सकती । किसी कार्य में जल्दी मचाने पर यह कहावत कही जाती है ।

९३६. भाँड क नूत्या, झींम्याईं भरोसो ।

भाँड के न्यौते, जीमने पर ही भरोसा ।

झूठे व्यक्ति की बात का सहसा विश्वास नहीं होता ।

झूठा व्यक्ति जिस बात का वादा करे, उसके पूरा होने पर ही उसकी सत्यता प्रकट होती है, अन्यथा नही ।

९३७. भाँड मरै छै क नकल करै छै ?

भाँड मरता है कि नकल करता है ?

झूठ बोलने वाले की सत्य बात भी झूठी ही समझी जाती है ।

भाँड यदि वास्तविक कष्ट से दुःखी हो, फिर भी लोग यही समझते है कि बहाने करता है । निम्नाङ्कित दोहे में भी यही भाव व्यक्त हुआ है—

"मिथ्या-भाषी साँचहू, कह्यो न माने कोय ।
भाँड पुकारे पीर बस, मिस समुझे सब कोय ।"

९३८. भाड़ा को गधड़ी ठसक क्यूँ ?

भाडे की गधी ठसके क्यो ?

किराया देने वाला वस्तु से पूरा लाभ उठा सकता है ।

अपने दिये हुए पैसे का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए उद्यत हुए व्यक्ति से कोई दया दिखाने को कहता है, तब वह इस कहावत का प्रयोग करता है ।

९३९. भाड़ो, भाड़, भड़ावणी फलो लीजे माँग ।

भाडा, भाड, भडावनी पहले लीजे माँग ।

वस्तु के स्वामी को किराया तथा वेश्या व भाँड को अपना पारिश्रमिक पहले ही ले लेना चाहिये ।

वस्तु के किराये, वेश्या के पारिश्रमिक तथा भाँड के पारितोषिक को लोग बाद मे नही देते । यहाँ तक कि बाद मे माँगने पर झगड़े की नौबत आ जाती है ।

९४०. भायाँ भली दीखसी, बरी मान काण ।

भाईयो से भली दीखेगी, बैरी माने कान ।

भाइयों से सदैव हिलमिलकर रहना चाहिए ।

भाइयो में परस्पर मेल रहने पर उनका कल्याण होता है तथा साथ ही उनके सगठन से शत्रु भी डरते रहते है ।

९४१. भाला सूँ बाटयाँ फेरबो छोको न ।

भाले से बाटियाँ फिराना अच्छा नही ।

स्वयं के करने योग्य कार्य को दूसरे से नहीं करवाना चाहिए ।

जब कोई व्यक्ति अपने कार्य-भार को दूसरे पर डालकर स्वयं उससे

मुक्त होना चाहे, उस समय उसके इस कार्य की आलोचना इस कहावत द्वारा की जाती है।

९४२. **भ्वा नेग लोजे, भतीजो नेग दीजे।**

बुआ नेग लेना, भतीजी नेग देना।

लेना और देना बराबर होना।

बुआ को लडकी का पिता नेग देता है, किन्तु भतीजी होने पर बुआ उसको नेग देती है। अतः जैसे पिता अपनी बहिन को देता है, वैसे ही वह अपने भाई की लडकी को दे देती है।

९४३. **भ्वाजो क मूछ्यां होती तो फूफाजो न कुंण पूछतो ?**

बुआजी के मूँछे होतो तो फूफाजी को कौन पूछता ?

निर्बल ही कार्य करले, तो सबलों की अपेक्षा क्योंकर हो ?

पुरुषो के करने योग्य कार्य तो पुरुष ही करते है। अपनी महत्ता को प्रदर्शित करते हुए मनुष्य इस कहावत का प्रयोग करता है।

९४४. **भींत क बी कान होव छ।**

भीत (दीवार) के भी कान होते है।

किसी की बात करते समय अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है।

कोई व्यक्ति किसी गुप्त बात को न सुनले, इसलिए चेतावनी के रूप मे यह कहावत कही जाती है।

९४५. **भींत सारू माँडण्या सोव छ।**

भीत (दीवार) के अनुरूप ही चित्र शोभित होते है।

आकृति के अनुरूप ही वस्त्रालङ्कार होने चाहिए।

जैसी दीवार हो उस पर वैसे ही चित्र बनाने चाहिए, इसी प्रकार जैसी शारीरिक बनावट हो, उसी के अनुसार वस्त्र आदि का होना आवश्यक है।

९४६. **भूक मं क्वाँड़ बी पापड़ होजाव छ।**

भूख मे किवाड़ भी पापड़ हो जाते है।

भूख में कठोर वस्तु भी अच्छी लगती है।

जब कोई व्यक्ति भूखा हो, तब भूख को मिटाने के लिए उसे अखाद्य वस्तु भी स्वादिष्ट प्रतीत होती है। वस्तु की कठोरता भी भूख मे विलीन हो जाती है।

६४७. **भूकाँ न दापण अर धायाँ न माँडण।**

भूखे को दापन और धाये (तृप्त) को मडन।

सोने चाँदी के आभूषण सभी परिस्थितियों में श्रेष्ठ है।

सोने चाँदी के आभूषण निर्धनता के समय पेट की भूख को मिटाते है तथा सामान्य अवस्था मे शृङ्गार का काम देते हैं। अत इस उक्ति द्वारा वृद्ध लोग यह उपदेश देते है कि आभूषणों का सग्रह अच्छा है।

६४८. **भूका उठाव, पण भूका न स्वाँण।**

भूखा उठावे, पर भूखा नही सुलावे।

परमात्मा सबको खाने को देता है।

ईश्वर भूखे उठाता है, पर भूखे सुलाता नही। प्रात.काल सब भूखे उठते है, पर रात्रि को भोजन करके सोते है।

६४९. **भूकाँ भजन न होई गोपाला, या ल थारी खंठी-माला।**

भूखे भजन न होई गुपाला यह ले तेरी कठी-माला।

भूखे आदमी से काम नहीं हो सकता।

एक भूखे भक्त की पुकार है कि हे गोपाल! भूख मे कभी भजन नही सूझता।

६५०. **भूको तो धायाईं पतीज।**

भूखा तो तृप्त होने पर ही विश्वास करता है।

भूखे व्यक्ति को कोरी बातों से विश्वास नहीं होता।

भूखे को तो पेट भरने पर ही विश्वास होता है। खाली भोजन देने के वायदो से नही।

"भूखा खाये ही पतियाय"—से इसी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

६५१. **भूकाँ बोर, तसायाँ काँकड़ो, हारचा को बसराम तमाखू भापड़ो।**

भूखे बेर, तृषा में ककड़ी, हारे का विश्राम तमाखू बेचारी ।

बेर भूख को, ककड़ी प्यास को तथा तमाखू थकावट को मिटा देती है ।

भूखा व्यक्ति बेर खाकर भूख मिटाता है और प्यासा ककडी खाकर प्यास बुझा लेता है। किन्तु थके हुए को विश्राम देनेवाली बेचारी तमाखू ही है ।

९५२. भूको तो भँडचाई करगो ई ।

भूखा तो भॉडपन करेगा ही ।

भूखा अपनी उदरपूर्ति के लिए सब कुछ कर डालता है ।

क्षुधा-पीडित मनुष्य अपने पेट की अग्नि को बुझाने के लिए चोरी आदि अनैतिक कार्य करते हुए भी सकोच नही करता ।

९५३. भूको न्हार मंडका मार ।

भूखा नाहर मेंढ़कों को मारता है ।

समर्थ किन्तु भूखे व्यक्ति का छोटी वस्तुओं पर हाथ डालना ।

सिह कभी छोटे जीवधारियो पर ध्यान नही देता, किन्तु खाद्य के अभाव में वह मेंढ़क ही मारने लगता है ।

९५४. भूको बामण चाल न, खायाँ पाछै हाल न ।

भूखा ब्राह्मण चले नही, खाये पीछे हिले नही ।

ब्राह्मण आलसी होते हैं ।

ब्राह्मण भूखा होने के कारण चलता नही है तथा खाते समय इतना खा लेता है कि उसके कारण उस स्थान से हिल नही सकता ।

९५५. भूको बामण सोव, अर भूको बाण्यो रोव ।

भूखा ब्राह्मण सोये, और भूखा बनिया रोये ।

ब्राह्मण की अपेक्षा बनिये में भूख को सहन करने की शक्ति कम होती है ।

भूखे होने की दशा में ब्राह्मण नीद लेता है, किन्तु भूखे बनिये को नींद भी नही आती, वह रोता है ।

९५६. भूको भील माल घस ।

भूखा भील भाल (भाला) घिसता है ।

भील भूखा होने पर शिकार की तैयारी करता है ।

जब भील को क्षुधा सताती है, तो वह अपने शिकार का अस्त्र घिस कर तैयार कर लेता है, ताकि एक ही बार मे उसकी आवश्यकता की पूर्ति हो जाये ।

९५७. भूत पीपली संजोग ।

भूत पीपल का सयोग ।

प्रगाढ स्नेह होना ।

जब किसी का अत्यधिक प्रेम हो, तब उसके लिए यह उक्ति चरितार्थ होती है । भूत को पीपल नही छोडती तथा पीपल को भूत नहीं छोडता ।

९५८. भूलग्या राग रंग, भूलग्या चोकड़ी ।
तीन चीज याद रंगी, लूंण तेल, लाखड़ी ।

भूल गये राग रग, भूलगये चौकड़ी ।
तीन चीज याद रह गईं, नमक, तेल, लकड़ी ।

गृहस्थाश्रम की चिंताओं के सामने सारे राग-रंग भुला दिये जाते है ।

गृहस्थ में प्रवेश करते ही सब राग-रग को भूल जाते है । दैनिक आवश्यकताओ को पूर्ति को ही रातदिन चिंता बनी रहती है ।

९५९. भूलचूक लेणी-देणी ।

भूलचूक लेनी-देनी ।

व्यापार में भूलसुधार हो सकता है ।

हिसाब करते समय यह कहावत कही जाती है कि यदि कोई भूल रह गई हो, तो ज्ञात होने पर ठीक करली जायेगी ।

९६०. भूल्या ज्याँ सूं ई एक गणो ।

भूले जहाँ से ही एक गिनो ।

कार्यारम्भ में ही कार्य बिगड़ जाये, तो उसे पुनः प्रारम्भ से उठाना चाहिए ।

जिस प्रकार गिनती बोलते समय कही अशुद्धि रह जाये तो पुनः प्रारम्भ से बोलने पर वह सुधर सकती है, इसी प्रकार बिगडा हुआ काम प्रारम्भ से कर लेने पर उसकी सारी त्रुटियाँ दूर हो जाती है ।

६६१. **भूल्यो बाणयो ढूंमला में हात ।**

भूला बनिया ढूमले में हाथ ।

किसी वस्तु के खोजाने पर बनिया उसे अपने ढूमले में ही खोजने का प्रयास करता है ।

बनिये को तौलने के लिए अपने ढूमलो मे ही हाथ देने का अभ्यास हो जाता है । अतः किसी वस्तु के खो जाने पर वह उसे उन्ही में ढूँढता है ।

६६२. **भेद बना लंका न टूट ।**

भेद बिना लङ्का नही टूटती ।

बिना भेद जाने कार्य सिद्धि नहीं हो सकती ।

किसी गुप्त रहस्य के जानने के पश्चात् कार्य अत्यधिक सुलभ हो जाता है । जैसे विभीषण के भेद बतला देने पर लका तोडना अति सुलभ होगया था ।

"घर का भेदी लका ढावे"—की वाक्य रचना भी इसी प्रकार की है ।

६६३. **भेल़ सो'र कटारी न ब्हावो छाइजे ।**

साथ सोकर कटारी नही मारना चाहिए ।

प्रेम करके उसकी आड़ में दुश्मनी निकालना अच्छा नहीं है ।

कोई व्यक्ति किसी से बनावटी प्रेम करके अवसर आने पर धोखा दे जाये, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

६६४. **भेल़ा को तो होल़ी आछो ।**

शामिल की तो होली अच्छी ।

शामिल में कोई भी कार्य करना अच्छा नहीं है ।

विनाशात्मक कार्य तो मिलकर हो सकते हैं, किन्तु रचनात्मक कार्य अकेले ही ठीक होते है । उनमे साथ होने से अलग-अलग राय के कारण काम बिगड़ जाते है ।

६६५. **भोखो का मूंडा में कुण जाव ?**

गुफा के मुँह में कौन जाये ?

भयङ्कर कार्य करने को कोई भी उद्यत नहीं होता ।

अपनी जान की सभी को परवाह होती है । अतः दुष्टों से झगडकर कोई भी अपनी जान जोखिम मे नही डालना चाहता ।

"म्याऊँ का मुँह कौन पकडे ?"—मे भी यही भाव-साम्य दृष्टिगोचर होता है ।

९६६. **भोपा न छोड'र भड़ड़ा न काँईं लागबो ?**

भोपे को छोडकर भडडे को क्या लगना ?

अपराधी को छोड़कर निरपराध से लड़ पड़ना ।

जब दो व्यक्ति लड रहे हो और कोई उन्हें समझाने जाये, उस समय जो लडाकू होता है, वह उस समझाने वाले निर्दोषी मे ही झगड पडता है । ऐसे समय मे इस कहावत का प्रयोग होता है ।

९६७ **भोल् भोल् भाँग खाई, अब खाऊँ तो राम दुवाई ।**

भोले-भोले भाँग खाई, अब खाऊँ तो राम दुहाई ।

धोखे में बुरा काम करके भविष्य में न करने की शपथ ग्रहण करना ।

सीधा व्यक्ति कोई बुरा काम कर बैठे तो पश्चाताप करते हुए वह दृढ सकल्प कर लेता है कि ऐसा काम भविष्य मे न होगा ।

९६८. **भोलो पाडो दो दो छूंक छ ।**

भोला पाडा (भैंसा) दो दो का दूध पीता है ।

अत्यन्त सीधा बनकर व्यक्ति दुहरा लाभ उठा लेता है ।

किसी भैंस का पाडा मरने पर किसी सीधे पाड़े को उसके नीचे लगा देते है । इस प्रकार वह पाडा दो भैंसो का दूध पीने लगता है । जब कोई व्यक्ति चालाक होते हुए भी अनजान बनकर कोई काम करता है, तो वह दुहरा लाभ उठा लेता है ।

म

९६९. **मँगता क आग मंगत माँग ऊँको अक्कल कम ।**

मँगते के आगे मँगता माँगे उसकी अक्ल कम ।

धनी होते हुए भी जो दूसरों से याचना करता रहता है, उसके सामने याचना करने वाला मूर्ख है ।

जो स्वय धनवान होते हुए सदैव दूसरों से माँग माँग कर काम चलाता है, वह किसी याचक को दान नही दे सकता । अतः ऐसे याचक से याचना करना व्यर्थ है ।

९७०. मँडी मोरड़ो हार नँगलग़ी ।

मडित (चित्रित) मयूरी हार निगल गई ।

वस्तु का देखते-देखते गायब हो जाना ।

किसी मनुष्य-समुदाय मे कोई वस्तु खो जाय तथा सभी व्यक्तियो से पूछने पर वे मना करदे, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है। इस कहावत का उद्गम एक कहानी से है । उस कहानी मे किसी राजा के शयन कक्ष मे लगा मयूरी का भित्ति-चित्र रात्रि के समय रानी के हार को निगल जाया करता था ।

९७१. मँणधारी तो मरग्या, अब तो पोपस्याई पोपस्या रग्या ।

मणिधर तो मर गये, अब तो पोपसे (निर्विष सर्प) ही पोपसे रह गये ।

प्रभावशालियों का स्थान निर्बलों को प्राप्त हो जाना ।

मणिधर एक प्रकार के वे सर्प है, जिनके पास अमूल्य मणि रहती है, उनका मिलना दुर्लभ है तथा पोपसे बरसाती छोटे-छोटे सर्प होते है जो केचुवे के समान नगण्य समझे जाते है। आधुनिक मनुष्यो की प्राचीन मनुष्यो से तुलना करते समय यह उक्ति प्रयोग मे लाई जाती है ।

९७२. मथरा का पड़ा अर हाडोती का गपोड़ा ।

मथुरा के पेड़े और हाड़ौती के गपोड़े ।

मथुरा के पेड़ों के समान हाड़ौती की गप्पें प्रसिद्ध हैं ।

जिस प्रकार मथुरा के पेड़े बहुत अच्छे होते हैं, उसी प्रकार हाडौती की गप्पों में कल्पना की उडान बडी ऊँची होती है ।

९७३. मन क हारचाँ हार छ, मन क जीत्याँ जीत ।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

मनोबल से अवश्य सफलता मिलती है।

मन में उत्साह हो तो सफलता मिल जाती है और हिम्मत हार जाये, तो असफलता निश्चित है।

९७४. **मन का लाडू फीका क्यूं ?**

मन के लड्डू फीके क्यों ?

जब केवल इच्छा ही करना है, तो फिर छोटी क्यों करना।

पूरे न हो सकने वाले कार्यों के प्रति जो कुछ सोचा जाय, उसमें कमी नही रहनी चाहिए।

९७५. **मन को कोरो भरम ई भरम छ।**

मन का कोरा भ्रम ही भ्रम है।

प्रासंगिक बात का पूर्णरूपेण सत्य न होना।

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को सन्देह की दृष्टि से देखे, तब उस कार्य से परिचित व्यक्ति इस कहावत द्वारा उसकी वास्तविकता को प्रदर्शित करता है।

९७६. **मनख की मरयां पाछ्ं याद आव छ।**

मनुष्य की मरने के पीछे याद आती है।

मनुष्य के गुण उसकी मृत्यु के पश्चात् ही स्मरण किये जाते हैं।

कोई व्यक्ति अपने जीवन में आलोचना का ही पात्र बना रहे तथा उसकी मृत्यु के पश्चात् जब उसके गुणों पर भी दृष्टि डाली जाये, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

९७७. **मनख को मनख सूं सो बार काम पड़ छ।**

मनुष्य का मनुष्य से सौ बार काम पड़ता है।

किसी मनुष्य को तुच्छ समझकर उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

मनुष्य का काम मनुष्य से पड़ता ही है। अतः सभी मनुष्यों की अवसर आने पर अवश्य सहायता करना चाहिये। सम्भव है, समय पर हमें भी सहायता की आवश्यकता हो जाये।

९७८. **मनख जमारो बार बार थोड़ी ई मलं छ।**

मनुष्य जन्म बार बार थोड़े ही मिलता है ।

मनुष्य जन्म पाकर आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान अवश्य देना चाहिए ।

इस कहावत द्वारा आलसियों को सदुपदेश दिया जाता है, तथा उनको प्रेरित किया जाता है कि वे ईश्वरोपासना में अपना मन लगाये ।

९७९. मनख तो गार को ई बरो बणायो छ ।

मनुष्य तो गार (मिट्टी) का ही बुरा बनाया है ।

शत्रु के अपमान का प्रतिकार अवश्य करना चाहिए ।

मिट्टी के पुतले को देखकर हिंसक पशु भी डर जाते हैं, अतः चलते फिरते शरीर वाला मनुष्य क्या नही कर सकता ?

९८०. मनख-मनख आँतरो, कोई होरो, कोई काँकरो ।

मनुष्य-मनुष्य अन्तर, कोई हीरा कोई कंकर ।

विद्वान और मूर्ख दोनों प्रकार के व्यक्ति होते हैं ।

मनुष्य एक से गुणों वाले नही होते । कोई हीरे के सदृश गुण वाला होता है; तो कोई कंकड़ के सदृश निर्गुणी होता है ।

९८१. मनखाँ माया, बरखाँ छाया ।

मनुष्यों से माया, वृक्षो से छाया ।

घर में मनुष्यों से ही शोभा होती है ।

जिस प्रकार वृक्षो से छाया होती है, उसी प्रकार मनुष्यों के कारण ही सब चहल-पहल होती है ।

९८२. मंन खो छो दाल राँडजी, थंन राँधी भाजी ।
ज्यूँ चाल ज्यूँ चाल राँड जी, तू राजी ज्यूँ राजी ।

मैंने कहो थी दाल राँडजी, तूने राँधी भाजी ।
ज्यों चले त्यों चल राँड जी, तू राजी ज्यों राजी ।

कर्कशा स्त्री के कार्यों के प्रति उदासीन हो जाना ।

एक पुरुष अपनी अनुशासनहीन पत्नी से कहता है कि हे राँड ! मैंने दाल बनाने के लिए कहा था, परन्तु तूने साग बना लिया । अब तू कहना नही मानती तो जैसे चलना चाहे, वैसे चल ।

९८३. मन चंगा तो खटोती में गंगा ।

मन चङ्गा तो कठौती में गङ्गा ।

मन शुद्ध होने पर सारे क्रिया कलाप व्यर्थ हैं ।

तीर्थ, पूजा आदि जो धार्मिक कृत्य हैं, वे सब मन शुद्धि के साधन हैं । अतः जिसका मन शुद्ध है, उसके लिए यह आडम्बर व्यर्थ है ।

९८४. मैंन्त्यो तो हाँडो चढा'र आवे छै ।

मजदूर तो हँडिया चढ़ाकर आता है ।

मजदूर के पास संचित धन नहीं होता ।

मजदूर जो मजदूरी करने निकलता है, तो प्रायः यह आशा लेकर निकलता है कि पारिश्रमिक मिलते ही उदर-पूर्ति हो जायेगी । पारिश्रमिक देने में आनाकानी करने वाले से उसके द्वारा यह कहावत कही जाती है ।

९८५. मन्तर म्हूँ फड़ूं छूं, बाँबी में हात तू घाल ।

मंत्र मै पढ़ता हूँ, बाँबी में हाथ तू डाल ।

स्वयं दूर रहकर खतरे की वस्तु में दूसरे को फँसाना उचित नहीं है ।

एक स्वार्थी व्यक्ति दूसरे से कहता है कि साँप को पकड़ने के लिए बिल मे हाथ तू डाल, मन्त्र मै पढ़ता हूं ।

९८६. मन मल्यो दो जणाँ, झक मार सो जणाँ ।

मन मिला दो जने, झक मारे सौ जने ।

लोगों की आलोचनाओं से दो व्यक्तियों का दृढ़ प्रेम नहीं टूट सकता ।

जब दो व्यक्तियों का मन मिल जाता है, तो सौ व्यक्ति भी उनका कुछ नहीं कर सकते ।

"मिया-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी"—कहावत में भी इसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति हुई है ।

९८७. मन में भावे, मूंड हलावे ।

मन में भावे, मुंड (सिर) हिलावे ।

अभिलषित वस्तु के लिए संकोचशील नहीं बनना चाहिए ।

जब किसी व्यक्ति को किसी वस्तु की चाहना हो तथा दिखावे के लिए मना करे, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

६८८. मन लाग्यो मंडको सूं, तो पदमणी कुचमाल।

मन लगा मेंढकी से, तो पद्मिनी कुछ माल (तुच्छ)।

प्रेम के कारण कुरूप भी अति सुन्दर हो जाते हैं।

मन जिसे चाहने लगे, उसके बदसूरत होने पर भी वह सर्वश्रेष्ठ है।

६८९. मनसा डाकण, सक्या भूत।

मशा डाकिन, शका भूत।

डायन और भूतों का कोई अस्तित्व नहीं है।

मनुष्य की इच्छा तो डाइन है तथा भय ही भूत है। अत्यधिक रूप से किसी वस्तु की इच्छा करना तथा किसी भी वस्तु से डर जाना ही डाकिन और भूत बन जाते है।

६९०. मनसाराम भाणजा, मनका मन में ई जाण जा।

मशाराम भानजा, मन का मन मे ही जान जा।

परिस्थिति से विचारों का जान लेना।

बिना कुछ कहे ही जब किसी परिस्थिति से उसके विचार स्पष्ट हो जाते है, तब यह कहावत कही जाती है।

६९१. मरगसर बाज्या न बाइरा, रोअणी तपी न जेठ।
बाबल बलदा बेचद्यो, समे पलटगो ठेठ।

मृगशिर चले न वायु, रोहिणी तपी न जेठ।

बाबल (पिता) बलीवर्द बेचदो, समय पलट गया ठेठ।

जिस वर्ष मृगशिर नक्षत्र में तेज हवा न चले तथा जेठ मास के रोहिणी नक्षत्र में भीषण गर्मी न पड़े, उस वर्ष अकाल पड़ता है।

कृषक बालिका अपने पिता से कहती है कि हे पिता! जब मृगशिर में तेज वायु न चली तथा रोहिणी में अत्यधिक गर्मी नहीं पड़ी, तो इस वर्ष वर्षा नही होगी। आप बैलों को बेच दें, क्योंकि वर्षा के अभाव में कृषि होगी ही नहीं। अब समय पलट गया है।

९९२. **मरगा मरतो का गेल जातो का कांई मरगा ?**

मरेंगे मरने वाली के, गेल जाने वाली के क्या मरेंगे ?

जो अपनी राह जाता है और अपनी राह आता है, उस पर विपत्ति कदापि नहीं आ सकती।

जो जान बूझकर मृत्यु का आह्वान करते हैं, उन पर अवश्य ही आपत्ति आती है, किन्तु जो सन्मार्ग पर चलते हैं, उनका अनिष्ट कभी नहीं होता।

९९३. **मरगो तो आपणां जीव सूं जावगो।**

मरेगा तो अपने जीव से जायेगा।

समझाने पर भी न समझने वाला व्यक्ति अपना ही अनिष्ट कर लेता है।

जब कोई व्यक्ति कोई भयङ्कर काम करे तथा मना करने पर भी न माने, उस समय उसे समझाने वाला हार मान कर इस कहावत का प्रयोग करता है।

९९४. **मर छ'र मलांण गाव छ।**

मरता है और मल्हार गाता है।

शक्ति न होने पर भी काम करने की डींग मारना।

कोई रोग ग्रस्त व्यक्ति अवसर आने पर किसी काम को सहजतया पूरा करने की डीग मारने लगे, उस समय उसको यह कहावत कहकर ऐसा करने से रोका जाता है।

९९५. **मरजाव तो रोबा हाला बी न मल।**

मरजाये तो रोने वाले भी नही मिले।

संकटग्रस्त होने पर सान्त्वना देने वाले भी नहीं मिलते।

मनुष्यों के कई बार समझा लेने पर भी कोई व्यक्ति अपनी आदत न छोड़े, तब उसके भविष्य की कठोर कल्पना के रूप में उसको यह कहावत सुना दी जाती हैं।

९९६. **मरता को लेरां कुंण मर छ।**

मरने वाले के साथ कौन मरता है ?

अत्यधिक स्नेह होने पर भी मरने वाले के साथ कोई भी नहीं मरता।

कोई मनुष्य अपने किसी मृत सम्बन्धी के लिए बहुत दुःख करे, उस समय उसको सान्त्वना देने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

९९७. मरता न सबी मार।

मरते को सभी मारते है।

आपद्ग्रस्त गरीब को सभी सताते है।

निर्धन या दुर्बल व्यक्ति को जब अधिकाश व्यक्तियों द्वारा धोखा दिया जाय तथा उदारता कही भी न देख पड़े, उस समय यह उक्ति कही जाती है।

९९८. मरतो क साम कोई बो न आव।

मृत्यु के सामने कोई भी नही आता।

अपना जीवन सभी को प्यारा लगता है।

मरने से सभी व्यक्ति डरते है। जब सामने कोई युद्ध हो रहा हो, उस समय बीच बचाव करने की किसी मे हिम्मत नही होती।

९९९. मरद को जबान अर गाडी को पायो तो फरतोई र छ।

मर्द की जीभ और गाड़ी का पहिया तो फिरता ही रहता है।

मनुष्य को सदैव अपनी बात पर दृढ़ रहना चाहिए।

कोई व्यक्ति जब अपनी कही हुई बात को बदलता जाये, उस समय व्यंग्योक्ति के रूप में यह कहावत कहकर बतलाया जाता है कि तुम्हारी जीभ गाड़ी के पहिये के समान फिरती रहती है।

१०००. मरद तो ऊई, जींक दांत दोई।

मर्द तो वही, जिसके दाँत दो ही।

दो दाँत वाले ही मर्द होते हैं।

बूढ़े व्यक्ति स्वभाव से ही विनोद-प्रिय होते हैं। जिनके दाँत टूट जाते हैं, वे हँसी में ऐसा कहा करते है।

१००१. मरदां का द्वाला तो मसाणां में चुक छ।

मर्दों के दिवाले तो श्मशानों में चुकते हैं।

मर्द तो ऋण लेकर भी शान से ही रहते हैं।

जिस व्यक्ति पर बहुत अधिक कर्जा हो तथा उससे जब सहानुभूति पूर्वक ऋण चुकाने के लिए कहा जाये, तब वह अपने कष्ट को भुलाने के लिए इस कहावत का प्रयोग करता है।

१००२. मर न माँचो छोड।

मरे न माँचा (पलंग) छोड़े।

ऐसा व्यक्ति जो न मरता हो और न स्वस्थ होता हो, उसकी सेवा करते-करते लोग थक जाते हैं।

इस प्रकार के व्यक्ति जो मरें न पलंग छोड़ें, दोनों प्रकार से दुःख देते है। अतः जब लोग उनकी सुश्रूषा करते-करते तङ्ग आ जाते है, तब ऐसा कह देते है।

१००३. मरबा क काँई गाडा जुप छ ?

मरने के क्या गाड़े जुतते है ?

मृत्यु जरा सी देर में हो जाती है।

मृत्यु के लिए तैयारी नही करनी पड़ती। किसी भी व्यक्ति की मृत्यु चाहे कभी हो सकती है। गाड़ी को जोतने में जितनी देर लगती है, उतनी भी देर मृत्यु होने में नही लगती।

१००४. मरबा क कारण बदवार हेर छ।

मरने के लिए बुधवार ढूँढ़ता है।

बुधवार के दिन यात्रा नहीं करनी चाहिए।

हाड़ौती प्रान्त में हिन्दू प्रायः बुधवार के दिन घर नहीं छोड़ते। इस दिन यात्रा करने से मुत्यु या मृत्यु के समान महान् कष्ट होता है, ऐसा लोगों का मत है।

१००५. मरबा को, न जीबा को।

मरने का, न जीने का।

द्विविधा में फँस जाना।

जब किसी व्यक्ति को एक ओर से कार्य करने का आदेश मिल जाये तथा दूसरी ओर से उसे न करने की प्रार्थना की जाये, ऐसे समय में वह व्यक्ति किकर्त्तव्यविमूढ़ होकर इस कहावत द्वारा अपनी परिस्थिति सामने रखता है।

१००६. मरबा चाल्या अर घरक तालो जुड़ चाल्या।

मरने चले और घर के ताला लगा चले।

वृद्धावस्था में भी माया से अत्यधिक मोह होना।

आसन्न मृत्यु व्यक्ति भी अपनी सम्पत्ति से अधिक प्रेम करे तथा यह चाहे कि मेरे घर के ताला लगा देना ताकि मेरे बाद मेरा सामान सुरक्षित रहे। यह प्रवृत्ति समाज में आलोचना की वस्तु बन जाती है। यह कहावत ऐसे ही व्यक्ति के लिए कही जाती है।

१००७. मरबा सूं काट्टो भारी।

मरने से काट्टा (द्वादशा या मृत्युभोज) भारी।

नष्ट हुई वस्तु पर अधिक व्यय होना।

मरने वाला व्यक्ति मरगया, उसके लिए जितना दुःख हो उससे अधिक उसके क्रियाकर्म, भोज आदि करने में व्यय का दुःख हो जाता है।

देखिये कहावत न० ३६९।

१००८. मरचा प दो लात।

मरे पर दो लात।

अति संकटग्रस्त व्यक्ति से बदला लेने में कौनसो बुद्धिमानी है ?

प्रायः अज्ञानी अपना प्रतिशोध लेने के लिए मनुष्य को ऐसी परिस्थिति में सताते है, जब वह स्वयं मर रहा हो।

१००९. मरचा का माल प कांई ताकबो ?

मरे के माल पर क्या ताकना ?

मरे हुए व्यक्ति की सम्पत्ति पाने की लालसा व्यर्थ है।

जो मनुष्य मृतक व्यक्तियों की सम्पत्ति को हड़प करने की इच्छा रखते है, उनको इस घृणित कार्य से रोकने के लिए यह कहावत सुनाई जाती है।

१०१०. मर्यां पाछ्ं कुंण देखबा आव छ ?

मरने के पीछे कौन देखने आता है ?

मरने के बाद कोई काम हो तो व्यर्थ है ।

यदि कोई मरे हुए व्यक्ति की बुराई करे, तब लोग कहते हैं कि मरने के बाद उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करो, वह देखने थोड़े ही आता है ।

१०११. मर्या बेटा की आँख्यां कचोला हांसी होव छ ।

मरे बेटे की आँखें कचोले (बहुत बड़ी) जैसी होती है ।

नष्ट हुई वस्तु अमूल्य होती है ।

जब किसी के द्वारा दूसरे व्यक्ति की वस्तु खो जाती है या नष्ट हो जाती है, तो उसे उसके मालिक की इच्छानुसार मूल्य चुकाना पड़ता है ।

१०१२. मर्यां हाँण, न जीवतां पछतावणों ।

मरने पर हानि, न जीते रहने पर पश्चात्ताप ।

मरना तथा जीना एक समान होना ।

किसी निर्धन वृद्ध के कोई उत्तराधिकारी न हो, उसे किसी प्रकार की कोई चिन्ता नही रहती । अतः इस कहावत द्वारा उसकी परिस्थिति का दिग्दर्शन कराया जाता है ।

१०१३. मरी मा को काल्ज्यो बी बेटा बेई तड़फ छ ।

मरी हुई मा का कलेजा भी बेटे के लिए तड़फता है ।

माता को अपने पुत्र की अत्यधिक चिन्ता होती है ।

माता का अपने पुत्र के प्रति घना स्नेह होता है । अतः जब कभी पुत्र के संकट की बात मरणासन्न माता भी जान ले, तो उसका हृदय करुणा से भर जाता है ।

१०१४. मरो मा'र ज्यो माँवसी ।

मरे मा और जिये मासी ।

मासी का प्रेम माता से भी अधिक होता है ।

मा से अधिक मासी प्यारी होती है । अपने भानजे को वह खूब

खिलाती है। उसके लाड़ प्यार के कारण यह कहावत कही जाती है।

१०१५. मसाणाँ का लाखड़ा पाछा न आव।

श्मशानो के लक्कड़ पीछे नही आते।

नीचों को सौंपी हुई वस्तु कभी वापिस नहीं मिलती।

मुर्दे के जलाने के पश्चात् लकड़ियाँ बच भी जाये तो वापिस नहीं लाई जाती। नीच स्थान में पहुँची हुई वस्तु को स्वय मालिक भी छोड़ देते है।

१०१६. मरचो दायमों जीवता गूजरगोड़ न खाग्यो।

मरा हुआ दायमा जीवित गुर्जरगौड को खा गया।

दायमा ब्राह्मण बड़ा धूर्त होता है।

दायमा ब्राह्मण मित्र को भी धोखा देने मे नही चूकता। इस कहावत के पीछे एक कहानी है—

गुर्जरगौड़ तथा दायमा मित्र थे। दायमा मरने लगा तो अपने मित्र से कह गया कि मरने के पश्चात् मेरे सिर में एक लोहे का कीला ठोक देना। अपने मित्र की इच्छा पूरी करने में वह गुर्जरगौड़ पकड़ा गया और मित्र को मारने के झूठे अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

१०१७. मसायो बाणचो अर ठगायो रजपूत मन में ईं समझ जाव छ।

मसाया बनिया और ठगाया राजपूत मन मे ही समझ जाता है।

धोखा खाने पर किसी से न कहना।

बनिया और क्षत्रिय स्वभाव से ही चतुर होते है। ये धोखा खाने पर भी किसी से कहते नही है।

१०१८. मसूंईं गोरी अर पील्या को रोग।

मुझ से ही गौरी और पीलिये का रोग।

अपनी ही वस्तु को सुन्दर समझने वाला दूसरे की वस्तु में दोष निकालता है।

अपने रूप पर गर्व करने वाली स्त्री कहती है कि मुझ से भी यदि कोई अधिक रूपवती होगी, तो वह पाडु रोगवाली होगी।

१०१९. मा का पेट मँ सूँ कुण सीख'र आव छै ?

मा के पेट मे से कौन सीख कर आता है ?

काम सीखने से ही आता है, अपने आप नहीं ।

सब व्यक्तियों को अनुभव या अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त होता है । जन्म से ही कोई ज्ञानी नही होता ।

१०२०. मा का पेट मँ सूँ सरप बी कढ, तो बी बरो न लाग ।

मा के पेट में से सर्प भी निकले, तो भी बुरा नही लगता ।

माता को अवगुणी पुत्र भी प्यारा होता है ।

माता अपने अवगुणी पुत्र पर भी उसी प्रकार का स्नेह रखती है, जैसा गुणी पुत्र पर ।

१०२१. माँखी खायाँ न मर, अर मलका सूँ मरजाय ।

मक्खी खाये नही मरे और मलके (सदेह) से मरजाये ।

सन्देह का उपचार कठिन है ।

मक्खी खा लेने पर भी उसकी याद न होने से कोई हानि नही हो सकती । किन्तु जब मक्खी खाने का केवल सन्देह हो जाये, तो परिस्थिति भयानक हो जाती है । भ्रम मे पड़े हुए ऐसे व्यक्ति को देखकर यह कहावत कही जाती है ।

१०२२. माँग्यो आव माल, जींके काँई कुमी र लाल ?

माँगा आये माल, उसके क्या कमी रे लाल ?

जिनको माँगने से ही वस्तु मिल जाती है, उनको किसी वस्तु का अभाव नहीं खलता ।

माँगकर काम चलाने वालो को कोई कष्ट नही होता । कष्ट तो उन्हें होता है, जो परिश्रम करके प्राप्त करते हैं ।

१०२३. मा जण्या सात पूत, करम दचो बाँट-चूँट ।

मा ने जने (पैदा किये) सात पुत्र, करम (भाग्य) दिया बाँट-चूट ।

एक ही माता के पुत्रों का भाग्य एक सा नहीं हो सकता ।

सब मनुष्यों का भाग्य भिन्न-भिन्न होता है। अतः एक ही माता के उदर से जन्म लेने पर भी भाग्य की भिन्नता बनी रहती है।

१०२४. माँटो न मारो अर गाँव सूं रूसे !

पति ने मारा और गाँव पर रोष करे !

एक का क्रोध दूसरे पर निकालना।

जब कोई व्यक्ति किसी सबल के द्वारा तंग किया गया हो तथा उससे कुछ न कहकर जब वह अन्य सामान्य व्यक्तियों पर क्रोध करे, उस समय इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१०२५. माँथा प पड़ जदी तोल पड़ छ।

मस्तक पर पड़े, तभी मालूम पड़ती है।

उत्तरदायित्व का काम सिर पर पड़ने से ही कार्य का ज्ञान होता है।

जब कोई व्यक्ति किसी काम को साधारण तथा सरल बताये, तब उससे यह कहावत कही जाती है।

१०२६. माँथो फूटबो छोखो, पण करम फूटबो बरो।

मस्तक फूटना अच्छा, पर करम (भाग्य) फूटना बुरा।

भाग्यहीन व्यक्ति हर तरह से मारा जाता है।

सिर फूटने पर तो उपचार द्वारा शीघ्र ही ठीक कर लिया जा सकता है, किन्तु भाग्य फूट जाने पर उसका सुधारना मनुष्य की शक्ति के बाहर है।

१०२७. मान की तो राबड़ो ई भलो।

मानकी तो राबड़ी ही भली।

सम्मान के साथ प्रस्तुत की गई तुच्छ वस्तु भी ऊँचे पदार्थों से श्रेष्ठ है।

ज्वार या मक्का के दलिये को छाछ में पकाकर राबड़ी बनाई जाती है। सच्चे हृदय से रखा गया नगण्य पदार्थ भी अच्छी से अच्छी मिठाइयों की अपेक्षा, जो अनादर पूर्वक रखी गई हों; श्रेष्ठ होता है।

१०२८. मान तो देव, न तो भींत का लेव।

माने तो देव, नहीं तो भींत के लेव (पलास्तर की पपड़ी)।

श्रद्धा या विश्वास के कारण ही देवता की मान्यता है।

भावना तथा विश्वास से ही देवताओं का अस्तित्व है, अन्यथा उनकी गिनती दीवाल से गिरी हुई मिट्टी (लेवड़े) के समान है।

१०२९. मान न मान, म्हूँ थारो म्हमान।

मान न मान मैं तेरा मेहमान।

जबरदस्ती किसी के गले पड़ना।

बहुत से व्यक्ति दूसरे पर अपनी धौंस जमाने की वृथा चेष्टा किया करते हैं। उनके इस कार्य की आलोचना इस कहावत द्वारा होती है।

१०३०. मान न समन, अर म्हूँ लाडा की भ्वा।
अमगी अमगी वा फरै, अर ऊँठ्या खावै प्वा।

माने न सम्मान करे, और मैं लाड़े की बुआ।
उमगी उमगी वह फिरे और झूठे खावे पुआ।

आदर न होने पर बीच बीच में अपनी टाँग अड़ाना मूर्खता है।

कोई स्त्री अपनी सहेली से कहती है कि वह स्त्री अपने आदर सम्मान को ताक मे रखकर दूल्हे की बुआ बन गई है। विवाह के उस घर में उमङ्ग के साथ फिरती है, किन्तु झूठे पुये खाती है।

१०३१. मान पाँच्या पाँच की, न मानूँ पचास की।

मान पाँचू पाँच की, नही मानूँ पचास की।

दुराग्रही किसी का परामर्श मानने को उद्यत नहीं होता।

किसी व्यक्ति से कहा गया कि भाई पचों का तो कहना मान ले, उसने कहा कि तुम पाच की कहते हो, मै पचास की नही मानता।

१०३२. मान मनाई, खीर न खाई, दूनाँ चाटण आई।

मान मनाई, खीर न खाई, दोने चाटने आई।

आदर पूर्वक कार्य करने से प्रतिष्ठा बनी रहती है।

किसी व्यक्ति से सम्मानपूर्वक काम करने को कहा जाये। वह उस समय न करके बाद में उसी काम को करे, उस समय यह कहावत प्रयुक्त होती है।

१०३३. मामा क घर ब्याव, अर मा परोसबा हाल्यो ।

मामा के घर विवाह और मा परसने वाली ।

जब सभी परिस्थितियाँ अनुकूल हों, तो लाभ ही लाभ है ।

मामा के यहाँ विवाह और मा परसने वाली, फिर क्या चाहिए ? बेटा कमी क्यो रखने लगा ?

१०३४. मा ! मा ! कोडी में हातो जाव छ, क बेटा कोडी ई कोई न ।

मा ! मा ! कौड़ी में हाथी जाता है, कि बेटा कौड़ी ही नही है ।

निर्धनता में सस्ती वस्तु खरीदने की भी सामर्थ्य नहीं होती ।

पुत्र ने अपनी दरिद्र माता से कहा कि कौड़ी में हाथी आ रहा है । मा ने कहा कि बेटा कौड़ी ही नही है । थोड़े समय पश्चात् जब वे धनी हो गये, तब पुत्र ने कहा कि मा लाख रुपये मे हाथी बिकता है । उस समय माता ने कहा बेटा लाख नही दो लाख दे दो ।

१०३५. मामाजो सुस्सा क तीन टाँग, न भाणजाजी च्यार ।

मामाजी सुस्से (खरगोश) के तीन टाँग, नही मानजे जी चार ।

सत्य बात को स्वीकार न करना ।

कोई व्यक्ति झूठी बाते बनाकर किसी भी कार्य को करने या किसी वस्तु को देने से मना करदे, उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१०३६. म्याऊँ को मूंडो कुण पकड़ ?

म्याऊँ का मुँह कौन पकड़े ?

भयङ्कर काम करने को कोई भी तैयार नहीं होता ।

बिल्ली के उत्पात को देखकर चूहों ने सभा की तथा उसको पकड़ने के लिए अलग-अलग अङ्ग बाँट लिए । किन्तु मुँह पकड़ने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ । इसी प्रकार अपनी जान को जोखिम में कोई नही डालना चाहता ।

१०३७. म्याँजी की दुवाई पाद बरघोबर ।

मियाँजी की दुहाई पाद बराबर ।

अयोग्य व्यक्ति की बात को कोई भी स्वीकार नहीं करता ।

अनुभव रहित व्यक्ति की बातें निरर्थक होती है। अतः समाज में उनका स्थान नगण्य होता है।

यह एक ऐतिहासिक कहावत है। सन् १८५७ के विद्रोह के समय मेहराब खाँ नामक फौजी सरदार ने कोटा नगर पर अधिकार करके अपनी दुहाई फिरवा दी थी। कुछ दिन बाद ही वह कोटा नरेश द्वारा बन्दी बनाया जाकर मरवा दिया गया। उसकी दुहाई का प्रभाव कोटा की जनता का शासक के प्रति विश्वास नहीं डिगा सका।

१०३८. **म्याँजी जोड़ तार-तार, बीबूजी सेलाई सरकाव छ।**

मियाँजी जोडे तार-तार, बीबीजी सेले ही सरकाती है।

पति का मितव्ययी तथा पत्नी का बदखर्च होना।

मियाँजी बडी कठिनता से तार-तार जोड कर कपड़े का थान तैयार करते है, किन्तु बीबी चुपके से थान के थान खर्च कर देती है। कोटा जिले के अन्तर्गत सीसवाली कस्बे में बनने वाले कपड़े को "सेला" कहते है।

१०३९. **म्याँ बीबी राजी, तो काँई करगो काजी ?**

मियाँ बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी ?

जब दो व्यक्ति आपस में निबट लें, तो दूसरों का बीच में पड़ना व्यर्थ है।

जहाँ दोनो पक्षवाले परस्पर मिल जाये, तो दूसरा व्यक्ति उनका फैसला क्या कर सकता है ?

१०४०. **माया थारा तीन नाँव, परस्यो, परसू, परसराम।**

माया तेरे तीन नाम, परसिया, परसू, परशुराम।

मनुष्य का आदर धन के अनुपात से होता है।

जब धन नही होता तो लोग परसिया कहकर पुकारते है। जब कुछ धन हो जाता है तो परसू कहने लगते है और जब आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी हो जाती है, तो वह परशुराम शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

१०४१. **माया न डर छ काया न काँई को डर ?**

माया को डर है, काया को किसका डर ?

धनवान को अपने लुटजाने का भय रहता है, निर्धन को नहीं।

पास में धन हो, तो हर समय तथा हर स्थान पर यही भय बना

रहता है कि कही चुरा न लिया जाये, किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं रहता, वह निर्भयता के साथ विचरण करता है ।

१०४२ **मार अर रोबा न दे ।**

मारे और रोने न दे ।

अत्याचारी से सब डरते हैं ।

अत्याचारी व्यक्ति दुर्बलों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं तथा भविष्य मे कोई बात न करने के लिए त्रास भी दिखाते है ।

१०४३. **मार कम, घसीट जादा ।**

मारे कम, घसीटे ज्यादा ।

अधिक परेशान करना ।

किसी व्यक्ति को इस प्रकार तङ्ग किया जाय कि स्पष्ट रूप से तो लोगो को मालूम कम पड़े और पीडा अधिक हो । उस समय इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

१०४४. **मार की मारी तो भूत भाग छ ।**

मार के मारे तो भूत भागता है ।

मार पड़ने पर बड़े-बड़े बदमाश सीधे हो जाते हैं ।

मार से सब डरते है । उद्दण्ड से उद्दण्ड व्यक्ति भी मार के कारण घबरा जाते है ।

१०४५. **मारबा हाला की डाँग पकड़ले, पण बोलबा हाला की जीब न पकड़ी जावै ।**

मारने वाले की लाठी पकडी जा सकती है, पर बोलने वाले की जीभ नही पकड़ी जा सकती ।

गाली देने वाले को नहीं रोका जा सकता ।

लाठी का प्रहार रोकना सरल है, किन्तु जिसका स्वभाव गाली देने का हो, उसे छुड़ाना सरल नही है ।

१०४६. **मारबा हाला सूं बचाबा हालो बधकर छ ।**

मारने वाले से बचाने वाला बढ़कर है ।

रक्षक का चरित्र अति उच्च समझा जाता है।

समाज में हिंसक प्रवृत्ति वालों की अपेक्षा उदार चित्तवृत्ति वाले का स्थान अधिक ऊँचा है। उदारता एवं करुणा दैवी गुण हैं तथा हिंसा दानवीय अवगुण।

१०४७. **मार मार डँगड़ा पं चढावं, तो बोरचा थोड़ी ई ताड़ छं।**

मार मारकर मचान पर चढ़ावे, तो तोते थोड़े ही भगाता है।

जो काम प्रेम से हो सकता है, वह बल से नहीं।

किसी व्यक्ति को जबर्दस्ती खेत की रखवाली के लिए मचान पर चढ़ा दिया जाये, तो वह तोते (जो फसल को खाते हैं) नहीं भगा सकता। यहाँ तोते के लिए प्रयुक्त 'बोरचा' शब्द द्रष्टव्य है।

१०४८. **माल खावं माँटी को, अर गीत गावं बोरा का।**

माल खाये पति का और गीत गाये वीरा (भाई) के।

खाये किसी का और प्रशंसा करे दूसरे की।

वैसे नियम तो यह है कि जिसका खावे उसका गावे। इसके विपरीत कार्य करने वाले गुणचोर व्यक्ति के लिए इसका प्रयोग होता है।

१०४९. **माल मंणासा नीपजे, तेज कंणासा खाय।**

माल मणासा नीपजे (उत्पन्न होता है), तेज कणासा खाय।

माल जितना उपजता है, भाव की तेजी में उससे सौ गुना अधिक समाप्त हो जाता है।

अनाज खेतो में बहुत पैदा होता है, किन्तु जब माल मँहगा होता है तो सैकड़ों कणासों की खरीददारी हो जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि तेजी के कारण बाजार में अन्न के दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं।

[तौल–१२ मन की १ माणी, १०० माणी का १ मणासा तथा १०० मणासे का १ कणासा]

१०५०. **माला हाला मेसरी, पोथी हाला भट्ट।**
कड़ा हाली पछेरो, थीनूँ गला कट्ट।

माला वाले महेश्वरी, पोथी वाले भट्ट।
कड़े वाली पंसेरी, तीनों गले कट्ट।

माला वाला महेश्वरी, कथा कहने वाला भट्ट और कड़ेवाली पंसेरी मनुष्यों को हानि पहुँचाने वाले होते हैं।

माला को देखकर महेश्वरी की ईमानदारी पर विश्वास हो जाता है। कथाभट्ट बाते बनाकर लोगों से पैसा ले जाता है तथा कड़ेवाली पंसेरी द्वारा अधिक माल तुल जाने के कारण हानि उठानी पडती है।

१०५१. मांस बना सब घांस रसोई, दारू बना मुकती नहि होई।

मांस बिना सब घास रसोई, दारू बिना मुक्ति नहीं होई।

मांसाहारियों का मांस और शराब के बिना काम नहीं चल सकता।

मास-मदिरा के प्रेमी व्यक्तियों के द्वारा रचित यह उक्ति है। उनको बिना मांस के भोजन अच्छा नही लगता तथा शराब के बिना उनको आनन्द नहीं आता।

१०५२. म्हां चोड़ा अर बजार सकड़ा।

हम चौड़े और बाजार सँकरा।

अभिमानी बनना अच्छा नहीं है।

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे को कुछ भी न समझता हो तथा अभिमान में चूर हो, उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

१०५३. म्हार टोडा की घट्टी, अर थारो टोड सासरो, तो आपण दोनो साढू-साढू।

मेरे पास टोडे की चक्की और तेरा टोडे में ससुराल, तो हम दोनों साढू-साढू (हुए)।

व्यर्थ का सम्बन्ध स्थापित करना।

यह कहावत संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत आने वाले बादरायण न्याय के समान है। कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति से अपरिचित होते हुए भी किसी व्यर्थ के सम्बन्ध से सम्बन्धी बनना चाहे, उस समय यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

१०५४. म्हारा कांई बाप को ब्याव बगड़ छ ?

मेरे क्या बाप का विवाह बिगड़ता है ?

अपने-अपने काम की चिन्ता सभी को होनी चाहिए।

जो काम अनेक व्यक्तियों का हो, उसकी चिन्ता एक ही व्यक्ति करे, यह कहाँ तक उचित हो सकता है? अतः वह एक व्यक्ति भी उदासीन होकर इस कहावत द्वारा सान्त्वना पा लेता है।

१०५५. **म्हारा घरकाँ न अन्न मलगो, तो बलीता न खँदावगा।**

मेरे घरवालों को अन्न मिलेगा, तो बलीते (ईंधन) को भेजेगे।

आलसी व्यक्ति अपने घरवालों की भी चिन्ता नहीं करता।

अकर्मण्य व्यक्ति सोचता है कि मेरे घरवालों को खाने के लिए अनाज मिल जायेगा, तो वे मुझे जलाने की लकड़ी के लिए भेजेगे। अतः उन्हें अन्न मिले ही नहीं, ताकि मुझे लकड़ी लेने न जाना पड़े।

१०५६. **म्हारी थारी में काँई धरयो छ?**

मेरी तेरी मे क्या रक्खा है?

किसी की निन्दा करने से कोई लाभ नहीं है।

जब कोई व्यक्ति अपना अधिकांश समय किसी की निन्दा में व्यतीत करे, उसके लिए उपदेश के रूप में यह कहावत कही जाती है।

१०५७. **म्हाँरी मलणो का के घर?**

मेरी मिलनी के कितने घर?

बहुत कम समय में लौटने की प्रतिज्ञा।

अधिक परिचय वाले व्यक्ति का समय मिलने-जुलने में अधिक व्यतीत होता है। अतः उसके साथ जाने वाले व्यक्ति ऊब जाते हैं। इस कहावत में साथ जाने वाला व्यक्ति दूसरे की शङ्का को दूर करने के लिए यह उक्ति प्रयोग में लाता है।

१०५८. **मितर सूं चोरी, अर गरू सूं कपट करबा हालो खोडी होव छ।**

मित्र से चोरी और गुरु से कपट करने वाला कोढ़ी होता है।

मित्र से दुराव और गुरु से छल करना अच्छा नहीं है।

यह कहावत एक धार्मिक उपदेश के रूप में है। साधारण सदाचार के नियमों को इस प्रकार की कहावत द्वारा लोगों के हृदय में बैठाया जाता है।

१०५९. मीठी होगी मायड़्यां अर कड़ा होगा लोग ।

मीठी होंगी मायडिया और कड़े होगे लोग ।

कड़वी बात कहने वाले ही सच्चे हितैषी होते हैं ।

एक माता अपनी ससुराल जाती हुई पुत्री को यह उपदेश देती है— "माता के समान बनावटी प्रेम दिखाने वाली स्त्रियाँ अत्यधिक मीठे वचन बोलेंगी, अतः उनके परामर्श मानने योग्य नही हैं । उनके विपरीत तुम्हारे घरवाले तो कड़वे वचन बोलकर ही तुम्हें उचित पथ पर लगायेंगे ।"

१०६०. मींणो थारी माई ने मणस करचो, क बरी करो, अर छोड द्यो, क या नपट ई बरी करो ।

मीनी तेरी मा ने पति किया, कि बुरा किया और छोड़ दिया, कि यह निपट ही बुरा किया ।

बिना सोचे समझे काम को प्रारम्भ करना बुरा तो है, किन्तु उसे प्रारम्भ करके छोड़ देना और भी बुरा है ।

काम करने से पूर्व भली प्रकार सोच लेना चाहिये । यदि किसी काम को उठा लिया, तो वह अच्छा हो या बुरा, उसे पूरा करके ही छोड़ना चाहिये ।

१०६१. मींणो गऊँ को कीणो ।

मीना गेहूँ का कीना (अनाज) ।

छोटी जातियों में मीना जाति श्रेष्ठ होती है ।

छोटी जातियों में मीना उसी प्रकार धनी एवं श्रेष्ठ होता है जैसे अनाजों में गेहूँ श्रेष्ठ होता है ।

१०६२. मुरगी क ताकला को डा भारी ।

मुरगी के तकुवे का डाह भारी ।

गरीब के लिए थोड़ी मार भी बहुत होती है ।

जिस प्रकार मुरगी को गरम तकुवा छुआने पर ही भारी घाव हो सकता है, उसी प्रकार निर्धन व्यक्ति को थोड़ी हानि भी असह्य हो जाती है ।

१०६३. मुरगो न बोल, तो तड़कोई न होव ?

मुर्गा न बोले, तो सबेरा ही न हो ?

कार्य किसी व्यक्ति विशेष के आश्रित नहीं होते ।

व्यक्ति की अनुपस्थिति से भी कार्य सम्पन्न होते ही हैं । अतः कार्य सिद्धि के लिए किसी विशेष व्यक्ति की उपस्थिति आवश्यक नहीं होती ।

"जहाँ न कुक्कुट शब्द है, होत न कहा विहान ?"—कहावत में उक्त प्रकार की शब्दावली के दर्शन होते हैं ।

१०६४. मुल्लांजो को दोड़ मजीत ताँई ।

मुल्लाजी की दौड़ मसजिद तक ।

कोई भी व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर का काम नहीं कर सकता ।

मुल्लाजी पर कोई विपत्ति आती है, तो वे मसजिद तक ही दौड़ सकते हैं । कोई निर्बल तथा असहाय व्यक्ति अपने छोटे या बड़े आश्रयदाता तक ही पुकार कर सकता है ।

१०६५. मूँग सूँ मूँग बडो न होव ।

मूँग से मूँग बड़ा नहीं होता ।

जाति में प्रत्येक व्यक्ति समान होता है ।

जाति में धनी व निर्धनी का भेद नहीं है । निर्धनी का भी आदर उसी प्रकार किया जाता है, जैसे धनी का ।

१०६६. मूँछ मरोड़ा, साँकल तोड़ा ।

मूँछ मरोड़े, साँकल (जंजीर) तोड़े ।

अभिमानी अपने बल का झूठा प्रदर्शन करता है ।

जो व्यक्ति अपनी अल्प शक्ति को आडम्बर से बढ़ाकर दिखाता है, उसके लिए व्याज-स्तुति के रूप में यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

१०६७. मूँठड़ो अर रजपूत तो कटयाँ बना न रे ।

मूँठड़ा और राजपूत तो कटे बिना नहीं रहता ।

अत्यधिक सावधानी रखने पर भी जैसे मूँठड़ा कट जाता है, उसी प्रकार क्षत्रिय भी युद्ध में कट मरता है ।

मूँठड़ा एक प्रकार का कपड़े में गाँठ लगा-लगाकर तय्यार किया

हुआ साफा होता है। उसे बाँध-बाँधकर रंगा जाता है। चाकू इत्यादि से उसके बन्द खोलने पर कहीं से वह कट ही जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय युद्ध में तलवार की धार से कटकर मरजाता है।

१०६८. मूँड माँगी मोत न मल।

मुँह माँगी मौत नही मिलती।

वस्तु का मुँह मांगा मूल्य नहीं मिलता।

मुँह से माँगने पर तो मौत भी नहीं मिलती। खरीददार व्यापारी से कहता है कि भाई इस वस्तु के दाम कम करने ही पडेगे।

१०६९. मूँडा में राम राम, बगल में छुरी।

मुँह में राम राम, बगल में छुरी।

ऊपर से मीठी बातें करना, किन्तु हृदय में कपट रखना।

किसी कपटी व्यक्ति के चरित्र का प्रकाशन करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

१०७०. मूँडा सूँ मीठो बोल, पेट में कतरणयाँ चाल।

मुँह से मीठा बोले, पेट में कैंचियाँ चले।

हृदय में द्वेष-भाव होना।

देखिये कहावत नं० १०६९।

१०७१. मूँडो तो हाती घोड़ा ई न धोव।

मुँह तो हाथी घोड़े ही नही धोते।

प्रातःकाल मुँह धोना आवश्यक है।

सूर्योदय के पश्चात् उठने वाले आलसी व्यक्ति के लिए यह व्यंग्य किया जाता है। जब प्रकृति के जीवधारी ही प्रातःकाल उठकर मुँह न धोयें, तो वह क्यों धोने लगा ?

१०७२. मूँत'र तोलबा हालो छ।

मूत्र करके तोलने वाला है।

कंजूस व्यक्ति प्रत्येक कार्य में लाभ ढूँढ़ता है।

कोई व्यक्ति जब पैसे दो पैसे में कंजूसी करे, उसके लिए यह कहावत

कही जाती है।

१०७३. मूरख की गाल़, हाँसी में टाल़।

मूर्ख की गाली, हँसी में टाल।

मूर्ख के दुर्वचनों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

मूर्ख अपने अज्ञान के कारण ही गाली का प्रयोग करता है। यदि वह समझदार होता, तो ऐसा क्यों करता ?

१०७४. मूरख, गंडक, गुलाम, समझायाँ समझ नहीं।
ठोक्याँ आवै काम, नरमल़ भली न राजिया।

मूर्ख, कुत्ता, गुलाम, समझाये समझें नहीं।
ठोकने पर आवे काम, निर्मल भली न राजिया।

मूर्ख, कुत्ता और गुलाम मार खाकर ही सुधर सकते हैं।

राजिया का दोहा हाड़ौती में भी आ गया है। उसका कहना है कि मूर्ख, कुत्ते तथा गुलाम के साथ नम्रता का व्यवहार अच्छा नहीं है। इनके सुधार का मार्ग तो इनकी मरम्मत करना ही है।

१०७५. म्हूं आयो तू चाल।

मैं आया तू चल।

किसी को कार्य में लगाकर स्वयं कहीं खिसक जाना।

तू काम करना, मैं अभी आया। यह वाक्य किसी व्यक्ति को टालने के लिए प्रयोग में आता है।

१०७६. म्हूं थारी ख़ूं, न तू म्हारी ख़।

मैं तेरी कहूँ, न तू मेरी कह।

स्वयं दूसरे की बुराई न करेंगे, तो वह भी अपनी बुराई नहीं करेगा।

किसी व्यक्ति की निन्दा करने पर वह भी हमारी निन्दा करता है। अतः पहले अपना सुधार करना चाहिये।

१०७७. म्हूं'र म्हारो मँणस्यो, बीच फाणी को कल़स्यो।

मैं और मेरा पति, बीच में पानी का कलश।

जो जिसको प्रिय है, उसको उसी का साहचर्य पसन्द होता है।

पत्नी को पति ही अच्छा लगता हो तथा घर वालों से वह रुष्ट हो, तब दूसरे लोग उससे यह कहावत कहते है ।

१०७८. म्हूँ'र म्हारो सालो, न मूँछ्यो डाढी हालो ।

मैं और मेरा साला, बिना मूँछ का दाढ़ी वाला ।

प्रिय व्यक्तियों के अतिरिक्त दूसरों का सान्निध्य अरुचिकर होता है ।

मैं और मेरा साला है तथा उसका वृद्ध पिता है । वृद्ध होने के नाते उसकी कोई चिन्ता नही है । वह हमारे कार्य में हस्तक्षेप नही कर सकता ।

१०७९. मोत आव छ जद चींट्यां क बी फांखड़ा आजाव छ ।

मौत आती है तब चीटियों के भी पंख आ जाते है ।

मृत्यु के आने पर मनुष्य विपरीत कार्य करने लगता है ।

चीटियों के पंख निकलना उनकी मृत्यु का सूचक चिह्न है । वे उनके मारे ठीक उड़ भी नहीं पाती तथा ठीक चल भी नहीं सकतीं । इसी प्रकार किसी मनुष्य के द्वारा विपरीत कर्म देख पड़े तब यह कहावत कही जाती है ।

१०८०. मोत ख'र थोड़ी ई आव छ ।

मौत कहकर थोड़ी ही आती है ।

मृत्यु का समय निश्चित नहीं है ।

मृत्यु अपने आगमन की पहले सूचना नही देती । सबको मरना अवश्य है । अतः जो कुछ काम करना हो, उसे शीघ्र ही कर डालना चाहिए । मृत्यु किसी क्षण भी आ सकती है ।

१०८१. मोत्यां बचलो लाल छ ।

मोतियों के बीच की लाल है ।

दो भाइयों के बीच एक बहिन सुन्दर लगती है ।

नासिका के एक आभूषण में मोती लगाये जाते है । उनके बीच में एक लाल लगाई जाती है । वह जिस प्रकार सुन्दर लगती है, उसी प्रकार एक बहिन भी दो भाइयों के बीच अति प्रिय होती है ।

१०८२. मोतो तो बांकाई भलो ।

मोती तो बाँके (टेढ़े) ही भले ।

बहुमूल्य वस्तु तो कुरूप होने पर भी सुन्दर है ।

मोती टेढ़े-मेढ़े भी हों फिर भी कीमती होने के कारण उनका यह दोष नगण्य समझा जाता है । इसी प्रकार किसी विद्वान में कोई अवगुण हो, तब भी उसका वैसा ही सम्मान होता है ।

१०८३. मोरड़ा का सा कान ।

मोर के से कान ।

कानों का तीव्र होना ।

मोर की श्रवणेन्द्रिय तीव्र होती है । वह शब्द पर शीघ्र ही अपना ध्यान जमा लेता है । दूर से आती हुई बादल की गर्जन भी उसे सुनाई पड़ जाती है । अतः जिसके कान इतने तीव्र हों, उसके कानों की उपमा मयूर के कानों से दी जाती है ।

१०८४. मोल को मराणों, जींको काँईं सराणो ?

मोल का (मराना) पदार्थ, जिसका क्या सिरहाना ?

मूल्य पर वस्तु देने वाले की उदारता क्यों समझी जाय ?

जो वस्तु मूल्य पर खरीदी गई, उसके विक्रेता का उपकार मानना बुद्धिमानी नहीं है । उसकी उदारता तो तब समझी जाय, जब वह बिना मूल्य वस्तु प्रदान कर रहा हो ।

य

१०८५. यहाँ मरूँ क धणीं क देवर ।

यहाँ मरूँ या धनी (स्वामी) के द्वार ।

शारीरिक स्थिति का अत्यधिक दुर्बल होना ।

किसी पशु अथवा व्यक्ति की उचित व्यवस्था न होने पर जब उसकी स्थिति शोचनीय हो जाये, तब उस स्थिति का इस कहावत द्वारा दिग्दर्शन कराया जाता है ।

१०८६. ये तो कोरी भ्वा का चूंबा छ ।

ये तो कोरी बुआ के चुम्बन हैं ।

बिना लिए दिये ही प्रसन्न करना ।

जब किसी व्यक्ति को धन के अतिरिक्त अन्य साधनों से प्रसन्न करने का उपाय किया जाये और उसे धन की अत्यधिक आवश्यकता हो, तब यह कहावत कही जाती है ।

१०८७. यो घोड़ो अर यो चोगान छ ।

यह घोड़ा और यह चौगान है ।

वस्तु के गुण अवगुण सामने ही देख लेने चाहिए ।

घोड़ा बेचने वाला कहता है कि घोड़े में कोई अवगुण हो तो सामने मैदान पड़ा है, दौड़ाकर देख लीजिए ।

"हाथ कंगन को आरसी क्या"—में भी यही भाव-साम्य दिखाई देता है ।

१०८८. यो बी भो बगड़्यो, अर ऊ बी भो बगड़्यो ।

यह भी भव बिगड़ा और वह भी भव बिगड़ा ।

लोक तथा परलोक दोनों का बिगड़ जाना ।

किसी न करने योग्य कार्य को करने से यह लोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं । अतः कोई अपने बुरे कार्य पर पश्चाताप करता हुआ ऐसा कहता है ।

"द्विविधा में दोनों गये माया मिली न राम"—से उपर्युक्त कहावत की तुलना की जा सकती है ।

र

१०८९. रंग राजा अर पोत परधान ।

रंग राजा और पोत प्रधान ।

अच्छा कपड़ा होना ।

जो कपड़ा रंग तथा पोत दोनों में ही अच्छा हो, उसके रंग को राजा और पोत को प्रधान-मन्त्री की उपमा दी जाती है । कभी कभी व्यंग्य में भी इसका प्रयोग होता है ।

१०९०. रंडवा न रांड मलो, तो खांध धरूं क माथ ?

रँडवे (विधुर) को राँड (स्त्री) मिली, तो कंधे पर रक्खूँ या मस्तक पर ।

अयोग्य व्यक्ति वस्तु के उचित उपयोग को नहीं जानता ।

किसी विधुर को स्त्री मिल जाये, तो वह उसकी इच्छा के अनुसार स्वयं कष्ट उठाकर उचित-अनुचित सब कुछ कर डालता है । उसको इस प्रकार सिर पर चढ़ाये देखकर लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

१०९१. रंडी को जीव हंडी मँ ।

रण्डी का जीव हण्डी में ।

बुरी स्त्रियों का ध्यान सदैव ही खाद्य पदार्थों की ओर लगा रहता है ।

दुराचारिणी स्त्रियाँ भोगलिप्सा के कारण सदैव अच्छे-अच्छे भोज्यों की ओर आकर्षित होती रहती है ।

१०९२. रँध्यो धान कतराक दन र छ ?

रँधा हुआ (पकाया हुआ) धान (अन्न) कितने दिन रहता है ?

वयस प्राप्त लड़कियाँ अपने पतिगृह में ही शोभा पाती हैं ।

जिस प्रकार पका हुआ भोजन अधिक दिनों तक नहीं रह सकता, उसी प्रकार वयप्राप्त विवाहित लड़की अपने पीहर में अधिक दिन नहीं रह सकती । अधिक दिन रहने से उसके चरित्र मे अन्तर पड़ सकता है ।

१०९३. रपटणो घाँटो न बठ'र उतरणों ।

रपटनी (फिसलाने वाली) घाटी को बैठकर उतरना चाहिए ।

आपत्ति जनक कार्य को विचारपूर्वक करना चाहिए ।

किसी समय में जब कि कोई विपदा सामने आगई हो, बड़ी चतुराई एवं समझदारी से काम लेना चाहिए, अन्यथा हानि निश्चित है ।

१०९४. रप्यो तो फाणी मँ गेलो कर दे ।

रुपया तो पानी में गेला (रास्ता) कर दे ।

रुपये से सब कार्य सुलभ हो जाते हैं ।

धन संसार में ऐसी वस्तु है जिसके द्वारा असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं । ऐसा कोई भी काम नहीं है, जो रुपये के द्वारा न किया जा सके ।

१०९५. रै तो आपसूं, अर जावै तो सगा बाप सूं।

रहे तो आपसे और जावे तो सगे बाप से।

स्त्री स्वेच्छा से ही अपने पति के पास रह सकती है।

स्त्री रहती है तो स्वयं ही रहती है। यदि नहीं रहती तो उसे पैदा करने वाले सगे बाप के समझाने पर भी भाग जाती है।

१०९६. रस्त आणों अर रस्त जाणों।

रास्ते आना और रास्ते जाना।

अपने काम से काम रखना चाहिए।

किसी के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

१०९७. रचा काम तो रावण सूं बी न होया।

रहे काम तो रावण से भी नहीं हुए।

जो काम करना है, उसे कर ही डालना चाहिए।

कल के भरोसे पर छोड़ा जाने वाला कार्य शायद ही पूरा होता है। आलस्य के कारण भी काम को शेष नहीं रखना चाहिए।

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगो कब।"

उक्त दोहे में भी कहावत के भाव का ही स्पष्टीकरण हुआ प्रतीत होता है।

१०९८. राई के आंसर परबत छै।

राई की ओट में पर्वत है।

छोटी सी बात के पीछे बड़े रहस्य का छिपा होना।

किसी छोटी सी बात को समझने में बहुत देर लग जाये, तब यह कहावत कहकर प्रेरणा दी जाती है कि थोड़ी सी बुद्धि से काम लेने पर यह रहस्य समझ में आ सकता है।

"तिल की ओट पहाड़ है"—हिन्दी की इस कहावत में भी ऐसी ही शब्दावली मिलती है।

१०९९. राई का भाव तो रात सूं ईं ग्या।

राई के भाव तो रात से ही गये।

अवसर चला जाने पर वापिस नहीं आता।

लोभ के वशीभूत होकर अवसर से लाभ न उठा सकने वालों के लिए यह कहावत कही जाती है। इस कहावत का उद्गम एक कहानी है—

"एक सेठ जी के घर में चोर घुसे। सेठ जी के पास राई बहुत थी। उन्होंने चोरों को धोखा देने के लिये सेठानी से कहा कि अब राई का भाव बहुत बढ गया है। चोर यह सुनकर केवल राई चुराकर ले गये। प्रातःकाल जब वे राई बेचने आये, तब सेठ ने उपर्युक्त कहावत कहकर उनको लज्जित कर दिया। सेठ ने चोरों से हाड़ौती बोली में कहा—"राई का भाव तो रात सूँ ई ग्या, अब तो भर जा पी'से पाई।"

११००. राई को परबत कर, परबत राई समान।

राई का पर्वत करे, पर्वत राई समान।

ईश्वर ही सर्व शक्तिमान् है।

ईश्वर की कृपा से छोटी सी वस्तु बहुत बड़ी हो सकती है तथा बड़ी वस्तु अणु का रूप धारण कर सकती है।

"जे सुमिरे गिरिमेरु सिलाकन, होत अजाखुर वारिधि बाढ़े"—इस पंक्ति में वही भाव-सादृश्य दृष्टिगोचर होता है।

११०१. राई घट, न तल बध।

राई घटे न तिल बढे।

अत्यधिक समानता होना।

जब किन्ही दो वस्तुओं में पूर्णरूपेण समानता हो, उसको प्रदर्शित करने के लिए इसका प्रयोग होता है।

११०२. राख न छाणा, अर उदपर जाणा।

राख न छाना (कंडे) और उदयपुर जाना।

बिना पैसे कोई बड़ा काम नहीं हो सकता।

जब कोई व्यक्ति बिना पैसे कोई बड़ा काम करने की हठ ठान ले, उसके लिए व्यंग्य में यह कहावत कही जाती है।

११०३. राखपत, रखापत।

रखो पत (आदर), रखाओ पत ।

दूसरों का आदर करने पर ही अपना आदर होता है ।

दूसरों के साथ हम जैसा बर्ताव करेंगे, वैसा ही बर्ताव वे हमारे साथ करेंगे ।

११०४. राजा क आई राणी ल्याई ।

राजा के आई रानी कहलाई ।

स्त्री का सम्मान भी उसके पति के अनुरूप ही होता है ।

कोई निर्धन परिवार की कन्या यदि किसी सेठ के यहाँ ब्याही जाये तो उसे सब "सेठानी" शब्द से ही सम्बोधित करेंगे ।

११०५. राजा क पाछ्, अर साऊकार क आग ।

राजा के पीछे और साहूकार के आगे (रहना चाहिए) ।

राजमहल के पीछे तथा धनी के भवन के आगे रहना चाहिए ।

राजमहल के पीछे रहने से राजा की आँखों में न आ सकेंगे तथा धनी के मकान के आगे रहने से हमारा आदर भी धनी के समान ही होगा ।

११०६. राजाँ का राजई न रया ।

राजाओं के राज्य ही न रहे ।

समय के सामने बलशालियों को भी झुकना पड़ता है ।

समय के परिवर्तन के साथ सबका परिवर्तन होता है । अतः जो अपने धन दौलत पर गर्व करता है, उसकी आँखे खोलने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

११०७. राजा बोली ठाडो आव ।

राजा की बुलाई खड़ी (शीघ्र) आवे ।

तत्काल आदेश का पालन होना ।

राजा के अनेक सेवक-सेविकाएँ होती है । राजा की आज्ञा पाते ही वे तत्काल काम करते है । इसी तरह कोई व्यक्ति आत्मश्लाघा से अपने प्रभाव का वर्णन करे, उसके लिए व्यंग्य रूप में यह कहावत कह दी जाती है ।

११०८. रांड को छोरो अर रँडवा को दोजो ।

रॉड (विधवा) का छोरा और रँडवे का दोजा (दूध का काम) ।

विधवा का पुत्र और रँडवे का दूध का कार्य बिगड़ जाता है ।

विधवा के पुत्र पर किसी का अंकुश नही होता तथा वह पिता के अभाव मे उसे अधिक प्यार करती है । इसी प्रकार विधुर दोहने, जमाने, बिलोने आदि का सम्पूर्ण कार्य नही कर सकता ।

११०९. रांड ब'र रंडापो काटबो छाव, पण गाँव का छोरा न काटबा दे ।

विधवा वैधव्य काटना चाहे, पर गाँव के छोरे नही काटने देते ।

प्रायः चरित्रहीन युवक ही विधवाओं के चरित्र को बिगाड़ते हैं ।

विधवा की अन्तःप्रेरणा पतित होने की सलाह नही देती । अशिक्षित होने के कारण गाँव के युवक उसे उल्टा समझा बुझाकर चरित्र भ्रष्ट करने का प्रयत्न करते है ।

१११०. रांड, साँड, सीडो, सन्यासी, यांसूं बच जे सेव काशी ।

रॉड, साँड, सीढ़ो, सन्यासी, इनसे बचे जो सेवे काशी ।

काशी में निवास करने वाले को चाहिये कि वह इन चारों से बचकर रहे ।

काशी मे वेश्याएँ भी अधिक है । वे भोले प्राणियों को फँसा लेती है । वहाँ के साँड भी बड़े भयङ्कर है । घाटों की सीढ़ियाँ भी फिसलाने वाली होती हैं तथा संन्यासी बड़े तान्त्रिक बताये जाते है । अतः काशी-निवास की प्रथम ज्ञातव्य बाते किसी अनुभवी की इस उक्ति द्वारा प्रदर्शित की गई हैं ।

११११. राड़ सूं बाड़ भली ।

राड़ (झगड़े) से बाड़ भली ।

झगड़े से किसी प्रकार अपने को बचाना चाहिए ।

यदि दो पडोसियो में प्रायः लड़ाई-झगड़ा होता रहे, तो उन्हें चाहिए कि वे अपने बीच काँटों की बाड लगालें ताकि एक दूसरे का उधर आना हो न लडाई बढे ।

१११२. रांडा रोती ई रंगी, अर फांवणा झींमताई जावंगा ।

रांडे रोती ही रहेंगी और पाहुने जीमते ही जावेंगे ।

मूर्खों के विरोध से कार्य नहीं रोके जा सकते ।

मूर्ख स्त्रियों के विरोध करने पर भी अतिथियो को भोजन करा ही दिया जाता है ।

१११३. राणी का राणी ईं प्यारा, काणी का काणीईं प्यारा ।

रानी के रानी को प्यारे, कानी के कानी को प्यारे ।

अपनी-अपनी वस्तु सबको प्रिय होती है ।

रानी के पुत्र रानी को प्यारे होते है तथा कानी स्त्री को अपने पुत्र प्यारे लगते है ।

१११४. राणी जी को सालो ।

रानीजी का साला ।

अधिक मुँह लग जाना ।

कोई व्यक्ति किसी धनी के अधिक मुँह लगा हो, तो वह जिसका चाहे उसका अनिष्ट करवा सकता है। विशेषण रूप में इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१११५. राणी न काणी ई मत खो !

रानी को कानी ही मत कहो !

बड़े आदमियों के दोष बतलाये जाने पर वे अप्रसन्न हो जाते है ।

जो आदमी अपने को बड़ा समझता है, वह अपने दोषों को सुनकर क्रोधित हो जाता है ।

१११६. रात भर रोया, मरचो एक, ऊबो पड़ोसी को ।

रात भर रोये, मरा एक, वह भी पड़ोसी का ।

अत्यधिक परिश्रम करने पर भी सफलता न मिलना ।

शिकार की खोज में रात भर इधर-उधर मारे मारे फिरे । बड़ी कठिनता से एक पशु मर पाया, वह भी पड़ौसी के हाथ से ।

१११७. रात मं रचूंदो आव, दन मं सूझ ई न ।

रात में रतौंधी आये, दिन में सूझे ही नहीं ।

आँखों से कम दिखाई देना ।

जिसको दिन में भी कम दिखाई देता हो, उसके लिए व्यंग्यात्मक रूप से इस कहावत का प्रयोग होता है।

१११८. रात राणो अर बू काणो।

रात रानी और बहू कानी।

वधू के दोष बताना।

पर्दा करने वाली बहू जब रात्रि मे पर्दा नही करती, तो प्रायः उसका मनो-विनोद करने की दृष्टि से यह कहावत कही जाती है।

१११९. राबड़ी मं सुकलाई होव, तो पंगत मँ ई परूस।

राबड़ी मे शुक्लता (पवित्रता) हो, तो पक्ति (सहभोज) मे ही परसे।

अच्छी वस्तु को ही सामने रखना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति अज्ञानवश अपवित्र या असुन्दर वस्तुओं का प्रदर्शन करने लगे, तब उपदेश देते हुए उदाहरण रूप मे यह कहावत कही जाती है।

११२०. राम'र रोम एक ई छ।

राम और रहीम एक ही है।

ईश्वर सबके लिए एक ही है।

हिन्दू-मुसलमान आदि जातियों मे ईश्वर के नाम अलग-अलग है, किन्तु सबका ईश्वर एक है।

११२१. रामजी को चड़ग्याँ, राम जी को खेत,
चुगोरी चड़ग्याओं ! भर-भर पेट।

रामजी की चिडियाँ रामजी का खेत, चुगोरी चिड़ियों ! भर-भर पेट।

ईश्वर के बनाये हुए सभी पदार्थ प्राणियों के उपभोग के लिए हैं।

संसार की सभी वस्तुएँ ईश्वर द्वारा निर्मित हुई है। सभी प्राणी उसी की सृष्टि है। अतः काई किसी वस्तु से वंचित क्यों रहे ?

११२२. रामजो को नाँव सदा मसरी, जद चाख, जद गूँदकड़ी।

रामजो का नाम सदा मिश्री, जब चाखे, तब गूँदकड़ी।

ईश्वर का नाम लेने से मनुष्य सदैव आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

सदैव ईश्वर का नाम लेना चाहिये। उसको रटने से मनुष्य को कभी पश्चाताप नही हो सकता।

११२३. रामजी राजी होव, तो सब काम हो जाव छ।

रामजी राजी (प्रसन्न) होवे, तो सब काम हो जाते है।

ईश्वर की कृपा से सब सुलभ है।

ईश्वर जिससे प्रसन्न है, उसके सारे काम स्वत. ही होते जाते है। उसे किसी विघ्न का सामना नही करना पडता।

"जापर कृपा राम की होहि, तापर कृपा करहि सब कोई"—मे तुलसीदासजी ने भी इसी प्रकार का भाव व्यक्त किया है।

११२४. रामजी सींग दे, तो सींग भी सणा पड़ छ।

रामजी सीग दे, तो सीग भी सहने पडते है।

ईश्वर के दिये हुए सभी कष्ट झेलने पड़ते है।

यदि ईश्वर कोई भारी आपत्ति दे, तो उसे भी सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। ईश्वर से बडा शक्तिशाली कोई नही है, अत: ईश्वरीय दण्ड से कोई बच नही सकता।

११२५. रामजी सूं जोर न चाल।

रामजी से जोर नही चलता।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

अकाल मृत्यु आदि दुर्घटनाओ को देखकर यह कहावत कही जाती है।

११२६ राम भरोस खेती छ।

राम भरोसे खेती है।

ईश्वर सब कार्य सफल करता है।

साधन न होने पर भी जब कार्य आरम्भ कर दिया जाये, तब दूसरा कोई उपाय न देखकर इस कहावत द्वारा मनुष्य सान्त्वना पा लेता है।

११२७. राम राम जपना, अर पराया माल अपना।

राम राम जपना और पराया माल अपना ।

स्वार्थी लोग संसार को धोखा देने के लिए भगवान का भजन करते हैं ।

कपटी व्यक्ति ईश्वर भक्ति का ढोंग बनाकर संसार को ठगा करते है ।

११२८. रावला को तेल, झोली मँ ई झेल ।

रावले का तेल, झोली में ही झेल ।

राज्य से जो कुछ मिलता है, उसे ले ही लेना चाहिए ।

राज दरबार से मिलने वाला तेल यदि पात्र न हो तो कपड़े के पल्ले मे ही लेना अच्छा है । कम से कम लेने का नाम तो कर ही लेना चाहिए, ताकि वह वस्तु बही में दर्ज रहे और आगे भी मिलती रहे ।

११२९. रावला मँ बावला ही बस छ ।

रावले मे बावले ही बसते है ।

रावले में रहने वाले व्यक्तियों को किसी बात का ध्यान नहीं रहता ।

रावले (राजपुत्रों का निवास) में सब व्यक्ति चिन्तामुक्त होते है । मासखाना तथा मदिरा पीना ही उनका काम होता है ।

११३०. रीत का रायता तो होव ई छ ।

रीत के रायते तो होते ही है ।

अपनी-अपनी कुल-परम्परा के अनुसार चलना ही पड़ता है ।

अपनी-अपनी एक विशेष कुल-परम्परा होती है । अतः समाज मे उसके अनुसार कार्य करना ही पडता है ।

११३१. रूप की रोव अर करम की खोव ।

रूप की रोवे और करम की खोवे ।

बिना भाग्य के गुण निरर्थक हैं ।

प्रायः भाग्यहीन रूपवती स्त्री विधवा हो जाती है, तथा भाग्यवान कुरूप स्त्री सुख प्राप्त करती है ।

११३२. रूपचंद जी पल्ल, तो सबो उठ उठ'र मल्ल ।

रूपचन्दजी पल्ले, तो सभी उठ उठकर मिले ।

संसार में लक्ष्मी का ही आदर होता है।

जिसके पास सम्पत्ति है, उससे लोग उठ उठकर मिलते है, किन्तु जिसके पास पैसा नही है, उसकी ओर से मुँह फेर लेते है।

११३३. रोग को घर खाँसी, अर लड़ाई को घर हाँसी।

रोग का घर खाँसी और लडाई का घर हँसी।

खाँसी अनेक रोगों का मूल है तथा हँसी-दिल्लगी झगड़ों की जड़ है।

खाँसी के हो जाने से अनेक बीमारियाँ हो जाती है तथा किसी का हँसी मजाक करने से लडाई-झगडा बढ जाता है।

११३४. रोटी उपरलो स्याग।

रोटी के ऊपरवाला साग।

किसी मनुष्य का विशेष मूल्य न समझना।

जिस प्रकार साग रखने के लिए कटोरी आदि पात्र उपलब्ध न हो तथा रोटी पर रखकर ही काम चलाया जाये, उसी प्रकार किसी मनुष्य का समुचित आदर न होने पर यह कहावत कही जाती है।

११३५. रोटी खाणी सक्कर सूँ, दुनियाँ ठगणी मक्कर सूँ।

रोटी खाना शक्कर से, दुनियाँ ठगना मक्कर से।

धूर्त व्यक्ति संसार को धोखा देना ही अपना कर्त्तव्य समझते है।

लोभी तथा धूर्त मनुष्यों की कुनीति को प्रदर्शित करने के लिए यह कहावत कही जाती है।

११३६. रोटी प ं पाछ छूलो बल, अर खसम मरचां प रांड कमाव।

रोटी बनाने के पीछे चूल्हा जले और खसम (पति) के मरने पर रॉड कमावे।

समय के पश्चात् कार्य का होना लाभकर नहीं है।

भोजन बनाते समय ही यदि चूल्हा जल जाये, तो वह भोजन बनाने मे सहायक हो सकता है। इसी प्रकार पति की मृत्यु के पूर्व स्त्री की कमाई पति को सहायता पहुँचा सकती है।

११३७. रोती की लारां रँभाड़तो तो दे ई छ।

रोती के साथ रँभाड़ती तो देते ही हैं ।

कन्या दान के साथ गौदान भी करना चाहिए ।

कन्या दान करते समय उसी के साथ गौदान का भी शास्त्रोक्त नियम है । इसको प्रदर्शित करने के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

११३८. रोयाँ बना मा ई बोबो न दे ।

रोये बिना मा ही दूध नही पिलाती ।

चुपचाप रहने से कोई भी ध्यान नहीं देता ।

बिना कहे अपने गुणो को तथा कष्टो को कोई भी नही समझ सकता ।

११३९ रोयाँ राबड़ो न मल ।

रोने से राबडी नही मिलती ।

परिश्रम करने से सब काम सुलभ हो जाते हैं ।

जब कोई मनुष्य केवल चिन्ता ही प्रकट करे तथा काम कुछ भी न करे, उसे समझाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है ।

ल

११४०. लखड़ो के सर बन्दर नाचे छ ।

लकड़ी के सिर बन्दर नाचता है ।

मार के भय से अच्छे से अच्छा चालाक भी ठीक हो जाता है ।

जिस प्रकार मदारी के लकड़ी उठाते ही बन्दर नाचने लगता है, उसी प्रकार मार के भय से कामचोर चालाक व्यक्ति भी अपने कार्य मे लग जाता है ।

११४१. लखारा की लोडी, डूँगर जा'र फोडी ।

लखारे की लोढी (गोल पत्थर), डूँगर पर जाकर पोढी (सोई) ।

अपनी योग्यता के अनुसार अपना रहन-सहन बनाना चाहिए ।

छोटे व्यक्ति यदि अपना ऊँचा स्तर बनाले, तो उनको आगे चलकर कष्ट उठाना पड़ता है । अतः ऐसे व्यक्ति को देखकर यह व्यंग्योक्ति कही जाती है ।

११४२. लाख को घोड़ो, स्वा लाख की जींण ।

लाख का घोडा, सवा लाख की जीन ।

वस्तु के अनुसार ही उसकी सजावट के लिए व्यय करना चाहिए ।

किसी वस्तु के मूल्य से अधिक उसके अलकरणों मे धन व्यय किया जाये, तो केवल अलकरणों की ही शोभा सामने आती है । वह वस्तु उन अलकरणो के सामने सहसा छिप जाती है ।

११४३. लाखड़ा मसाँणाँ मँ फूगग्या, पण तरसणा न मट्टी ।

लकड़े श्मशान मे पहुँच गये, पर तृष्णा नही मिटी ।

बुढ़ापे में तृष्णा छोड़कर ईश्वर भजन में लग जाना चाहिए ।

जब कोई वृद्ध लोभी हो तथा छोटी छोटी-वस्तु के लिए भी झूठ और बेईमानी का आश्रय ले, उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

११४४. लाखड़ो को लारां लोहो बी तर जाव छ ।

लकड़ी के साथ लोहा भी तैर जाता है ।

धर्मी के संग पापियों का भी उद्धार हो जाता है ।

जिस प्रकार लकडी की नाव मे लगा हुआ लोहा भी नाव से साथ तैरकर पार पहुँच जाता है, उसी प्रकार अच्छे पुरुषो के साथ रहने वाला व्यक्ति जीवनोपयोगी अनेक सिद्धान्तो को सीख जाता है ।

११४५. लाग जाव जेई ओगद छ ।

लग जाये वही औषध है ।

जिससे कार्य में सफलता मिल जाये, वही साधन माना जाता है ।

जब किसी रोग के लिए अथवा किसी दुष्ट का सुधार करने के लिए भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न उपाय बतलावे तथा उनको काम में लाने पर सफलता प्राप्त न हो, तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

११४६. लागी मँ ओर लाग ई छ ।

लगी मे और लगती ही है ।

विपत्ति में विपत्ति आती ही है ।

चोट लगे हुए स्थान को बहुत सावधानी से रखनेपर भी चोट लग

ही जाती है, उसी प्रकार एक कष्ट के साथ दूसरे कष्ट भी आ ही धमकते है।

११४७. लाडा क तो ललई कोई न, जनेती यूं ई उठ-उठ'र पड़ छ।

लाडे (दूल्हे) की तो ललक ही नही है, बराती यो ही उठ उठकर पडते है।

जब नेता में ही शक्ति न हो, तो सहायक क्या कर सकते है ?

दूल्हे की इच्छा न होने पर बराती किस प्रकार उसकी सहायता करे ? इसी प्रकार जिसका काम है, उसी मे बुद्धि न हो तो उसके सहायक उसके लिए व्यर्थ है।

११४८. लाडा बना काँई जान ?

लाडे (दूल्हे) बिना क्या जान (बरात) ?

बिना मुखिया के संगठन का कोई मूल्य नहीं है।

जिस प्रकार सेना का नायकत्व करने के लिए एक पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी भी समुदाय को उचित मार्ग दिखलाने के लिए एक नेता की आवश्यकता होती है।

११४९. लाडो मरो, छावं लाडो, नाई का दो टका खां बी न ग्या।

लाडा (दूल्हा) मरो, चाहे लाडो, नाई के दो टके तो कही भी नही गये।

अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की भयंकर हानि को चिन्ता नहीं होती।

दूसरे की हानि की रच भी चिन्ता न करने वाले अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए जब अन्यथा सोचते है, तब यह कहावत कही जाती है।

११५०. लातां का देवता बातां सूं न मान।

लातों के देवता बातों से नही मानते।

दुष्ट व्यक्ति बल प्रयोग से ही सीधा होता है।

नीच आदमी को समझाना व्यर्थ है, क्योकि वह दुष्टता के व्यवहार से ही वश में आता है।

११५१. लाद द, लदावंण द अर लादबा हाल्यो लारां द।

लाद दे, लदावन (लादने का सामान) दे और लादने वाला साथ दे ।

अनुचित माँग को कोई पूरा नहीं करता ।

किसी को कोई वस्तु देने पर वह कहे कि इसे हमारे घर तक भी पहुँचा दो अथवा किसी को कोई लाभकर बात बताने पर वह कहे कि साथ चलकर करवा भी दो, तो ऐसे अवसरो पर इस कहावत का प्रयोग होता है ।

११५२. लापर का मूँडा मँ लाख ।

लापर (झूठे) के मुँह मे लाख ।

झूठा व्यक्ति सदैव आत्मश्लाघा किया करता है ।

किसी वाचाल एव झूठे व्यक्ति से रुपये की बात करने पर वह लाखो रुपयो की बाते करने लगता है, क्योकि जब झूठ बोलना ही है, तब पेट भरकर क्यो न बोली जाय ?

११५३. लायक सूँ ई जोड़जे, ब्याव, बैर अर परीत ।

लायक ही से जोड़िए, ब्याह, बैर और प्रीति ।

अपनी श्रेणी के व्यक्तियों के साथ ही विवाह, बैर और प्रीति शोभा देती है ।

धनी-निर्धनी मे विवाह, सबल-दुर्बल मे बैर तथा कठोर-करुण मे प्रेम नही निभ सकता ।

११५४. लारी छोरी संख झालर, देव को कालो तो काटणोई छ ।

लाना री छोरी शंख झालर (घटाल), देव का काला तो काटना ही है ।

किसी कार्य को समय से पूर्व करके चिन्ता मुक्त होना ।

आतुर पुजारी अपनी लडकी से कहता है कि लड़की शख और घटाल ले आ ; देवता की पूजा इसी समय करके कार्य से निवृत्त हो लिया जाये ।

११५५. ला लागगो'र क्वा खुदगा ।

लाय (आग) लग गई और कुँये खुदेगे ।

अदूरदर्शिता हानिकर है ।

विपत्ति के उपस्थित हो जाने पर उसके दूर करने का उपाय खोजा जाये, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

११५६. लाल्या क ताल़ी देताँ काँईं लाग ?

लाल्या के ताली देते क्या लगे ?

पराया व्यक्ति दूसरे की हानि की चिन्ता नहीं करता ।

जब कोई व्यक्ति किसी को हानिकारक तथा उल्टी-उल्टी बातें बताये, तब उसके लिए इसका प्रयोग होता है ।

११५७. लाल्या र लाल्या, जस्याँ आया उस्याँईं चाल्या ।

लाल्या रे, लाल्या, जैसे आये वैसे ही चले ।

जीवन में सत्कार्य न करने पर मनुष्य मरते समय पछताता है ।

ससार मे आकर तथा मनुष्य जीवन प्राप्त करके अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण न कर सकने वाले व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करते है ।

११५८. लुगाई को आठवों अर बाप को काट्टो काँईं बार बार होव छ ?

लुगाई (स्त्री) का आठवाँ (सर्व प्रथम गभ धारण के आठवे मास का उत्सव) और बाप का काट्टा (मृत्यु भोज) क्या बार बार होता है ?

स्त्री का आठवाँ तथा पिता का मृत्युभोज हृदय खोलकर करना चाहिए ।

जो कृपणता के कारण कुछ कम खर्च कर रहा हो या कुछ भी न कर रहा हो, ऐसे व्यक्ति को प्रेरणा देने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

११५९. लुगाई को टाँटरो अर गाडी को पाटरो, ठोक्याँईं हात आव छ ।

लुगाई का टाँटरा (सिर) और गाडी का पट्टा ठोकने से ही हाथ आते हैं ।

स्त्री का सिर तथा गाड़ी का पट्टा पिटने से ही ठीक रहते हैं ।

स्त्रियों की बुद्धि मन्द मानी जाने के कारण अशिक्षित लोग उसे पीटना ही उसके सुधार का उपाय बताते है । गाडी का पट्टा जब बार-बार उतरने लगता है, तो उसे ठोक-ठोक कर ही बैठाया जाता है ।

११६०. लुगाई को ज्यात हंग'र पाछ्ळ छोग छ ?

लुगाई की जाति हँगकर पीछे देखती है ।

स्त्रियाँ कम बुद्धिवाली होती हैं ।

किसी काम को बिगाडकर पछताने वाली स्त्रियों के लिए बहुधा इस कहावत का प्रयोग होता है ।

११६१. लूटचाँ पाछ डूमड़ो, भागी बारा कोस ।
समझायाँ समझो नईं, मनमें राख्यो रोस ।

लूटे पीछे डूमडी, भागी बारह कोस ।
समझाये समझी नही, मन मे रक्खा रोष ।

अनुचित रीति से पैसा लेकर व्यक्ति उस स्थान पर नहीं ठहरता ।

डूमडी पैसा पैदा करके उस गाँव से दूर भाग जाती है । उसे भय रहता है कि वे व्यक्ति जिन्होंने उसे पैसे दिये है, उससे छीन न ले । वयोवृद्धों के समझाने पर भी उसे विश्वास नही होता ।

११६२. लूण फाणो को ई बरतमान छ ।

नमक पानी का ही वर्तमान है ।

नमक पानी का मन पर अवश्य प्रभाव पड़ता है ।

किसी मनुष्य का अन्न ग्रहण कर लोग उसका पक्षपात ही करते है, किन्तु जब इसके विरुद्ध प्रवृत्ति देख पडे, उस समय यह लोकोक्ति प्रयुक्त होती है ।

११६३. लूली ब्वारो खाड, तो सारा घर का ऊंको ढूंडो पकड़ ।

लूली बुहारा निकाले, तो सारे घर के उसकी कमर पकड़े ।

अयोग्य व्यक्ति से काम लेने पर समय और शक्ति का दुरुपयोग होता है ।

पगु स्त्री झाडू लगाये, तो सारा परिवार उसको खड़ा करने के लिए कमर पकड़े रहे । बुद्धिहीनता से कार्य न लेकर यदि विचार पूर्वक काम किया जाये, तो कोई भी दूसरा आदमी कम समय मे झाडू लगा सकता है ।

११६४. लेणा एक न देणा दो ।

लेना एक न देना दो ।

किसी प्रकार का व्यवहार न रखना ।

कोई व्यक्ति किसी दूकानदार से किसी वस्तु के विषय में बातचीत करे तथा उसके दाम लगा दे । जब दुकानदार देने को तैयार हो, तब वह

वस्तु लेना अस्वीकार कर दे। इसी प्रकार का व्यवहार करने वाले व्यक्तियो के लिए यह कहावत प्रयोग में आती है।

११६५. **लोबी गरू लालची चेला, दोनूं नरक में ठेलमठेला।**

लोभी गुरु लालची चेला, दोनो नरक मे ठेलमठेला।

गुरु यदि लोभी हो और चेला लालची हो, तो दोनों नरक में जाते है।

स्वार्थ की सिद्धि के लिए सदाचार के विरुद्ध शिक्षा देने वाला और शिक्षा लेने वाला दोनो ही कष्ट उठाते है।

११६६. **ल्यो द्योई आडो आव छै।**

लिया दिया ही काम आता है।

दान पुण्य अवश्य करते रहना चाहिए।

आस्तिक लोगों की यह दृढ़ धारणा है कि यदि हम दान करेंगे, तो हमे भी अगले जन्म में मिलेगा और कुछ न करेंगे, तो हमे कष्ट ही उठाने पड़ेंगे।

११६७ **ल्हो जाण क ल्वार जाण, धूंकबा हाला को बला जाण।**

लोहा जाने या लुहार जाने, धौंकने वाले की बला जाने।

अपनी अपनी वस्तु का उत्तरदायित्व अपने पर ही होता है।

जिसकी वस्तु हो उसे ही उसका ध्यान रखना पडता है। असम्बद्ध व्यक्ति भला दूसरे की वस्तु का ध्यान क्यो रखने लगा?

११६८ **ल्हो सूं ल्हो कट छै।**

लोहे से लोहा कटता है।

सबल के सामने सबल ही ठहर सकता है।

दुर्बल व्यक्ति सबल पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। उस पर विजय प्राप्त करने के लिए वैसा ही व्यक्ति चाहिए।

व

११६९. **व ई छूंलो'र तीन पात।**

वही छीला (ढाक का पेड़) और तीन पत्ते।

वस्तु का सारहीन होना ।

कोई व्यक्ति जब किसी से किसी वस्तु की आशा करे, तब उस व्यक्ति का परिचित व्यक्ति उस आशार्थी से यह कहावत कहकर उसे याचना करने से रोक देता है ।

११७०. **वई पोसा का दो धेला ।**

वही पैसे के दो अधेले ।

सब स्थानों पर समान प्रवृत्ति होना ।

मनुष्यो के समान व सर्वत्र प्राप्त होने वाले अवगुण का प्रकाशन करने के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

११७१. **वा ई खुराड़ो, अर ऊई बंसो ।**

वही कुल्हाडी और वही बाँसा ।

मनुष्य के अवगुण शीघ्र नहीं मिटते ।

जब किसी मनुष्य के पहले वाले अवगुण को ही पुनरावृत्ति की जाये, तब इस कहावत का आश्रय लिया जाता है ।

११७२. **वांकी राधा न याद करो ।**

उनकी राधा को याद करो ।

हमें उनकी कोई परवाह नहीं है ।

जब किन्ही व्यक्तियों को काई हित की बात बताई जाये, उसे वे न करे, तो बतलाने वाला व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग कर अपनी आत्म-ग्लानि को दूर कर लेता है ।

११७३. **व्हाईं बू को पीसणों, अर व्हांईं ससरा को खाट ।**

वहीं बहू का पीसना और वहीं ससुर की खाट ।

प्रभावशाली व्यक्ति के सामने दोषी काम नहीं कर सकते ।

जिस मनुष्य से व्यक्ति डरते हैं तथा जो कार्यों में दोष निकाल सकता है, उसके समक्ष काम करने में लोग हिचकिचाते हैं ।

स

११७४. **सकल चुड़ेल्यां को, अर मजाज परयां का ।**

शक्ल चुड़ैलों की और मिजाज परियों का ।

कुरूप के नखरे असह्य होते हैं ।

जो देखने में अत्यन्त भौडा तथा बदसूरत हो, किन्तु अत्यधिक नाज-नखरे बताये, उसके लिए यह उक्ति कही जाती है ।

११७५. सखी का बोलबाला, सूम का मुँह काला ।

सखी का बोलबाला, सूम का मुख काला ।

उदार एवं दानी पुरुष का उत्कर्ष होता है, तथा कंजूस का अपकर्ष होता है ।

याचक लोग दानियों को आशीर्वाद तथा न देने वाले कजूसो को अभिशाप देने के लिए यह कहावत प्रयोग मे लाते है ।

११७६. संगत का फल भोगणाईं पड़ छ ।

सगति के फल भोगने ही पडते है ।

संगति के अनुरूप फल अवश्य मिलता है ।

अच्छी सगति से अच्छा और बुरी सगति से बुरा फल मिलता है । उसे भोगना ही पडता है ।

११७७. सगा मँ साडू अर पकवानाँ मँ लाडू ।

सगों मे साढू और पकवानो मे लड्डू ।

पकवानों में जैसे लड्डू मुख्य है, वैसे ही सम्बन्धियों में साढू मुख्य होता है ।

भोजन के पदार्थो में लड्डू अत्यधिक रुचिकर होते है, इसी प्रकार सम्बन्धियों मे साढू (साली का पति) प्यारा लगता है ।

११७८. सगी नणद म्हारी सोक लग, पराई बेटी म्हारी नणद लग ।

सगी ननद मेरी सौत लगे, पराई बेटी मेरी ननद लगे ।

अपने पारिवारिक जनों को घृणा करना तथा दूसरों को प्यार करना ।

जब अपनों को पराये तथा पराये सम्बन्धी को अपना बनाने की प्रवृत्ति देखी जाये, वहाँ इसका प्रयोग होता है ।

११७९. सगो सगा को जड़ छ ।

सगा सगे की जड़ है ।

सम्बन्धी से सदैव प्रेम रखना चाहिए ।

सम्बन्धी से ही सम्बन्धी शोभा पाता है। एक सम्बन्धी अपने सम्बन्धी का सदैव हितचिंतन किया करे, तब ही सम्बन्धीपन निभता है।

११८०. संज्या टाल़, रात्यूं ईं बाल़।

सन्ध्या टाल, रातभर ही जला।

संध्या के समय भोजन करना उचित नहीं है।

वैसे सध्या के समय अन्य कार्य करने का भी निषेध है। भोजन के लिए तो विशेष रूप से है। सध्या के समय दोनों स्वर चलते हैं। भोजन बहुधा दाहिने स्वर के चलते रहने पर किया जाता है। अत. स्वर-विज्ञान द्वारा भी निषेध किया गया है।

११८१. संणाजी हाल़ी खाट।

शहनाजी (तहसीलदार के आगमन की सूचना देने वाला) वाली खाट।

आकार से छोटी वस्तु मिलने पर उसका उपभोग सुविधापूर्वक नहीं हो सकता।

चारपाई तो अत्यन्त छोटी तथा शहनाजी लम्बे–इस विरोधी अवस्था मे उपभोक्ता कष्ट ही उठाता है।

११८२. सत मत छोड सूरमा, सत छोड्यां पत जाय।
सत की बांधी लच्छमी, फेर मलैगी आय।

सत्य मत छोडे शूरमा, सत्य छोड़े पत (प्रतिष्ठा) जाय।
सत्य की बाँधी लक्ष्मी, फिर मिलेगी आय।

सत्य पर सदैव डटे रहना चाहिए।

हे शूरवीर! सत्य को मत छोड़ना। सत्य को छोड़ने से प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है। सत्य से बँधी लक्ष्मी पुनः प्राप्त हो जाती है।

११८३. सतरा पटलां बगड़ गांव।

सत्रह पटेलों से बिगड़े गाँव।

अधिक व्यवस्थापकों के कारण शासन धूल में मिल जाता है।

अनेकों नेता होजाने पर समाज का पथ-प्रदर्शन समुचित रीति से नही हो पाता। वे सब अपना-अपना महत्त्व चाहने लगते हैं।

११८४. सत्यां तो सराप दे न, अर फूड़्यां का लाग न ।

सतियाँ तो श्राप देती नही और फूहडियो के लगते नही ।

सज्जन किसी की अहित कामना नहीं करते तथा दुष्टों की अहित कामनाओं का कोई मूल्य नहीं होता ।

सती स्त्री किसी के लिए भी बुरी कामना नही करती और जो फूहडिये है, उनकी अमगल-भावनाएँ प्रतिफलित हो नही पाती ।

११८५. सती होबा चाली, अर घर क तालो लगा चाली ।

सती होने चली और घर के ताला लगा चली ।

व्यर्थ के आडम्बर से समाज घृणा करता है ।

सती होने जैसे महान् कार्य को करते हुए भी घर का इतना मोह कि उसको बन्द करके जाना पडा ।

११८६. सतेवड़ो राँड काँई मणस का फूल बघारगो ?

सत्यवन्ती स्त्री क्या पति के फूल बघारेगी ?

पतिव्रता स्त्री पति की आय से ही घर की व्यवस्था कर सकती है ।

जब घर मे निर्धनता के कारण खाने पीने की कमी हो, तो पतिव्रता स्त्रियाँ पति की आय के अनुरूप ही घर का खर्च चलाती है ।

११८७. संतोषी सदा सुखी ।

सन्तोषी सदा सुखी ।

धैर्य के साथ काम करने वाला सदा सुखी रहता है ।

जो व्यक्ति धैर्य युक्त नहीं होते, उनका कार्य बिगड़ जाता है तथा उन्हें जीवन में अनेक कष्ट उठाने पडते है ।

११८८. सदां ईं दीन दवाला, सदां ईं बारथ्वार ।

सदा ही दीन दिवालिये, सदा ही बार-त्यौहार ।

इच्छा होने पर प्रत्येक दिन त्यौहार हो सकता है ।

कोई मनुष्य विशेष भोजन के लिए कोई त्यौहार चुने अथवा नवीन वस्त्र धारण के लिए कोई दिन निश्चित करे, उससे यह कहावत कही जाती है ।

११८९. सब ठाठ पड़्या र जावगा, जद लाद चलगा बणज्यारा ।

सब ठाठ पड़े रह जायेगे, जब लाद चलेगा बनजारा ।

मनुष्य को मोह का त्याग कर देना चाहिए ।

जब संसार से चलना होगा उस समय सारे उपभोग के सामान यही छोडने पड़ेगे । अतः मोह त्याग का उपदेश देने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

११९०. सब धान बाईस पछेरो ।

सब धान बाईस पंसेरी ।

बुद्धि का अभाव होने पर अच्छे बुरे में कोई अन्तर नहीं होता ।

जहाँ पर समझदारी से काम नही लिया जाता, वहाँ अच्छे का और बुरे का समान आदर होता है । इसी प्रवृत्ति को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है ।

११९१. सब पो'सा को खीर छ ।

सब पैसे की खीर है ।

पैसे बिना कोई काम नहीं हो सकता ।

पैसे पास होने पर ही काम बनता है । पैसे पास होने से अच्छी और सस्ती वस्तु खरीदी जा सकती है ।

११९२. सबर का फल मीठा छ ।

सब्र के फल मीठे है ।

धैर्य रखने वाले को अन्त में अच्छा लाभ मिलता है ।

जब किसी वस्तु का वितरण हो, उसमें सन्तोष के साथ एक स्थान पर बैठे रहने वाले व्यक्ति को अधिक वस्तु प्रदान की जाती है । उसी समय यह कहावत भी कह दी जाती है ।

११९३. सब सूं भली चुप्प ।

सब से भली चुप ।

शान्त रहना ही कल्याणकर है ।

बोलने से अनेक कष्ट उठाने पड़ते है तथा कार्य में सिद्धि नही मिलती ।

वह दोष चुप रह जाने से मिट जाता है।

११९४. सबसूं भला छड़ा, हांडी राख न घड़ा।

सबसे भला छडा (अकेला), हँडिया रक्खे न घड़ा।

अकेला व्यक्ति सदैव सुखी रहता है।

गृहस्थियों के पारिवारिक संकटों को सुन सुनकर अकेला व्यक्ति अपनी स्थिति पर आनन्द प्रकट करता हुआ यह कहावत कहता है।

११९५. समझदार को ई मरण छ।

समझदार का ही मरण है।

समझदार व्यक्ति पर ही कार्यभार डाला जाता है।

मूर्ख व्यक्ति से कोई भी काम नहीं करवाया जाता। काम बिगड़ जाये तो मूर्ख को मूर्ख कहकर छोड़ देते है, किन्तु समझदार को वह कार्य सुधारना पड़ता है।

११९६. समंदर मँ काँईं सांखोल्यां का टोटा छ ?

समुद्र में क्या शंखों का टोटा (कमी) है ?

इस विस्तृत संसार में मूर्खों की कमी नहीं है।

जिस प्रकार समुद्र निरर्थक शखों से भरा है, उसी प्रकार संसार में ढेरों मूर्ख मिलते हैं।

११९७. समंदर सूख जाव, तो बी गोडा स्वाणों कीच र जाव छ।

समुद्र सूख जाता है, तो भी घुटनों तक कीचड़ रह जाता है।

सेठ के दिवालिये होने पर भी पर्याप्त धन शेष रहता है।

धनी एकदम निर्धन नही हो जाता। उसकी सम्पत्ति के शेष चिह्न अवश्य विद्यमान रहते हैं।

११९८. समरथ को नईं दोस गुसाईं।

समर्थ को नहि दोष गुसाईं।

बलवान या बड़ा आदमी कोई बुरा काम भी कर दे, तो भी लोग उसे बुरा नहीं कहते।

सबल एव धनियों को कोई भी दोषी नही बताता। उनके किये हुए बुरे कार्यों का प्रायश्चित्त भी कभी कभी तो दोनों को ही सहन करना पडता है।

११९९. सरग की राली, अर धरती की झेली।

स्वर्ग की राली (लुडकाई हुई) और धरती की झेली (हुई)।

आश्रयहीन व्यक्ति सदैव ग्लानि से भरा रहता है।

जिसका ससार में कोई नहीं हो, उसका किसी के द्वारा परिचय पूछने पर वह यही कहता है कि मै आकाश से फैका हुआ तथा पृथ्वी द्वारा ग्रहण किया एक प्राणी हूँ।

१२००. सरग नरक कुंण देख'र आयो छ ?

स्वर्ग नर्क कौन देखकर आया है ?

इस लोक की करनी ही स्वर्ग तथा नरक है।

जैसा कार्य मनुष्य करता है, उसको वैसा ही फल इस ससार मे मिल जाता है। अतः स्वर्ग एवं नर्क इसी भूमि पर है।

१२०१. सरग प थूंक, तो मूंडा प ई आव छ।

स्वर्ग पर थूके, तो मुँह पर ही आता है।

सज्जन व्यक्ति की बुराई करने पर अपनी ही निन्दा होती है।

जिस प्रकार आकाश की ओर मुँह करके थूकने पर अपने ही ऊपर आकर गिरता है, इसी प्रकार किसी सत्पुरुष को दी हुई गालियाँ अपने ही ऊपर पडती है।

१२०२. सर न सांपड़।

सरे (अवसर पाना) न सांपड़े (स्वीकार करना)।

हाँ या ना का कोई उत्तर न देना।

किसी व्यक्ति से किसी कार्य के लिए कहा जाये, यदि वह कार्याधिक्य के कारण तो हाँ नही कर सके तथा लिहाज के मारे ना न कह सके— ऐसी अवस्था का प्रकाशन करने के लिए यह कहावत प्रयोग में आती है।

१२०३. सर बड़ा सरदार का, पग बड़ा गँवार का।

सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का ।

बड़ा सिर होना शुभ है तथा बड़े पैर होना अशुभ है ।

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार बड़े मस्तक वाला भाग्यशाली होता है तथा बड़े पैरों वाला मूर्ख होता है ।

१२०४. सरम को माई गोडा घरड़ ।

शर्म की मा घुटने रगड़ती है ।

लज्जाशील व्यक्ति सर्वदा कष्ट पाता है ।

आहार व्यवहार में लज्जा करने से मनुष्य को जब हानि उठानी पड़ती है, तब यह कहावत कही जाती है ।

१२०५. सरावगी साँचा घणाँ, उल्टा ज्याँका मत ।
पराई पूँजी दाब'र मन्दरजी जाव नत ।

सरावगी सच्चे घने, उल्टे जिनके मत ।
पराई पूँजी दबाकर, मन्दिरजी जावे नित ।

जैनी अपने धर्म का ढोंग करते हैं ।

किसी भी मत में दूसरे की सम्पत्ति को हडप करने का समर्थन नही किया गया । अतः जैनी जो सच्चे धर्म के पुजारी होने का दावा करते है, उनके सिद्धान्त मानव धर्म के विपरीत है ।

१२०६. सरी नँगर की गूजरी, रामनँगर को गोड़ ।
ऊने वा घर मं घाललो, तो बाज्या गूजरगोड़ ।

श्रीनगर की गूजरी, रामनगर का गौड़ ।
उसने वह घर में डाललो, तो कहलाये गूजरगौड़ ।

गूजरी तथा गौड़ ब्राह्मण के सांकर्य से उत्पन्न होने वाली सन्तान गूजरगौड़ कहलाई ।

गौतम गौड़ ब्राह्मणों को चिढ़ाने तथा उनका उपहास करने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

१२०७. सल् सूँ सल् दब छ ।

सल (शिकन) से सल दबता है ।

एक दूसरे के लिहाज से काम निकल जाता है।

आपसी स्वार्थ की पूर्ति करने के हेतु मनुष्य एक दूसरे के कार्य निकाल देते है।

१२०८. सस्तो रोव बार बार, म्हंगो रोव एक बार।

सस्ता रोये बारबार, मँहगा रोये एक बार।

टिकाऊ वस्तु मँहगी होने पर भी खरीद लेनी चाहिए।

सस्ती वस्तु लेने से पहले तो दाम कम लगते है, पर वह बार-बार खराब होती रहती है। इसके विपरीत मँहगी वस्तु लेने से एक बार दाम तो ज्यादा लग जाते है, पर चीज अच्छी मिल जाती है।

१२०९. साअजी घोड़ो छाइजे, क फरता सा आज्यो।

शाह जी घोड़ा चाहिए, (उन्होने कहा) कि फिरते से आना।

वस्तु देने की इच्छा न होने पर लोगों को वैसे ही टाल दिया जाता है।

एक व्यक्ति सेठजो का घोड़ा माँगने गया। सेठजी घोड़ा नही देना चाहते थे। अतः उन्होने कह दिया कि आप जरा फिरते से आजाना।

१२१०. साँकड़ी गली, अर मारकणों बल।

सँकडी गली और मारने वाला बैल।

दो विपदाओं में फँस जाने पर मनुष्य का बचना असम्भव हो जाता है।

कम चौड़ी गली हो तथा उसमे मारने वाला बैल खड़ा हो, तो मनुष्य किसी भी उपाय से नही बच सकता।

१२११. साँच ने आँच कोई न।

साँच को आँच नही है।

सच्चे को कोई डर नहीं।

सत्यवादी आग में तपाये जाने पर भी खरा उतरता है। अतः सत्यवादी अपनी परीक्षा से कभी भयभीत नहीं होता।

१२१२. साँच बोल'र लड़ाई मोल लेणो छ कांई ?

सत्य बोलकर लड़ाई मोल लेना है क्या ?

सच बात कहने से लोग अप्रसन्न हो जाते हैं और लड़ बैठते हैं।

सत्य बोलने से लोगों में वैमनस्य बढ़ जाता है। इसका कारण यह है कि आजकल झूठ की आड़ में मनमाना काम होता है। यदि कोई सचाई को सामने रख देता है, तो झगड़ा हो जाना स्वाभाविक है।

१२१३. साँचा नूँता अर झूँटा बलावा।

सच्चे निमन्त्रण और झूठे बुलावे।

जिस उत्साह से निमन्त्रण दिया जाये, उसी उत्साह से बुलावा भी भेजना चाहिए।

निमन्त्रण के समय पूरा आग्रह, किन्तु बुलावे की चिन्ता न करने वाले व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१२१४. सात घराँ की गनखड़ी।

सात घरों की कुतिया।

बिना बुलावे यहाँ वहाँ पहुँच जाने वाले का सर्वत्र अनादर होता है।

जिस प्रकार कुतिया प्रतिदिन अपने आहार के लिए कई घरों पर चक्कर लगाती है। उसी प्रकार कई स्त्रियाँ बातें करने के लिए घरों पर घूमती फिरती हैं। ऐसी स्त्रियों के लिए यह उक्ति कही जाती है।

१२१५. सात जूती'र हुक्का को फाणो।

सात जूते और हुक्के का पानी।

किसी कार्य को न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेना।

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में भयंकर हानि उठा चुका हो, वह इस कहावत द्वारा उस कार्य को भविष्य में न करने का दृढ़ संकल्प कर लेता है।

१२१६. सात मामा को भाणजो'र बासी सूतो रात।

सात मामा का भानजा और बासी (भूखा) सोया रात।

सभी व्यक्तियों का काम किसी का भी काम नहीं होता।

सात मामा के होने पर भानजे के भोजन करने की बात इसलिए किसी ने नहीं पूछी कि एक ने सोचा कि दूसरे के यहाँ खा लिया होगा। इस प्रकार उसे रात्रि में भूखा सोना पड़ा।

१२१७. **सात मूँत अर अठारा गोत ।**

सात मूत्र और अठारह गोत्र ।

वर्णशङ्कर के कोई गोत्र एवं नाते नहीं होते ।

कोई वर्णशङ्कर अपने कुलीन होने की डींग हाँकता चला जाये, उस समय यह कहावत कही जाती है ।

१२१८. **सातूँ ईं पराई, लाडा क मरड़ घणीं ।**

सातों ही पराई, लाडे (दूल्हे) के मरड़ (गर्व) घनी ।

दूसरों की वस्तु पर गर्व नहीं करना चाहिए ।

पगड़ी, झगा, पाजामा, जूतियाँ, कटारी, उत्तरीय एवं मोड सातों वस्तुये दूसरे से माँगी हुई पहनने पर भी दूल्हे को अत्यधिक गर्व है ।

१२१९. **साधाँ क काँईं स्वाद री माई ? अण बलोयो ई आबा दे ।**

साधुओं के क्या स्वाद री माई ? बिना बिलोया ही आने दे ।

साधु लोग भोजन ग्रहण करते समय स्वाद नहीं देखते ।

एक साधु ने किसी स्त्री से मट्ठा माँगा । उसने कहा कि महाराज अभी बिलोया नही है । इस पर महात्मा ने यह उक्ति कही ।

१२२०. **साँपा क आया सांप फावणा, जोबाँ की लापालोल ।**

साँपो के आये साँप पाहुने, जीभो की लपलप ।

केवल बातों से ही सत्कार करना ।

जब किसी वाचाल एव चतुर व्यक्ति के यहाँ वैसा ही चतुर व्यक्ति आये, तब उससे बिना खाने पीने की पूछे ही उसे बातों मे टाल देने वाले के लिए यह कहावत प्रयोग मे आती है ।

१२२१. **साँप का टपारा मँ क्यूँ हात घालणों ?**

साँप के टिपारे मे क्यों हाथ डालना ?

आपत्तिजनक काम नहीं करना चाहिए ।

जिस कार्य में प्रत्यक्ष रूप से हानि की सम्भावना दिखाई दे रही हो, उसे करने के लिए उद्यत व्यक्ति को रोकने के लिए इसका प्रयोग होता है ।

१२२२. साँप का पग साँप न ईं दोख छ।

साँप के पैर साँप को ही दिखाई देते है।

किसी मनुष्य को सामर्थ्य से बाहर कार्य करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

जिस प्रकार सर्प के पैर सर्प ही देख सकता है, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य की आर्थिक परिस्थिति को वही व्यक्ति ठीक-ठीक जानता है, दूसरे नही।

१२२३. साँप को खायो सोवे, अर बीछू को खायो रोवे।

साँप का खाया (काटा) सोवे और बिच्छू का खाया रोवे।

साँप का जहर मनुष्य को सुलाता है तथा बिच्छू का जहर रुलाता है।

साँप के काट लेने पर उसका विष शीघ्रता से शरीर मे फैल जाता है। उसके कारण मनुष्य को बेहोशी हो जाती है। उसे लोग सोना कहते है। बिच्छू के दंशन पर उसमें जलन लगती है, इस कारण वह रोने लगता है। उसे बेहोशी नही होती।

१२२४. साँप छछूँदर हाली गत।

साँप छछूँदर वाली गति।

दोनों परिस्थितियों में हानि की सम्भावना होना।

साँप यदि किसी छछूँदर को पकड़ ले, तो न तो वह उसे छोड़ सकता है और न उसे निगल ही सकता है। छोड़ देने पर तो वह अन्धा होता है तथा निगल लेने पर मर जाता है। अतः दोनों ही अवस्थाएँ भयानक है।

१२२५. साँप मर न लखड़ी टूटे।

साँप मरे, न लकड़ी टूटे।

बिना हानि हुए कार्य पूर्ण हो जाना।

काम भी बन जाये तथा हानि भी न हो, उस समय इसका प्रयोग होता है।

१२२६. साँबर पड़ जे लूण छ।

साँभर पड़े वही नमक है।

साँभर (झील) में पड़ता है, वह भी नमक हो जाता है।

कोई भी वस्तु जो साँभर झील में गिर जाये, वही नमक बन जाती है।

१२२७. साँभी लोडी सूं करम फूटणहार हो, तो फूट ई छ।

सामने आती हुई लोढी (गोलपत्थर) से करम फूटने वाला हो, तो फूटता ही है।

दुर्भाग्य किसी भी प्रकार नहीं टाला जा सकता।

यदि भाग्य में विपत्ति बदी हो, तो निश्चित समय पर वह आकर ही रहती है।

१२२८. सार ई करमाँ की बाज छ।

सब जगह ही कर्मों की बजती है।

भाग्य के अनुसार ही सारे कार्य होते हैं।

जो बात सोची जाये, वह न हो पाये तथा उसके विपरीत बात हो जाये, उस समय सन्तोष के लिए यह कहावत कही जाती है।

१२२९. सारा डूब्या भापड़ा बडा ऊँट की लार।

सारे डूबे बेचारे बड़े ऊँट के साथ।

बड़े आदमी का अनुकरण नहीं करना चाहिए।

धनी व्यक्ति का अनुकरण करने से जब लोगों को हानि उठानी पड़ती है, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१२३०. सारी जाती जाणजे, आधी दीजे बाँट।

सारी जाती जानिए, आधी दीजे बाँट।

सारी सम्पत्ति को नष्ट होते देखकर आधी परमार्थ में लगा देना चाहिये।

यदि सारी सम्पत्ति को नष्ट होने से बचाने की सामर्थ्य न हो, तो आधी सम्पत्ति को दान कर देना चाहिए, ताकि वह आधी तो अच्छे कार्य में लग जायेगी।

"अरध तजहिं बुध सर्वस जाता"—की उक्त कहावत से तुलना की जा सकती है।

१२३१. सारो रामायण सुण लो, पण या न समझ्या क राम कुंण छो अर रावण कुंण छो ?

सारी रामायण सुन ली, पर यह न समझे कि राम कौन था और रावण कौन था ?

बात को सुनकर भी न समझना ।

जो किसी व्यक्ति की बात को सावधानी से न सुने और फिर उसके विषय में पूछ बैठे, उसके लिए व्यग्य में इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१२३२. साला बना काँई सासरो ?

साले बिना क्या ससुराल ?

साले के बिना ससुराल नीरस होती है ।

ससुराल में साले के द्वारा अतिथि सत्कार का जो आनन्द आता है, वह उसके अभाव में प्राप्त नहीं हो पाता ।

१२३३. साली सूं न तो सासू सूं ई मसखरी ।

साली से नही तो सासू से ही मसखरी (मजाक) ।

उपहास के योग्य व्यक्तियों से ही उपहास शोभा देता है ।

समान-असमान का ध्यान रखकर ही मजाक करना चाहिये । जो व्यक्ति ऐसा नही करते, वे कभी-कभी हानि उठा जाते है ।

१२३४. सावण का चरचा न हरचो ई हरचो दीख छ ।

सावन के चरे को हरा ही हरा दिखाई देता है ।

सम्पत्ति के पले व्यक्ति को सदैव सुख के स्वप्न आते रहते हैं ।

धनी परिवार में पैदा होने वाला व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले निर्धन को भी जब व्ययसाध्य काम बतलाता है, तब यह लोकोक्ति कही जाती है ।

१२३५. साँवण मं ग्या, अर भादवा मं आया ।

सावन में गये और भादों में आये ।

छोटे से कार्य के लिए अधिक समय लगाना ।

सुस्त व्यक्ति जब किसी तुच्छ काम में अत्यधिक समय व्यतीत करे, तब उससे यह कहावत कही जाती है।

१६३६. सावण सूखो न भादवो हरयो।

सावन सूखा न भादौ हरा।

सदा एक सा रहना।

सम-प्रकृति वाले अधिक सम्पत्ति के बढ़ जाने पर न तो अपना आडम्बर दिखाते है और न हाथ तंग होने पर नैमित्तिक व्यय में कमी करते है।

१२३७. स्वां पोस का मरचा न खाँ ताईं रोव ?

पूर्व प्रदोष (रात्रि का प्रारम्भ) के मरे हुए को कहाँ तक रोये ?

प्रारम्भ से ही बिगड़े हुए कार्य का सुधार नहीं हो सकता।

संध्या के समय मरने वाले व्यक्ति को रात्रि भर रोना पड़ता है। अतः रात्रि भर रोना लोगों की सामर्थ्य के बाहर हो जाता है।

१२३८. स्वाल्या का गू सूं काम पड़, तो डूँगर पं जा' र हंग।

सियार के गू से काम पड़े, तो डूँगर (पहाड़) पर जाकर हँगता है।

काम पड़ने पर छोटे व्यक्ति भी अकड़ जाते हैं।

सियार के मल से कार्य हो, तो वह बहुत दूर जाकर मल त्याग करता है। इसी प्रकार क्षुद्र व्यक्ति से कोई छोटे काम के लिए कहा जाये, तो वह व्यक्ति यह समझकर कि मेरे बिना काम चल ही नही सकता, बहाने बनाने लगता है।

१२३९. सासर जाती न कुंण छ्यांल बतावं छ ?

ससुराल जाती हुई को कौन छिनाल बताता है ?

बुरे व्यक्तियों के साथ रहने वाले के चरित्र पर सभी सन्देह करते हैं।

जिस प्रकार श्वसुर गृह को जाने वाली स्त्री के आचरण पर सन्देह नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार अच्छे व्यक्तियों के सम्पर्क में आने वाले लोगों के चरित्र पर छींटे नहीं उछाले जा सकते।

१२४०. सासरो सुख बासरो, पण च्यार दनाँ को आँसरो।
दो च्यार दन तो ओर लखो, नकटा बण'र हमेस ई र्‌हो।
ससुराल सुख-बसेरा, पर चार दिनों का सहारा।
दो चार दिन तो और लिखो, नकटे बनकर हमेशा ही रहो।
ससुराल में अधिक दिन रहने से आदर नहीं रहता।

श्वसुरगृह में थोड़े ही दिन आदर-सत्कार होता है। इस पर एक कहानी है—

"एक आदमी ससुराल में जाता है। रात्रि को अपने शयन कक्ष में वह इस कहावत का प्रथम पाद लिखता है। उनका साला दूसरा चरण लिखता है। तीसरा चरण कि "दो चार दिन और लिखो"—दामाद लिखता है। इसका उत्तर चतुर्थ चरण में उनका साला देता है। वह कहता है कि नकटे बनकर आप यहाँ सदैव ही निवास कर सकते हैं।

१२४१. सासूजी को जीकारो, अर बू'जो को मरण।
सासूजी का "जीकार" और बहूजी का मरण।
प्रिय व्यक्तियों के लिए अवसर आने पर आदर सूचक शब्द भी दुःखदायी होते हैं।

सास बहू को व्यंग्य से आदर सूचक शब्द कहे, तो वह बहू के लिए अपमान जनक होता है। जहाँ पर आदर दिखाने की आवश्यकता नहीं हो, वहाँ व्यंग्यमय आदर हृदयतल को स्पर्श करने वाला हो जाता है।

१२४२. सासूजी थाँ साँसल्यो, म्हूँ कातूँ, थाँ पीसल्यो।
सासूजी तुम सास लो (आराम करो), मैं कातूँ, तुम पीस लो।
चालाक बहू अपनी सास का खाया पिया निकाल लेती है।

चालाक बहू जब पीसती-पीसती स्वयं थक जाती है, तब अपनी सास से जो सूत कात रही है, कहती है कि सासू जी आप कातते-कातते थक गई होंगी। अतः अब आराम के लिए थोड़ा आटा पीसो और मैं आपके स्थान पर सूत कातती हूँ।

१२४३. सासू बना काँईं सासरो, मा बना काँईं मूसाल ?
सास बिना क्या ससुराल, मा बिना क्या ननसाल ?

सास से ससुराल में तथा मा से ननसाल में यथोचित सम्मान मिलता है।

ससुराल में दामाद का लाड़-प्यार मातृसदृश सास से ही होता है, तथा ननसाल में माता के विद्यमान होने पर ही लोग प्रेम करते हैं।

१२४४. सीखो रे बीरा ! सीखो, घणों खाऊँ न हँगबा जाऊँ।

सीखो रे बीरा (भाई) ! सीखो, घना (अधिक) खाऊँ न हँगने जाऊँ।

अनुभव से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

किसी कार्य में धोखा खाया हुआ व्यक्ति उस कार्य को नही करता। इसके अन्तर्गत एक कहानी है—

"एक सेठ जी कहीं बाहर जाते समय अपनी सेठानी से कह गये कि सावधानी से घर की रक्षा करना। रात्रि के समय सेठानी को मल त्याग करने के लिए मकान से बाहर जाना पड़ा। इसी बीच में चोर आ गये। ज्योंही सेठानी ने चोरों को देखा त्योंही कहा कि भाई सेठजी यहाँ नहीं है। आप लोगों के साथ मैं चलती हूँ। लाओ तुम्हारे पिछौड़े दे दो, मैं सम्पत्ति बाँध लाऊँ। सेठानी ने अन्दर जाकर साँकल बन्द करली, चोरों के पूछने पर उसने अपना नाम सीखी बता दिया था। ज्यों-ज्यों प्रभात होता जाता था, त्यों त्यों चोर उसे सीखी-सीखी कहकर पुकारते थे। इस पर वह सेठानी इस कहावत के रूप में उत्तर देती जाती थी।

१२४५. सींत का बैल का कांई दाँत देखणा ?

सेत (मुफ्त) के बैल के क्या दाँत देखने ?

सेंत की वस्तु के गुणावगुण नहीं देखे जाते।

जब बैल मोल लेते है, तो लोग उसके दाँत गिनकर उसकी आयु का पता लगा लेते है। जो बैल सेत मे आ रहा हो, उसे तो बिना देखे ही ग्रहण कर लेना श्रेयस्कर है।

१२४६. सींत को चन्दण घसर लाल्या ! ओरसो फोड़'र घरण चाल्या।

सेत का चन्दन घिस रे लाल्या ! ओरसा (घिसने का पत्थर) फोड़कर घर को चले।

सेंत के माल का उपयोग असावधानी और लापरवाही से किया जाता है।

सेत का माल मिलने पर हृदय की दया नष्ट हो जाती है, अतः उस माल को खूब जी भरकर उड़ाया जाता है। यहाँ तक कि वह नष्टप्रायः हो जाता है।

१२४७. **सीतलाजो सूं राम जो बोदो थोड़ी ई छ ।**

शीतला जी से रामजी बोदा (निर्बल) थोड़े ही है ।

दो व्यक्तियों में एक का दूसरे से बढ़कर होना ।

जब दो प्रतिद्वन्द्वी आपस में झगडते हैं, तब एक दूसरे को त्रास बताते हुए इस कहावत का प्रयोग करते है ।

१२४८. **सींदरी को साँप कर घालबो ।**

सीदरी (नारियल की पतली डोरी) का साँप कर डालना ।

तुच्छ वस्तु को भयानक समझना ।

जब किसी तुच्छ वस्तु में भय का आभास हो जाये अर्थात् भ्रान्ति से किसी वस्तु को भयोत्पादक समझ लिया जाये, तब यह उक्ति प्रयोग में आती है ।

१२४९. **सींदरी बलगी, पण ऊँकी मुरड़ न गी ।**

सींदरी (रस्सी) जल गई, पर उसकी मुरड़ (बल) नहीं गई ।

अति हानि पर भी अभिमान न छोड़ना ।

किसी अभिमानी मनुष्य का बहुत कुछ नष्ट हो चुकने पर भी अभिमान अवशिष्ट रह जाये, उसके लिए इस युक्ति का प्रयोग होता है ।

१२५०. **सुख का सबो साथी छ ।**

सुख के सभी साथी है ।

विपत्ति के समय कोई किसी की सहायता नहीं करता ।

सुख के समय अनेक व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए साथी बन जाते है । किन्तु सुख के क्षणों के नष्ट होने पर कोई बात तक नहीं करता ।

१२५१. **सुख तो सनेतीको ई भलो ।**

सुख तो सनेती (अर्थी) का ही भला ।

थोड़े सुख को भी नहीं छोड़ना चाहिए ।

यद्यपि मुर्दे को सुख-दुःख का भान नहीं होता, फिर भी अर्थी यदि कोमल मिले, तो बहुत अच्छा है ।

१२५२. सुख-दुख को तो जोड़ो बणायो छ ।

सुख दुःख का तो जोडा बनाया है ।

जीवन में सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आते ही रहते हैं ।

मनुष्य को जीवन में सुख और दुःख दोनों उठाने पड़ते है । जिसने सुख भोगा है, उसे दु.ख अवश्य भोगना पड़ता है तथा जिसे दुःख मिला है, उसे सुख अवश्य मिलेगा ।

१२५३. सुगना क साथी घणाँ, बेसाँ क माँटी घणाँ ।

सुगुणी (विद्वान) के साथी घने (बहुत), वेश्या के पति घने (बहुत) ।

गुणवानों के मित्र और वेश्याओं के पति अनेक होते है ।

यदि कोई मनुष्य किसी गुणवान व्यक्ति से अप्रसन्न हो जाये, तो लोग कहते है कि वेश्या के जिस प्रकार कई पति बन जाते है, इसी प्रकार विद्वान को भी प्रत्येक स्थान पर अनेक मित्र मिल जाते है ।

१२५४. सुण सब की, अर कर मन की ।

सुने सबकी और करे मन की ।

कार्य तो मन चीता ही करना चाहिए, किन्तु उस पर लोगों के परामर्श को सुनने से कोई हानि नहीं होती ।

किसी बात को पूरा करने से पहिले लोगों के मत को अवश्य जान लेना चाहिए, जिससे भविष्य मे अनिष्ट की आशङ्का दूर की जा सके ।

१२५५. सुध न सुधाकड़ो, अर बीच बीच मँ लर म्हारा का ।

सुध न सुधाकडा और बीच बीच मे लेरे मेरा ।

मूर्ख व्यक्ति अपनी टाँग सब में अड़ाता रहता है ।

जो व्यक्ति मूर्खतावश किसी बात में अपने उल्टे-सीधे विचार व्यक्त करता हो, उसे चुप करने के लिए यह उक्ति ब्रह्मास्त्र का काम करती है । ऐसी कहावतो का प्रयोग प्राय: स्त्रियो के द्वारा किया जाता है ।

१२५६. सुस्सो साँप, सरावगी, मल्ला जल की तोर ।
कदी न होवै आपणाँ, राँध'र खावो खीर ।

शशक, सर्प, श्रावक, मल्लाह जल के तीर।
कभी न होवें अपने, पकाकर खिलाओ खीर।
शशक, सर्प, जैनी तथा जल के तीर रहने वाला मल्लाह–ये अपने हितू नहीं हो सकते।

खरगोश को बहुत प्यार करने पर भी काट लेता है। सर्प को दूध पिलाओ फिर भी विष ही उगलता है। मल्लाह बिना पारिश्रमिक लिये पार नही उतार सकता। उसने श्रीरामचन्द्रजी को भी नही छोड़ा। इन सबके समान ही जैनी भी मनुष्य का रक्त चूसने वाला होता है।

१२५७. **सूँगी मा का म्हँगा बेटा, म्हँगी मा का सूँगा बेटा।**
चत्तर मा का गल्या बेटा, गली मा का चत्तर बेटा।
सस्ती मा के मँहगे बेटे, मँहगी मा के सस्ते बेटे।
चतुर मा के पागल बेटे, पागल मा के चतुर बेटे।
विधाता की सृष्टि में विरोधाभास पाया जाता है।

गाय सस्ती उसका पुत्र बैल मँहगा और भैंस मँहगी उसका पुत्र भैंसा सस्ता बिकता है। क्षत्राणी चतुर होती है, उसके पुत्र अत्यधिक सीधे तथा वैश्य की स्त्री सिलबिली होने पर भी उसके पुत्र वणिक् अति चतुर होते है।

१२५८. **सूँण चड़ो का सूँण ले छ क ऊँ का पराण ?**
शकुनचिडिया से शकुन लेता है या उसके प्राण ?
वस्तु या व्यक्ति के अनुरूप ही उससे कार्य लेना चाहिए।

जिस वस्तु या व्यक्ति से जितना सा कार्य हो सकता है, उससे अधिक लेने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के प्रति इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१२५९. **सूँण चड़ो घर खावे, ऊँको खदी न लेखो आवे।**
शकुन चिड़िया घर खाये, उसका कभी न लेखा आये।
सीधे बनकर दूसरे का माल उड़ाना।

सीधे बनकर किसी का धन खा जाने पर उसके बारे में कोई कुछ भी नही कह सकता। उसको आलोचना के रूप मे यह कहावत कही जाती है।

१२६०. सूत सूं तो भूत बो बंध जाव छ ।

सूत से भूत भी बँध जाता है ।

एकता में अत्यधिक बल है ।

सूत के कई तारों को जोड़कर उससे भूत भी बाँध दिया जाता है । (तान्त्रिक लोग सूत के ही कण्डे डोरे बनाते है) । इसी प्रकार संगठन के द्वारा अत्यधिक दुष्ट व्यक्ति पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है ।

१२६१. सूता को भैंस पाडो जण ।

सोते की भैंस पाडा जने (पैदा करे) ।

असावधान व्यक्ति सदैव हानि उठाते हैं ।

असावधानी के कारण हानि उठाने वाले व्यक्ति के प्रति यह कहावत कही जाती है । इस पर एक कहानी है—

"दो व्यक्तियों की भैंसे बियाने वाली थीं । रात के समय जब वे बियाईं, तब जिस जागे हुए व्यक्ति की भैंस ने पाड़ा प्रसव किया, उसने सोने वाले पड़ौसी की तत्काल प्रसूता पाड़ी से बदल लिया ।

१२६२. सूतो सूतो ई सरग चाट छ ।

सोते सोते ही स्वर्ग चाटता है ।

बड़े कार्य के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है ।

जिस प्रकार सोते हुए व्यक्ति द्वारा आकाश नहीं चाटा जा सकता, उसी प्रकार आलस्य मे पड़े रहकर बड़े कार्य पूरे नही किये जा सकते ।

१२६३. सूंदार तो सगी माई सूं बी न चूक ।

सुनार तो सगी मा से भी नही चूकता ।

सुनार सोने चाँदी की चोरी करता ही है ।

सुनार ग्राहकों के आभूषण बनाते समय कुछ अवश्य चुराता है । इस कार्य मे वह अपनी मा के आभूषण बनाते समय भी नहीं चूकता । इस प्रवृत्ति के आधार पर ही सुनार को सस्कृत में "पश्यतोहर" अर्थात् देखते-देखते चुरा लेने वाला कहा गया है ।

१२६४. सूंना को कटारो कांई पेट में गुलक ?

सोने की कटारी को क्या पेट में घुसावे ?

घातक सम्बन्धी प्रेम का पात्र नहीं हो सकता ।

मूल्यवान वस्तु के दुःखदायी होने पर उसके दुःख को कोई भी सहने के लिए तैयार नही होता ।

"वा सोने को जारिये, जासों टूटे कान"—में इसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति हुई है ।

१२६५. सूनाँ गाँव मँ सात दन रबा हालो छ ।

सूने गाँव में सात दिन रहने वाला है ।

निठल्ला व्यक्ति हर स्थान पर ठहर जाता है ।

हर कही बिना कारण अधिक समय व्यतीत कर देने वाले व्यक्ति के लिए इसका प्रयोग होता देखा जाता है ।

१२६६. सूँना सूँ घड़ाई म्हँगी छ ।

सोने से घड़ाई मँहगी है ।

वस्तु के मूल्य से अधिक उस पर व्यय नहीं किया जा सकता ।

ऐसा आभूषण किस काम का, जिसमे घड़ाई का मूल्य माल से अधिक देना पड़े ।

१२६७. सूँनो अर सुगंद ।

सोना और सुगन्ध ।

दो सुन्दर गुणों का संयोग होना ।

जब दो अच्छी बाते एक साथ मिल जाती है, तब सहसा यह कहावत मुँह से निकल पड़ती है ।

१२६८. सूनो, सीसम, सागवान जद छेड़ो जद न्वा ।

सोना, शीशम, सागौन, जब छेड़ो तब नये ।

सोना, शीशम और सागौन कभी खराब नहीं होते ।

यदि धातु खरीदकर रखना चाहें, तो सोना ही खरीदना चाहिए । यदि लकड़ी का कोई सामान बनवाना हो, तो शीशम या सागौन का बनवाना चाहिए । ये तीनों वस्तुएँ सदैव नई वस्तु का सा आनन्द देती हैं ।

१२६९. सूँप्याईं तो साँप बी न खाव ।

सौंपे हुए को तो साँप भी नहीं खाता ।

धरोहर तो सभी वापस लौटा देते हैं ।

जो वस्तु किसी को धरोहर के रूप में सौंपी है, उसे तो दुष्ट होते हुए भी वह हडप नही कर सकता । अतः धरोहर रूप में किसी वस्तु को रखते हुए शकित व्यक्ति से यह कहावत कही जाती है ।

१२७०. सेखी खोरा'हात मँ सकोरा ।

शेखी खोरे, हाथ में सकोरे ।

आय से अधिक व्यय करने वाले अन्त में दुःख पाते हैं ।

जो व्यक्ति शान-शौकत मे अधिक रुपया खर्च कर देते हैं, वे अन्त में निर्धन होकर इधर-उधर भिक्षाटन किया करते है ।

१२७१. सेखी स्याठ की, अर लत्ता भाड़ा का ।

शेखी साठ की और कपड़े भाड़े (किराये) के ।

शेखी बघारने वाले नंगे होते है ।

अपनी शान-शौकत बनाने के लिए लोग किराये के कपड़ो से झूठा आडम्बर रचा लेते है ।

१२७२. सेर ज्यार न ज्वाँर छ ।

सेर ज्वार को जुहार है ।

पैसे वाले के सब अधीन हो जाते हैं ।

जिसके पास खाने के लिए पर्याप्त द्रव्य है, उसको सब नमस्कार करते है ।

१२७३. सेर न स्वासेर मल, जदी काम चाल छ ।

सेर को सवा सेर मिले, तभी काम चलता है ।

अपने आप को ही अधिक बलवान नहीं समझ लेना चाहिए ।

किसी दुर्बल को सताने वाले व्यक्ति से जब अधिक बलशाली क पाला पड़ जाये अथवा जो चालाकी करता है, उसके साथ चालाकी करं

वाला मिल जाये, उस समय इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१२७४. सेवड़्या खाणो लुगाई, अर जेवड़ा खाणो बैल बस का कोई न।

सेव खाने वाली लुगाई और रस्सी खाने वाला बैल वश के नहीं हैं।

कुटेव पड़ जाने पर दूर नहीं होती।

जो औरत चटपटी वस्तुओं में रुचि रखती हो तथा जो बैल रस्सियाँ खाता हो, वे कालान्तर में अनेक दोषों में फँस जाने से सुधर नहीं सकते।

१२७५. सोकीन डोकरी क सालरी को घाघरो।

शौकीन डोकरी के सालरी (चटाई) का घाघरा (लँहगा)।

शान शौकत वालों को समय पर शान छोड़नी पड़ जाती है।

किसी शौकीन को तुच्छ वस्तुओं का उपयोग करते देखकर व्यंग्य में यह उक्ति कही जाती है।

१२७६. सोबत को असर होव ई छ।

सोहबत का असर होता ही है।

संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

जैसी जिस मनुष्य की सगति होगी वैसे ही उसके विचार बन जायेंगे। अच्छी संगति से अच्छे विचार तथा बुरी संगति से बुरे विचार बनते है।

१२७७. सो बरस को सलावट, अर बारा बरस को घर को धणी।

सौ वर्ष का सिलावट (कारीगर) और बारह वर्ष का घर का धनी (स्वामी)।

वयोवृद्ध कारीगर भी अल्पायु मकान मालिक के कहे अनुसार ही काम करेगा।

कारीगर वृद्ध होने पर भी अपने मन के अनुसार काम नही कर सकता। वह तो काम कराने वाले की इच्छानुसार काम करता है।

१२७८. सो बातां को एक बात।

सौ बातों की एक बात।

तात्पर्य यह है।

जब किसी मुख्य बात पर बल देना हो, तब यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

१२७९. सोला आना साँची।

सोलह आने सच्ची।

बिल्कुल सत्य होना।

किसी बात की पूर्ण सत्यता का प्रकाशन करने के लिए यह वाक्यांश कहा जाता है।

१२८०. सोवगा जे खोवगो।

सोवेगा सो खोवेगा।

समय का सदुपयोग करना चाहिए।

जो व्यक्ति आलस्य में अपना समय बिता देते है, उनके उद्‌बोधन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

१२८१. सो साँगोद्‌या अर एक दीगोद्‌यो।

सौ साँगोद वाले और एक दीगोद वाला।

दीगोद निवासी साँगोद वालों से तंत्र-शास्त्र में बढ़-चढ़ कर होते हैं।

साँगोद तथा दीगोद कोटा जिले के अन्तर्गत दो कस्बे है। कुछ समय पूर्व दोनों स्थान जादू व टोने के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थे। दीगोद वाले तांत्रिको की एक समय साँगोद वालों से मुठभेड़ हो गई। उसमें दीगोद निवासी तात्रिकों की विजय रही, तभी से यह कहावत चल पड़ी है।

१२८२. सो सालाँ में साँधो मल्यो, ऊबो बर आँधो मल्यो।

सौ सालों मे सधान (खोज) मिला, वह भी वर अंधा मिला।

अत्यधिक परिश्रम के पश्चात् भी पूर्ण सफलता न मिलना।

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में अत्यधिक परिश्रम करे तथा अधिक समय व्यतीत हो जाने पर केवल आंशिक सफलता ही प्राप्त हो पाये, तब हताश व्यक्ति द्वारा यह कहावत कही जाती है।

१२८३. सो सुनार की, अर एक ल्वार को।

सौ सुनार की और एक लुहार की।

बलवानों का एक प्रहार दुर्बल के कई प्रहारों से भी बढ़कर है।

दुर्बल व्यक्ति को बलवान के साथ छेड़खानी नहीं करना चाहिए, क्योंकि अवसर आने पर बलवान का प्रतिकार असह्य हो सकता है।

ह

१२८४. हँगतो बार लँगोटो काँई सँभाल्नो ?

हँगते समय लँगोटी क्या सँभालना ?

कार्य करने से पूर्व ही उसके साधनों को ठीक कर लेना चाहिए।

जिस प्रकार शौच जाते समय धोती को संभालने पर उसकी अशुद्धि की आशङ्का रहती है, उसी प्रकार किसी कार्य द्वारा होने वाली हानियों को उसके साधनों की समुचित व्यवस्था करके पहले ही दूर कर लेना चाहिए।

१२८५. हँगर छोरा, पेट फोड़ूँ।

हँगरे छोरे, पेट फोड़ूँ।

किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य के लिए बाध्य करना।

किसी के पेट को फोड़कर शौच कराने की धमकी देकर शौच नहीं करवाया जा सकता। इसी प्रकार किसी से ऐसा कार्य जिसमें उसकी आवश्यकता या इच्छा न हो, नहीं करवाया जा सकता।

१२८६. हत्यारा का सा बाल।

हत्यारे के से बाल।

दीर्घ एवं अस्तव्यस्त केश होना।

केश-प्रसाधन भी कला है। जो मनुष्य बाल रखते हैं, उन्हें उनको सँवार कर रखना चाहिए। जो उनकी चिन्ता नहीं करते, उनके लिए यह उक्ति कही जाती है।

१२८७. हत्यारा'र खाबला क काँई ज्यात होव छ ?

हत्यारे और खाबले (दुष्ट) के क्या जाति होती है ?

हत्यारे एवं दुष्ट अपनी जाति के नियमों की कोई परवाह नहीं करते।

जातिगत नियमों का उल्लंघन करके ही तो हत्यारे दुष्ट बनते है। अतः उनके लिए नियमों का पालन करना सर्वथा असम्भव है।

१२८८. हतेली प राई थोड़ी ई उग छ ?

हथेली पर राई थोड़े ही उगती है ?

अति शीघ्रता से कार्य पूरा नहीं होता।

जिस प्रकार हथेली पर राई नहीं उग सकती, उसी प्रकार कोई समय लेने वाला कार्य जल्दी पूरा नही हो सकता।

१२८९. हतेली मँ राँद'र ख्वायो, तो बी खो क बाल मारयो।

हथेली मे राँधकर खिलाया, तब भी कहा कि जला दिये।

कृतघ्नी व्यक्ति दूसरों के द्वारा की गई भलाई को नहीं मानते।

हथेली मे पकाकर खिलाने तथा दूसरों के परिश्रम से अर्जित वस्तु का उपभोग करके भी कृतघ्नी उसकी कटु आलोचना ही करते है। वे कहते है कि हमको इतना गरम-गरम खिला दिया जिससे हमारा मुँह झुलस गया।

१२९०. हराम की कमाई हराम मँ ई जाव छ।

हराम की कमाई हराम में ही जाती है।

पैसा जैसे आता है, वैसे ही चला जाता है।

देखिये कहावत न० ४२१।

१२९१. हरी खाव न फली तोड़।

हरी खाये न फली तोड़े।

संतोषी व्यक्ति को पाप नहीं करने पड़ते।

जिसको अच्छे-अच्छे पदार्थो के उपभोग की लालसा होती है, उसे अनेक अनैतिक कार्य करने पडते है।

१२९२. हरी खेती अर ग्याबण गाय, घर आयां की छ।

हरी खेती और गर्भिणी गाय घर आये की है।

हरी खेती एवं गर्भिणी गाय का सदैव संशय बना रहता है।

खेती में अनेक विघ्न पडने से हरी फसल नष्ट हो सकती है। इसी प्रकार गर्भिणी गाय भी गर्भपातादि विघ्नों का शिकार बन सकती है। दोनों परिस्थितियों मे सशय बनी रहना स्वाभाविक ही है।

१२९३ **हलताँ चलताँ डोकरी, घर मँ घाल्यो घोड़ो।**

हिलते चलते डोकरी, घर में घुसाया घोडा।

बैठे-बैठे ही नई आपत्ति बुला लेना।

यदि कोई व्यक्ति अकारण जान बूझकर किसी ऐसे कार्य को स्वीकार कर ले, जिसे करने की उसकी सामर्थ्य न हो, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

१२९४. **हल्दो लागे न फटकड़ो, रंग छोखो आजावे।**

हल्दी लगे न फिटकड़ी, रङ्ग अच्छा आजाये।

बिना परिश्रम या व्यय किये अच्छा कार्य हो जाना।

जब किसी कार्य की सिद्धि में न तो अधिक परिश्रम करना पड़े और न अधिक व्यय ही करना पड़े, उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

१२९५. **हंस के गल कागलो।**

हँस के गले में कौआ।

शिक्षित वर के साथ अशिक्षित वधू का संयोग होना।

विवाह मे अत्यधिक सावधानी रखनी चाहिए। जब किसी प्रकार अनमेल विवाह हो जाते है, तब उनकी आलोचना इस प्रकार होती है।

१२९६. **हल्याब कोडी कोडी को, बख़सीस लाख की।**

हिसाब कौड़ी-कौड़ी का बख्शीश लाख की।

हिसाब पूरा करना चाहिए।

हिसाब करते समय पैसे-पैसे का हिसाब देना चाहिने। यदि मालिक पुरस्कार रूप मे लाख रुपये भी दे, तो वे ग्रहण किये जा सकते हैं, किन्तु हिसाब में से कौड़ी भी नहीं खानी चाहिए।

१२९७. हायी सूं तो भाटा बी फूट जाव छ ।

आह से तो भाटा (पत्थर) भी फूट जाता है ।

दुखिया की हाय का बुरा प्रभाव पड़ता है ।

यदि कोई व्यक्ति किसी मनुष्य को व्यर्थ ही सताये, तो उसके हृदय से निकली हुई आह दुष्ट का सर्वनाश कर देती है । निम्नाङ्कित दोहे में भी इसी भाव को समझाया गया है ।

"दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
मरी खाल की साँस सों, सार भसम हो जाय ।"

१२९८. हाक खायां डोकरा न परण ।

हाक खाये डोकरे नहीं परणते ।

धन से ही असम्भव कार्यों की सिद्धि हो सकती है ।

दीन वचन बोलकर प्रार्थना करने से ही वृद्ध का विवाह नही हो जाता ।

१२९९. हाड मं हाड न, मांस मं मांस ।

हाड में हाड़ नहीं, मास में मांस (नही) ।

दुर्बल होने के कारण सामर्थ्य से बाहर का काम नहीं करना चाहिए ।

किसी अति क्षीणकाय व्यक्ति के उत्साहित होने पर उसकी शारीरिक शक्ति के संरक्षणार्थ यह कहावत कहकर उसे साहसिक कार्य से रोक दिया जाता है ।

१३००. हाड होव तो मांस घणोई आजाव ।

हाड होवे तो मांस घना (बहुत) ही आजावे ।

दुर्बलता के लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए ।

बीमारी से क्षीण होने पर भी यदि कोई व्यक्ति जीवित रह जाये, तो अत्यधिक प्रसन्नता होनी चाहिए, क्योंकि अन्नादि खाद्य-पदार्थों से शरीर अल्पकाल में ही पुष्ट बनाया जा सकता है ।

१३०१. हाडां का काईं लाड ? मुंह स्याफई भला ।

हाड़ों का क्या लाड ? मुँह सफा ही भला।

दाँतों से अधिक प्रेम किस काम का ?

दन्त-विहीन व्यक्ति के द्वारा यह उक्ति कही जाती है। इसके अन्तर्गत एक विनोद पूर्ण कहानी है—

"एक बूढ़े मियाँजी शादी करके बीबी लाये। मियाँ के दाँत एक ही था। उसने बीबी से कहा कि मर्द तो इकदंता ही भला। इस पर बीबी ने उत्तर दिया—"हड्ड का क्या लड्ड, मुँह सफसफा ही भला।" तब मियाँजी ने समझा कि बीबी तो उनसे भी बढ़ी थी।

१३०२. हाडा खींचो का सा बर।

हाडा खीची का सा बैर।

अत्यधिक बैर होना।

किन्ही दो व्यक्तियों के अति विरोध का प्रदर्शन इस कहावत द्वारा किया जाता है। हाडाओं तथा खीचियों का बैर अति प्रसिद्ध है।

१३०३. हाडा ले डूब्या गणगौर।

हाडा ले डूबे गनगौर।

दोषी व्यक्ति के साथ निर्दोष का मारा जाना।

जब किसी दोषी के साथ निरपराध को हानि उठानी पडे, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

यह एक ऐतिहासिक कहावत है। इस कहावत के सम्बन्ध में वंश-भास्कर, चतुर्थ भाग, सप्तमराशि, एकविंश मयूख मे इस प्रकार लिखा है—

बूँदी के महाराव बुधसिंह जी हाड़ा जयपुर के सवाई जयसिंह जी के जामाता थे तथा औरङ्गजेब के पुत्र शाह आलम के कृपापात्र थे। जिन दिनों वे शाही नौकरी पर काबुल गये हुए थे, उनके छोटे भाई जोधसिंह जी हाडा बूँदी का प्रबन्ध करते थे। एक साल गणगौर के उत्सव के दिन जोधसिंह जी ने गणगौर की सवारी नावों में निकलवाई। बूँदी के बड़े तालाब में वे अपने सुभट, सचिव और अनुचरों के साथ नौका मे सवार होकर जल-विहार करने लगे। वहीं वेश्याओं का समूह राग के साथ की २२ श्रुतियों तथा स्वर-तालों के साथ नृत्य-गान कर रहा था। जोधसिंहजी का विवाह उदयपुर के महाराणा के यहाँ हुआ था। उदयपुर से दहेज मे प्राप्त "एकलिंग प्रसाद" नामक हाथी

उसी तालाब पर पानी पीने के लिए आया। उस मदोन्मत्त विशालकाय हाथी ने जब ताल ब में नावों को तैरते देखा तो वह बिगड़ उठा और पानी में घुस कर उसने नाव पर आक्रमण कर दिया। जोधसिंह जी के सब साथी शराब में मस्त थे, इसलिए उनसे कुछ भी करते धरते न बना। केवल एक धाय भाई ने हाथी पर कटारी से वार किया, किन्तु वह असफल रहा। इसी बीच में हाथी ने नाव को उलट कर पानी में डुबो दिया। दैवयोग से कुछ लोग तैरकर बाहर निकल आये। जोधसिंह जी और धायभाई को अंतिम साँस लेते हुए पानी के बाहर निकाला गया। धायभाई का तो उसी क्षण प्राणान्त होगया। जोधसिंह जी में कुछ प्राण बाकी था, किन्तु चौथे दिन उनके भी प्राण-पखेरू उड़ गये और वे परलोक सिधार गये। उसी दिन से यह कहावत चल पड़ी— "हाडा ले डूब्या गणगौर।" अर्थात् जोधसिंह जी हाडा की जब नाव डूब गई, तो उनके साथ गणगौर भी डूब गई। तब से बूँदी मे गणगौर का उत्सव बन्द कर दिया गया और तीज का उत्सव मनाया जाने लगा।

१३०४. हाँडी पराई छ, तो काँई पेट बी परायो छ ?

हँडिया पराई है, तो क्या पेट भी पराया है ?

परिणाम से अधिक भोजन कदापि नहीं करना चाहिए।

तृप्त हो जाने के पश्चात् आग्रह करने पर भविष्य का ध्यान रखने वाले व्यक्ति इस कहावत द्वारा अपना पीछा छुडा लेते है।

१३०५. हाडोती का हाड बेचणा, बावन का बोपारी।
बूँदी का ये अस्या सकारी, ऊबी फोज्याँ मारी।

हाड़ौती के हाड़ बेचने, बावन के व्योपारी।
बूँदी के ये ऐसे शिकारी, ऊबी (खडी) फौजे मारी।

बूँदी के लोगों की आत्म-प्रशंसा।

यहाँ हाड़ौती का संकुचितार्थ केवल कोटा से है। अतः मनोरंजनार्थ बूँदी निवासियों ने दूसरों को चिढ़ाने के लिए इस कहावत का निर्माण किया है।

१३०६. हाडोती हड़क्या बस, नकटा नागरचाल।
ढांडा तो ढूँढाड़ बस, मनख बस मेवाड़।

हाड़ौती (में) हड़के बसें, नकटे नागरचाल।
ढांडे (पशु) तो ढूँढाड़ बसे, मनुष्य बसें मेवाड़।

अन्य प्रान्तों की अपेक्षा मेवाड़ अधिक सभ्य एवं संस्कृत है।

हाडौती में स्वार्थी रहते हैं, निर्लज्ज नागरचाल में रहते हैं। ढूँढाड़ प्रान्त में अति मूर्ख मनुष्य रहते हैं तथा मेवाड़ में मनुष्य निवास करते हैं। यह कहावत मुगलकालीन दिखाई देती है। हाड़ौती के लोग आत्मरक्षा के लिए तथा मेवाड़ के लोग समाज की रक्षा के लिए युद्ध किया करते थे।

१३०७. हात का गास बकुण्ठ का बास।

हाथ का ग्रास, बैकुण्ठ का निवास।

स्वयं द्वारा किया हुआ भोजन सुखकारी होता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने आहार के विषय में पूर्णतया परिचित होता है। अतः परिमाण से भोजन करने में जो स्वर्गीय आनन्द होता है, वह दूसरों द्वारा खिलाने पर प्राप्त नहीं हो सकता।

१३०८. हात की रेख न मट।

हाथ की रेखा नही मिटती।

कौटुम्बिक बन्धन तोड़ने से नहीं टूट सकता।

कभी कभी आपस में झगड़ा हो जाने पर जब व्यक्ति अपने कुटुम्बियों से उदासीन हो जाते हैं, उस समय उनको सान्त्वना देने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

१३०९. हात न गल़, अर ऊबोई बल़।

हाथ (मे) न गले (में) और खड़ी ही बले (उबले)।

निर्धन को अधिक क्रोध शोभा नहीं देता।

किसी स्त्री के लिए कहा गया है कि न तो हाथ में ही आभूषण हैं और न गले में ही। व्यर्थ ही खड़ी-खड़ी उबलती है।

१३१०. हात पाटा, पांव पाटा, खां चाली बमाता ?

हाथों में पट्टियाँ, पैरों में पट्टियाँ, कहाँ चली बेमाता (विधाता) ?

अशिव वेष बनाना।

किसी बालिका के अंगों पर पट्टियाँ बँधी देखकर उपहास के रूप में उससे यह प्रश्न पूछ लिया जाता है।

१३११. हात सुमरनी, मूँडा मँ राम ।

हाथ सुमरनी, मुँह में राम ।

कपटी मनुष्य आडम्बर द्वारा असलियत को छिपाने का प्रयत्न करता है ।

छल एव कपट मनोविकार है । ये बाह्य आडम्बरों से सरलतापूर्वक छिप जाते है । ऐसे व्यक्तियो के लिए जो समाज को इस प्रकार धोखा देते है—इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१३१२. हात सूको अर बालक भूको ।

हाथ सूखा और बालक भूखा ।

बच्चों को बार बार भूख लगती है ।

बच्चों को थोडी-थोडी देर मे भूख लगती है । अतः वे भोजनोपरान्त अल्प समय पश्चात् ही पुनः खाना मागने लगते है ।

१३१३. हातां का आलस मूँडा मँ जावं छं ।

हाथो के आलस्य मुँह मे जाते है ।

थोड़े आलस्य के कारण भूखे रहना उचित नहीं है ।

जब कोई मनुष्य आलस्य के कारण भोजन न बनावे, तब भोजन बनाने को प्रेरणा देने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१३१४. हाती के पाछ कुत्ता भस ई छं ।

हाथी के पीछे कुत्ते भौकते ही है ।

महापुरुष छोटे व्यक्तियों की निंदा पर ध्यान नहीं देते ।

हाथी चला जाता है तथा कुत्ते भौकते ही रहते है । इसी प्रकार दुष्ट विद्वानो की आलोचना करते ही रहते है, फिर भी वे उनकी परवाह न करके अपने कार्य मे लगे रहते है ।

१३१५. हाती का दाँत खाबा का ओर, बताबा का ओर होवं छं ।

हाथी के दाँत खाने के और, बताने के और होते है ।

बनावट तथा वास्तविकता में बहुत अन्तर होता है ।

कहा क्या जाय और किया क्या । करनी और कथनी में अन्तर होने

पर यह कहावत कही जाती है ।

१३१६. **हातो का पग मँ सबका पग आजाव छ ।**

हाथी के पैर में सबके पैर आजाते है ।

एक बड़ी वस्तु में अनेक छोटी वस्तुएँ समा जाती हैं ।

यदि कोई मनुष्य एक ऐसी बात कह दे जो उस विषय के समस्त पक्षों को घेर लेती हो, तो वहाँ इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१३१७. **हातो की लार हलोला खाबा मँ काईं फायदो ?**

हाथी के साथ हिलोरे (धक्के) खाने मे क्या फायदा ?

बड़े आदमी के साथ छोटे व्यक्ति को अधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं ।

किसी भी कार्य में बड़े आदमी के साथ लगने से उसके विरोधी परिणामों के द्वारा छोटे व्यक्ति को ही अधिक हानि उठानी पड़ती है ।

१३१८. **हातो घस, तो पाडो तो र ।**

हाथी घिसे, तो पाडा तो रहे ।

परिस्थिति बिगड़ने पर भी धनी अत्यन्त दरिद्र नहीं हो सकता ।

हाथी अत्यधिक दुर्बल होने पर भी भैंसे के बराबर तो रह ही जायेगा । उसी प्रकार धनी की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने पर भी उसकी स्थिति साधारण स्थिति के लोगो से ऊँची ही रहती है ।

१३१९. **हातो तो बना सँणगारचा ई छोखा लाग छ ।**

हाथी तो बिना शृङ्गार किये ही अच्छे लगते है ।

जो प्रकृति से ही सुन्दर है, उन्हें शृङ्गार की आवश्यकता नहीं होती ।

जब कोई व्यक्ति अपने आपको अधिक सजाने की चेष्टा करे तथा लोगों से इस विषय में पूछता भी जाये, उस समय लोग उसे यह उत्तर देते है ।

१३२०. **हातो सरका ब्या जाव, गाडर थाक माँग ।**

हाथी सरीखे बिया जाये, गाडर (भेड़) थाक माँगे ।

जिस कार्य में बलवानों का धैर्य छूट जाता है, वहाँ क्षीणकाय व्यक्ति क्या कर सकते हैं ?

जिस जलप्लावित नदी को देखकर हाथी भी डर जाये, वहाँ भेड़ की क्या बिसात ? यदि कोई छोटा बच्चा किसी बड़े कार्य को करने का अनुरोध करे, वहाँ यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

१३२१. हाती सूँ उजाड़लो कुंण ख छ ?

हाथी से उजाडने वाला कौन कहता है ?

बड़े आदमियों को कोई भी दोषी नहीं ठहराता ।

हाथी बडे-बडे वृक्षो को ढहा देता है तथा गाय–बकरी खेत चर जाती है । इससे सिद्ध है कि हाथी गाय–बकरियो की अपेक्षा बड़ा विना है, फिर भी वह उजाड़ने वाला नही कहलाता । इसी प्रकार धनी बड़ा अपराध करने पर भी निर्दोषी तथा निर्धन छोटे अपराध पर भी दोषी कहा जाता है ।

१३२२. हाती सूँ हजार पंड, लाख पँड मोडा सूँ ।

हाथी से हजार पैंड, लाख पैंड मोडे (लड़ाकू) से ।

लड़ाकू व्यक्ति से बहुत दूर रहना चाहिए ।

हाथी इतना हानिकर नही जितना एक लडाकू व्यक्ति होता है । अतः यदि हाथी से हजार फुट दूर रहे, तो लड़ाकू से एक लाख फुट दूर रहना चाहिये ।

१३२३. हारघा बेटा क कणगती को बोझ ।

हारे बेटे के करधनी का बोझ ।

दुर्बल बच्चे को छोटे आभूषण भी नहीं पहनाना चाहिए ।

जो बच्चा रोग के कारण क्षीण हो गया है, उसे कटि में पहनाई जाने वाली करधनी भी बोझिल प्रतीत होती है ।

१३२४. हारजे न हीमत, बसारजे न हरी नाँव ।
जीं बिध राखे राम, ऊँ ईं बिध रीजे ।

हारिये न हिम्मत, बिसारिये न हरिनाम ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए ।

हिम्मत कभी नहीं हारना चाहिए।

हिम्मत न छोड़नी चाहिए तथा ईश्वर को न भूलना चाहिए। ईश्वर जिस प्रकार रक्खे, उसी पर सन्तोष कर लेना चाहिए।

१३२५. हाल तो चोथ्या मँ सूं मूँठी ई न खडी।

अभी तो चौथे में से मूठी ही नही निकली।

थोड़ा ही ज्ञान होना।

कम उम्र वाला यदि किसी गम्भीर बात में अपनी टाँग अड़ाये, तो उसकी अनुभवहीनता का प्रकाशन करते हुए वयोवृद्ध इसका प्रयोग करते है।

१३२६. हाल तो बेटी बाप की ई छ।

अभी तो बेटी बाप को ही है।

अभी तो कार्य रोका जा सकता है।

कभी कभी कार्यारम्भ होते ही उसमे कुछ त्रुटियाँ दिखाई देने लगे, उस समय कार्यकर्ता के उदासीन हो जाने पर दूसरे व्यक्ति इसका प्रयोग करते है।

१३२७. हिन्दू की तमाखू मनवार मँ ई बल जाव छ।

हिन्दू की तम्बाखू मनुहार में ही जल जाती है।

सीमा से अधिक मनुहार भी हानिकर है।

चिलम भरकर एक व्यक्ति दूसरे को कहे कि आप पियें, दूसरा कहे कि पहले आप पिये। इस प्रकार बहुत देर तक मनुहार करने पर तम्बाखू जलकर राख हो जाती है।

१३२८. होजड़ा की कमाई, मूँछ मुँडाई मँ ई गमाई।

हिजड़े की कमाई, मूँछ मुँड़ाई में ही गमाई।

फैशन में अधिक व्यय करना उचित नहीं है।

फैशन में अधिक खर्च कर देने वाले मनुष्यों के लिए यह कहावत कही जाती है।

१३२९ **हीरा बो काँई भाटा सूँ फोड़चा ख्या छ ?**

हीरे भी क्या भाटे (पत्थर) से फोड़ना कहा है ?

बुद्धिमान व्यक्ति मूर्खों की बातों पर उत्साहित नहीं होते ।

मूर्खो से सिर पचाना अच्छा नही है । अतः विद्वान सदैव ही ऐसे अवसरों को टाल देते है ।

१३३०. **हूँस कर'र डोकरी मारी, अर फूंस में बाली ।**

हूँस करके (इच्छा से) डोकरी मारी और फूस मे जलाई ।

इच्छा से किये जाने वाले कार्य में व्यय की ओर ध्यान नहीं दिया जाता ।

किसी पुत्र ने यह इच्छा की कि मेरी माता मेरे सामने ही स्वर्गगामिनी हो । माता की मृत्यु उसके सामने होने पर भी उसने इच्छित कार्य नही किया ।

१३३१. **होटाँ बार जे फो'टा बार ।**

ओठों से बाहर वह द्वार से बाहर ।

किसी गुप्त बात को हृदय में ही रखना चाहिए ।

अपने हृदय के रहस्य को प्रकट करने के पश्चात् वह एक से दूसरे के पास, दूसरे से तीसरे के पास पहुँच ही जाता है ।

१३३२. **होणी का जोग न टलै ।**

होनी के योग नही टलते ।

जो होना है, वह तो होकर ही रहता है ।

जो भाग्य मे बदा है, वह अवश्य होकर रहता है । किसी मनुष्य की धन जन की क्षति होने पर इस कहावत द्वारा सान्त्वना दी जाती है । निम्नाङ्कित दोहे मे भी यही भाव व्यक्त किया गया है ।

"तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिले सहाय ।
आप न आवे ताहि पै, ताहि तहाँ ले जाय ।"

१३३३. **होत की जोत छ ।**

होत (होनी) की ज्योति है ।

धनी की सब खुसामद करते हैं ।

जिसके पास धन होता है, उसीका प्रकाश फैलता है । उसके पास अनेक मनुष्य काम के लिए खडे रहते है ।

१३३४. होत की बण, अणहोत को भाई ।

होत की बहिन, अनहोत का भाई ।

भाई धनी हो तो बहिन बनाता है तथा बहिन निर्धन हो तो भाई बनाती है ।

पैसे वाला व्यक्ति बहिन बनाता है । स्त्री निर्धन हो तो भाई बनाती है । धनी स्त्री भाई की खोज नही करती, इसी प्रकार निर्धन व्यक्ति बहिन की खोज नही करता ।

१३३५. होम करताँ हात बल्ग्यो ।

हवन करते हाथ जल गया ।

अच्छे कार्य करते हुए भी विपत्ति आपड़ना ।

परोपकार का कार्य करते हुए व्यक्ति की जब लोग निन्दा करना प्रारम्भ कर दे तब वह व्यक्ति अति दुःखित होकर भविष्य के लिए परोपकार न करने की प्रतिज्ञा करता हुआ इस कहावत को कहता है ।

१३३६. होली दवाल़ो कागलो बोल्यो, फेर बो कुराँ कुराँ ।

होली दिवाली कौआ बोला, फिर भी काँव काँव ।

दुर्जन कभी अच्छे वचन नहीं बोल सकता ।

दुष्ट व्यक्ति जब कभी बोलेगा, तब दूसरों की निन्दा करेगा । अतः उसका यह दोष संस्कार-जन्य ही होता है ।

१३३७. होवे रोकड़ा, तो परण डोकरा ।

होवे रोकड़े, तो परणे डोकरे ।

द्रव्य से सब काम सुलभ हो जाते हैं ।

यदि द्रव्य हो तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं । वैसे वृद्ध मनुष्य का विवाह नही होता, फिर भी धन खर्च करने पर वृद्ध विवाह भी हो जाते हैं । देखिये कहावत सं० १२९८ ।

१३३८. **होव तो ईद, न तो रोजा ।**

होवे तो ईद, नहीं तो रोजे ।

अदूरदर्शी व्यक्ति धन को आवश्यकताओं के अनुपात से व्यय नहीं करते ।

धन प्राप्त हो जाये, तो उसे पानी की तरह बहा देते हैं तथा अभाव में अनाहार ही करना पड़ता है । मितव्ययिता को न अपनाने वाले व्यक्तियों के लिए यह कहावत कही जाती है ।



हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन
लाड़पुरा, कोटा (राजस्थान)

परिशिष्ट १

हाड़ौती कहावतें

(द्वितीय भाग)

संस्कृत और अंग्रेजी की तुलनात्मक कहावतें

प्रस्तुत ग्रन्थ के द्वितीय भाग में संस्कृत और अंग्रेजी की समदिश या संवादी कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह ग्रन्थ प्रकाशन के पथ पर है। आशा है, शीघ्र ही लोक-साहित्य के अनुरागियों के पास पहुँचेगा।

पाठकों की जिज्ञासा तृप्ति तथा कार्यपद्धति के स्पष्टीकरण हेतु इस भाग के कुछ पृष्ठ यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं।

[कहावतों की संख्या प्रथम भाग के क्रम से ही अंकित की गई हैं]

१- किमज्ञानस्य दुष्करम् ।
We think our fathers fools so wise we grow,
Our wiser sons no doubt will think us so.

२- बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
Knowledge is power.

३- अहो ! विचित्रं खलु सूर्यदर्शनम् ।
The unexpected makes hearts dance the more.

४- धिग्जीवितं चोद्यमवर्जितस्य ।
Without business debauchery.

५- किं करोमि क्व गच्छामि पतिते कार्यसङ्कटे ।
I am between seylla and charybdes.

६- अन्ते रण्डाविवाहश्चेत् आदौ एव कुतो न स ।
No body can escape the appointed task

७- अयाञ्चया लभेत् मुक्तां याञ्चया न लभेत् तृणम् ।
Lots you get without begging, by begging you don't get a petty dole.

८- नहि भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनापि यत्नेन ।
All things moveth towards a determined end.

९- विपत्तौ किं विषादेन संपत्तौ हर्षणेन किम ।
भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः ।
Character is destiny.

१०- असावधाना विपदां सखायः ।
What is lost to sight is lost to hand.

११- कलङ्किते कः कलङ्क ?
The black cannot be further blackened.

१२- दुर्बलैरपि बाध्यन्ते, पुरुषाः पार्थिवाश्रितैः ।
The person in the employ of a king can lord over a most powerful man

१३- अबला यत्र प्रबला, बालो राजा निरक्षरो मन्त्री ।
नहि नहि तत्र धनाशा जीवित-आशाऽपि दुर्लभा भवति ।
The king an idiot and his kingdom a chaos.

१४- अन्नं वै प्राणः ।
Diet cures more than doctor.

१५- नास्त्युद्यमसमो बन्धु कृत्वा यं नावसीदति ।
Work is the seasoning of Existance.

१६- अन्नं वै ब्रह्म, अन्नं वै विराट् इत्यादयः ।
Don't store food in a chamberpot.†

१७- लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत ।
Spare the rod and spoil the child.

१८- कः कालः व्यवसायिनाम ।
A man with courage has every blessing.

१९- अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
Of a truth, the doer is bound to suffer.
or
Evil deeds rebound upon their doers.

---

†मूत्र करने का पात्र, पेशाबदान ।

२०- नैवातीते विचारः स्याद्वर्तमानं समाचर ।
Let the past bury its deed,
Act, act in the living present

२१- धिक्त्वां रे कलिकाल याहि विलयं केयं विपर्यस्तता,
हा कष्टं श्रुतिशालिनां व्यवहृतिर्म्लेच्छोचिता दृश्यते ।
Honesty is a fine jewel, but much out of fashion.

२२- शनैर्विद्यां शनैरर्थानारोहेत्पर्वतं शनैः ।
शनैरध्वसु वर्तेत योजनान्तपरं व्रजेत् ।
Up and dust. Hurry ! more fast !

२३- कुलशीलाः विलज्जन्ते, निर्लज्जा कुप्यन्ति च ।
A noble lady has shyness, while a wench goes on barking.

२४- पापं कर्तुमृणं कर्तुं मन्यन्ते मानवाः सुखम् ।
परिणामोऽतिगहनो महतामपि नाशकृत् ।
Who goes a borrowing, goes a sorrowing
or
He that buildeth his house with other men's money,
Is as one gethering stones for his sepulchre.

८४- सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेशः ।
Give an inch and will take an ell.

९०- निरस्ते पादपे देशे एरंडोऽपि द्रुमायते ।
A figure among ciphers.

२३७- अपराधं स्वयं कृत्वाऽश्रितान् ताड्यते जनः ।
The weak are always oppressed.

२३८- आज्ञापितस्तु रजको नैवारोहति गर्दभम् ।
It is vain to request the mean

२४३- कण्ठे हिरण्यमयी माला, मृग्यते मन्दिरे दरे ।
The butcher looked for a knife, when he had it in his own month.

२८०- यस्यार्थाः स पुमान् लोके, अन्यथाऽपक्षो विहङ्गमः ।
Poverty is next door to stupidity.

२९४- आदातुं सकृदीक्षितेऽपि कुसुमे हस्ताग्रमालोहितम् ।
लाक्षारञ्जनवार्तयाऽपि सहसा रक्तं तलं पादयोः ।

One feels unable to walk when a carriage is available

३१३- अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्यायः ।
The maxim of christening the babe yet unborn.

३५६- बह्वारम्भो लघुक्रिया ।
Anounce of meal and a kitchen upstairs

४४५- यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनः खरः ।
As the pay of the piper, so is the play.

६१४- दृष्ट्वा विस्मरणं यस्मिन जगदेतत् कुतूहलम् ।
The world is a play of a magician
or
This world is all a fleeting show
or
The world is like a dancing girl- it dances for a little while to everyone.

७७५- विविधा पुरुषा लोके क्वचित्काच क्वचिन्मणिः ।
Human nature varies as the human figure

७६०- मृत्युर्जन्मवतां वीर ! देहिनां सह जायते ।
Man is mortal.

६८७- मनोभावं शिरः कम्पैः सङ्गोपयति मानवः ।
Nodding nay though the mind may.

१०२७- यत्सम्मानेन सम्प्राप्तं स्वल्पञ्चेदपि तद्बहु ।
A gift with kind countenance is a double present.

११५६- परालये नृत्यति ठण्ठपालः ।
Cocks made free at horse's corn.

१२५०- सर्वाणि मित्राणि समृद्धिकाले ।
Prosperity gains friends
Or
Prosperity has many friends.

१३२०- गजा यत्र विलीयन्ते गर्दभानां कथैव का ?
Fools rush in when angel's fear to tread,

देश के सम्मान्य विद्वानों से प्राप्त

अभिनन्दन

डा० मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्
रिटायर्ड डाइरेक्टर ऑफ एजूकेशन राजस्थान, जयपुर.

डा० नाथूलाल जी पाठक कृत 'हाड़ौती कहावतें' नामक ग्रन्थ का अवलोकन करके मुझे बडा हर्ष हुआ। इसमें उन्होंने जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित कितनी ही कहावतो का सुन्दर सग्रह किया है। उनका अर्थ और विवेचन पाण्डित्यपूर्ण है। हमारा लोक–साहित्य अप्रकाशित है। इसलिये इस प्रकार के ग्रन्थों मे उसमें पाठकों का प्रवेश हो सकता है और उसके माधुर्य और सौन्दर्य का बहुत कुछ पता लग सकता है। डा० पाठक के इस ग्रन्थ का मै हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

अभिनन्दन

डा० सत्येन्द्र एम०ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्
आचार्य तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

डा० नाथूलाल पाठक का ग्रन्थ 'हाड़ौती कहावतें' (प्रथम भाग) मैंने सरसरी दृष्टि से देखा। कहावतें लोक क्षेत्र की ज्ञान-सूत्र-पिटिकाए हैं, इनमें लोक जीवन की गम्भीर व्यावहारिक अनुभूतियाँ मिलती हैं। इस सम्पत्ति को लोक-क्षेत्र का मथन कर प्रकाश में लाने का कार्य महान यज्ञ के तुल्य है, जिसमें बहुत कम लोगों को सफलता मिलती है। पर डा० नाथूलाल पाठक ने हाडौती के अछूते क्षेत्र की कहावतें संकलित कर प्रकाशित भी करा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न कर लिया है, अतः वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने एक पठनीय भूमिका भी इसके साथ जोड़ दी है तथा प्रत्येक कहावत पर उपयुक्त टिप्पणी देकर इस ग्रन्थ को अत्यन्त उपयोगी बना दिया है। लोक साहित्य के क्षेत्र में डा० नाथूलाल पाठक का यह ग्रन्थ अभिनन्दनीय है।

शुभ कामना

डा० चन्द्रधर शर्मा, एम. ए., डी. लिट्, डी. फिल्, एल–एल. बी.
जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर.

डा० नाथूलाल जी पाठक द्वारा सम्पादित 'हाड़ौती कहावतें' नामक ग्रन्थ मैंने देखा है। इसमें विद्वान् लेखक ने १३३८ कहावतों का संग्रह किया है और हिन्दी में उनके भावों का स्पष्टीकरण किया है। डा० पाठक के इस कार्य से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके प्रकाशन से राजस्थानी भाषा का हाड़ौती रूप हिन्दी-जनता के सम्मुख आया है, जो भाषा प्रेमियों के लिये बड़े आनन्द का विषय है।

मुझे आशा है कि पाठक जी भविष्य मे भी अपने ग्रन्थो द्वारा राजस्थानी भाषा के गौरव को प्रकाश में लाते रहेगे एव उसकी श्रीवृद्धि करते रहेगे। इससे हिन्दी-जगत भी लाभान्वित होगा। मेरी शुभकामनाये पाठक जी के साथ है।

बधाई

डा० सुधीरकुमार गुप्त, रीडर, संस्कृत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

संस्कृत-हिन्दी के निष्णात, परिमार्जित विद्वान् और लेखक प्राध्यापक डा० नाथूलाल पाठक द्वारा सकलित, सम्पादित और विश्लेषित 'हाडौती कहावतों' का संग्रह देखकर परम हर्ष हुआ। पुस्तक की छपाई और बाह्य आकृति आदि आकर्षक और सुन्दर है। पुस्तक की विषय सामग्री परम महत्त्वपूर्ण और समृद्ध है। इसमे कहावतों के हिन्दी अनुवाद और प्रयोग निर्देश के साथ-साथ अनेको कहावतों की आधारभूत कथा और घटना आदि दी गई है। कहावतों की ध्वन्यात्मक विशेषताओ का अकन भी किया गया है। भूमिका के अन्तर्गत कहावतों का विषयानुसार वर्गीकरण बहुत उपादेय है। परिशिष्ट मे कुछ कहावतो की प्रतिरूप सस्कृत और अग्रेजी की कहावते दी गई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि लोकोक्तियों के तुलनात्मक और हाड़ौती के भाषाशास्त्रीय अध्ययन मे तथा हाडौती प्रदेश को संस्कृति को समझने में यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगो।

पुस्तक पठनीय, प्रयोज्य और संग्रहणीय है तथा कोष साहित्य को महत्त्वपूर्ण देन है। इस पुस्तक के प्रणयन और प्रकाशन पर लेखक को बधाई है।

बधाई

डा० फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्,
प्रिंसिपल, गवर्नमेन्ट कालेज, कालाडेरा (राजस्थान)

प्रोफेसर डा० नाथूलाल पाठक के 'हाड़ौती कहावतें' नामक ग्रन्थ को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इसमें हाड़ौती की १३३८ कहावतों का जो अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, उसके लिये लेखक बधाई का पात्र है। इससे न केवल हाडौती प्रेमियों को लाभ होगा, अपितु राष्ट्रभाषा के शिक्षक तथा अन्वेषक भी लाभान्वित होंगे।

आशा है, लेखक भविष्य में राष्ट्रभाषा को अपने गौरव ग्रन्थों से समृद्ध करता रहेगा।

शुभाशंसा

डॉ० सरनामसिंह शर्मा, 'अरुण'
रीडर, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मैने डा० नाथूलाल पाठक कृत 'हाडौती कहावतें' को बडे ध्यान पूर्वक पढ़कर यह निष्कर्ष निकाला है कि भाषा की गवेषणा का कार्य उसी भाषा का पंडित अधिक औचित्य के साथ कर करा सकता है। डा० पाठक हाडौती प्रदेश के निवासी हैं, इसलिए जिस भाषा का उन्होंने कहावत-सम्बन्धी अध्ययन किया है, वह उनकी अपनी है और इस सम्बन्ध से उन्होंने इसके मर्म को स्वयं तो समझा ही है, इसे व्यक्त करने का भी अमोघ प्रयत्न किया है। हाडौती भाषा राजस्थानी बोलियों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। जयपुरी से मिलती-जुलती भाषा होने पर भी उसकी अपनी गरिमा है, अपनी वाक्यावली है और अपना शब्द चयन और प्रयोग है। डा० पाठक ने 'हाडौती कहावतें' में जो अध्ययन प्रस्तुत किया है, वह भाषा विज्ञान के धरातल पर बडा उपयोगी अध्ययन है। आर्य भाषाओं का, विशेषत: राजस्थानी बोलियों का भाषा तात्त्विक अध्ययन करने वाले को इन कहावतों से ध्वनि, अर्थ और कोष सम्बन्धी बडी भारी सहायता मिल सकेगी।

इस प्रकार का अध्ययन बहुत कष्ट साध्य होता है। यह कृति देखने मे तो बडी सरल और सीधी सादी प्रतीत होती है, किन्तु इसका सकलन और अनेक कहावतों का उपयुक्त अर्थ, ये दोनो बाते बडी कठिन है। डा० पाठक ने इन दोनों को अपने अनुभव, सामर्थ्य और कौशल से सम्यक् प्रतिष्ठा देकर भाषाविदों की सेवा मे प्रस्तुत किया है। यह सकलन, यह अध्ययन और यह मनोयोग बहुत सराहनीय है। मै आश्वस्त हूँ कि डा० पाठक से प्रेरणा लेकर अन्य पंडित लोग भी इस कार्य मे प्रवृत्त होगे।

मङ्गल कामना

श्रद्धेय शम्भुदयाल सक्सेना एम. ए. (दर्शन, संस्कृत)
प्रधानाचार्य हितकारी विद्यालय, कोटा (राजस्थान)

दीर्घकालीन सतत परिश्रम के पश्चात् प्रस्तुत, डाक्टर नाथूलाल जी पाठक की सुन्दर कृति 'हाड़ौती कहावतें' प्रथम भाग का अवलोकन कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

हाड़ौती क्षेत्र की बहुमूल्य अनुभवनिधि जो कहावतों में बिखरी पडी थी उसको बटोर कर आपने अत्यंत श्लाघनीय कार्य किया है।

जिस धरा पर जन्म हुआ उसके जाज्वल्यमान भव्य रूप को वहाँ के लोक-साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकट करने के आपके लक्ष्य से मै अत्यधिक प्रभावित हूँ। मङ्गलमय से मङ्गल-कामना है कि वह आपके इस ध्येय की पूर्ति करे।

इस भूमि के उत्थान मे आपकी इन रचनाओं का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

धन्यवाद

सम्मान्य पं० हरनाथ जी कवि सम्राट, आधुनिक भूषण, कवीन्द्र कुलमहेन्द्र, कविराजा राजकवि, झालावाड़.

डा० श्री नाथूलाल जी पाठक द्वारा सम्पादित 'हाडौती कहावतें' ग्रन्थ को देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। हाडौती कहावतों का यह विशाल संकलन लोक-जीवन की सच्ची झाँकी है, जो राजस्थान के इस भू-भाग की संस्कृति का दिग्दर्शन कराती है।

भाषा साहित्य के अध्ययन में इस ग्रथ द्वारा अपूर्व लाभ होगा तथा शिक्षित व अशिक्षित दोनों ही पूर्णरूपेण आनदानुभव कर सकेगे। इस अध्यवसाय व सत्कार्य के लिए श्री पाठक जी धन्यवाद के पात्र है।



निमन्त्रण

'हाड़ौती कहावतें' ग्रन्थ का अवलोकन करने वाले लोक साहित्य सेवियों और अनुरागियों को मैं अत्यन्त विनम्रता के साथ हाड़ौती क्षेत्र के लोक साहित्य के सम्बन्ध में पारस्परिक विचार-विमर्श के लिए सादर आमन्त्रित करता हूँ। भारत के विभिन्न प्रान्तों में कुछ वर्षों से अपने क्षेत्रों के लोक साहित्य के सङ्कलन और प्रकाशन का कार्य निरन्तर चल रहा है। राष्ट्र भाषा हिन्दी में हाड़ौती लोक साहित्य के अभिवर्धन की नितान्त आवश्यकता प्रतीत होती है। अतः हाड़ौती लोक साहित्य में अभिरुचि रखने वाले सज्जन मुझे अपने सम्पर्क तथा सक्रिय सहयोग द्वारा अनुगृहीत करने की कृपा करें।

३१८—लाड़पुरा,
कोटा (राजस्थान)

विनीत
डॉ० नाथूलाल पाठक
राजकीय महाविद्यालय, कोटा.

हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन

विज्ञप्ति

आपको विदित कराते हुए परम हर्ष है कि हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन हाड़ौती लोक साहित्य की बिखरी और लुप्त सामग्री के संकलन, संपादन और प्रकाशन का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस प्रकाशन के द्वारा प्रकाशित लोक साहित्य का प्रथम पुष्प आपके समक्ष रखते हुए हमें अत्यन्त गर्व का अनुभव हो रहा है। हाड़ौती लोक साहित्य की उपादेयता के सम्बन्ध में भारत के उच्चकोटि के विद्वानों से हमें सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं। प्रकाशन के पास कतिपय ग्रन्थ ऐसे हैं, जो शीघ्र ही प्रकाश में आने वाले हैं।

- हाड़ौती कहावतें (द्वितीय भाग)
- हाड़ौती मुहावरा कोष
- हाड़ौती लोक वार्ता
- हाड़ौती व्याकरण
- हाड़ौती शब्द कोष
- हाड़ौती लोक दर्शन

इस उद्योग की सफलता के लिए आपकी प्रेरणा और प्रोत्साहन वांछनीय है।

व्यवस्थापक

हाड़ौती लोक साहित्य प्रकाशन

लाड़पुरा, कोटा (राज०)